विनोबा के साथ

निर्मला देशपांडे

प्रकाशक

अखिल भारत सर्व सेवा संघ

प्रकाशक
अखिल भारत सर्व सेवा सघ,
वर्धा

प्रथम सस्करण २१००
मार्च १९५५

मूल्य : एक रुपया
सजिल्द : सवा रुपया

मुद्रक
प० पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस, वनारस

प्रस्तावना

मराठी-साहित्य से जिनका थोडा भी परिचय है, वे श्री पी० वाई० देशपाण्डे को जानते हैं। लेखक होने के अतिरिक्त वे मध्यप्रदेश की राजनीति मे प्रमुख स्थान भी रखते है। वे मेरे अनन्य मित्र हैं और जिन मुट्ठी भर लोगो ने पुरानी काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की नीव डाली थी, उनमे "पी० वाई०" भी थे।

निर्मला देशपाण्डे उन्हीकी पुत्री है। पिता की प्रतिभा पुत्री मे स्पष्ट झलक रही है, इसकी गवाही इस डायरी का एक-एक पन्ना दे रहा है। साहित्यकारिता की प्रतिभा तो इसमे दीखती ही है, विद्वत्ता भी है इसमे। होना भी ऐसा ही चाहिये। चिरजीवी निर्मला विद्वान माता-पिता की सन्तान तो है ही, उसने ऊँची शिक्षा भी प्राप्त की और वह विनोवाजी के पास जाने के पहले नागपुर के एक कालेज मे अध्यापन भी कर चुकी है।

निर्मला विनोवाजी की उत्तर प्रदेश तथा विहार की पदयात्राओ मे महीनो साथ रही है—यह हम भारतीयो के लिए सौभाग्य का विपय वन गया है, क्योकि विनोवा एक विलक्षण व्यक्ति हैं। आध्यात्मिक विभूतियो के साथ-साथ प्रकाण्ड पाण्डित्य और अतुल अनुभूतियाँ भी उनमे सगृहीत हैं। वे प्रतिदिन वोलते हैं, फिर भी कुछ न कुछ वरावर नया कहते हैं। केवल भाषणो मे ही नही, चलते-फिरते, उठते-वैठते, मुस्कराते विनोवा अक्सर अनमोल वाते कह जाते हैं। अगर उन्हे नोट कर लेनेवाला कोई पास न हो तो उन वोधमय सुभाषितो से हम वचित रह जाते हैं। विनोवा कभी सामाजिक प्रश्नो की मीमासा अनायास कर देते है, कभी किसी जटिल शका का समाधान एक वाक्य मे कर डालते है, कभी पुराने ऋषि-वाक्यो का ऐसा नया अर्थ दे डालते हैं कि सुनते ही वनता है। कभी किसी वुढिया के झोपडे मे जाकर ऐसी मार्मिकता और हार्दिकता से कुछ वोल जाते है कि वह अखिल विश्व की सम्पत्ति वन जाता है। कभी अनायास और अकस्मात् कोई पावन प्रसग उपस्थित हो जाता है तो कभी कोई चमत्कार।

दुर्भाग्य से इन सब का रेकार्ड रखा नही जाता, क्योकि विनोवाजी की वरावर यह कोशिश रहती है कि उनके साथ कम से कम लोग रहे। जो भी उन्हे जरा काम का लगता है, उसे अपने यहाँ से हटाकर प्रत्यक्ष कार्यक्षेत्र मे भेज देना चाहते है। भारतीय प्रचार-साधनो ने अधिकतर उनकी अवहेलना ही की है। शहरो के या खास-खास मौके के भाषणो की रिपोर्ट तो छप जाती है, लेकिन जिन मोतियो को वे हर दिन विखेरते रहते है, उन्हे चुन और पिरोकर रख लेनेवाला अक्सर कोई नही होता। उन मोतियो के पारखी भी तो चाहिये। हम अगरेजी शिक्षा प्राप्त लोग भारतीय चिन्तन-धारा से इतनी दूर होते है कि विनोवा के चिन्तन की वहुत सारी वारीकियाँ हमारे ऊपर से ही ढुलककर उसी प्रकार गिर जाती है, जैसे बतख के पखो पर से पानी। वेचारे प्रेसवाले इसके अपवाद नही है।

ऐसी दशा मे यह हमारा परम सौभाग्य है कि निर्मला वहन जैसे प्रतिभावान् पारखी विनोवा के साथ कभी-कभी रह पाते है।

इस डायरी मे विनोवा की उत्तर-प्रदेश और बिहार की चार महीने की यात्रा का वर्णन हे। वर्णन कितना सुन्दर और जानदार है, यह पढने से ही पता चलेगा। यात्रा चलचित्र की तरह आँखो के सामने आ जाती है, जैसे विनोवा के साथ हम स्वय घूम रहे हो और उन्हे अपने कानो से सुन रहे हो। वीच-वीच मे लेखिका की टिप्पणियाँ चित्र मे और भी चमक भर देती है। इस डायरी मे कई गम्भीर विषयो पर विनोवा के विचार मिलेगे जो पहले प्रकाशित नही हुए है। भूदान-आन्दोलन का विकासशील स्वरूप इस डायरी के पन्नो मे अकित मिलेगा, और मिलेगे अहिसक -क्रान्ति तथा समाज-रचना के अमूल्य तत्त्व।

यह पुस्तक अवश्य पठनीय है।

सर्वोदय-आश्रम, सेखोदेवरा,
गया (बिहार)
१६ जनवरी १६५५

—जयप्रकाशनारायण

परिचय-तालिका

(पहला भाग)

(दूसरा भाग)

(तीसरा भाग)

(चौथा भाग)

(पाँचवाँ भाग)

(छठा भाग)

(सातवॉ भाग)

(आठवॉ भाग)

विनोबा के साथ

पहला भाग

दान-धारा और ज्ञान-धारा

भदोही (बनारस)

२०-४-१९५२

'ॐ पूर्ण है वह पूर्ण है यह '

रात बीतने को थी लेकिन सुबह नही हो पायी थी। सुबह की प्रार्थना मे ईशावास्योपनिषद् का पाठ हो रहा था। तीर की गति से आगे बढते हुए बापू के आत्मज को देखकर लगा जैसे नोआखाली की अधूरी यात्रा पूरी की जा रही है।

नित्यक्रम के अनुसार प्रातःकाल चार बजते ही सेवापुरी आश्रम से हमारी यात्रा का आरम्भ हुआ। चौदह मील की दूरी पर 'भदोही' (एक कस्बा) मे हमारा पहला पडाव था। विनोबाजी के चलने की गति बहुत ही तेज है और मेरी आराम की जिन्दगी का श्रम से परिचय केवल पुस्तको से ही है। कल्पना और विचारो की दुनिया मे भले ही मै श्रमनिष्ठ और कष्टसहिष्णु होऊँ फिर भी वास्तविक जगत् मे विपरीत स्थिति थी, लेकिन सोचा, इन दो दुनिया की दूरी मिटाने के लिए ही तो मै यहाँ आयी हूँ।

हमारे यात्री-दल मे कुछ पुराने अनुभवी पथिक और कुछ मेरे जैसे "नौसिखुए" थे। युनेस्को मे काम करनेवाली दक्षिण अमेरिका की एक बहन, एक फ्रेंच पत्रकार महिला और सेवाग्राम की विद्या बहन मेरे ही जैसी नयी बहने थी। इसलिए पडाव पर पहुँचते ही हममे से किसी को भी

हालत कुछ करने लायक न रही। किन्तु दूसरी तरफ यात्री-दल के मृदु और गौतम जैसे छोटे बच्चे फौरन काम मे जुट पडे। विनोबाजी की लोकनागरी लिपि के टाइपराइटर पर दोनो मजे मे हाथ चला लेते हैं।

नित्यक्रम के अनुसार शाम को कताई, प्रार्थना और प्रवचन आदि कार्यक्रम आरम्भ हुआ। कताई के बारे मे विनोबाजी ने कहा--"बच्चा बोलने से नही, देखने से समझ जाता है। इसीलिए बापू हम बच्चो को सबक सिखाने के लिए हर रोज सूत कातते थे। गाधीजी को याद करने से ही हम अपना जीवन सुखी बना सकते हैं।"

चारो ओर रिश्वत, कालाबाजार आदि चल रहा है। सारे समाज का नैतिक स्तर ही गिर गया है—आजकल हर जगह यही बात सुनायी दे रही है। विनोबाजी के पास आनेवाले अधिकाश लोग उन्हे यही सुनाया करते है, लेकिन विनोबाजी तो कहते है—"मैने पवनार से बनारस, हजार मील की यात्रा की, लेकिन मुझे तो आज तक एक भी दुर्जन नही मिला, . ।"

मुझे महाभारत का एक किस्सा याद आया। एक सभा थी, उस सभा मे धर्मराज को एक भी दुर्जन नही मिला और उसी सभा मे दुर्योधन को एक भी सज्जन नही मिला। मेरे मन मे सवाल उठा—तो क्या इसका मतलब यह कि हम सारे दुर्योधन बन गये है इसीलिए चारो ओर हमे दुर्जन ही दुर्जन दिखायी दे रहे है? सवाल उठते ही मैने विनोबाजी का जवाब सुना—"मानव का हृदय शुद्ध है। लेकिन आज की समाज-रचना बिगडी हुई है। पैसे का महत्त्व बढ गया है। हर कोई काचन के मृग-जल को देखकर उसके पीछे दौड रहा है। लेकिन यदि मनुष्य को सत्य वस्तु का भान कराया जाय और उसके अन्दर की छिपी हुई अच्छाई को बाहर लाने का मौका दिया जाय तो अच्छाई फौरन प्रकट होगी। भूदान-यज्ञ के द्वारा यही कार्य हो रहा है।"

इसके बाद विनोबाजी ने एक हृदयस्पर्शी कहानी बतायी—"एक गरीब किसान जिसके पास कुल डेढ बीघे जमीन थी, मेरे पास आया और दान

देने लगा। मैंने उससे कहा--तू खुद गरीब है, दान मत दो। तो वह रो पड़ा। उसे दान दिये वगैर रहा नही जाता था। इतना महान् यज्ञ शुरू हुआ है और उसमे अपनी आहुति अर्पण किये वगैर चले जाना, उसका भारतीय हृदय भला कैसे मान सकता था? वह गरीब है तो क्या हुआ? क्या उसे सुदामा का तदुल अर्पण करने का हक नही था? आखिर उसकी भक्ति देखकर मैंने उसका दानपत्र ले लिया। तब वह खुश हुआ। ऐसे कई किस्से बने हैं। उनका स्मरण ही दिल को पवित्र बना देता है।" आखिरी वाक्य बोलते समय विनोबाजी की आवाज मे कुछ कम्पन-सा हुआ, उनकी आँखे सजल हो गयीं। कुछ रुककर, उन्होने फिर ग्रामीणो से कहना शुरू किया--"भारत मे दो धाराये निरन्तर बहती रही है। जहाँ गगा और यमुना की जल-धाराये है, वहाँ प्राचीनकाल से लेकर आज तक ज्ञान-धारा और दान-धारा भी निरन्तर बहती रही है। दान-धारा मे स्नान करके अपना जीवन पुनीत बनाओ।" --यही सदेश देने के लिए तो उनकी यात्रा चल रही है। दान-धारा के साथ-साथ वे ज्ञान-धारा की भी महिमा बताते है। "हर रोज ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। आप अनपढ है तो कुछ श्रवण करना चाहिये, लेकिन ज्ञान हासिल किये वगैर एक भी दिन नही जाना चाहिये। जिस दिन हमने ज्ञान की बात नही सुनी, वह दिन हमने खो दिया।"

राजा राम—प्रजा राम

रामपुर (जौनपुर)

२१-४-१९५२

मैं एक दिन बैठी-बैठी दैनिक कार्यक्रम के बारे मे सोच रही थी। वैसे तो बैठने का अवसर कहाँ, फिर भी जब एकान्त का अवसर मिलता तो पिछले जीवनक्रम का सारा नकशा सामने आ जाता। मन मे आज की शिक्षा-प्रणाली पर कुछ सोचने लगी थी।

आज की शिक्षा-प्रणाली मे जो सवसे वडी खरावी है, वह अव मैं तीव्रता से महसूस कर रही हूँ। पिछले १८ वर्षो के मेरे अध्ययन-काल मे मुझे न कभी जगल से लकडी लानी पडी थी, न कभी गाये चरानी पडी थी। इसलिए मेरा शरीर किसी भी किस्म के परिश्रम के लिए सर्वथा असमर्थ वन गया था। यात्रा मे शरीक होते ही पहले ही दिन मेरा स्वास्थ्य विगड गया और पिछले १८ वर्षो के दरमियान मैं किसी भी विपय में प्रवीण न हो सकी। यह वात तो थी ही। और उधर वर्धा के महिला-श्रम की नर्मदा वेन मेरे जैसी ही नवसिखुआ होते हुए भी वडी फुर्ती से विनोवाजी के साथ चल रही थी।

मैं अयोग्य साबित हो चुकी थी, इसलिए दूसरे ही दिन मुझे सामान ले जानेवाली जीप मे वैठकर अगले पडाव पर जाना पडा। सव का ध्यान खीचने के लिए वीमारी जैसा दूसरा साधन कोई नही हो सकता। विनोवाजी से लेकर हर कोई मेरे स्वास्थ्य के वारे मे पूछता था। फौरन इलाज भी शुरु हो गया। जव विनोवाजी ने पूछा—"वेटा, अव तेरा स्वास्थ्य कैसा है ?" यह सुनते ही मुझमे काफी ताकत आ गयी। और वाद मे जव किसी ने मुझे सुनाया कि विनोवाजी तुम्हारे वारे मे कह रहे थे—"उसका शरीर कमजोर होते हुए भी मन के वल पर वह सव काम कर रही है।" तो यह सुनकर मुझमे चलने की ही नही, दौडने की भी शक्ति आ गयी।

हमारा निवास-स्थान हमेशा सारे गॉव का आकर्पण-स्थान वन जाता है। सरकारी अफसर, भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षो के कार्यकर्त्ता, गाँव के वडे-वडे लोग आदि सारे हमारी सेवा के लिए उपस्थित रहते है और गॉव की जीर्ण पाठशाला मे रहते हुए भी हमे लगता है कि हम किसी आलीशान महल मे रह रहे है। विनोवाजी तो हमेशा कहते है कि "मै तो दुनिया के सव वादशाहो से वडा वादशाह हूँ। दूसरे वादशाहो के ज्यादा-मे-ज्यादा पचास महल होगे, लेकिन मुझे तो हर रोज नया महल मिलता है।" और हम भी विनोवा के सहयात्री होने के कारण वादशाहो के खान-दानवाले वन जाते है। सत के दर्शन के लिए आनेवाले लोग हमारा भी 'दर्शन' करते है।

हमारे यात्री-दल मे जो फ्रेंच महिला थी वह भारतीय पोशाक धारण करती थी। भारतीय-जीवन के साथ बिलकुल हिल-मिल जाने की उनकी कोशिश को देखते हुए मुझे अपने सूट-बूट पहननेवाले बाबू लोगो की याद आती है। जरा-सी अंग्रेजी पढकर हमारे लोग अंग्रेजो की नकल उतारने की कोशिश करते है और इधर हमारे योरप के भाई-बहन यहाँ आकर भारतीय बनने की कोशिश करते है। वह फ्रेंच बहन हमारे जैसी ही पदल चलती थी, जमीन पर पलथी मारकर बैठती थी, हाथ से खाना खाती थी। वह भूदान का कार्य देखने आयी थी। प्राणो से भी प्रिय जमीन लोग दान मे कैसे देते है, यह उनके लिए एक भारी समस्या बन गयी थी। भूदान-यज्ञ के द्वारा अहिंसक समाज-रचना हो सकती है—यह बात तो उन्हे असम्भव-सी लगती थी। उन्होने आज तक देखा था कि युद्ध के नाम से मानव की पाशविक प्रवृत्तियाँ किस भयानक रूप मे प्रकट होती है, इसलिए मानव अपने गरीब पडोसी को अपनी जमीन दे सकता है और वह भी एक सत की प्यारभरी माँग पर! यह सारा उन्हे अघटनीय प्रतीत होता था और इसीलिए असम्भव-सा लगता था। लेकिन वह अपनी आँखो देख रही थी कि रास्ते मे विनोबाजी कभी-कभी दर्शनार्थियो के बीच चन्द मिनट के लिए रुकते है, दो-चार शब्द बोल लेते हैं और फिर भूदान की वर्षा होने लगती है। एक दिन उन्होने मुझसे कहा कि "आप भारतीय लोग बडे अच्छे है, लेकिन जरा ख्वाबो की दुनिया मे अधिक रहते है।" मैंने जवाब दिया—आप जिसे ख्वाब कहती है ऐसी कई घटनाएँ हमने अपनी आँखो से देखी है। जिसने गाधीजी का कार्य देखा, वह भविष्य की ओर आशा की निगाह से देखे बगैर कैसे रह सकता है।

विनोबाजी जब ग्रामीणो के सामने बोलते है तब बिल्कुल तन्मय हो जाते है। वक्ता और श्रोता का द्वैत नष्ट हो जाता है। दिल की भाषा दिल पहचान लेता है। नूतन से नूतन क्रान्तिकारी विचार वे इतने सरल ढग से समझाते है कि जनता उसे आसानी से ग्रहण कर लेती है। उन्होने एक बार बोलते हुए कहा—"आज की समाज-रचना मे एक क्षण के लिए

भी नहीं सह सकता हूँ।". "हम तो राम-राज्य स्थापित करना चाहते हैं। ऐसा राम-राज्य जिसमे राजा राम, प्रजा राम, सब राममय हो जाते हैं।'—इन दो विचारो की सगति जन-मन मे अनजान मे ही जुड जाती है। हम शिक्षित लोग क्रान्ति की किताबे पढते हैं और भारतीय जनता पर अज्ञान, सकीर्णता एव रूढिप्रियता के लिए दोपारोपण करते हैं। भारतीय जनता को किस प्रकार क्रान्ति के लिए प्रेरित किया जा सकता हैं यह सीखना है तो इस सत के पास ही आना होगा।

आजकल हमारे भोजन की ऐसी व्यवस्था की गयी है जिससे कि हम लोगो के अधिक-से-अधिक सम्पर्क मे जा सके। यात्री-दल के सब सदस्य दो-तीन की सख्या मे एक-एक घर मे भोजन के लिए जाते है। इससे क्रान्ति का सदेश रसोईघर तक पहुँचाने का मौका मिलता है। लेकिन सुवह १४-१५ मील चलकर आने के वाद फिर उत्तर प्रदेश की कडी धूप मे दोपहर के समय सिर्फ भोजन के लिए मील-दो मील चलना पडता हे, तब तो 'उदरभरण' विल्कुल 'यज्ञकर्म' मालूम होता है। आज जहाँ मैं भोजन करने गयी थी वहाँ की स्त्रियो से वातचीत करने के लिए चूल्हे की ओर वढ ही रही थी, इतने मे घर की स्त्रियो ने कहा—"पास मत आइये, छूना मत।" उनके मन मे हमारे प्रति अत्यन्त आदर और श्रद्धा की भावना थी लेकिन रूढि-परम्परा के कारण वे हमे पास नही आने दे रही थी। उन्होने यह सोचा होगा कि ये सन्त के साथ रहनेवाली वहने है। न मालूम किस जाति की होगी, शायद इनमे से कोई हरिजन भी हो सकती है . . . यही रूढि है जो मानव को मानव से दूर रखती है।

शबरी के बेर

मड़ियाँहू (जौनपुर)

२२-४-१६५२

चलते समय आरम्भ का कुछ समय शान्ति से बीतता है। दिन भर के सारे कार्यक्रमो मे वही ऐसा समय है जब कि विनोबाजी शान्ति से

चिन्तन कर सकते है। उसके बाद रास्ते मे ही चर्चाएँ, मुलाकाते आदि आरम्भ हो जाती है। वह चर्चा तो घरेलू चर्चा जैसी रहती है, इसलिए बडी रोचक मालूम होती है। दिल तो चाहता है हर एक शब्द सुनूं, लेकिन उसके लिए विनोबाजी की गति से चलना बडा मुश्किल है।

आज प्रेमा बहन के साथ बातचीत हो रही थी। विनोबाजी ने कहा—"मै चाहता हूँ कोई एक शकराचार्य जैसी तेजस्वी, वैराग्यमूर्ति और ज्ञाननिष्ठ स्त्री निकले। उसके बगैर स्त्री-जाति का उद्धार नही हो सकता है।" सेवापुरी के सम्मेलन मे जब विनोबाजी ने कहा था कि "स्त्री-जाति को ब्रह्मचर्य और सन्यास का अधिकार है?" तब कई सनातनियो ने शिव! शिव!! कहा होगा! (?)

गॉव नजदीक आ रहा था। रामधुन का घोष, वाद्यो की ध्वनि और भूदान के नारे आदि की समिश्र ध्वनि सुनायी दे रही थी। स्वागत के लिए जगह-जगह पर द्वार बनाये गये थे। सारे रास्ते साफ किये गये थे, आम्र पल्लवो के वन्दनवार लगाये गये थे। पुष्पवृष्टि हो रही थी। रास्ते के दोनो ओर बच्चे से लेकर बूढे तक असख्य नर-नारी खडे थे। "**भूमिदान यज्ञ सफल करेंगे**" और "**महात्मा गाधी की जय**"—इन दो नारो से सारा आकाश गूंज उठा। मुझे ऐसा लगा कि जनता यह सूचित कर रही है कि इन दो नारो मे कुछ आन्तरिक सगति है।

आज का हमारा निवासस्थान एक कॉलेज था। चर्चा मे कुछ सवाल पूछे गये। सवाल अच्छे थे।

एक भाई ने कहा—"भूदान-यज्ञ ट्रस्टीशिप (Trusteeship) के अन्दर है या नही?"

विनोबा—"जी हॉ, है। लेकिन जमीन के बारे मे हम यह नही कह सकते कि हम उसके ट्रस्टी है क्योकि जमीन तो परमेश्वर की देन है। अपनी जायदाद के हम ट्रस्टी है, मालिक नही—यह भावना पैदा करनी है। जो चीज नैतिक दृष्टि से गलत मानी जाती है, वह समाज की दृष्टि

से दण्डनीय बन जाती है। आज चोरी को ठीक कहनेवाला समाज मे कोई नही है, इसलिए कानून मे भी चोरी को गुनाह माना गया है। मै चाहता हूँ जमीदार लोग खुद यह समझ जायँ कि चोरी के समान जमीन का सग्रह भी नैतिक दृष्टि से पाप ही है। सब लोग मेरा यह कहना मानेगे क्योकि आज सब लोग चोरी के खिलाफ है। इसलिए समाज कल यह भी मानने लगेगा कि कजूसी भी गलत है। वास्तव मे जो कजूस होते है वे चोरो के बाप होते है। जो धनसग्रह करते है वे चोरो को पैदा करते है। उपनिषद् मे राजा कहता है कि "**न मे स्तेनो जनपदे न कदर्य**" मेरे राज मे कोई चोर नही है और कोई कजूस नही है। मै मानता हूँ कि समाज कभी-न-कभी यह विचार मजूर करेगा कि चोरी के समान सग्रह भी पाप है क्योकि यह सद्‌विचार है।"

हमेशा की चर्चाओ मे नित्य नूतन विचार देने की विनोबाजी की कला बहुत ही आकर्षक मालूम होती है। आज उन्होने कहा—"राजसत्ता का और ऋषिसत्ता का धर्म अलग-अलग होता है। ऋषि लोकमत बनाते है और बनाये हुए लोकमत के आधार पर राजसत्ता काम करती है। राजसत्ता के जरिये कभी क्रान्ति नही हो सकती। क्रान्ति तो ऋषि ही कर सकते है। समाज मे तीन प्रकार के लोग होते है, समाज को आगे ले जानेवाले क्रान्तिदर्शी ऋषि, समाज के साथ-साथ रहनेवाले समाज के मित्र समाज-सुधारक और समाज के पीछे-पीछे जानेवाले सेवक याने सरकार। सरकार तो हमारी नौकर होती है। नौकरो को हम चुनते है। इसलिए जो सरकार मे दाखिल हो जाते है वे नेता नही रह सकते है, सेवक बन जाते है। जनता की आज्ञा के अनुसार सरकार काम करती है। इसलिए समाज को आगे ले जानेवाले नेता तो ऋषि ही हो सकते है।"

मेरे कानो ने यह विचार सुन लिया लेकिन दिमाग तक पहुँचने मे काफी समय लग गया। स्वराज्य के बाद हमने सरकार से जो अपेक्षाएँ रखी थी उनके मूल पर ही प्रहार करनेवाला विचार था वह। हम समझते थे कि अब तो धरती पर स्वर्ग लाने का काम सरकार का ही है। अगर सरकार वह काम नही कर पाती तो उसको कोसना हमारा कर्त्तव्य है।

लेकिन इधर विनोबा कह रहे थे कि "आपने जिन लोगो को चुना है वे अब नेता नही रह गये है। वे तो सेवक बन गये है। समाज को मार्गदर्शन करने का काम वे अब नही कर सकते है।" दिमाग मे विचार-चक्र आरम्भ हो गया था। इतने मे सहसा विनोबाजी के एक वाक्य ने मेरा ध्यान खीच लिया—"जहाँ आप तोते को छोड देते है वहाँ आपकी भी जजीर टूट जाती है।" शोषण का अन्त कैसे हो सकता है इसका इससे सुन्दर जवाब क्या हो सकता है ? चर्चा चल रही थी—"लोगो की सदसद्विवेकबुद्धि (Conscience) जागृत करने की जरुरत है। आज लडाई के खिलाफ जन-मन मे वह भाव नही है जो मार-काट के खिलाफ है इसका मतलब यह है कि अभी सदसद्विवेकबुद्धि को विकसित करना बाकी है। लडाई के रूप मे जो सामूहिक हिसा होती है उसके खिलाफ लोकमत तैयार करना चाहिये। मानव-समाज का निरन्तर विकास होता जा रहा है इसलिए मानव-हृदय मे युद्ध का आज जो स्थान है वह कल नष्ट होगा और फिर दुनिया मे भी युद्ध के लिए कोई स्थान नही रहेगा।"

"बावजूद इसके कि छापाखाना (Printing Press) प्रेस नही था, तुलसी रामायण जितनी फैली उतनी एक भी अर्वाचीन किताब नही फैली, न राजाओ की सल्तनत फैली। कई सल्तनते आयी और गयी लेकिन तुलसी रामायण की सल्तनत आज भी चल रही है।"

आज नजदीक के गाँव—टिकारडी—के सब जमीनवालो ने मिलकर इतनी जमीन दान दी थी कि गाँव के सब भूमिहीनो के लिए पर्याप्त हो जाय। जमीन के साथ उन लोगो ने बीज, हल आदि साधनो का भी दान दिया। भूदान के साथ जब साधनो का भी दान दिया जाता है तो विनोबा-जी उस दान को "सालकृत कन्यादान" कहते है। आज की प्रार्थना-सभा मे टिकारडी वासियो का खास स्वागत हुआ। उन्हे एक जुलूस मे सभा-स्थान पर लाया गया। भूदान देनेवालो मे गरीबो की तादाद ही अधिक थी। जीर्ण-शीर्ण वस्त्रो से ढके हुए शरीर, चिन्ता से मुरझाये हुए चेहरे, लेकिन आँखो मे दातृत्व का अपार समाधान था। उनमे से एक बूढे थे।

बीच-बीच मे वे सन्त की ओर देखते थे । उनकी आँखो मे भक्तिभाव नजर आता था, कभी-कभी आनन्दाश्रु वहने लगते थे, लेकिन वे दूसरी ओर देखने लगते थे, मानो कुछ गहराई मे सोच रहे है । जीवन के इन आखिरी दिनो मे आज उन्होने एक क्रान्तिकारी निर्णय किया था, क्या इसीलिए वे अपने वीते दिनो को याद कर रहे है ? धरती की गोद मे, गेहूँ-चने के पौधो से वाते करते, खेल को हार-जीत मे उनका वचपन वीता था। जवानी मे हो सकता है कि उन्होने एक छोटे-से टुकडे के लिए अपने भाई को धोखा दिया हो या यह भी सम्भव है कि अपने छोटे भाई को अपने ही लडके की तरह पाल-पोसकर वडा किया हो। हिन्दुस्तान के किसी साधारण किसान के जीवन मे जो भी सुख-दु ख आते है वे सब वे भोग चुके है । और आज एक सत की पुकार पर अपने से भी गरीव भूमिहीन दूसरे भाइयो के लिए "शवरी के वेर" अर्पण करते समय शायद वे अपने जीवन का यश-अपयश तौल रहे होगे । सुख-दु ख दोनो का अनुभव उन्हे हो रहा होगा। जिन्दगी वही थी लेकिन इसी एक दान से जैसे उसमे उजाला हो गया हो। जिन्दगी की इन थोडी-सी वची घडियो मे ईश्वर की निकटता का अनुभव उन्हे हो रहा होगा । फिर भी वे केवल सुखी ही हो सो वात नही, विचारमग्न भी दिखलायी पड रहे थे । प्रवचन के वाद रामधुन शुरू हुई। यद्यपि उनके होठ राम-राम जप रहे थे पर मन जैसे किसी दूसरे विचार मे डूवा था। आज की घटना से शायद उनकी दृष्टि किसी चिरतन तत्व की ओर गयी हो।

आज के प्रवचन मे विनोवाजी ने कहा—"भारत मे वोलने के वजाय मौन का ही अधिक परिणाम होता है। यहाँ पर दस हजार सालो से आन्तरिक एकता की भावना भरी हुई है। चाहे शिक्षित हो चाहे अशिक्षित, हर दिल जानता है कि यह सारी सृष्टि एक ही वस्तु से भरी है। . वापू घूमते थे, जनता उनकी भाषा समझ लेती थी। जनता विद्वानो के शब्द नही, हृदय की भाषा समझ लेती है।" . "मुझे अब ज्यादा वोलना नही पडेगा। मेरी भावना लोगो के हृदय तक पहुँच गयी है।" मानो

अव शब्दो का कोई काम नही रहा है, अव तो शब्दातीत का काम आरम्भ हुआ है। अव्यक्त की शक्ति हर दिल को स्पर्श कर रही थी, जगा रही थी, प्रेरित कर रही थी। और उसका व्यक्त स्वरूप था, श्रद्धाभाव से यज्ञ मे अर्पण की असख्य आहुतियाँ। लोग भूदान कैसे देते है? शिक्षित मन को सतानेवाली इस जटिल समस्या का उत्तर ढूँढना हो तो भारत की हजारो साल की प्राचीन सभ्यता, तत्वज्ञान, चिन्तन आदि का अध्ययन करना होगा। भूदान देनेवाला गरीव किसान आज दुनिया के सभी मानस-शास्त्रियो के लिए, राजनीतिज्ञो के लिए, अर्थशास्त्रज्ञो के लिए एक पहेली वन गया है।

बापू की राह पर

जौनपुर

२३-४-१९५२

चलते समय रास्ते मे विनोवाजी को देने के लिए लोग कई प्रकार की चीजे लाते है। विनोवाजी को हम "न खानेवाले भगवान" कहते है। उन्हे तो वस मिट्टी (भूदान) ही चाहिये। इसीलिए लोग जब वढिया दूध, दही, मिठाई, फल आदि चीजे लाते है तो वे सारी चीजे हम जैसे "खानेवाले भगवान" के हाथ मे आती है। लेकिन तेज रफ्तार से चलने मे तो हम भक्त-जन पिछडे ही रह जाते है। इसलिए अक्सर हमे उन आकर्षक चीजो की ओर सिर्फ नजर ही डालते हुए आगे वढना पडता है। आज विनोवाजी ने रास्ते मे एक दफा लोगो को मिठाई वाँटना आरम्भ किया यह कहते हुए कि "जो मिठाई खायेगा उसे जमीन देनी होगी"
लोग भी उसे सहर्ष स्वीकार कर लेते थे।

हमने सुना था कि जोनपुर मे राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ (R S S) को माननेवाले काफी लोग है। आज विनोवाजी के स्वागत के लिए उन्होने जगह-जगह द्वार वनाये थे। और हर एक द्वार के पास वे लोग आरती, फूलमाला आदि लेकर खडे थे। यहाँ पर हर राजनैतिक पक्ष के लोगो ने स्वागत का

अलग-अलग इन्तजाम किया था। इसलिए बीच-बीच मे "**भारतीय संस्कृति की जय हो**", "**क्रान्ति की जय हो**", "**महात्मा गाधी की जय**" आदि नारे सुनायी पडते थे। लेकिन उन सबके साथ "**भूदान यज्ञ सफल करेंगे**" का नारा भी सुनायी देता था। बीच-बीच मे सफेद, काली, लाल टोपियाँ और कुछ बिना टोपीवाले दीख पडते थे।

जौनपुर के राजा आज सुबह विनोबाजी से मिलने आये थे। उन्होने दो हजार एकड का दान अत्यन्त श्रद्धा से अर्पण किया। राजा साहब उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के प्रमुख है। उस सस्था ने उत्तर प्रदेश के अपने सारे कार्यकर्ताओ को विनोबाजी के कार्य मे सहायता देने का आदेश दिया है। विनोबाजी चाहते है कि भिन्न-भिन्न पक्षवाले सब इस भूदान के काम मे जुट जायँ। और हम देख रहे है कि चुनाव के समय जो एक-दूसरे को अपना शत्रु मानते थे वे सारे आज एक साथ भूदान का काम कर रहे है। यह घटना बहुत ही आशाजनक प्रतीत हुई। स्वराज्य-प्राप्ति के बाद गाधीजी गये और देश मे विचारो की उलझने पैदा हुईं, किसी को भी ठीक रास्ता नजर नही आ रहा था। स्वराज्य के पहले हमने जो स्वप्न देखे थे उनको नष्ट-भ्रष्ट होते देखकर विफलता, निराशा और कटुता की भावनाएँ पैदा हो रही थी। जहाँ देखो वहाँ असतोष, असमाधान दिखायी पड रहा था। लेकिन उससे छुटकारा पाने का कोई तरीका नजर नही आ रहा था जिसके कारण अगतिकता पैदा हुई थी। लगता था जैसे हम किसी प्रवाह मे बह रहे है। उससे बाहर निकलना चाहते हुए भी नही निकल पा रहे है। इन सब आघात-प्रत्याघातो के कारण खासकर युवा-मन दयनीय हो गया था। लेकिन विनोबाजी के साथ ४-६ दिन रहकर मानो लगता था कि सारी निराशा, अगतिकता दूर भाग गयी हो। जीवन मे एक नया प्रकाश मिल रहा हो। हमारे यात्री-दल मे जो युवक कार्यकर्त्ता थे उन सबको एक नया सजीवन प्राप्त हुआ-सा लगता था। गुजरात के नारायण देसाई (स्व० महादेव भाई देसाई के पुत्र), राजेन्द्र भाई, मलाबार के जनार्दन पिल्ले, तामिलनाड का व्यकटेशय्या, आन्ध्र की विद्या बहन, उत्तर प्रदेश के हरिमोहन भाई, शिवदास

त्रिपाठी आदि सब को भूदान-यज्ञ मे एक नयी प्रेरणा, नयी स्फूर्ति प्राप्त हुई थी। न इनके पास सख्या का वल था, न ज्ञान, न अनुभव। और इस विशाल देश की समस्याओ को हल करने की आकाक्षा रखना पागलपन माना जा सकता था। फिर भी ये पागल थे। भूदान के जरिये होनेवाली क्रान्ति के दर्शन से वे दीवाने वने थे। वे भूल गये थे कि वे छोटे है—शक्तिहीन है। अग्नि की एक छोटी-सी चिनगारी भी कपास के ढेर को जला सकती है। विनोबाजी ने अपने "स्थितप्रज्ञ-दर्शन" मे प्रज्ञा को अग्नि की चिनगारी ही कहा है। नव-विचार के कारण हम सब के दिल मे एक चिनगारी पैदा हुई थी और हमारा विश्वास था कि उस चिनगारी मे वह ताकत है जो दुनिया के सारे असत्य, अन्याय के ढेर को जला सकती है। भविष्य के कार्यक्रम के वारे मे हम योजना कर रहे थे। मुझे वे दिन याद आये जब होस्टल के कमरो मे बैठकर हम भारत को स्वतन्त्र बनाने की योजना बडी गम्भीरता से किया करते थे। लेकिन स्वराज आया और लगता था कि बहुत जल्दी ही आया और हमे शहीद बनने का मौका नही मिला। लेकिन अब हमारे लिए पराक्रम का एक नया क्षेत्र खुल गया है। अब क्षणमात्र के लिए चमकनेवाली बिजली नही बनना है। बल्कि तिल-तिल जलनेवाला दीप बनना है।

नारायण और राजेन्द्र भाई गुजरात के दूर जगलो मे आदिवासियो के बीच रचनात्मक काम कर रहे थे। विद्या बहन पाँच साल आन्ध्र की कस्तूरबा ट्रस्ट के एजेन्ट के नाते गाँव-गाँव मे घूमी थी। ये सब उच्च-विद्याविभूषित थे इसलिए जीवन के दूसरे मोहमयी रास्ते उनके लिए खुले थे। फिर भी उन्होंने खुशी-खुशी तपस्या का मार्ग अपनाया था। इन सब मे मै ही अकेली ऐसी थी जो न सिर्फ जन्म से, बल्कि कर्म से भी अधिक बुरुजुआ थी।

आज हम सबको राजा साहब के यहाँ भोजन करने जाना था। विनोबा-जी तो सिर्फ दूध-दही ही खाते है और वह भी बच्चो के समान तीन-तीन घण्टे पर और बिल्कुल नाप-तौलकर खाते है। इसलिए भोजन के विषय मे

तो हम लोगो को ही हर जगह उनका प्रतिनिधित्व करना पडता है। आज हम महल मे भोजन करने जा रहे थे, लेकिन किसी की भी पोशाक वहाँ जाने लायक न थी। फकीर के साथियो का महल मे अत्यन्त नम्रता से स्वागत हुआ। यह युग बदलने की निशानी थी। सत्ता और सम्पत्ति को जीवन का सर्वोत्तम मूल्य माननेवाला आज का समाज नष्ट होनेवाला है और सच्चा जीवन-मूल्य प्रस्थापित होनेवाला है, इसी का वह श्रीगणेश था।

शाम की प्रार्थना-सभा मे विशाल जनसमूह एक घण्टे तक मत्रमुग्ध होकर ऋषि-वाणी सुनता रहा। लगता था जैसे भारतीय सस्कृति के पुनरुत्थान के लिए एक ऋषि पैदा हुआ है। भाषणारम्भ ही दिल खीचनेवाला था। विनोबाजी बोलने लगे—"हमे अभी-अभी स्वराज्य प्राप्त हुआ है इसलिए एक तरफ से हम शिशु है तो दूसरी तरफ से हम दस हजार साल के पुराने अनुभवी है। अनेक परिवर्तनो के बावजूद भी भारत की परम्परा अटूट रही है जो हमे प्राचीनकाल से जोड देती है। असख्य भेदाभेदो के होते हुए भी यहाँ आन्तरिक एकता का दर्शन होता है। बावजूद इसके कि उस समय आमदरफ्त के कोई साधन नही थे, ऋषियो ने सारे भारत को एक बनाया। लेकिन योरप अभी तक एक नही हो पाया है। जिन बातो मे हम अनुभवी है उनमे अपनी विशेषताओ के साथ हमे आगे बढना है। यहाँ पर समाज-शास्त्र के बहुत प्रयोग हुए है। इसमे योरप हमसे पिछडा हुआ है। इसीलिए प्राचीन समाज-शास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तो के आधार पर, नम्र भाव से पश्चिम का अर्वाचीन विज्ञान लेकर हमे नयी समाज-रचना करनी है। हमारी जो चातुर्वर्ण्य की कल्पना है वह स्पर्धा- समाज-रचना की कल्पना है। यद्यपि आज हम उसका विकृत रूप रहे है फिर भी उसकी मूल कल्पना हमे लेनी चाहिये। उस रचना मे एक वर्ण विद्यादान करनेवाला था जो अपरिग्रही था। ब्राह्मणो ने जब से अपरिग्रह छोडा तब से उनका पतन हो गया। जहाँ विद्वान पैसे के पीछे लग जाते है, वहाँ वे समाज के रक्षक न रहते हुए शोषक बन जाते है।

क्षत्रियो को ब्रह्मचर्याश्रम मे गुरु के पास जाकर आम लोगो के समान रहना पडता था। गुरु की सेवा करनी पडती थी। फिर कुछ दिन तक राजा के नाते प्रजा की सेवा करने के वाद फिर वानप्रस्थाश्रम मे जगल जाना पडता था। हर कोई अपना-अपना काम करता था और सव मे सहकार्य था। स्पर्धारहित रचना के लिए समान वेतन जरुरी है। अगर समान वेतन न हो तो वह वर्णव्यवस्था ही नही रह सकती । वर्गव्यवस्था वन जाती है। वर्गनाश का मतलव है सव को समान वेतन, और वर्गहीन समाज का मतलव है वर्णव्यवस्था। वर्णव्यवस्था की मूल कल्पना मे उच्चता या नीचता का भाव नही है। उसी भाव से आज वर्णव्यवस्था दूपित हुई है। सव समान है और हर कोई अपना-अपना काम निष्काम भाव से करे तो मोक्ष प्राप्त हो सकता है। यह विचार उस रचना का मूलाधार है। उसी तरह अपने गाँव मे पैदा हुई चीजे ही इस्तेमाल करना—यह भी उस व्यवस्था का एक मूलभूत सिद्धान्त है। हम चाहते है कि आज की विगडी हुई समाज-रचना को खत्म करके, वर्णव्यवस्था के मूलभूत सिद्धान्तो के आधार पर एक नयी समाज-रचना की जाय।

भूदान-यज्ञ तो उसका आरम्भमात्र है। जमीन का मसला दुनिया में सर्वत्र मौजूद है। दूसरे देशो ने कत्ल और कानून के तरीके से उसे हल करने की कोशिश भी की है, लेकिन वे तरीके हमारी सभ्यता के खिलाफ है। इसलिए हम चाहते है कि करुणा के रास्ते से जो हमारी सभ्यता के अनुकूल है, यह मसला हल हो।"

यह कहकर विनोवाजी ने आखिर मे भारत के सभी भिन्न-भिन्न पक्षो को भूदान के इस कल्याणकारी काम मे जुट जाने को जो आवाहन किया वह इतना कलापूर्ण था कि जीवन-कला के इस महान् कलाकार को निर्माण करनेवाले वापू की स्मृति से मेरा दिल भर आया। विनोवाजी के हर एक शव्द के, कृति के पीछे उनकी प्रेरणा है। विनोवाजी के महान् कार्य का वर्णन एक ही वाक्य मे किया जा सकता है—

"वे वापू की स्मृति को जागृत कर रहे है।"

दोनों बाबा का मिलाप

गोरा बादशाहपुर
२४-४-१९५२

'कानन' का एक गीत है, जिसमे इस दुनिया को तूफान मेल की उपमा दी गयी है। रेलगाडी मे नये मुसाफिर चढते जाते हैं, पुराने उतरते जाते है। कुछ मुसाफिर एक स्टेशन ही तक सफर करते है, तो किसी की लम्बी यात्रा रहती है। हमारी यात्रा को भी यही उपमा लागू होती है। कोई आता है, कोई जाता है, लेकिन विनोबाजी की यात्रा तो अविराम चलती रहती है।

अक्सर लोगो का ऐसा गलत ख्याल रहता है कि गाधीजी, विनोबाजी जैसे महापुरुषो के साथ रहना हो तो हमेशा गम्भीर चेहरा बनाकर रहना पडता है। गाधीजी तो विनोद को प्राणवायु ही मानते थे। विनोबाजी भी इस बारे मे अपने गुरु के चेले है। उनकी गम्भीर मुद्रा, लम्बी दाढी, प्रखर तेजस्वी नेत्र देखकर शायद ही कोई यह ख्याल रखने की हिम्मत करेगा कि वे कभी हँसते या हँसाते होगे। लेकिन कल्पना जगत् और वास्तविक जगत् मे अतर है। इसीलिए तो जीवन मे मजा आता है। इस लम्बी दाढीवाले सत के मुँह से विनोदयुक्त वाणी सुनने का मजा कुछ और ही रहता है।

हमारे यात्री-दल के कर्णधार जो अब उत्तर प्रदेशीय भूदान समिति के सयोजक है, करण भाई, अपनी योजकता के लिए सबके प्रशसापात्र तो बने ही हैं, लेकिन हम उनकी जो कीमत करते है वह दूसरे ही कारण से। हमारे शरीर चलने के श्रम से और काम से थके हुए रहते ही है। ऐसे समय पर हमेशा "हँसो, नाचो, खेलो" का सदेश दे करके सब का श्रम-परिहार करनेवाले करण भाई का हमारे यात्री-दल मे अद्वितीय स्थान है। वे एम० एल० ए० थे, लेकिन उन्हे भूदान जैसे क्रान्ति के काम के मुकाबले राजनीति बिल्कुल ही फीकी मालूम हुई, इसलिए उन्होने उसका त्याग कर दिया। स्वराज्य-प्राप्ति के पहले का क्रान्तिकारी राजनैतिक जीवन स्वराज्य के बाद सत्ता की लालसा मे परि-

वर्तित होते हुए देखकर राजनीति छोडकर अपने जीवन की दिशा बदलने-वाले कई निकलेगे। अब तो बडे बडे लोग भी इस बात को महसूस करने लगे है। फिर भी करण भाई जैसे "बुनियादी पत्थरो" की अपनी महत्ता तो रहेगी ही। . बाबा राघवदास जी भी "बुनियादी पत्थर" है जिनके कारण भूदान की बुनियाद मजबूत होनेवाली है। बाबाजी ने अपनी साधुता के कारण उत्तर प्रदेश की जनता के हृदय मे स्थान पा लिया है। लेकिन विनोबाजी तो उनकी साधुता की अपेक्षा उनकी निर्मलता और ऋजुता पर अधिक मुग्ध है। जब उन दोनो की बाते चलती है तब छोटा गौतम कहता है— "अब दोनो बाबा मिल गये है फिर उन्हे दुनिया की सुध-बुध कैसे रहेगी?"

कल का और आज का पडाव याने उत्तर और दक्षिण ध्रुव जैसे था। कल बडा शहर था। दिन भर चारो ओर लोगो की भीड लगी रहती थी, बडे-बडे लोग मिलने आते थे, चर्चाएँ चलती रहती थी, हमारे दरवाजे के पास मोटरो की कतार लगी हुई रहती थी और आज ठीक उसके विपरीत था—छोटा सा गाँव, एकान्त शान्त, आश्रम। एक सुन्दर तालाब जिसके चारो ओर ऊँचे पेड और आश्रम की छोटी-छोटी झोपडियाँ पक्षियो का कलरव और पत्तो की सरसराहट को छोडकर वहाँ अद्भुत शान्ति विराजमान थी। मन चाहता था कि हम किसी वृक्ष के नीचे बैठ जाये और सामने के तालाब की शान्त प्रच्छन्न छवि देखें एव कानो मे पक्षियो का कलनाद तथा पत्तो का सगीत सुने। ग्रीष्म की प्रखर गर्मी मे भी मद, शीतल हवा शरीर को स्पर्शसुख दे रही थी। ऐसे समय मे जीवन के गूढ प्रश्नो पर चिन्तन करे या हाथ मे लेखनी लेकर जो-जो विचार स्फुरण होवे उन्हे लिखे अथवा निसर्ग-सौन्दर्य का चुपचाप सुख लूटे—यही जी होता है।

ऐसे समय मे विनोबाजी का प्रकृति-प्रेम विशेष रूप से दिखायी देता है। घण्टो वे सृष्टि-सौन्दर्य का ही स्वाद लेते रहते है। ऐसे समय विनोबाजी वेदो के सुन्दर प्रकृति वर्णन की ऋचाये बोलने लगते है। परन्तु हम तो सस्कृत के "शुद्ध-बुद्ध ज्ञानी" होने के कारण समझ बैठते कि वे "आत्मा-ब्रह्म" विषयक कुछ बोल रहे है।

आध्यात्मिक कर्मयोग

महिरॉवाँ
२५-४-१९५२

विनोबाजी के निजी सचिव दामोदरजी उत्साह और लगन के प्रतीक है। विनोवाजी का सदेश प्रत्येक हृदय तक पहुँचे—यही उनकी एक-मात्र चाह है। विनोवाजी का हर एक शव्द वे लेखनी पर उठा लेते है। मुझे उनके पास काम मिला। विनोबाजी के भाषणो के नोट्स लेना, टाइ-पिस्ट से टाइप करवा लेना, अखवारो के लिए रिपोर्ट्स वनाना आदि काम मुझे मिला जो मुझे वेहद पसन्द आया। इस काम के जरिये मुझे विनोवाजी के विचारो का अध्ययन करने का मौका मिला। इस समय यात्री-दल मे दो टाइपिस्ट है—तामिलनाड का व्यकटेशय्या और उत्तर प्रदेश का श्रीवास्तव। दोनो कार्य-विभाजन के तत्व को सामने रखते हुए टाइपिग का काम करते है, लेकिन क्रान्तिवीर वनने मे किसी से पीछे नही रहते। न उन्हे आराम की परवाह है और न नीद की चिन्ता। कितना भी काम क्यो न हो, वे हँसते-हँसते कर लेते है। अय्या तो गवैया होने के कारण काम करते-करते वीच मे गा भी लेता है। उसकी हिन्दी टाइपिंग की गति प्रशसनीय है। दोनो उम्र मे छोटे होते हुए भी इस तरह जिम्मेदारी से काम करते है कि वडे-वडे उनका लोहा मानेगे।

व्हीनसेट शीन की गाधीजी के जीवन पर लिखी हुई "Lead Kindly-Light" किताव मुझे वहुत ही पसद आयी थी और इस-लिए मै चाहती थी कि विनोवाजी उसे पढे। उन्हे वह किताव देते समय मेरे मन मे डर था, लेकिन उन्होने वह किताव न सिर्फ पढी, वल्कि अपने 'सेवक' मासिक के लिए उस पर एक वहुत अच्छा अभिप्राय भी लिख दिया। उन्हे वह किताव अच्छी लगी, यह वात मुझे भी खुश करनेवाली थी। उन्होने उस किताव के वारे मे लिखा —

"गाधीजी के जीवन पर एक अमेरिकन भाई की लिखी हुई उडती नजर डालनेवाली एक पुस्तक मेरे देखने मे आयी। नागपुर के श्री पु० य०

देशपाण्डे तथा उनकी कन्या निर्मला जो आजकल मेरे साथ घूम रही है, इन दोनो की तरफ से मिली हुई वह भेट थी इसलिए उसको पढना ही पडा। अमेरिकन स्वभावानुसार सत्य के साथ कुछ वाहरी वातो की मिलावट भी इसमे है। फिर भी वह किताव मुझे वहुत अच्छी लगी। उसका कारण यही है कि लेखक ने गाधीजी के जीवन का भारतीय विचारो के साथ समरस होकर अचूक दर्शन किया है। गाधीजी ने अपनी आत्मकथा को "सत्य-शोधन" कहा है और इस लेखक ने उनके जीवन को "कर्मयोग का मार्ग" कहा है। उसके विपय-प्रवेशक अध्याय मे गीता का सारा रहस्य उँडेल देनेवाला एक अध्याय रख दिया है। उसका नाम है--"कौन-सा युद्ध ?" अन्त मे गीता का सक्षेप मे ही विवरण देनेवाला एक परिशिष्ट जोडा है जिसका नाम है--"गीता और गाधीगीता"। इस प्रकार लेखक ने सारी पुस्तक गीतामय वना दी है। लेखक कहता कि गीता मे कहे हुए आध्यात्मिक कर्मयोग का उससे (गाधीजी) वढकर स्पष्ट उदाहरण इतिहास में अन्यत्र नही है। आजकल कर्मयोग शब्द का प्रयोग वहुत ही ढिलाई से किया जाता है लेकिन अपना सारा जीवन विश्व की सेवा मे लगा देना, अहिसा, सत्य आदि सिद्धान्तो का कट्टरता पूर्वक पालन करना, अहकार ओर आसक्ति का जरा भी स्पर्श न होने देना, निरन्तर आत्मशोधन करना, जीवन की प्रत्येक क्रिया ईश्वर से सलग्न करना, इन सव के एकत्रीकरण के विना गीता के अनुसार कर्मयोग सम्भव नही। गीतानुसारी आध्यात्मिक कर्मयोग के उदाहरण इने-गिने है। ऐसे उदाहरणो की प्रत्यक्ष प्रगति जो हमने (गाधीजी के रूप मे) पायी है वह हमारा महान् भाग्य है। इस उदाहरण का मनन करे और उसे अपने जीवन मे उतारे।"

दामोदरदासजी की लडकी मृदुला और स्व० जमनालाल वजाज का नाती गौतम ये दोनो विल्कुल वच्चे है। लेकिन चलने मे वे हम सव के गुरु वन सकते है। विनोवाजी के आदेशानुसार आजकल वे दोनो अपनी सारी चीजे दो-तीन थैलियो मे भरकर थैलियाँ लेकर १५ मील चलते है।

'एकला चलो'

शाहगंज

२६-४-१९५२

पिछले चार-पाँच दिनो के आराम के बाद आज मैंने चलना आरम्भ किया। नित्यक्रम के अनुसार तीन बजे उठकर चार बजे चलना शुरू हुआ। विनोबाजी के पीछे-पीछे जाते हुए अनुपम-सा आनन्द हो रहा था। आज का रास्ता खेतो मे से होकर गुजरनेवाला और कांटो से भरा था। विनोबाजी के दोनो ओर मृदु और गौतम लालटेन लिए चल रहे थे। बस, वही तो प्रकाश था और चारो ओर घनघोर अन्धकार छाया हुआ था। विनोबाजी के गति से चलने पर ही प्रकाश मिलना सम्भव था। वरना अँधेरे में कही गिर जाने की ही अधिक सम्भावना थी। यदि कोई कवि मौजूद होता तो उस पर एकाध सुन्दर कविता लिख डालता और कोई तत्वज्ञानी होता तो "विनोबा की गति", "प्रकाश", "अन्धकार मे कही गिर जाना" आदि पर प्रबन्ध लिख डालता। लेकिन हम न कवि थे न तत्वज्ञानी। इसलिए हम केवल गिरने के डर से और कांटो से बचने की दृष्टि से विनोबा-जी की गति से चलने की कोशिश कर रहे थे।

पौ फटते ही रास्ते मे एक कमल से भरा तालाब मिला जिसमें सफेद कमलो की बिछात बिछी थी। सूर्योदय हो रहा था। सूर्य की किरणे कमल की पँखुडियो को जगा रही थी। दौड जाये और कमल तोड लाये ऐसी इच्छा होती थी। यह बात तो उसी प्रकार हुई जैसे कल्पवृक्ष के नीचे बैठते ही इच्छा पूर्ण हो जाती है। विनोबाजी को अर्पण करने के लिए सुन्दर कमल के फूल भेंट रूप मे कितने ही ग्रामीण लाये परन्तु विनोबाजी दूर निकल गये थे इसलिए उन्होंने हमे ही उनका प्रतिनिधि समझकर दे डाले ताकि वे फूल विनोबाजी तक पहुँच जाये।

आजकल हमारे यात्री-दल मे रा० स्व० सघ के कुछ कार्यकर्ता भी रहते है। आज रास्ते मे उनमे से एक ने विनोबाजी से हिन्दुत्व और राष्ट्री-

यता पर एक सवाल पूछा और फिर विनोवाजी की वाक्-सरिता वहने लगी—"हमे सव धर्मो की अच्छी-अच्छी वाते लेकर उनका समन्वय करना होगा। सव मे जो समानता नजर आयेगी उसको अधिक महत्त्व देना होगा। संस्कृति के सत्य, अहिंसा, त्याग आदि मूल तत्व है। सव धर्मो मे हम यही मूल तत्व पाते है। सिर्फ उपासना के भिन्न-भिन्न तरीके होते है जिन्हे मजूर करना होगा।"

एक भाई ने कहा—"आप कोई सगठन क्यो नही खडा करते?"

विनोवा—"सगठन का वन्धन मुझे नही चाहिये। इस किस्म के वधन कभी-कभी मार्गभ्रष्ट कर देते है। महम्मद पैगम्वर ने दुनिया को शान्ति और मानवता का सदेश दिया। उस समय उनके अनुयायियो की तादाद कम थी। उस समय वह कहता था—"खुद मरो लेकिन मारो मत।" उसको वहुत तकलीफे सहनी पडी जिसके कारण उसे मक्का छोडकर भागना पडा। फिर उसने कहा—"भागने से तो अच्छा है कि शस्त्रो से अपनी रक्षा की जाय।" इस विचार को मजूर करते हुए उसने अनजाने मे ही शस्त्र को स्वीकृति दे दी। उस समय उसकी सेना को ऐसा आदेश था कि लडाई के समय भी नमाज पढने के वक्त लडाई वन्द करके नमाज पढी जाय। लेकिन इससे दुश्मन को फायदा हुआ और उसकी सेना को वहुत वडा नुकसान हुआ। इसलिए फिर उसने अपनी सेना के दो हिस्से वनाये। एक हिस्सा लडता रहता था और दूसरा नमाज के वक्त नमाज पढता था। इस तरह हिंसा को प्रवेश मिल गया। रक्षा (defence) के नाम पर शस्त्र आया कि—दूसरो पर हमला करने मे ही अच्छी रक्षा हो सकती है (Offence is the best type of defence)—ऐसा कहा जाता है। फिर किसे रक्षा (Defence) कहा जाय, किसे आक्रमण (Offence) कहा जाय यह सवाल पैदा होता है। इसलिए एक दफा तलवार हाथ मे ली कि फिर उसका प्रभाव जमने लग जाता है। जिस धर्म के भगवान रहीम और रहमान (अत्यन्त दयालु) है, जिसका नाम इस्लाम (शान्ति) है, जिसके झण्डे पर चन्द्रमा और सितारे है—याने सूर्य जैसी प्रखर वस्तु नही वल्कि चन्द्रमा जैसी सौम्य शीतल वस्तु है, उस इस्लाम धर्म के प्रसार मे कही-कही तलवार का भी प्रयोग हुआ। अर्थात् १३०० साल पहले

पैगम्बर यह नही सोच सकता था कि हिसा को प्रवेश देने से आगे चलकर क्या-क्या होगा। लेकिन हमे अव उनके अनुभवो से कुछ सीखना चाहिये। मुमकिन है कि अगर मै पैगम्बर के जमाने मे पैदा होता तो उनसे भी अधिक भारी गलतियाँ करता। इसलिए आज हम यह नही कह सकते हैं कि पैगम्बर ने हिसा को मजूर करने मे गलती की। लेकिन अव उनका अनुभव हमारे सामने है। इसलिए हमे हिसा को सर्वथा त्याज्य समझना चाहिये।

. सगठन के वारे मे मैने कई दफा वापू से भी वाते की थी। उन्हे मेरा विचार जँच गया और उन्होने मुझे सव सस्थाओ से मुक्त किया। आज मै दुनिया की किसी भी सस्था का सदस्य नही हूँ। मै विल्कुल मुक्त हूँ।. "भागने से हिसा वेहतर है" इस किस्म के विचारो को विकृत रूप मिल सकता है। कइयो को लगता है कि विना सगठन के काम कैसे होगा? लेकिन मेरे विचार इस वारे मे विल्कुल सुलझे हुए है। मै हमेशा इन्सान से मिलता हूँ, किसी सस्था के प्रतिनिधि से नही मिलता हूँ। मै प्रत्येक को इन्सान के नाते ही पहचानता हूँ। इन्सान के नाते हर कोई भूदान का काम कर सकता है।"

"सतो के उद्देश्य वहुत ऊँचे होते है। लेकिन उन उद्देश्यो को वास्तविक जगत् मे लाने के लिए कभी-कभी उनको समझौता (Compromise) करना पडता है, जिससे वे कुछ असफल हुए-से दिखायी देते है। लेकिन उनकी वह असफलता भी दुनिया के लिए वडी मूल्यवान सावित होती है। उस असफलता मे से ही दुनिया के कल्याण का मार्ग निकलता है। साधारण आदर्श को सामने रखकर सफलता प्राप्त करने से वेहतर है कि ऊँचे आदर्श सामने रखकर असफल हो।"

"आज इस वात की सख्त जरूरत है कि हिन्दू और इस्लाम दोनो धर्मो का गहराई के साथ अध्ययन करके दोनो को पथ-प्रदर्शन करनेवाला कोई निकले। मै नही जानता कि भगवान यह काम किसके जरिये करवाना चाहता है। लेकिन मेरा विश्वास है कि यह काम होगा जरूर।"

रास्ते मे एक गाँव आया जहाँ की जनता ने स्वागत की जोरदार तैयारी की थी। फूलमाला, आरती आदि सब साधनो से सुसज्जित जनता

दर्शन के लिए खडी थी। फूलो से और पत्तो से शोभित सुन्दर मच तैयार किया गया था। विनोवाजी को रुकना ही पडा और दो-चार शब्द वोलना ही पडा। लेकिन मालाओ के साथ-साथ भूदान भी काफी मिला इसलिए रुकना सार्थक हुआ।

पडाव नजदीक आ रहा था लेकिन मेरी सारी ताकत खमत्म हुई जा रही थी। एक कदम भी आगे वढना मुश्किल हो रहा था। इतने मे गाँव के लोग राम-नाम गाते हुए हमारी ओर आते नजर आये और मुझमे नयी ताकत पैदा हुई। व्यकटेशय्या गाने लगा—"भूमि-दान-यज्ञ हम सफल वनायेंगे।" हम सव उसके साथ गाने लगे। रास्ते के दोनो ओर सैकडो लोग खडे थे, जयजयकार कर रहे थे। फूलो की वर्पा हो रही थी। वह सारा दृश्य इतना आकर्पक था कि "विश्व का कलह मिटे, फिर सदा को शान्ति हो" यह गीत-पक्ति न हम सिर्फ गा रहे थे वल्कि हमारे दिलो मे उसी श्रद्धा की ज्योति जग गयी थी। सैकडो कठो से एक ही आवाज निकली—"महात्मा गाधी की जय।" मेरे दिल मे वही स्वर गूँजा। भारत मे अहिंसा का एक नया प्रयोग आरम्भ हुआ था। मानव के हृदय मे छिपी हुई सद्प्रवृत्तियो को जगाकर, पुरानी दुनिया के पुराने जीवन-मूल्यो को नप्ट करते हुए नयी दुनिया के निर्माण के लिए नये जीवन-मूल्य स्थापित करने का कार्य आरम्भ हुआ था। गाधी का शिष्य पथ-प्रदर्शन कर रहा था और गाधी की जनता उसके साथ थी। परमाणु-युद्ध के भय से भयभीत हुए इस दुनिया के श्रद्धाहीन मानवो को यह घटना कितनी आशादायी प्रतीत होगी! निराशा के भयानक अन्धकार को नप्ट करने के लिए आशा का छोटा-सा नन्दादीप भी काफी है। मानो भारतीय जनता की मूक वाणी दुनिया से यह सव कहना चाहती थी। लेकिन उसने चार ही शब्दो द्वारा सव कुछ कह डाला—"महात्मा गाधी की जय।"

पडाव पर पहुँचते ही स्वागत के लिए उपस्थित जन-समुदाय के सामने विनोवाजी अक्सर चन्द शब्द वोल देते है। वैसे प्रमुख प्रवचन तो शाम की प्रार्थना मे होता है। लेकिन सुवह के दो-चार वाक्यो मे ही वे कभी-कभी

बहुत कुछ कह डालते है। आज उन्होंने कहा—"विचार शक्तिमान होता है। पुरानी समाज-रचना का सहार और नव-निर्माण दोनो करने की ताकत विचार मे ही है। दुनिया मे विचार से बढकर शक्तिशाली वस्तु दूसरी कोई नही है। मै आपको एक विचार दे रहा हूँ। मै चाहता हूँ कि आप उसे ग्रहण करे। विचार के ही जरिये मै हर हृदय मे प्रवेश पाना चाहता हूँ।"

आज शाम की प्रार्थना-सभा मे विनोबाजी का जो भाषण हुआ वह सत का प्रवचन नही था, कलाकार की कलाकृति थी। नये जीवन का एक सुन्दर कल्पना-चित्र था। "हम ग्रामो का नव-निर्माण करना चाहते है। इस तरह कि हमारे ग्राम न सिर्फ नव-जीवन का आदर्श उपस्थित करेगे, बल्कि सत्रस्त, सम्मोहित और सभ्रमित जगत् को शान्ति का पथ दिखायेगे।" विनोबाजी ने यह सारा इतने विश्वास से कहा कि क्षणमात्र के लिए आभास हुआ जैसे उस कल्पना-चित्र ने साकार रूप धारण किया हो। "और इसका अधिष्ठान है भूदान-यज्ञ। "सबै भूमि गोपाल की" इस तत्व के अनुसार गाँव के जमीन का फिर से बँटवारा होगा, जमीन के साथ-साथ बुद्धि का भी बँटवारा होगा जिससे हर कोई अपनी बुद्धि का स्वतन्त्र रूप से विकास कर सकेगा। गाँव का सारा कारोबार गाँव-पचायत करेगी जिससे हर एक को राज सँभालने का शिक्षण और मौका मिलेगा। सब को काम मिलेगा, सब को ज्ञान मिलेगा। हर रोज शाम को सारे गाँववाले प्रार्थना-मदिर मे इकट्ठे होगे जहाँ श्रवण होगा, ज्ञान-चर्चा होगी। कभी-कभी सगीत, नृत्य आदि का कार्यक्रम भी होगा। हमारे गाँव कला, सस्कृति और सच्चे धर्म के केन्द्र बन जायेगे। पाँच लाख गाँवो मे से पाँचो लाख गाँव ऐसे बनेगे कि सुन्दरता, कला और धर्म को देखने के लिए बाहर से लोग यहाँ आयेगे। सच्चा स्वराज्य, ग्रामराज्य या रामराज्य स्थापित होगा।" क्या यह केवल स्वप्न है ? हमने आज तक ऐसे कई स्वप्न देखे थे। गाधीजी का आदर्श भारत, गुरुदेव की कविता का भारत निर्माण करने का स्वप्न कइयो ने देखा होगा। लेकिन विनोबा का स्वप्न केवल कल्पना-चित्र नही है। बल्कि कर्मतूलिका और

विश्वानुभूति के पटल इन दोनो के आधार पर उसका यह चित्र सजीव होगा। "इसीलिए तो मैं पैदल घूमता हूँ। आपको एक विचार दे रहा हूँ। यदि विचार आपको जँच जाय तो आप उसके मुताबिक अपने जीवन मे परिवर्तन लायेगे।" इस तरह अनेक व्यक्तियो के जीवन-परिवर्तन होते-होते सारे समाज मे परिवर्तन हो जायगा। हृदय-परिवर्तन, जीवन-परिवर्तन और समाज-परिवर्तन यह क्रान्ति की त्रिविध प्रक्रिया है। क्रान्ति पहले दिल मे होती है फिर समाज मे। जैसे ज्योति से ज्योति जागती है उसी प्रकार जगा हुआ हृदय दूसरे हृदयो को उठा देता है। क्रान्ति का रास्ता क्रातिदर्शी कवि ने पहले ही दिखा दिया है। अपने हृदय को जलाकर अकेले ही आगे बढते चलो।

दूसरा भाग

फूलों की राह

सुरहुरपुर (फैजावाद)

२७-४-१९५२

झुटपुटे के प्रशान्त वातावरण मे, लालटेन के धुँवले प्रकाश मे तेजी से वढते हुए विनोवा को देखकर "स्थितवी वोलता कैसे, वैठता और डोलता ?" इस प्रश्न का उत्तर सहज मिल जाता है। चाहे भूदान अविक मिले या कम मिले। स्वागत के लिए चार व्यक्ति आये या चार हजार आये, कोई स्तुति करे या निन्दा, उन पर किसी भी चीज का असर होते दिखायी नही देता है। उनका निष्काम कर्मयोग तो अविराम चलता रहता है। लगता है वे सुख-दुख से परे अनासक्त अवस्था मे सदा विचरते है।

आज का पडाव आकार से तो छोटा ही गाँव था लेकिन भक्ति मे वडा था। गाँव में प्रवेश करते ही देखा सारे रास्ते साफ-सुथरे, दूकान, घर आदि सव स्वच्छ और सुन्दर, जगह-जगह द्वार, अल्पना से सजायी हुई भूमि और दीवारो पर मोटे अक्षरो मे लिखे हुए सत-वचन। विनोवाजी आगे निकल चुके थे, मै पिछड गयी थी। उन पर की गयी पुष्पवृष्टि से सारा रास्ता पुष्पाच्छादित वन गया था। पीछे से आने के कारण मेरे लिए फलो का मार्ग वन गया था।

फैजावाद जिले मे गाधी आश्रम का रचनात्मक कार्य दिखायी देता है। जगह-जगह उनके आश्रम और खादी-उत्पादन केन्द्र है। गाधी आश्रम के कारण यहाँ पर जो जन-जागृति हुई है उसका अनुभव हम प्रतिदिन ले रहे है। गाधी आश्रम के कार्यकर्त्ता अपनी-अपनी रुचि के अनुसार राजनीति मे स्वतन्त्र रूप से भाग ले सकते है। इस सस्था के प्रमुख, आचार्य कृपालानी जी एक राजनैतिक पक्ष के नेता है और उनके दाहिने हाथ श्री विचित्र भाई काग्रेस सरकार मे एक मन्त्री है।

पुनर्जन्म और विज्ञान

अकवरपुर (फैजावाद)
२८-४-१९५२

रास्ते मे लोग विनोवाजी से कई प्रकार के सवाल पूछते है। आज मैंने डरते-डरते कई सवाल पूछ ही लिये। विनोवाजी का प्रकाण्ड पाण्डित्य और मेरा गहरा अज्ञान याने प्रकाश और अन्धकार के जैसा ही है। इसीलिए आज तक मैंने कुछ पूछने की हिम्मत नही की है। लेकिन मैंने जव देखा कि उनसे—"आप जनेऊ क्यो नही पहनते?", "आपकी दाढी सफेद और वाल काले क्यो है?" जैसे ऊटपटाँग सवाल भी पूछे जाते है, तव मैंने भी अपनी शकाओ का समाधान करने के लिए कुछ सवाल पूछे।

प्रश्न—"हिन्दू-धर्म के पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धान्तो मे केवल नियतिवाद (Determinism) है या उसमे स्वेच्छा (Free-will) के लिए भी कुछ गुजाइश है?"

विनोवा—"यदि किसी को व्यापार करने के लिए कुछ पूंजी दी जाय और उससे कहा जाय कि "अव तू चाहे जो कर सकता है।" तो पूंजी को वह घटा भी सकता है और वढा भी सकता है। इसमे उसको स्वतन्त्रता है या नही? उतनी स्वतत्रता हमे भी प्राप्त है। यदि वैल का जन्म मिला तो हम हाथी का काम नही कर सकते है। लेकिन वैल के लिए जो सम्भव है वह सव कर सकते है। एक दफा जेल मे हमने देखा, चीनी के पास कुछ चीटियाँ इकट्ठी हुई थी। मैंने विनोद मे अपने साथियो से पूछा—"ये चीटियाँ स्वतन्त्र है या परतन्त्र?" हो सकता है वे चीटियाँ कभी भी जेल के वाहर न निकली हो। मानव अपने पूर्वजन्मो की कुछ पूंजी लेकर पैदा होता है। लेकिन फिर उसके वाद उसे चाहे जो करने की स्वतन्त्रता रहती है।"

प्रश्न—"लेकिन मार्क्स कहता है कि मानव स्वतन्त्र नही है। पूंजीपति (Capitalists) और श्रमिक (Proletariate) दोनो अपने-अपने जाति-वोध (Class-consciousness) के मुताविक काम करते रहते है।"

विनोवा—"आधुनिक शास्त्रज्ञो की यह एक अजीव बात है कि वे कुछ दो-चार घटनाये देखकर उस पर से अनुमान लगाकर एक ढाँचा वना लेते है। और फिर सारे मानव-जाति का इतिहास उस ढाँचे मे ढाल देते है। मसलन भारत जव परतत्र था उस समय यदि भारत का इतिहास लिखा जाता तो इस तरह लिखा जा सकता था कि "भारत वेदो के जमाने से लेकर आज तक परतत्र ही रहा है। क्योकि इस देश की आवोहवा और मनुष्यो मे ही यह दोप है जिससे कि यह देश हमेशा गुलाम रहा है।" और फिर भारत स्वतन्त्र हो जाने के वाद इतिहास लिखा जाता तो इस तरह से लिखा जा सकता है कि "भारत देश वेदो के जमाने से लेकर आज तक स्वतन्त्र ही रहा है। इस देश का इतिहास इस बात का सवत देता है कि चाहे जितनी आपत्तियाँ आयी हो भारत हमेशा स्वतन्त्र ही रहा है। क्योकि इस देश की आवोहवा और मनुष्यो मे कुछ ऐसा गुण हे जिसके कारण अग्रेज सल्तनत जैसी भारी सल्तनत से भी लोहा लेकर यह देश स्वतन्त्र हुआ।" . . इस प्रकार अपना एक दृष्टिकोण वना लेना और सारे इतिहास को वह लागू करने की जो प्रवृत्ति है, वह इसमे काम करती है। मान लो कि १, २, ४, १२ और २४ इतने अक सामने रक्खे है। अव यदि हम उसमे से १ और २ को ही देखेगे तो हम इस प्रकार का अनुमान लगा सकेगे कि सारी सृष्टि की रचना १, २, ३, ४ के क्रम से हुई है। यदि हम १, २, ३, ४ अको को देखेगे तो यह अनुमान लगा सकेगे कि सारी सृष्टि की रचना इस प्रकार हुई है कि १, २, ४, ८ याने दुहरा हो जाता है। यदि हम १, २, ४ और १२ इतने अको को देखेगे तो यह अनुमान लगा सकेगे कि सारी सृष्टि की रचना ही इस प्रकार हुई हे कि सृष्टि मे दुहरा, तिहरा, चौहरा ऐसा क्रम है। . इस तरह सान्त ज्ञान के आधार पर एक नियम (Law) वनाना और उसे अनन्त को लागू करना, यह जो आधुनिक शास्त्रज्ञो की प्रवृत्ति है वह मूलत सदोप है।"

प्रश्न—"क्या हम विज्ञान के आधार से पुनर्जन्म के सिद्धान्त को सही सावित कर सकते है?"

विनोवा—"विज्ञान मूलत इन्द्रियगम्य है। इसलिए उसकी एक सुनिश्चित मर्यादा होती है। विज्ञान तो अत्यन्त नम्र होता है। विज्ञान यह नही कहता कि परमेश्वर है ही नही। क्योकि इस प्रकार का निषेधात्मक वाक्य कहने के लिए भी ज्ञान चाहिये। विज्ञान तो कहता है कि "परमेश्वर हो भी सकता है, नही भी हो सकता है। लेकिन हम अभी तक उसके वारे मे कुछ भी नही जानते है।" मनुष्य की इन्द्रियाँ भी काफी ज्ञान ग्रहण कर सकती है। यदि हमारे हाथ मे गन्दगी लगी है और वही हाथ हम नाक के पास ले जाते है तो हमारी नाक उसे सह नहीं सकती है। और हम फौरन उस हाथ को वहाँ से हटा लेते है। जब विज्ञान कहता है, गन्दगी मे अति सूक्ष्म जन्तु होते है। इसीलिए हमारी नाक उसे सहन नही कर सकती है। इस तरह कई वाते विज्ञान को वाद मे मालूम होती है। विज्ञान तो इन्द्रियो की सहायता से आगे वढता जाता है। चाहे कितनी वढिया दुरवीन क्यो न हो, आखिर देखना होगा हमे अपनी आँख से ही। कोई भी सिद्धान्त इन्द्रियो के जरिये सही हुए वगैर विज्ञान उसे नही मानता है। लेकिन इन्द्रियो की अपेक्षा मन अधिक शक्तिशाली होता है। और मन से भी शक्तिशाली है आत्मा। क्योकि उस मन के सारे व्यापार मैं (आत्मा) जान सकता हूँ। चाहे जितना वेगवान साधन भी क्यो न हो, एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने मे उसे कुछ तो समय लगेगा ही। प्रकाश किरण की गति सेकड मे पौने दो लाख मील है। याने चन्द्रमा से निकले हुए प्रकाश किरणो को यहाँ आने मे तीस सेकड लगते है। लेकिन हमारा मन एक सेकड से कम समय मे ही यहाँ से चन्द्रमा तक पहुँच जाता है। अभी हम जहाँ ध्रुवतारा देख रहे है, क्या वह वास्तव मे उस समय वहाँ पर है? प्रकाश किरण को ध्रुव से यहाँ तक आने मे तीस साल लगते है। इसका मतलब यह है कि अभी हम जो ध्रुवतारा देख रहे है वह तीस साल पहले वहाँ पर था। हो सकता है उन्तीस साल पहले वह नष्ट भी हो चुका हो लेकिन हम तो एक साल तक और उसे देख सकेगे और कहेगे कि वह नष्ट हुआ, लेकिन वह तो तीस साल पहले ही नष्ट हो चुका था। ध्रुव तो काफी

नजदीक है। लेकिन कई सितारे ऐसे होते है जो हमसे बहुत दूर कई 'प्रकाश-वर्ष' दूर है। तो वहाँ से निकली हुई प्रकाश किरणो को यहाँ तक आने मे सैकडो साल लग जाते है। . इस प्रकार सृष्टि मे लघुता और विशालता दोनो अनन्त है। तो फिर तर्क के आधार पर हम यह कह सकते है कि मानव-जीवन का आदि-अन्त क्यो होगा ? एक दफा एक मुसलमान भाई से चर्चा चल रही थी। मैने उससे कहा कि एक लडका पैदा होता है और दो मिनटो मे ही मर जाता है। तो क्या आखिरी दिन न्याय करते समय अल्ला उसके दो मिनटो के पाप-पुण्य को देखकर न्याय करेगा ? एक जीव अनन्तकाल तक अव्यक्त रहता है। फिर दो ही मिनटो के लिए व्यक्त हो जाता है और फिर अनन्तकाल तक अव्यक्त रहता है। यह बात तर्कसगत नही मालूम होती है। मैने सुना है कि आजकल कुछ ईसाई भी पुनर्जन्म को मानने लगे है। इसलिए हम यह नही कह सकते कि जब तक विज्ञान के जरिये पुनर्जन्म का सिद्धान्त सही साबित नही होता है तब तक उसे मजूर नही करना चाहिये।

योगियो की बात तो अलग ही है, लेकिन सामान्य मनुष्यो के जीवन मे भी ऐसे कई प्रसग आते है जिनसे कि पुनर्जन्मो की बात सही मालूम होती है। मै अपना ही एक अनुभव बता रहा हूँ। उस समय मै पॉच साल का बच्चा था। अपनी मॉ के साथ मै नाना के घर जा रहा था। हम लोग प्लैटफार्म पर बैठे रेलगाडी (Train) की राह देख रहे थे। सहसा मेरी आँखो के सामने एक दृश्य उपस्थित हुआ। मैने देखा कि एक घर है, उसका एक बडा दरवाजा है, फिर एक बगीचा है, दाहिने ओर एक सीढी है। मैने तब तक कभी भी वह घर नही देखा था। लेकिन बाद मे जब मै नाना के घर पहुँचा तो मुझे ताज्जुब हुआ। नाना का घर ठीक वैसा ही था जैसा मैने देखा था। फिर मैने माँ से उस घटना के बारे मे पूछा तो उसने कहा—"पूर्वजन्म के कुछ ऋणानुबन्ध होगे।" मै अभी तक उसे भूला नही हूँ। . और यदि हम पुनर्जन्म को नही मानेगे तो जीवन मे कोई स्वाद ही नही रहेगा। मान लो, इस समय कोई साँप मुझे काटता है और मै मर जाता हूँ तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि मैने आज तक जो सारा

ज्ञान प्राप्त किया वह वेकार गया ? साँप के जैसे वुद्धिशून्य और क्षुद्र प्राणी के काटने से मेरा सारा ज्ञान एक क्षण मे नष्ट हो सकता हो तो फिर मेरी सारी ज्ञान-लालसा ही खत्म हो जायगी। लेकिन मुझे और भी ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती है क्योकि मै पुनर्जन्म मे विश्वास करता हूँ। मैंने देखा है कि कइयो को सिगरेट-वीडी पीने की इच्छा होती है। कई वडे-वडे लोगो को उसमे आनन्द महसूस होता है। लेकिन मुझे कभी भी ऐसा नही लगता कि जरा इन वातो का मजा चख लूं। मेरा मन कभी इस ओर मुडता ही नही। इसका कारण यह हो सकता है कि मैंने अपने पूर्वजन्मो मे कुछ ऐसे अनुभव लिये हो। मैंने कुछ ऐसे प्रयोग किये हो और उनकी व्यर्थता मुझे महसूस हुई हो। यह सारा सम्भव है। इसका मतलव यह है कि हर कोई अपने पुराने जन्मो के अनुभवो की पूंजी लेकर नया जन्म लेता है। लेकिन भाई, विज्ञान को तो विल्कुल पूरा प्रमाण (Full-proof) चाहिये। Full कहो या Fool कहो, सयानो के लिए तो थोडा-सा भी प्रमाण (Proof) काफी है । लेकिन वैज्ञानिको के लिए और सामान्य जनो के लिए तो विल्कुल "Fool-proof" चाहिये।" यह सुनकर हम सव खिलखिलाकर हँस पडे।

अकवरपुर मे खादी का एक वडा उत्पादन केन्द्र है और आश्रम भी है। शहर मे प्रवेश करते ही जनता ने अत्यन्त उत्साह से स्वागत किया। लेकिन आश्रम के द्वार पर जो स्वागत हुआ वह उससे वढिया था। सारा आश्रम आम्रपर्णो एव अल्पना से सजाया हुआ था। द्वार पर खादी पहनी हुई वहनो ने विनोवाजी को तिलक लगाया और आरती उतारी। जहाँ कही महिलाओ को निर्भयता से विचरते देखते है वहाँ हम फौरन समझ लेते है कि नजदीक यही कही रचनात्मक काम करनेवालो का आश्रम है। प्राचीनकाल मे होम का धुआँ और निर्भयता से चौकडी मारते हुए हिरनो को देखकर पहचान लेते थे कि नजदीक कही आश्रम है। लेकिन अव तो होम के धुएँ के वजाय स्वच्छता और व्यवस्थितता और हरिणो के वजाय हरिणाक्षी यही आश्रम की पहचान है।

आश्रम का वातावरण प्रशान्त और रम्य है। सुन्दर वगीचे और कल-कल वहनेवाले झरने। लीची, वेल और नीलगिरी के वृक्ष तो वडे

सुहावने मालूम होते थे। इन गर्मी के दिनो में बेल का शर्बत मिलने पर तबीयत खुश हो जाती है। लीची के पेड फलो से लदे हुए है, लेकिन पेड पर लदी हुई लीची को देखकर हममे से किसी का भी--खास कर गौतम का--समाधान कैसे हो सकता था ? लेकिन लीची अभी तक पकी हुई नही थी, इसलिए गौतम ने कपिल भाई से--जो गाधी आश्रम के प्रमुख कार्यकर्त्ताओ मे से एक है--वादा करवा लिया कि कल कही से भी लाकर गौतम को लीची दी ही जायगी। कपिल भाई के लिए तो गौतम की माँग विनोबाजी की माँग से भी महत्त्व की होती है क्योकि वह सबसे छोटा है।

शाम की प्रार्थना मे विनोबाजी ने गाधी आश्रम के काम की प्रशसा की।

सर्वोदय-दर्शन के सिद्धान्तो का विवरण देने के बाद आखिर मे भूदान की बात कहे बगैर विनोबाजी का भाषण पूरा ही नही होता है। आखिर मे उन्होने कहा--"मै भिक्षा माँगने नही आया हूँ, मै आपको दीक्षा देने आया हूँ। आप पाँच पाण्डव है तो आपका छठा भाई भी है जो अव्यक्त है। जिसे विवेकानन्द ने दरिद्रनारायण कहा था और गाधीजी ने जिन्दगी भर जिसकी सेवा की थी। वही दरिद्रनारायण वह छठा भाई है। उसका हिस्सा उसे दीजिये।"

वेद, उपनिषद्, गीता के महासागर मे तो विनोबाजी गहरे पानी पैठ-कर मोती ढूँढकर लाये ही है। लेकिन कुरान, बाइबल आदि मे भी उनकी जिगरजान दोस्ती है। मल कुरान पढने के लिए उन्होने अरबी सीखी और कुरान का काफी हिस्सा उन्होने कठस्थ कर लिया है। अव्यक्त दरिद्रनारायण की वकालत करते समय आज उन्होने कुरान की एक कहानी सुनायी--"एक दफा पैगम्बर अपने दो साथियो के साथ कही जा रहा था। पीछे से दुश्मनो की बडी फौज आ रही थी। उसके साथी ने कहा कि "वह बडी भारी फौज है और हम तीन ही है तो हम क्या करे ?" जिस पर पैगम्बर ने कहा--"हम तीन नही है, हम चार है और वह चौथा जो है वह दिखता नही है, लेकिन वह है और वह जबर्दस्त है।"

दुर्लभ भारते जन्म

गुसाईंगंज (फैजाबाद)

२९-४-१९५२

रास्ते में किसी ने सवाल पूछा—"सत्याग्रह आन्दोलन या ऐसे ही दूसरे आन्दोलनों में जो निर्भयता का आवाहन किया जाता है उसमें तो आत्मप्रतीति का भान भी होता है, क्योंकि उसमें संघर्ष भी रहता है। लेकिन भूदान के काम में संघर्ष न होने के कारण इनके लिए कहाँ गुंजाइश है?"

विनोबा—"भूदान-यज्ञ में हम गरीब से भी दान ले रहे हैं। इसमें दान देनेवाला और लेनेवाला दोनों हक को पहचानते हैं। इसलिए आत्म-प्रतीति का भान हो जाता है। सत्याग्रह या दूसरे आन्दोलनों में जो निर्भयता होती है वह अभावात्मक (Negative) होती है। अंग्रेजों से लड़ने के लिए हम निर्भय बने थे। लेकिन भूदान-यज्ञ में निर्माण होने-वाली निर्भयता भावात्मक (Positive) है। देहभावना नष्ट हुए बगैर ऐक्यभावना सम्भव नहीं है और ऐक्यभावना के बगैर निर्भयता सम्भव नहीं है। ऐक्य से ही हम निर्भयता की ओर बढ़ सकते हैं।"

आज का हमारा निवास-स्थान एक कॉलेज था। दिन भर शिक्षक और विद्यार्थियों के साथ चर्चाएँ चल रही थीं।

आज के प्रवचन में विनोबाजी ने शिक्षा के बारे में एक मूलभूत सिद्धान्त कहा—"सरकार के हाथ में तालीम नहीं होनी चाहिये। उसमें तो सबको एक ही प्रकार की तालीम दी जायगी। इसलिए मैं चाहता हूँ कि लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के स्कूल चलावें। शिक्षण पर ऋषियों की सत्ता रहे, राजाओं की नहीं। पुरानी भाषा में कहना हो तो तालीम का काम अपरि-ग्रही, निस्पृह, ज्ञाननिष्ठ ब्राह्मणों के ही हाथ में होना चाहिये। तालीम में प्रयोग चलते रहने चाहिये, जिसमें ताजगी रहेगी। अमेरिका में ऐसे प्रयोग चलते हैं। पुराने जमाने में तो ऋषियों के हाथ में तालीम थी। तालीम का काम राजसत्ता के हाथ में रहे तो सरकार जैसा नागरिक पैदा करना

(६)

चाहती है वैसी ही तालीम दी जायेगी। इससे सब का दिमाग गुलाम बनेगा। राजसत्ता के हाथ मे तालीम दी जाय, इससे अधिक खतरा देश के लिए कोई नही हो सकता है। तालीम तो ऐसी होनी चाहिये जिससे विद्यार्थी का शरीर और मन मजबूत बनेगा, शीलवान, उत्तम बनेगा और वह समाज का सेवक बनेगा।"

प्रान्ताभिमान के बारे मे पूछे गये सवाल के जवाब मे विनोबाजी ने कहा—"अपनी मातृभाषा का अभिमान रखना गलत नही है। लेकिन भारतीयता को कभी नही भूलना चाहिये। आवागमन का कोई साधन न होते हुए भी ऋषियो ने कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हृदय की एकता पैदा की। सारे सस्कृत-साहित्य मे हम, "**दुर्लभ भारते जन्म**" पढते हैं, लेकिन कही भी, "**दुर्लभ महाराष्ट्रे जन्म**", "**दुर्लभ गुर्जरदेशे जन्म**" ऐसे वाक्य नही है। . मै चाहता हूँ कि हर कोई अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा सीखे और जिनकी मातृभाषा हिन्दी है, वे अपने पडोस की कोई प्रान्तभाषा सीखे।"

अक्सर भाषण के अन्त मे विनोबाजी कहते है—"**रैन बसेरा कर ले डेरा उठ चलना परभात रे**" यही मेरा जीवन बना है। इसलिए हमारी यह पहली और आखिरी मुलाकात है। कल सबेरे चार बजे हम यहाँ से प्रस्थान करेगे। यदि परमेश्वर ने चाहा तो जा सकेगे नही तो यही पर मेरी समाधि हो जायगी। इसलिए आपको मेरा आखिरी प्रणाम।"

हिसा सर्वथा त्याज्य

पूरा बाजार (फैजाबाद)
३०-४-१९५२

आज कुछ समय तक हाथ मे लालटेन लेकर रास्ता प्रकाशमान करने का काम मेरा था। थोडी देर बाद ही चर्चा आरभ हुई।

प्रश्न—"जिस प्रकार रक्तरजित क्रान्ति मे सघर्ष अनिवार्य है उसी प्रकार अहिंसक क्रान्ति मे भी वह अनिवार्य है या नही ? और बिना सघर्ष के प्रतिकार निष्ठा कैसे आ सकती है ?"

विनोबा—"मनुष्य स्वभाव की वुनियाद सहकार्य है, सघर्ष नही। वैसे अहिसक आन्दोलन मे भी कही-कही सघर्ष आ सकता है। मिसाल के तौर पर एलोपैथी और नेचरोपैथी की वात लीजिये। एलोपैथी मे वीमारी के साथ सघर्ष आता है। लेकिन उसमे एक वीमारी नष्ट होते ही दूसरी वीमारी पैदा होती है। नेचरोपैथी मे वीमारी हटती है, लेकिन मूल तत्वो के सहकार्य मे। इसलिए इसमे जो सघर्ष आता है वह दूसरे प्रकार का होता है। हिसक क्रान्ति कोई क्रान्ति ही नही है। क्रान्ति के मानी है जीवन के मूल्यो मे परिवर्तन। जहॉ हिसक क्रान्ति होती हे वहाँ भय-निष्ठा तो रहती ही है। वहॉ पर तो भय के आधार से क्रान्ति की जाती है। इसका मतलव यह है कि उसमे हम इस वात को स्वीकार कर लेते है कि यदि कोई हमसे भी वलवान ताकत पैदा हो तो वह हमे हरा सकती है। यानी हिसक क्रान्ति मे जीवन के पुराने ही मूल्य कायम रहते है। भय-निष्ठा का मूल्य खत्म नही होता है।"

इस पर मैंने पूछा—"कई लोगो का कहना है कि शारीरिक हिसा (Physical Violence) से भी मानसिक हिसा (Psychical Violence) अधिक भयानक होती है और आज के तानाशाह उसका प्रयोग किया करते है। इसलिए उसका अधिक निषेध करना चाहिये।"

विनोबा—"हाँ, निषेध तो करना ही चाहिये। लेकिन कम या ज्यादह यह सवाल ही नही पैदा होता है। दोनो भयानक है। किसी भी तरह की हिसा वुरी ही होती है। पत्थर से ईट मुलायम भले ही होती हो लेकिन किसी भूखे की दृष्टि से दोनो वेकार ही सावित होगी। क्योकि भूखा न पत्थर खा सकता है और न ईट। जिस समाज मे हिसा की प्रतिष्ठा होती है वहॉ सारे समाज पर उसका असर हो जाता है।"

मैंने कहा—"क्या इसका मतलव यह हे कि सेना का असर हमेशा वुरा ही होगा?"

विनोबा—"हॉ, जरूर। सेना मे जो वृत्ति निर्माण की जाती है, उसका असर सारे जीवन पर पडे वगैर नही रह सकता है। कइयो का कहना हे कि सेना के द्वारा मनुष्य में शिस्त और इन्तजाम करने के गुण पैदा होते है।

मैं चाहता हूँ, हमारे समाज में ये गुण फले लेकिन बिना सेना के। सेना तो सर्वाधिकारशाही का तरीका (Totalitarian method) जैसी बात है। आजकल अपने भी देश के बड़े-बड़े लोग कहने लगे हैं कि "चीन की सरकार सर्वाधिकारशाही (Totalitarian) होने के कारण वहाँ पर झट से सब काम हो सकते हैं। लेकिन हमारे यहाँ प्रजातन्त्र होने के कारण देरी लगती है और इसीलिए हम उनसे पीछे हैं।" यह बिल्कुल गलत विचारधारा है। सर्वाधिकारशाही (Totalitarian) राज्यपद्धति में देश को चन्द लोगों की अक्ल का ही लाभ होता है। वे चन्द लोग चाहे जितने बुद्धिमान भी क्यों न हों, देश के सब लोगों की अक्ल से उनकी अक्ल कम ही होती है। इसका मतलब यह है कि देश को सब की अक्ल का लाभ नहीं होता है। इसलिए देश का नुकसान होता है। यह तो बिल्कुल मामूली गणित की बात है। इसलिए आज हमने जिस प्रजातन्त्र की पद्धति को नुकसान पहुँचानेवाली पद्धति कहा, वास्तव में उसी पद्धति के द्वारा हमारी भलाई हो सकती है। आज हमारे देश को छोटे-बड़े सब की अक्ल का लाभ मिल रहा है। सब प्रयोग कर रहे हैं। हमारे लिए यह एक महान् अवसर है और इसी से हमारा विकास होगा। जहाँ तानाशाही चलती है वहाँ की हालत भयावह हो सकती है क्योंकि वहाँ एक या चन्द व्यक्तियों की ही अक्ल काम करती है। भगवान ने तो हर एक को थोड़ी-थोड़ी अक्ल दी है इसलिए हर एक को अपनी-अपनी अक्ल का उपयोग करने का अवसर मिलना चाहिये।"

इस पर मैंने कहा—"आपकी अवसर मिलनेवाली बात तो स्वीकार करनी ही होगी, लेकिन हम देख रहे हैं कि जनता हिटलर जैसे तानाशाहों की बातों पर और प्रलोभनों पर विश्वास करती है। तो फिर इसके लिए क्या किया जा सकता है?"

विनोबा—"यह बात सही है लेकिन इस मामले में भारत की हालत दूसरे लोगों से भिन्न है। भारत ने आज तक कभी भी तानाशाहों की सत्ता को स्वीकृति नहीं दी है। भारत की जनता हमेशा साधु, सन्त और परोपकारी पुरुषों के ही पीछे गयी है। भारतीय जनता के जीवन-मूल्य उच्च कोटि के हैं। हजारों साल के अनुभव के आधार से वे मूल्य बने

हुए हैं। योरप और अमरीका मे अभी भी पैसा, पाशवीय शक्ति और पुस्तकीय पाण्डित्य की प्रतिष्ठा है। उन्होने अभी तक जीवन के सच्चे मूल्यो को नही पहचाना है। इस बारे मे वे हमसे पिछड़े हुए हैं। हमारी जनता अशोक और अकवर जैसे महान् सम्राटो को भूल गयी है लेकिन उसने बुद्ध, कवीर, तुलसी आदि को याद रक्खा। एक दफा मैंने मुसलमानो की सभा मे पूछा था—"अकवर कौन था ?" तो उन्होने कहा—"अल्लाहो अकवर।" जहाँ उनको अकवर ही याद नही है तो दूसरे छोटे-मोटे राजाओ की याद कैसे रहेगी ? लेकिन वे कवीर को जानते थे और अपने गाँव के किसी पीर की भी उन्हे याद थी। इसका मतलव यह है कि भारत की यह विशेषता है कि उसके जीवन मे उच्च मूल्यो की प्रतिष्ठापना हो चुकी है। आज हम व्यवहार मे पैसा, पाशवी शक्ति आदि की भले ही इज्जत करते हो लेकिन हमारे दिलो मे इन चीजो के प्रति कोई आदर की भावना नही है। पैसे के प्रलोभन मे या वल के भय से आज हम अपने व्यवहार मे निम्नकोटि की वातो को स्वीकार कर लेते है। मानो अभी कोई वैल हमारे सामने आया और हम भाग गये तो क्या इसका मतलव यह होगा कि हमने उस वैल का श्रेष्ठत्व स्वीकार कर लिया ? एक अग्रेज ने लिखा था—"हमने अभी तक हिन्दुओ को सच्चे अर्थ मे नही जीता है क्योकि वे अभी हमसे छुआछूत मानते हैं।" इस पर मैंने कहा कि आपने (अग्रेज) हमे अपनी ऐसी कौन-सी वात दिखायी है कि जिससे हम आपका श्रेष्ठत्व कवूल करे ? हम मानते है कि पाशवी शक्ति मे आप हमसे वढकर है। इसी-लिए आपने हिन्दुओ को हराया। लेकिन क्या इसीलिए हम उस वैल के समान आपका भी श्रेष्ठत्व कवूल करेगे ? अगर आपने कोई नैतिक शक्ति दिखायी होती तो वात अलग थी। हम ईसाई धर्म के विल्कुल खिलाफ नही हैं। हमने एन्ड्रूज जैसे नीतिमान ईसाई की कितनी इज्जत की। इसका मतलव यही है कि हम नीतिमत्ता की, सदाचार की इज्जत करते है, पाशवी वल की नही।"

इस पर मैंने पूछा—"तो फिर हमारे उच्च कोटि के जीवन-मूल्यो की प्रतिष्ठापना योरप, अमरीका आदि देशो मे किस प्रकार हो सकती है ?"

विनोबा—"उसके लिए भारत को आज उच्च कोटि के जीवन-मूल्यो की प्रतिष्ठापना अपने खुद के ही जीवन मे करके दिखानी होगी। आज हम निर्भय नही है। इसीलिए पैसा, पाशवी-शक्ति आदि को हम व्यवहार मे भी क्यो नही, पर मानते है। जब हम निर्भय बनेगे और उन उच्च कोटि के जीवन-मूल्यो की अपने ही जीवन मे प्रतिष्ठापना करेगे तब दूसरे देश भी हमारा अनुसरण करेगे।"

फिर मैने दूसरा सवाल पूछा—"कुछ लोग कहते है कि सर्वाधिकारशाही पद्धति (Totalitarian system) मे सरकार का प्रतिकार करना सर्वथा असम्भव है। भारत अंग्रेजी सल्तनत का अहिंसक ढग से प्रतिकार इसीलिए कर सका क्योकि अंग्रेज लोग कुछ उदार मतवाले थे।"

विनोबा—"इस तरह से कहना याने पुराने ब्राह्मणो जैसे अंग्रेज लोग भी उच्च वर्ण के थे ऐसा मानना होगा। यह विचारधारा ही गलत है। १८५७ के बलवे के समय अंग्रेजो ने कुछ कम अत्याचार नही किये थे।"

मैने कहा—"मै मनुष्यो के बारे मे नही, पद्धति (System) के बारे मे कह रही हूँ। सर्वाधिकारशाही पद्धति (Totalitarian system) मे सरकार के खिलाफ एक शब्द का भी उच्चारण करते ही शारीरिक नाश (Physical-liquidation) हो जाता है।"

विनोबा—"इसका मतलब यह है कि वह शब्द अमर हो जाता है। शरीर चला गया इसमे क्या बडी बात है, जाने दो। देहासक्ति को छोडे बगैर मानव कभी निर्भय नही बन सकता है। उन देशो की सरकार सारे स्कूलो मे अपनी ही विचारधारा का प्रसार करती है, तो वहाँ के लोग अपने बच्चो को स्कूल मे न भेजे, घर मे ही पढाये। नतीजा क्या होगा? जेल या मृत्यु! होने दो।"

मैने कहा—"लेकिन वहाँ के लोग इतने भयग्रस्त हो गये है कि उनमे कुछ भी करने की हिम्मत नही रहती, और हमारी आवाज उनके कानो तक पहुँचना तो सम्भव है ही नही। फिर वहाँ की समस्याएँ कैसे हल होगी?"

विनोबा—"उसके लिए सबसे पहली बात तो यह है कि आज हमारे देशो मे जो Regimentation चल रहा है उसे रोकना होगा।"

मैंने कहा—"हमारे देशो मे यानी स्वतंत्र जगत् (Free World) मे ?"

विनोबा—"जी हॉ। जिन-जिन देशो का सर्वाधिकारशाहीवाद (Totalitarianism) पर विश्वास नही है उन सब को अपने खुद के जीवन मे जीवन के उच्च कोटि के मूल्यो की प्रतिष्ठापना करनी चाहिये। वैसे तो आज सारा योरप भयग्रस्त है। क्योकि वे सब शस्त्रनिष्ठ या साधननिष्ठ हैं। हाथ मे शस्त्र हो तभी बहादुर साबित होगे नही तो नहीं। हम शेर को बहादुर कहते हैं लेकिन जरा-सी रोशनी देखते ही वह भाग जाता है। इसी तरह योरप के लोग डरपोक हैं। यदि हम स्वतन्त्रता को टिकाना चाहते हैं तो हम सच्चे अर्थ मे निर्भय बनना चाहिये।"

इसके बाद किसी ने दूसरे ही विषय पर चर्चा छेडी। वेदान्त के तत्वज्ञान और हिन्दुओ की सहिष्णुता आदि के बारे मे सवाल पूछे गये। विनोबाजी ने कहा—"हम हिन्दू लोग प्राचीन और अनुभवी होने के कारण कुछ अधिक सहिष्णु हैं। यह स्वाभाविक ही है। इसीलिए हमको दूसरे के प्रति उदार दृष्टिकोण रखना चाहिये। एक दफा एक फ्रेंच महिला ने मुझसे कहा था कि "ईसाई धर्म की जो—'Man is born in sin (मनुष्य पाप मे ही पैदा हुआ है।)' वाली बात है वह मुझे कभी जँची नही। उससे मुझे कभी शान्ति नही मिली। लेकिन जब मैंने कठोपनिषद् और नाचिकेत की कहानी पढी तब मुझे शान्ति मिली।" उस बहन का कहना सच है। ईसाई धर्म के तत्वज्ञान की कई बाते विज्ञान ने गलत साबित की हैं। लेकिन उपनिषदो के तत्वज्ञान के साथ आज तक कभी ऐसा नही हुआ है। हमारे पीछे उपनिषद् का तत्वज्ञान है। इसलिए हमे सारी मानव-जाति को अपना ही मानना चाहिये। जिस तरह हमने बुद्ध को अवतार मानकर बुद्ध-धर्म को अपना लिया उसी तरह पैगम्बर और ईसा को अवतार मानकर उन धर्मों को अपना लेना चाहिये। मुसलमानो को तो हम अपना ही रहे हैं। "ईश्वर **अल्लाह तेरे नाम**" यह उसी प्रक्रिया का संकेत है। हमे भारत की गरीब जनता के समान पाकिस्तान की गरीब जनता का भी ख्याल करना चाहिये। हमे देशो के भेद को भूल जाना चाहिये। वहाँ भी भूदान-यज्ञ करना होगा। मैंने तो मुसलमानो मे काम किया है और उनका प्रेम भी हासिल

किया है। मैंने उन्हे पर्दे के खिलाफ कई बाते कही है और उन्होंने भी प्रेम से सुनी है। वे मुझे अपना ही समझते है क्योकि मैं भी उन्हे अपना ही मानता हूँ। ..जो सत्य है उसे मैं बोलूँगा। उससे मेरा कुछ भी बिगड़नेवाला नही है।"

प्रश्न—"दूसरे धर्मवाले कहते है, राम और कृष्ण को—मानव होते हुए भी—आप भगवान क्यो मानते है?"

विनोबा—"महापुरुषो की मृत्यु के बाद उनकी आत्मा को उनके देह से अलग करके उसे परमात्मा मे विलीन करने की हमारी सनातन प्रक्रिया है। इसीलिए राम और कृष्ण अब मानव नही रहे है बल्कि भगवान बन गये है।"

भूदान मजदूर आन्दोलन है

फैजाबाद
१-५-१९५२

फैजाबाद के रास्ते पर प्रभु रामचन्द्र की अयोध्या नगरी थी। अयोध्या को जानेवाला रास्ता भी बडा सुहावना मालूम हो रहा था। विनोबाजी ने इस जिले मे प्रवेश करते ही कहा था—"अयोध्या नगरी तो मनुष्य के हृदय मे है। कहा जाता है कि जहाँ प्रेम है, वैर, झगडे, द्वेष नही है ऐसी अयोध्या नगरी मे रामचन्द्र रहते है। लेकिन वह तो हर एक के हृदय मे रमनेवाले राम है। वही हृदयस्थ राम सब को सत्कार्य की प्रेरणा देता है।"

अयोध्या मे प्रवेश करते ही विद्याकुण्ड दिखायी दिया। कुण्ड की रचना सुन्दर थी। चारो ओर ऊँचे आम्रवृक्ष थे। कहा जाता है कि श्री रामचन्द्र ने यही विद्या प्राप्त की थी। लेकिन उस कुण्ड का पानी इतना गदा था कि बदबू आ रही थी। हमारे सभी तीर्थक्षेत्रो मे इस तरह का विरोधाभास नजर आता है। आज के हमारे तीर्थक्षेत्रो मे इतनी गन्दगी, ढोंग, पैसे का बाजार चलता है कि वहाँ जाने पर कोई भी नास्तिक बन सकता है।

जिस स्थान पर वैठकर तुलसीदासजी ने रामायण लिखी थी वही पर आज उनका एक मन्दिर हे। उस मदिर के आँगन मे विनोवाजी का स्वागत हुआ। अभिनन्दन पर कविताएँ, मानपत्र आदि हर रोज पढे जाते हैं। विनोवाजी को तुलसी रामायण विशेष रूप से प्रिय है। इसलिए इस स्थान पर भाषण देते समय वे गद्गद हो गये। तुलसीदासजी के नाम का उच्चारण करते समय उनका कण्ठावरोध हो जाता था और आँसू भी वहने लगते थे। हर एक शब्द वोलते समय वे रुक जाते थे। एक सन्त के स्थान पर दूसरे सत का भावमग्न होना स्वाभाविक ही था। इससे उन दोनो का एकात्म प्रकट हो रहा था। वह सारा दृश्य इतना चित्त-वेधक था कि हृदय-पटल पर सदा के लिए अकित हो गया। वहाँ से निकलते ही हवा जोरो से चलने लगी। पानी की कुछ वूंदे भी पड़ने लगी। मानो भगवान भी इन दोनो के आन्तरिक मिलन से आनन्दित हो उठे।

फैजावाद शहर मे प्रवेश करते ही एक छोटी सी वच्ची ने आरती उतारी और खिले हुए वेले का हार अर्पण किया। विनोवाजी को प्राय प्रत्येक दिन मिलनेवाले फूलो के हारो मे इतना वैचित्र्य होता हे कि कोई कवि होता तो सुन्दर कविता लिख देता। कुछ हार सफेद, कोमल वेले के कलियो के होते तो कुछ हारो मे कोमल कलियाँ और खिले फूलो का गुम्फन होता। कुछ हार सफेद और लाल फूलो के गुंथे होते और कुछ रग-विरगे फूलो के कारण अत्यन्त मनोहर लगते। एकाध हार लाल गुलावो का वना होता। कभी-कभी हरे पत्ते गुँथे हुए तो कही रग-विरगी पन्नियाँ और कलावत्तू से वने हुए हार होते। और फूल तो पूछिये ही नही। न जाने कितने प्रकार के होते। चमेली, सातिया, वेला, गुलाव और ऐसे ही वहुत से वेनाम के फूल (फूलो के नाम तो होते पर मैं ही जिन्हे नही जानती)। गाँवो के जगली फूलो के हार तो वैचित्र्य के कारण देखनेवाले का मन चुरा लेते।

यह शहर वडा हे ओर हमारा निवास-स्थान किसी धनी की वडी भारी हवेली मे है। इसीलिए यहाँ का सारा प्रवन्ध हवेली के उपयुक्त

हे । पर मुश्किल तो इतनी ही है कि हवेली ठीक सडक के किनारे है जिसमे सामने की दूकान मे ध्वनि-विस्तारक (Loud-Speaker) पर वजनेवाले फिल्मी गानो ने हमारे कान फाड डाले। विनोवाजी को तलघर मे स्थान दिया गया था इसलिए वे इस कष्ट से वच गये।

फूलो के हारो की तरह हमारे निवास-स्थान मे भी विविधता होती थी । कभी झोपडी, कभी महल, कभी गाँव की कोई जीर्ण पाठशाला, कभी विल्कुल आधुनिक साधनो से सुसज्जित डाक-बँगला, किसी सेठ का बँगला, कभी धर्मशाला और कभी किसी मध्यम श्रेणी के परिवार का छोटा-सा सजा घर।

अक्सर विनोवाजी से सवाल पूछा जाता है—"आप अमीरो के घर क्यो ठहरते है ?" विनोवाजी का जवाव सारी शकाओ का समाधान कर देनेवाला होता है। "हवा का और अग्नि का हर घर मे प्रवेश हो सकता है तो मेरा क्यो नही हो सकता ? अग्नि जहाँ कही जाती है, जलाने के लिए ही जाती है। उसी तरह मै भी अमीरो के घरो मे जाकर आग लगा देता हूँ तो इसमे क्या बुराई है ?" विनोवाजी का जिस घर मे प्रवेश होता है उस घर को क्रान्ति की आग लगे वगैर नही रह सकती। घर का मालिक भूमिदान देता है, स्त्रियो को पर्दा छोडने का आदेश मिल जाता है, घर के लडको को क्रान्ति की दीक्षा मिल जाती है। सारा विनोवा-साहित्य घर मे प्रवेश करता है। चरखा प्रवेश करता है। विनोवाजी के यात्री-दल मे सभी प्रान्तो के, सव जातियो के लोग हुआ करते है और गाँव के सभी छोटे-वडे लोग विनोवाजी से मिलने आते है जिसके कारण उस घर को समानता का पाठ पढाया जाता है। अस्पृश्यता और जातियो को नष्ट करने का प्रत्यक्ष उदाहरण सामने उपस्थित हो जाता है। फिर भी कुछ वामपक्षियो को विनोवाजी का अमीरो के यहाँ ठहरना अखरता ही है। विनोवाजी कहते है—"यह भी एक किस्म का जाति-भेद ही है।"

आज दिन भर चर्चाएँ चलती रही। भिन्न-भिन्न तवके के लोग मिलने आते है, अपनी शकाये सामने रखते है और प्रभावित होकर लौट जाते है। कुछ मुसलमान भाइयो ने धर्मनिरपेक्ष राज्य (Secular state) के वारे मे

सवाल पूछा। विनोबाजी ने जवाब दिया—"राज्य (State) जो बनता है वह चन्द लोगों के लिए नहीं बल्कि सब के लिए बनता है। धर्मनिरपेक्ष राज्य (Secular state) आपके खुदा का विरोध नहीं करता है बल्कि वह कहता है—"हम ईश्वर को अपनी बुनियाद नहीं मानते हैं। हम धर्म के नाम पर इन्सान-इन्सान में फर्क नहीं करेंगे। हम सबको समान अवसर देंगे। फिर उसमें चाहे हम जन्नत में जायें चाहे जहन्नुम में।" धर्मनिरपेक्ष राज्य (Secular state) नास्तिक या काफिर नहीं होता है। वह तो केवल खिदमतगार है।"

इसके बाद कोई प्रगतिवादी आया जिसने कहा—"हम आपके भगवान, धर्म आदि में विश्वास नहीं करते हैं।"

विनोबाजी ने पूछा—"आप भगवान में विश्वास नहीं करते हैं तो कोई हर्ज नहीं है। लेकिन आप सत्य, नीति, सदाचार आदि में तो विश्वास करते है या नहीं?"

प्र० वा०—"जी हाँ, जरूर करता हूँ।"

विनोबा—"तो फिर मैं कहूँगा कि आप आस्तिक ही हैं। यदि कोई भगवान में भी श्रद्धा का दावा करते हुए झूठ, चालबाजी आदि करता हो तो उससे वह आदमी कई गुना आस्तिक होगा जो भगवान में विश्वास न करते हुए भी सत्यनिष्ठा से बरतता हो।"

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्रीजी तो भूदान-यज्ञ के बहुत ही अनुकूल हैं। उन्होंने सेवापुरी के सर्वोदय सम्मेलन में कहा था कि "भूदान से हमारी आर्थिक समस्या तो हल हो ही रही है लेकिन जो नैतिक वातावरण निर्माण हो रहा है उसका मूल्य मैं अधिक मानता हूँ।" पंतजी ने सभी सरकारी अफसरों को व्यक्ति के नाते भूदान का काम करने की इजाजत दी है। इसलिए कई छोटे-बड़े अफसर भूदान का काम करते हुए दिखायी देते हैं। आज एक सरकार-विरोधी पक्ष के कार्यकर्त्ता ने विनोबाजी से कहा कि "सरकारी अफसर भूदान माँगते है तो उससे अनुचित दबाव पड़ता है। इसलिए उनको भूदान का काम नहीं करने देना चाहिये।" विनोबाजी ने जवाब दिया—"जहाँ सरकार राष्ट्रीय होती है वहाँ सरकारी और गैर-सरकारी ऐसा भेद नहीं होना चाहिये।

जहाँ समुद्र मे गगा-जमुना जैसी नदियाँ जाती है वहाँ नाले भी जाते है। समुद्र किसी से भी इन्कार नही कर सकता है। भूदान का काम तो समुद्र के जैसा है। मै नही मानता कि सरकारी अफसर यदि भूदान का काम करेगे तो यह आन्दोलन दूषित हो जायगा। वैसे तो मेरा भी नैतिक दवाव पडता है। एक दफा मथुरा मे एक भाई श्रद्धा मे दान देने आया। वह अपनी हैसियत से वहुत कम दान दे रहा था। मैने उससे कहा—मै भिक्षा माँगने नही आया हूँ, मै तो गरीवो की तरफ से उनका हक माँगने आया हूँ। आप तीन भाई है तो मै आपका चौथा भाई हूँ। मेरा हिस्सा मुझे दीजिये। उस भाई को यह विचार जँच गया और उसने मुझे अपना चौथा भाई समझकर ठीक-ठीक चौथा हिस्सा (५०० एकड) जमीन दी। ऐसे कई मौके आये है। तो क्या इसमे दवाव आया ?"

प्रश्न—"लेकिन कई वुरे लोग भूदान का काम करके प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते है।"

विनोवा—"मनुष्य मे दोप हो सकते है लेकिन मै इन्सान मे इस तरह का अविश्वास नही रखना चाहता हूँ। मै सब की मदद लेना चाहता हूँ। यदि मै किसी व्यक्ति पर अविश्वास रक्खूं तो मेरी वुनियाद ही खतम हो जायगी। सरकारी अफसरो को काम न करने देने का मतलव है राष्ट्रीय सरकार (National Government) को कार्य (function) ही नही करने देना। मै मानता हूँ कि अगर सरकार अपने अफसरो को भूदान का काम करने का आदेश देती है तो विल्कुल ठीक काम करती है। क्योकि सरकार का यह फर्ज है कि जनता की सेवा करे।"

प्रश्न—"लेकिन कई लोग भूदान का काम अधूरे विश्वास से (Half heartedly) करते है।"

विनोवा—"कोई हर्ज नही। आधा कोई अच्छा काम आधा (Half) ही क्यो, एक आना विश्वास से (Heartedly) भी करे तो कोई हर्ज नही है। मै किसी को भी दूर नही फेकूँगा, मुझे सव को सुधारना है। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे साथ काम करने से वुरे आदमी पर मेरा असर जरूर होगा, उसका असर मुझ पर नही होगा। इसीलिए मै निर्भय होकर सब की मदद ले रहा हूँ।"

शाम की प्रार्थना-सभा मे विशाल जन-समुदाय के सामने बोलते हुए विनोवाजी के मुख से निकला प्रत्येक शब्द हृदय-पटल पर अंकित हो रहा था। गुरुदेव ने कहा है—"भगवान तो अनन्त हाथो मे देता ही रहता है। लेकिन हम अपने छोटे से दो हाथो मे ही ले सकते है। वह तो देता ही रहता है, लेकिन हममे लेने की ताकत नही होती है।" विनोवाजी के साथ रहते हुए मैं इस बात को तीव्रता से महसूस कर रही हू। ज्ञान-दान का नव विचार देने का उनका काम तो अखण्ड चलता रहता है, लेकिन उसे ग्रहण करने की ताकत हममे नही होती है। आज उन्होने कहा—"व्यक्ति के मन के समान सारे समाज का एक सामूहिक मन भी होता है। इसलिए सारी पृथ्वी पर मानव करीब-करीब एक-सी बाते करता आ रहा है। ढाई हजार साल पहले का जमाना था जब मानव को सब जगह समाज की धारणा के मूलतत्व खोजने की इच्छा हुई। भारत मे बुद्ध और महावीर, चीन मे लाओत्से और कनफ्युशीयस, पॅलेस्टाइन मे जरतुष्ट और ईसा, मिश्र मे मूसा पैदा हुए। इस तरह सब मानवो को एक ही प्रेरणा हुई, उस जमाने मे जब कि एक-दूसरे को खबर पहुँचने मे वर्षो का अरसा लग जाता था। फिर भी एक अव्यक्त सी हवा फैलती थी जिसका कारण सर्वांतरयामी, सर्वप्रेरक परमेश्वर ही हो सकता है। उसके बाद आज से करीब एक हजार साल पहले की बात है, मानव को सब जगह आध्यात्मिक संशोधन-कार्य की प्रेरणा हुई। हर एक देश मे ध्यान-चिन्तन करके, मन के अन्दर पडी हुई शक्तियो का आवाहन करके जिन्दगी को शक्तिशाली बनाने का काम चल रहा था। इसीको अध्यात्मविद्या (Mysticism) का जमाना कहा जा सकता है। और आज मानव को सर्वत्र समता, स्वतन्त्रता और न्याय की भूख लगी है। आत्मा सब मे समान रूप से निवास करती है। यह बात तत्वज्ञान मे तो थी ही। उसे अब जीवन मे लाना है।

आज 'मे' दिवस (May Day) के अवसर पर मैं आप लोगो से कहना चाहता हूँ कि यह मेरा मजदूर आन्दोलन है। जो सबसे कमजोर मजदूर है, जो बेजमीन और बेजबान है उनकी आवाज मेरे मुख से प्रकट हो रही है। अहिंसा के तरीके मे जो सबसे आखिर का है उसे प्रथम --

होता है। उसके साथ बाकी के सारे ऊँचे उठ जाते हैं। मैं भी एक मजदूर हूँ। मैंने अपने जीवन की जवानी के बत्तीस साल मजदूरी मे बिताये है। खेती, कताई, बुनाई, भगी-काम आदि सारे काम मैंने किये हैं।

जमीन का मसला तो हल होने ही वाला है। दुनिया मे उस मसले को हल करने के लिए कई बेढगे तरीके इस्तेमाल किये गये है। मेरी सारी कोशिश यही हे कि हम इस मसले को शुद्ध तरीके से, अहिसात्मक मार्ग से जो हमारी सभ्यता के अनुकूल है, हल करे। क्योकि इसी से मानव का कल्याण होगा। घी के डब्बे को आग लगाना या वेद-मन्त्रो के साथ यज्ञ मे घी की आहुति देना इन दोनो मे घी तो लगेगा ही। लेकिन एक से भावना जलेगी और दुनिया खत्म होगी। दूसरे से भावना पुनीत होगी और दुनिया मे मगल होगा।"

बच्चा भी भूदान की ही बात करता है

सुचेतागंज (फैजाबाद)
२-५-१९५२

कल रात बारह बजे सोने को मिला था इसीलिए आज सुबह नीद ही नही खुलती थी। पर तीन की घण्टी सुनाई देते ही हमने बिस्तरे लपेटे। विनोबाजी का कहना हे कि रात को नौ के बाद तो जगना ही नही चाहिये। पर कुछ न कुछ काम के कारण हम लोगो को हमेशा कुछ देर हो ही जाती है। विनोबाजी का स्पष्ट आदेश है कि बीमार की सेवा को छोडकर किसी भी कारण से देर तक नही जागना चाहिये। रात को जल्दी सोकर सुबह जल्दी उठने के कितने लाभ है। इसे प्रमाणित करने के लिए वे कितने वेद और उपनिषदो के श्लोक कह जाते है—"**यो जागार त ऋचा कामयन्ते**"। सुबह जल्दी उठनेवाले को ही ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

एक दफा तो उन्होने जागने के विषय मे एक मजेदार बात कही कि जिसे सुनते ही फिर जागने की हिम्मत नही हो सकती। उन्होने कहा—'रात के नौ बजे तक तो सर्वसामान्य जागते ही है, नौ से बारह

बजे तक केवल भोगी जागते है और बारह से तीन तक चोर। इसके अलावा तीन से छ तक जागनेवाला योगी होता है।"

विनोबाजी की व्याख्या के अनुसार यहाँ पर हमे उनके सहवास मे योगी की उपाधि मिल सकती थी पर विद्यार्थी-जीवन मे कितनी ही राते बारह से तीन तक जागकर हमने बितायी है। इस दृष्टि मे तो हम चोर ही साबित हुए थे। इस कल्पना मे तो मन मे हँसी ही आयी। और उस समय तो चोर बननेवाले विद्यार्थियो की प्रशसा की जाती थी।

पडाव पर पहुँचते ही विनोबाजी ने स्वागत के लिए आये हुए बच्चो मे से एक को बुलाया और उससे सवाल पूछने लगे—"तुम कितने भाई-बहन हो ?"

उत्तर—"चार।"

विनोबा—"तुम्हारी माँ अकेले तुम पर ही प्यार करती है या सब पर समान प्यार करती है ?"

उत्तर—"सब से समान प्यार करती है।"

विनोबा—"धरती हमारी कौन है ?"

उत्तर—"माता।"

विनोबा—"तो क्या उस माता पर सब बच्चो का समान अधिकार नही होना चाहिये ?"

उत्तर—"सब का समान अधिकार होना चाहिये।"

इसके बाद विनोबाजी ने जनता से कहा—"देखो, यह बच्चा भी भूदान की ही बात करता है। बच्चो के मुख मे भगवान बोलता है। इस-लिए यह काम अब होकर ही रहेगा।" इस तरह बच्चो से बातचीत करके भूदान का विचार कहने की विनोबाजी की जो पद्धति है उसका बहुत प्रभाव पडता है। वे तो इसको "नाटक" कहते है।

आज शाम को ऐसे ही बातचीत चल रही थी। विनोबाजी ने पूरा बाजार की घटना सुनायी। परसो पूरा मे दोपहर के समय विनोबाजी अकेले ही पढ रहे थे। उनके पास हममे से कोई भी नही था। सामने की सडक पर एक बस (Bus) खडी हुई, कुछ मुसाफिर उतरे और विनोबाजी के

दर्शन के लिए कमरे मे आये। उनमे से एक जो शिक्षित मालूम हो रहा था, ज्यादा देर तक खडा रहा। जाते समय उसने विनोवाजी से कहा--"एक आदमी (गाधीजी) ने देश के टुकडे वनाये इसलिए लोगो ने उसे स्वर्ग भेज दिया। अव आप जमीन के टुकडे कर रहे है इसलिए आपको भी वही भेजा जायगा।" विनोवाजी ने उसे प्रणाम किया लेकिन वह विना देखे ही चला गया। यह सुनकर हमे वडी वेचैनी मालूम होने लगी। क्या अभी भी भारत मे इस वृत्ति के लोग मौजूद है? हम तो दुखी हुए लेकिन विनोवाजी हमेशा जैसे शान्त और अविचल दिखाई दे रहे थे।

अमर महात्मा

शुलागज (वारावकी)
३-५-१९५२

उत्तर प्रदेश की मई महीने की गरमी दिन-व-दिन उग्र रूप धारण कर रही थी। आज १७ मील चलना पडा और रास्ता था अति वीहड। सात न वज पाते कि सूर्य अपनी प्रचण्डता लिए आ निकलता। इसलिए आखिर के कुछ मील तो जान पर ही आते थे। सुवह चार बजे निकलने के कारण सुवह के दो घण्टे तो आनन्द से कट जाते थे। आज तो सव के सव थक गये थे। थकावट के कारण विनोवाजी से तो वोल ही न निकलता था। पडाव पर पहुँचते ही चार शव्द जैसे-तैसे वोलकर विछौने की शरण ली।

आज का पडाव एक छोटे से गाँव मे है। शान्त और रमणीक स्थान, एक सुन्दर सा तालाव और उसके किनारे एक मदिर जो हमारा निवास-स्थान है।

ऐसे दूर के गाँवो मे वाहर से कौन जाता है? सारे नेता लोग तो मोटर के रास्ते पर जो गाँव होते है वहाँ जाते है, दस-पाँच मिनट का एक भाषण देते है और चले जाते है। लेकिन यह सत ऐसा है जो ऐसे गावो मे जाता है जहाँ न रेल जाती है, न मोटर। वह पैदल चलता है, छोटे से गाँव मे

भी दिन भर रहता है, गाँववालो का दुख-सुख सुनता है । इसलिए उन्हें लगता है जैसे उनका कोई मित्र आया हो। उनको आशा पैदा होती है कि यही एक संत ऐसा है जिसके पास हम अपना दुखडा रो लेंगे। और फिर यह हमे सुख का रास्ता बतायेगा। जिनकी कोई पूछ-परख नहीं है, जिनके पास कोई जाता नही है, उन पीडित, दलित, दुखित मानवों के पास "गाधी बाबा का चेला" ही तो जायेगा।

वे फौरन पहचान लेते है कि वह गाधी का काम कर रहा है। एक दफा हम गाँववालो से कह रहे थे कि "विनोबा महात्माजी के चेला है।" यह सुनते ही एक किसान ने कहा—"चेला नही, ये तो महात्मा ही है।" हम कह रहे थे—"महात्माजी तो इस दुनिया मे नही है।" उसने फौरन कहा—"महात्मा कभी मरता है ?" एक नन्हा-सा वाक्य था लेकिन उसी वाक्य मे महाकवि को प्रेरणा देने की शक्ति थी। वह किसान कह रहा था कि महात्मा अमर है। हमारे आँसू पोछनेवाला, हमे पथ-प्रदर्शन करनेवाला कोई भी आये वह महात्मा का ही काम करेगा । उसके जरीये महात्मा ही अपना काम करेगा । महात्मा कोई शरीर धारण करनेवाला मानव नही है। त्रिभुवनव्यापी परमात्मा ने ही दुनिया के कल्याण के लिए महात्मा का वेश धारण कर लिया था। महात्मा कभी मरते नही क्योंकि महात्मा याने कोई मानव नही है, बल्कि परमात्मा का संदेश है।

आज शाम की प्रार्थना-सभा मे विनोबाजी बहुत ही प्रसन्न दिखाई दे रहे थे । उन्होंने ध्वनि-विस्तारक (Loud-speaker) हटा दिया और गाँववालो के बीच घूमते हुए उनसे बातचीत करने लगे । उन्होंने कहा—"ध्वनि-विस्तारक (Loud-speaker) तो मेरे और जनता के बीच आनेवाली एक दीवार है ।" आज वह दीवार हट गयी थी, इसलिए विनोबा और जनता की दिल की बाते चल रही थी।

अखण्ड ज्ञानलालसा

सफदरगज (बाराबंकी)

४-५-१९५२

चलते समय व्यकटेशय्या ने मद्रास की हालत पर सवाल पूछा। विनोवाजी ने कहा—"राजाजी मद्रास के मुख्य मत्री बने यह बहुत ही अच्छा हुआ। वे आये इसलिए मद्रास प्रान्त बच गया। राजाजी बुद्धिमान, चतुर और लायक व्यक्ति है। उनके पदग्रहण का मतलब है कि ठीक स्थान पर ठीक मनुष्य पहुँच गया।" व्यकटेशय्या तामिलनाड का है इसलिए राजाजी की प्रशसा सुनकर वह बहुत खुश हुआ।

इस गाँव मे अधिकतर मुसलमान ही दिखाई दिये। पुरानी मस्जिदे, दरवाजे आदि के खँडहर जगह-जगह दिखाई दे रहे थे। स्त्रियो मे साडी पहनने का रिवाज नही दीखा। चमकीले किनारेवाले लहँगे पहने स्त्रियाँ दीख रही थी।

आज के भाषण मे विनोवाजी ने पर्दा पद्धति की कडी आलोचना करते हुए कहा—"मै दक्षिण मे तेलगाना मे घूमता था तो सभा मे जितने पुरुष आते थे उतनी ही स्त्रियाँ भी आती थी। और वहाँ की स्त्रियाँ तो निर्भयता से सभा मे खडी होकर मुझसे सवाल भी पूछती थी। लेकिन यहाँ तो मुसलमानो का राज चला इसलिए मुसलमान राजाओ को खुश करने के लिए हिन्दुओ ने भी उनका पर्दे का रिवाज अपना लिया। दूसरो के अच्छे रिवाज लेने मे कोई हर्ज नही है लेकिन पर्दे का रिवाज तो बहुत ही बुरा है। मुसलमानो को भी पर्दा छोडना पडेगा। मैने अजमेर मे दरगाह शरीफ मे मुसलमानो की सभा मे कहा था—"यहाँ पर भी कोई स्त्री दिखाई नही देती है। अल्लाह के मस्जिद मे भी स्त्री-पुरुष का भेद क्यो? आपको पर्दा छोडना ही पडेगा। जिस समाज की स्त्रियाँ पर्दे मे रहेगी वह समाज कभी प्रगति नही कर सकेगा।" उन्होने मेरा यह कथन प्रेम मे सुन लिया क्योकि यह सत्य विचार है और मै उन्हे अपने से भिन्न नही मानता। हिंदु-धर्म ने स्त्री-पुरुप समानता मानी ही है। हिंदुओ का कोई भी धर्म-

कार्य पत्नी के विना नही हो मकता है। राम को यज्ञ करना था और मीता को जगल मे भेज दिया गया था तो ऋपि ने कहा—"मीता के विना यज्ञ नही हो सकता है।" तो फिर "हिरण्मयी मीता" वनानी पडी और फिर यज्ञ हुआ। वैदिक-काल मे तो वडी ज्ञानवती स्त्रिया होती थी। याज्ञवल्क्य की सभा मे चर्चा चल रही थी। गार्गी खडी हुई और उसने याज्ञवल्क्य से कहा कि "जैसा काशी या विदेह का क्षत्रिय वीर वाण मारता है वैसे ही मै तुझे प्रश्नरूपी वाण मारती हूँ। अपनी छाती मामने कर तो मैं प्रश्नो से ताडन करूँगी।" फिर उमने दो सवाल पूछे। याज्ञवल्क्य ने जवाव दिये। तव उमने हिम्मत के साथ पण्डितो मे कहा कि "पण्डितो! अव याज्ञवल्क्य से चर्चा मत करो। इमे नमस्कार करो क्योकि इससे कठिन सवाल नही होगे।" गार्गी वीर के समान खडी होकर हिम्मत के साथ कहती हे कि "मुझसे कठिन सवाल और कौन पूछेगा। वह वेद और उपनिपदो का जमाना था और आज?"

गार्गी की कहानी सुनकर मन मे कई विचार उठे। उम जमाने मे गार्गी के सवाल सव से कठिन थे लेकिन याज्ञवल्क्य उसका जवाव दे सका। क्या इस युग मे ऐसी कोई गार्गी नही पैदा होगी जिमके मवालो का जवाव कोई भी याज्ञवल्क्य न दे सकेगा और अपनी हार मान लेगा?

विनोवाजी का तो स्त्रियो के लिए खास सदेश है, "अखण्ड ज्ञान-लालसा रखिये। ज्ञानतृष्णा को कभी नप्ट मत होने दीजिये। ज्ञान की उपासना से ही आप दुनिया को जीत मकती है।"

समय रहते ही मिल गया

सफदरगज (वाराबकी)
५-५-१९५२

रास्ते मे विद्या वहन के साथ आध्र की समस्याओ के वारे मे चर्चा चल रही थी। आध्र मे तो कम्युनिस्टो का काफी वोलवाला है। वहाँ पर भूदान का काम किम प्रकार हो सकता है इम वारे मे चर्चा चल रही

थी। विनोबाजी हमेशा कहते है कि "साम्यवाद एक विचार है। यदि आपको वह विचार पसद नही है तो उसका मुकाबला फौज से नही हो सकता है। विचार का मुकाबला विचार मे ही हो सकता है। दुनिया मे जो अन्तिम सघर्ष होगा वह तो सर्वोदय और साम्यवाद (सर्वनाश) इन दो विचारो मे होगा। क्योकि ये दो ही विचार बलवान है।" विनोबा कहते है कि हिंसा के साथ नाश आता ही है। और जहाँ हिंसा पर अधिष्ठित तत्वज्ञान बनाया जाता है वहाँ सर्वनाश के अलावा और क्या हो सकता है? यद्यपि आज दुनिया मे साम्यवाद की विजय होते दिखाई दे रही है फिर भी आखिर मे सत्य की ही विजय होनेवाली है। प्रकाश के सामने अन्धकार टिक नही सकता है, सत्य के सामने असत्य टिक नही सकता है यह उनका अमर विश्वास है। लेकिन आज हम सत्य का पालन कट्टरता से नही करते है, उसमे असत्य की मिलावट कर देते है। फिर हमे असफलता प्राप्त हुई तो चिल्लाते है कि दुनिया मे सत्य के लिए स्थान नही है। वास्तव मे हमारी असफलता का कारण सत्य और अहिंसा का मार्ग नही, बल्कि यह है कि हम उस मार्ग मे ठीक से चलते नही है।

विद्या बहन कह रही थी कि "आध्र मे आज सर्वोदय का काम ही कहाँ चलता है? लेकिन एक दफा विनोबाजी को वहाँ जाने दो फिर देखो हमारा आन्ध्र सबसे आगे बढेगा।" उसका आशावाद मुझ पर भी असर करने लगा। इस दुनिया मे जब कि सारे सच्चे मूल्य, श्रद्धा, निष्ठा आदि पर सतत प्रहार हो रहा है, उस समय ऊँचे आदर्शों को सामने रखकर जीवन बिताना असम्भव-सा मालूम होता था। आधुनिक मानव का मनोविश्लेषण करते हुए चीनी दार्शनिक लिन युटाग ने कहा था कि "मानव के जीवन मे ऐसा कुछ तो भी चाहिये जिससे वह जी सकता है और मर भी सकता है। एक जमाना था जब मानव के मन मे ईश्वर और धर्म के प्रति श्रद्धा थी। लेकिन हमने भगवान को अपने दिलो से हटा दिया और उसके साथ श्रद्धा को भी वनवास दे दिया। उन्नीसवी शताब्दी के

मानव ने अपने दिल का रिक्त आसन विज्ञान और प्रगतिवाद को दे दिया। लेकिन इन भयानक महायुद्धो के कारण उसकी सारी श्रद्धा आमूल नष्ट हुई। आज के मानव के सब दुखो का एक ही कारण है—"श्रद्धाहीनता"। वह जानता नही कि उसे किसलिए जीना है।"

गाधीजी के देश मे पैदा न होती, गाधीजी का क्षणमात्र के लिए ही क्यो न हो, सच्चे अर्थ मे दर्शन न करती तो हमारे लिए भी श्रद्धाहीनता के इस तूफान मे अपनी जिन्दगी को तबाह होते देखने के अलावा और क्या हो सकता था? लेकिन जनता गर्जना कर रही थी—"महात्मा गाधी की जय"। हमें जो चाहिये था, मिल गया, समय रहते ही मिल गया।

तीसरा भाग

हम निमित्तमात्र बनें

बाराबंकी

६-५-१९५२

क्षितिज पर पूरब मे उषा की लालिमा फैल ही रही थी कि विनोबाजी पडाव पर पहुँच गये। किसी ने कहा—"आप आज बहुत जल्दी पहुँच गये।" विनोबाजी ने जवाब दिया—"मोटर और हवाई जहाजवाले देरी से पहुँच सकते है लेकिन पैदल चलनेवाले को तो ठीक समय के कुछ पहले ही पहुँच जाना चाहिये। अक्सर ऐसा होता है कि जैसे-जैसे साधनो की गति बढती जाती है वैसे-वैसे मनुष्य की बुद्धि मन्द हो जाती है। हम चाहे मन्द गति के साधन स्वीकार कर लेगे लेकिन साधनो की गति बढाकर बुद्धि की मन्दता को स्वीकारना हमे पसन्द नही है।"

विनोबाजी का आज का भाषण जगानेवाला था। उन्होने कहा—"मेरे जैसा फकीर इन सात महीनो से आपके प्रदेश मे घूम रहा है, आप, जो कार्यकर्त्ता कहलाते है वे अभी तक जागृत नही हुए हैं। क्या आप सारे शववत् हो गये है? कार्यकर्त्ताओ मे से कुछ सरकार मे दाखिल हुए है, कुछ अपने ससार मे मशगूल है और कुछ साहित्य मे। गरीबो का काम करने के लिए किसी के पास फुर्सत नही है। लेकिन आप काम करे या न करे, मै तो करता ही जाऊँगा। मैने तो गोरखपुर की सभा मे ही कह दिया था कि जिस तरह भगवान ने अर्जुन से कहा था कि "हे अर्जुन, सारे कौरव तो पहले ही मर चुके है लेकिन तुम अब निमित्त बनो" —'**निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन्।**' उसी तरह मै भी कहता हूँ कि यह सारी जमीन मेरी हो चुकी है। सारी जमीन जमीनवालो के हाथ से निकल चुकी है और श्रम करनेवालो के पास पहुँच चुकी है लेकिन मै कहता हूँ कि आप निमित्तमात्र बनिये और यश लीजिये।"

इस भाषण ने यहाँ के कार्यकर्ताओ को जगा दिया और कुछ कार्यकर्त्ताओ ने निरन्तर भूदान का काम करने का सकल्प किया।

विनोवाजी कह रहे थे कि "आज तो सब की परीक्षा हो रही है। इस समय जो निमित्त-मात्र बनेगा उसीका यश होगा।"—लेकिन 'निमित्त-मात्र' बनने के लिए भी तो अर्जुन की 'ऋजुता' और 'हरिशरणता' चाहिये ही!

विश्व एकता की चतुर्विध योजना

चनहट (लखनऊ)

७-५-१९५२

आज रास्ते मे दोनो तरफ कतार मे लगे वृक्षो ने मानो स्वागत के लिए कमान ही खीच दी हो। अभी-अभी पौ फट रही थी। बाराबकी जिला लाँघकर लखनऊ जिले मे प्रवेश हो रहा था। दोनो जिले की सीमा पर दोनो जिले के कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुए थे। यहाँ की विदाई और वहाँ के स्वागत का अपूर्व समारोह था। बाराबकी के लोगो को विनोवाजी ने सदेश दिया—"सतत काम चलने दो" और पास मे ही बैठे हुए उस जिले के जिलाधीश से हँसते-हँसते बोले—"अब आपको भी भूदान का काम करना होगा पर शर्त यह है कि इसके लिए आपको अलग से भत्ता नही मिलेगा।" सब हँसने लगे। जिलाधीश तो मारे शरम के पानी-पानी हो गया।

किसी ने कहा—यह स्थान दोनो जिले की सीमा पर है। विनोवाजी ने कहा—"यहाँ कहाँ सीमा है? मुझे ऊपर अनत आकाश और नीचे अखण्ड पृथ्वी ही दिखाई देती है।"

किसी अखबार मे विनोवाजी पर आलोचना करते हुए कहा गया था कि "ये अहिंसावाले तो कम्युनिस्टो से भी ज्यादा खतरनाक है। क्योकि ये तो गीता का आधार लेते है।" इस लेख का जिक्र करते हुए विनोवाजी ने कहा—"जिसने यह लिखा है उसने हमारी ताकत को ठीक

पहचाना है। अव मेरा 'गीता-प्रवचन' घर-घर जानेवाला है, लोगो के दिलो को प्रभावित करनेवाला है और क्रान्ति की दीक्षा देनेवाला है।"

इसके वाद मैंने ऊटपटाँग सवाल पूछना शुरू कर दिया। फिर तो चर्चा पडाव पर पहुँचने तक चलती रही। मैंने पूछा, "भलाई-बुराई (Good and Evil) के सघर्ष मे कम-बुराई (lesser-evil) का स्वीकार करना कहाँ तक उचित माना जा सकता है ? इस दुनिया मे ठीक हमारे आदर्श तक पहुँचे हुए व्यक्ति मुश्किल से ही मिलेगे। और यदि इस सघर्ष मे हम कुछ भी नही कबूल करते है तो हमे सग्राम छोडकर भाग जाना पडेगा।"

विनोवा—"कम-बुराई (lesser-evil) यह शब्दप्रयोग ही गलत है। वह तो केवल दार्शनिको की वात है। इस दुनिया मे हम परिस्थिति को देखकर कुछ चीजो को स्वीकार करते है और कुछ का अस्वीकार। वैसे देखा जाय तो जव 'कालयवन' आया था उस समय देश वर्वाद होगा इस डर से भगवान श्रीकृष्ण सग्राम छोडकर भाग गये थे। फिर भी हम उन्हे 'रणछोड' कहकर उनका गुणगान करते है। इसीलिए कभी-कभी वुरी चीज का स्वीकार करने की अपेक्षा कृष्ण के जैसा पलायन करना भी अधिक उचित माना जा सकता है। महाभारत युद्ध के समय जव धर्मराज भागने लगा तव कवि ने उसका गुणगान करते हुए लिखा है कि "वह कृष्ण के जैसा भाग रहा था।" वैसे तो हमारा शरीर भी एक कम-वुराई (lesser-evil) ही है। जव हमने शरीर को स्वीकार किया तो कुछ तो वुराई (evil) मान ही ली।"

मैंने पूछा—"आपकी इस विचारधारा के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे हमें कौन-सी नीति रखनी चाहिये ?"

विनोवा—"व्यापक क्षेत्र मे हमे जरा भी वुराई (evil) स्वीकार नही करनी चाहिये। सव देशो की जो जनता है वह अच्छी है और वह अपनी ही है लेकिन उस जनता के नाम पर वोलनेवाली जो सरकार होती है वह अपनी नही है।"

मैंने पूछा—"कुछ लोग कहते है कि जहाँ सर्वाधिकारशाही (Totalitarianism) चल रही है ऐसे देशो मे जो जनता है उसके कानो तक हमारी आवाज नही पहुँच सकती है तो फिर हमे उसके लिए क्या करना चाहिये ?"

विनोबा—"सब बापो की सेवा करना हमारा फर्ज नही है। अपने बाप की सेवा करने से हम सब की सेवा कर लेते है। गाधीजी इसीलिए भारत की जनता की सेवा को सबसे अधिक महत्त्व का स्थान देते थे।"

मैंने विनोद मे पूछा—"सब देशो की जनता अपनी ही है तो फिर अमरीका से आनेवाला अनाज भी अपना ही है ऐसा क्यो न समझे ?"

विनोबाजी ने हँसते-हँसते जवाब दिया, "तो फिर वहाँ की जनता ने वह अनाज खाया याने हमने ही खाया ऐसा क्यो न समझे ? यदि आत्मीयता की भावना ही स्वीकारनी है तो पूरी आत्मीयता माननी होगी, अधूरी नही।"

इसके बाद विनोबाजी कहने लगे—"यदि हम इस उसूल को मजूर करे कि एक जगह से दूसरी जगह अनाज ले जाना अच्छा है तो फिर उसका नतीजा यह होता है कि जिस स्थान पर जो चीज अधिक पैदा हो सकती है वहाँ वही पैदा की जावेगी और सब चीजो का आदान-प्रदान चलता रहेगा। बगाल मे सिर्फ चावल ही पैदा किया जायेगा और पजाब मे सिर्फ कपास। इस प्रकार की योजना मे माल का आदान-प्रदान करने-वाला जो अधिकरण (Agency) होता है उसका महत्त्व बहुत ही बढ जाता है। हमारा जीवन उस पर निर्भर रहता है। लेकिन अहिंसक समाज-रचना मे इस प्रकार के अधिकरण के लिए कोई स्थान नही है। क्योंकि जहाँ इस प्रकार का अधिकरण आया वहाँ अहिंसा टिक नही सकती है। अहिंसा के लिए स्वयपूर्णता अनिवार्य है। मैंने अपने सेवापुरी के भाषण मे यही कहा था कि हमे अपनी राष्ट्रीय योजना ऐसी बनानी चाहिये जिससे कि धीरे-धीरे राज्य (State) की जरूरत ही कम होती जायगी। हमारा मकसद है शासनहीन समाज-व्यवस्था। कइयो को यह बात जँचती नही। वे कहते है कि यह तो असम्भव वस्तु है।"

मैंने पूछा—"क्या दुनिया के सारे मसले हल करने का एकमेव मार्ग 'विश्व सघ राज्य' (World State) ही है या नही ?"

विनोवा—"जब तक दुनिया के सब देशो मे अहिसक समाज-व्यवस्था स्थापित नही होती है तब तक दुनिया मे शान्ति निर्माण होना असम्भव है।"

मैंने कहा—"लेकिन कुछ लोग तो कहते हैं कि 'राष्ट्र' जैसी कोई चीज ही नही है। हम सब मानव है और हमे यही दृष्टिकोण रखते हुए सब मसलो के बारे मे सोचना चाहिये।"

विनोवा—"कुछ लोग कहते है कि 'राष्ट्र' ही नही बल्कि 'दुनिया' जैसी भी कोई चीज है ही नही, मानव-समाज एक है, यही तक बात क्यो करते हो ? फिर इससे भी आगे बढने मे क्या हर्ज है ? हो सकता है कि आगे चलकर कोई यह कहे कि शनि, मगल आदि सबको लेकर एक राज्य बनाना चाहिये। यह सारा गोरखधधा किसलिए ? हमारा कोई शनि या मगल से विरोध थोडे ही है। लेकिन सबको एकत्रित करके एक राज्य बनाने की क्या जरूरत ?"

मैंने पूछा—"लेकिन जिस तरह भारत का एक राज्य बनने से प्रान्त-वाद खत्म हुआ उसी तरह दुनिया का एक राज्य बनाने से राष्ट्रवाद जो लडाइयो को पैदा करता है, क्या वह नष्ट नही हो सकता है ?"

विनोवा—"भारत का एक राज्य बनाने से प्रान्तवाद खत्म हुआ है या बढा है ? और भारत का एक राज्य किसने बनाया है ? किसी ने ऊपर से जबरदस्ती लादा नही है। तो फिर दुनिया का जो एक राज्य बनानेवाला है वह एकता की भावना से पैदा होगा या उसे कोई ऊपर से जबरदस्ती लादनेवाला है ? जबरदस्ती से लादी हुई एकता टिक नही सकती है।"

मैंने कहा—"जी हॉ। मानवो मे एकता की भावना निर्माण करके फिर दुनिया का एक राज्य बनाया जायेगा।"

विनोवा—"लेकिन कुछ लोग इस बारे मे इस तरह सोचते है कि जैसे आज सारे भारत का कारोबार दिल्ली मे चलता है, उसी तरह

सारी दुनिया की एक राजधानी होगी न्यूयार्क, लन्दन या दिल्ली और वही से सारी दुनिया का कारोबार चलेगा। लेकिन ये लोग समझते नही कि वास्तविक एकता तो विचारो की ही होती है। मै अपनी योजना बताऊँ। अनाज, वस्त्र आदि जीवन की जरूरतो के बारे मे गाँव स्वावलम्बी होना चाहिये। फिर दुनिया की एकता के लिए यह करना होगा —

१ सारी दुनिया मे विचारो का आदान-प्रदान चलता रहेगा जिससे कि मानवो मे एकता की भावना पैदा हो।

२ वस्तुओ का आदान-प्रदान होगा लेकिन प्रीति-भेट के तौर पर और ऐसी वस्तुओ का जिनके बिना काम चल सकता है। आवश्यक वस्तुओ के बारे मे तो गाँव को स्वावलम्बी ही होना चाहिये।

३ दुनिया के सारे विवाद तय करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायमडल (International-tribunal) रहेगा।

४ जहाँ कही मदद की जरूरत हो उसकी मदद मे फौरन दूसरे देश दौड जायेगे। मान लो कही अकाल पडा तो सारे वहाँ अनाज पहुँचाने मे दौड पडेगे।

अब आप चाहे तो इस चतुर्विध योजना को विश्व सघ राज्य (World-State) कह सकते है।"

मैने पूछा—"तो फिर इसमे पुलिस, सेना आदि की कोई जरूरत नही रहेगी।"

विनोबा—"बिल्कुल नही। ग्रामपचायतो के पास कुछ थोडी-सी पुलिस रहेगी लेकिन जो अतर्राष्ट्रीय सगठन होगा उसके पास केवल नैतिक शक्ति रहेगी, भौतिक शक्ति बिल्कुल नही। उसके पास तो अधिक से अधिक नैतिक शक्ति और कम से कम भौतिक शक्ति रहेगी।"

मैने पूछा—"न्यायमडल (Tribunal) कैसे चुना जायेगा ?"

विनोबा—"हर एक देश की जनता अपने देश के ज्ञानी और सदाचारी व्यक्तियो को वहाँ भेजेगी। उनके पीछे सिर्फ नीति का अधिष्ठान (Moral-Sanction) रहेगा। उसका काम सिर्फ झगडो का निपटारा करना

ही नही बल्कि सलाह देना यह भी रहेगा। इसे ज्ञानियो की सत्ता (या पुरानी भाषा मे कहे तो ब्राह्मणसत्ता) कह सकते है।

आज सयुक्त राष्ट्रसघ (U N O) का न्यायालय तो एक खेल बन गया है। उसके पीछे न नीति का अधिष्ठान (Moral-Sanction) है न कानून का (Legal-Sanction)। वैसे देखा जाय तो आज सयुक्त राष्ट्रसघ ही क्यो, भिन्न-भिन्न देशो की जो सरकारे है वे भी खेल ही है। आजकल जो चुनाव चलते है, वे भी तो खेल ही है। मै मानता हूँ, खेल, नाटक आदि के लिए मानव-जीवन मे कुछ स्थान है। लेकिन हमे इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि वह खेल ज्यादा महँगा न हो। अगर किसीने अपनी साल भर की कमाई एक ही नाटक देखने मे खर्च कर दी तो उससे बढकर बेवकूफ और कौन हो सकता है? खेलो, जरूर खेलो, लेकिन खेल की मर्यादाओ को भूलो मत।"

यह सुनकर दामोदरजी ने कहा कि "आपकी यह जो विश्व सघ राज्य (World-State) की कल्पना है वह कुछ आदर्श (Abstract) सी लगती है। जरा कुछ साकार (Concrete) चीज बताइये वरना कुछ समझ मे नही आता है।"

इस पर विनोबाजी ने हँसते हुए कहा—"अगर आप साकार चीज चाहते है तो लीजिये, अणु बम (Atom-bomb)। एक दफा ऊपर से गिरा कि सारा 'हिरोशिमा' खत्म हो जायगा।"

हिरोशिमा के बहादुर नागरिक जैसे इस अणु बम को सिर पर झेलते हुए दामोदरजी ने फिर से अपनी शका उठायी ही, "आपकी विश्व सघ राज्य (World-State) की कल्पना रेखागणित के 'बिन्दु' जैसी लगती है। लेकिन शिक्षक विद्यार्थियो को 'बिन्दु' के बारे मे समझाने के लिए काली तख्ती पर उस 'बिन्दु' को कुछ तो साकार (Concrete) बना ही देता है।"

विनोबा—"हाँ, इसे भी उतना साकार (Concrete) बनाया जा सकता है। लेकिन उससे बिन्दु की जो मूल व्याख्या है उसमे कोई अतर नही पडता। बिन्दु तो व्याख्या मे ही रहनेवाली वस्तु है। उसमे बाहर लाया जाय

तो वह विन्दु रहती ही नही है। मै मानता हूँ कि काली तख्ती पर विन्दु की आकृति बनाने के लिए शिक्षक को उस विन्दु को कुछ तो साकार बनाना ही पडता है। उसे कितना बडा बनाना यह तो विद्यार्थी की दृष्टि पर निर्भर है। विद्यार्थी की दृष्टि की प्रखरता या मन्दता के मुताबिक उस विन्दु का आकार भी बदलता जायेगा। हो सकता है कि किसी मन्दबुद्धि विद्यार्थी के लिए विन्दु के नाम पर छोटा-सा वर्तुल ही बनाना होगा। लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वह वर्तुल इतना बडा न हो कि जिससे उस विद्यार्थी को भी लगे कि यह वर्तुल है, विन्दु नही है।"

अब विनोवाजी ने इतना बडा वर्तुल बनाकर समझाया कि हम जैसे मन्दबुद्धि विद्यार्थियो को भी विन्दु क्या चीज है इसका भान हुआ। इस-लिए यह चर्चा समाप्त हुई। इसके बाद अन्य विषयो पर चर्चा चली।

प्रश्न--"क्या प्राचीनकाल मे सबको वेदाध्ययन का अधिकार था ?"

विनोबा--"प्राचीनकाल मे सिर्फ ब्राह्मणो को ही वेदाध्ययन का अधि-कार था ऐसा बात नही है। लेकिन उस समय सारी रचना ही ऐसी थी कि ब्राह्मणो को वेदाध्ययन जैसा मुश्किल काम करना पडता था। और साथ-साथ अपरिग्रही भी होना पडता था। संस्कृत का उच्चारण शुद्ध बनाने के लिए उन्हे सालो तक उच्चारण के पीछे पडना पडता था। तो सम्भव है कि अन्य लोगो को ऐसा कठिन जीवन बिताने की इच्छा ही न होती हो और इच्छा होने पर भी वे अपने को उस काम के लिए असमर्थ पाते हो। उन्हे लगता होगा सालो तक संस्कृत शब्द रटते बैठना एक भारी सजा ही है और बेचारे ब्राह्मणो को यह सजा भुगतनी पड रही है। लेकिन मै मानता हूँ कि यदि किसी अन्य को वेदाध्ययन की इच्छा हुई हो तो उसे उस अधिकार से वचित रखना अयोग्य है। मै मानता हू कि वेदाध्ययन का अधिकार सबको देना चाहिये। फिर चाहे उस अधि-कार का कोई लाभ उठावे या न उठावे। मैने १९१७ मे यह घोषित कर दिया था कि मै खुद वेदाभ्यासी ब्राह्मण हूँ और मै मानता हूँ कि

सबको वेदाध्ययन करने का हक है। एक जमाना था जब शूद्रो और स्त्रियो को वेदाध्ययन करने का हक नही था लेकिन यह बात मुझे मजूर नही है। इसलिए मै सबको वेद पढाने के लिए तैयार हूँ। जो वेदाध्ययन करना चाहता है वह चाहे किसी जाति का हो मेरे पास आ सकता है। मैने १९१७ मे यह बात कही थी और आज १९५२ चल रहा है। लेकिन आज तक एक भी ऐसा निकला नही जो मेरे पास वेदाध्ययन करने के लिए आया हो। इसलिए सबको अधिकार देने मे कोई हर्ज नही है। अधिकार देने पर भी कोई एकाध ही ऐसा होगा जो उस अधिकार का लाभ उठायेगा। मन्दिर-प्रवेश को भी यही बात लागू होती है। मैने तो कई दफा कहा है कि जरा सब को मन्दिर-प्रवेश का हक तो दीजिये। फिर देखिये मुश्किल से एकाध अनन्य भक्त मन्दिर मे जायेगा। वह बेचारा आज भी चुपके से जाता होगा। इन दिनो मे मदिर मे जायगा कौन ? लेकिन सब को अधिकार न देने से नाहक झगडे पैदा होते रहते है। मैने जब यह घोषित किया कि मै सबको वेद पढाने के लिए तैयार हूँ तब सीखने के लिए कोई आया नही, लेकिन उससे मै सब का दोस्त बन गया।"

मैने जब सुना कि आज तक हम स्त्रियो और शूद्रो मे से किसी ने भी वेदाध्ययन की इच्छा प्रगट नही की तब मुझे कुछ धक्का-सा लगा। मैने सोचा, समान अधिकारो के लिए आवाज उठाने के बजाय समान अधिकारो का लाभ उठाने के लिए योग्य बनने की ओर अधिक ध्यान जरूरी है। मै मानती हूँ कि विज्ञान के क्षेत्र मे मैडम क्यूरी निकल सकती है तो कुछ तो स्त्रियाँ ऐसी निकलेगी ही जो इस क्षेत्र मे अपना अधिकार जमा लेगी। लेकिन उसके लिए सबमे जरूरी बात है 'जिज्ञासा'। 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' यही है प्रथम पाठ।

आज विनोबाजी ने जो बात कही वह मुझे इतनी चुनौती-सी (Challenging) लगी कि मैने अनजान मे भगवान से प्रार्थना कर दी कि "हे भगवान्, ब्रह्मज्ञान के क्षेत्र मे विनोबाजी का पराभव करनेवाली कोई स्त्री ही निकले।"

आज का पडाव था चनहट जिसने १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध मे काफी वीरता दिखाई थी। आज दिन भर हम यहाँ के वीरो की कहानियाँ सुनते रहे।

कल हमे लखनऊ मे प्रवेश करना है, इसकी सूचना आज ही मिल गय। बडे-बडे अफसर, पत्रकार, फोटोग्राफर, फिल्मवाले, रेडियोवाले आदि सब दिखाई देने लगे।

भगवान् सहस्र-रश्मि के आगमन की सूचना देनेवाले अरुण के समान विनोबाजी का आज का भाषण था। उन्होने कहा—"मै धर्म-चक्र-प्रवर्तन करना चाहता हूँ। भगवान् बुद्ध से हमारी महत्त्वाकाक्षा कम नही है।"

"जागिये रघुनाथ कुँवर"

लखनऊ

८-५-१९५२

सूर्योदय के पहले ही राजधानी मे प्रवेश हुआ। जगह-जगह मन्त्री, सरकारी अफसर और प्रतिष्ठित नागरिको ने स्वागत किया। गोमती नदी का पुल पार करते समय चारो ओर मनोवेधक दृश्य दिखाई पडता था। गोमती के किनारे पर घनी झाडी थी और उस गहरे हरे रग की पार्श्व-भूमि पर सफेद आलीशान इमारते बडी लुभावनी मालूम हो रही थी।

नगर मे प्रवेश करते ही हमने उच्च स्वर मे गाना आरम्भ किया। पश्चिम की मोहमयी सभ्यता मे सम्मोहित नगरी को हम गीत-गर्जना से जागृत कर रहे थे। सत्ता और सम्पत्ति के काञ्चनमृग के पीछे दौडनेवाले नागरिको को यह पैदल चलनेवाला फकीर सचेत कर रहा था—"किस ओर दौड रहे हो? जरा ठहरो, सोचो!"

व्यकटेशय्या मधुर स्वर मे गा रहा था—

"द्वार-द्वार नग्न पद जो दीन हेतु जा रहा।
वह राम है या कृष्ण है जो साधो-गीत गा रहा॥"

पश्चिम के किसी लेखक ने लिखा था—"Whoever may deserve to be the president of world federation, he will be an heir

to Gandhi" (दुनिया का कोई भी क्रान्तिकारी हो या सत्यशोधक, वह जाने-अनजाने गांधी-गीत ही गायेगा।)

"उठ पडो ए भारतीय जग जगायेंगे।"

गांधी के भारत को आवाहन किया गया।

आज का हमारा निवास-स्थान था उत्तर प्रदेश कांग्रेस संसदीय मंडल (Parliamentary Board) का कार्यालय। वहाँ पहुँचते ही लोगों की भीड लग गयी। सारे दिन भर मेरा एक ही कार्यक्रम था। सामने नोट-बुक (Note-book) थी, कान विनोबाजी के शब्द सुन रहे थे और हाथ मे कलम थी जो अपना काम तेजी मे कर रही थी।

सबसे पहले सरकारी बडे अफसर मिलने आये। सरकार कानून के जरीये भूदान के काम को किस प्रकार मदद कर सकती है इस बारे मे चर्चा करने के लिए वे आये थे। विनोबाजी ने प्रस्तावना के तौर पर कहा—"हम तो जनता के हृदय मे परिवर्तन लाना चाहते है। हम सिर्फ जमीन हासिल करना नही चाहते है।

आपकी सरकारी योजनाएं तो अपने खुद के घर की है। लेकिन सरकार यदि मेरी योजना मे मदद दे तो इससे सरकार की ही प्रतिष्ठा बढेगी और यदि सरकार ने उसकी उपेक्षा की तो असतोष पैदा होगा। लोग कहेगे कि सरकार विनोबाजी को मदद नही दे रही है। इसलिए हमे मदद देना आपके हित मे ही हे।"

प्रश्न—"गरीबो से जमीन लेने मे छोटे-छोटे टुकडे बनेगे यह एक और समस्या पैदा होगी।"

विनोबाजी ने हँसते-हँसते कहा—'समस्या (Problem) पैदा करनेवाले हम है, उन्हे हल करनेवाले आप है। तो मै ही आपके लिए एक सब से बडी समस्या बन गया हूँ।" यह सुनते ही सभी हँसने लगे।

प्रश्न—"आपका काम तो भावना पर आधारित है तो फिर उसे कानून से कैसे जकडा जा सकता है? उसे कानून के जरीये कैसे सहायता दी जा सकती है?"

विनोवा—"यह वात ठीक है। यदि कानूनी ढग से सोचा जाय तो दान की जमीन सरकार की वन जाती है। लेकिन सरकार कानून के जरिये उसे वाँटने का अधिकार हमारी भूदान-समिति को देगी। हैदरावाद की सरकार ने ऐसा कानून वनाया है। यदि यहाँ की सरकार ने वैसा कानून नही वनाया तो मैं सारे दान-पत्र लौटाकर विहार की तरफ चला जाऊँगा। उसमे मेरा क्या विगडेगा ? मैं तो फकीर हूँ। लेकिन इसमें सरकार ही वदनाम होगी और जनता मे असतोष फैलेगा। मैं तो सरकार पर पूरा विश्वास रखकर काम कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि सरकार इस काम के अनुकूल कानून वनायेगी। लेकिन अगर उसने नही वनाया तो सरकार के लिए ही खतरा पैदा होगा। फकीर का कौन क्या विगाड सकता है ?"

प्रश्न—"आप जो सारी वाते कर रहे है उससे कई खतरे पैदा होने की सम्भावना है।"

विनोवा—"मैं तो आज के राज्य (State) के लिए इतना वडा खतरा पैदा कर रहा हूँ जो आज तक किसी कम्युनिस्ट ने भी न किया हो। क्योंकि मैं अहिसक हूँ और सीधे लोगो के दिल मे पहुँचता और कहता हूँ कि जमीन तो ईश्वरीय है। मैंने यह विचार न चीन से लिया है, न रशिया से, वल्कि ईश्वर से लिया है।

"एक दफा रास्ते मे मेरे लिए फूलो के हार अर्पण किये गये। मैंने उन लोगो से कहा कि एक शख्स वर्धा से यहाँ तक हजारो मील चलकर आया तो क्या फूलो के हारो के लिए ? क्या वर्धा मे हार नही मिलते है ? मेरा स्वागत करना चाहते हो तो जमीन देकर करो। आपसे भी मैं वही कहना चाहता हूँ। भूदान के काम मे हिस्सा लेने मे सरकार का ही हित है।"

विनोवाजी के शब्दो ने उन लोगो को अत्यन्त प्रभावित किया। मुख्य सचिव ने कहा—"महाराज, इस काम मे आनेवाली सभी अडचने हम लोग दूर करना चाहेगे। क्योंकि वह हमारा कर्त्तव्य है।"

दिनभर चर्चाएँ और सभाएँ होती रही। मुश्किल से भोजन के लिए समय निकला। वहाँ से आने पर देखा कि मुख्यमन्त्री पतजी विनोबाजी से मिलने आये थे। पतजी ने प्रेसवालो से कहा था कि "हमारी सरकार भूदान में पूरा हिस्सा लेगी।" पतजी और विनोबाजी दोनो के मन में एक-दूसरे के प्रति जो सौहार्द था उसके कारण उन दोनो की भेंट बहुत हृदयगम हुई।

इस बुढापे में भी पतजी जिस लगन से काम करते है उसे देखकर हम जवानो को लज्जित होना पडेगा। मैंने देखा, दस्तखत करते समय उनका हाथ काँपता है।

दोपहर को पत्र-प्रतिनिधि-सम्मेलन (Press Conference) हुआ।

प्रश्न—"क्या आपको कही-कही बहुत-सी झगडे की जमीन ही मिली है?"

विनोबा—"मैंने देखा है कि कई दफा इस प्रकार की गलतफहमियाँ हुआ करती है। हैदराबाद में बँटवारे का कुछ काम हुआ है। इसलिए वहाँ के अनुभव से हम कह सकते हैं। वहाँ पर झगडे की भी जमीन मिली परन्तु हमारे सम्पर्क से झगडे मिट गये और उससे कुछ लाभ ही हुआ। जिन्होंने खराब जमीन दी उन्होंने जान-बूझकर नही दी। अक्सर ऐसा होता है कि बडे जमीदार अपनी जमीन के बारे में कुछ भी नही जानते, इसलिए मुनीम के कहने से जमीन दे देते है। एक दफा बँटवारे के समय मालूम हुआ कि एक भाई की दी हुई ५०० एकड जमीन खराब थी। हमने उससे पूछा कि क्या हम यह जाहिर कर दे कि आपकी जमीन खराब है या आप वह जमीन लेकर दूसरी जमीन देनेवाले है? उस भाई ने दूसरी अच्छी जमीन देना कबूल किया। अक्सर कोई भी अपनी बदनामी नही कर सकता। लेकिन सात्विक, राजस और तामस तीन प्रकार के दान होते ही हैं। सभी दान तो सात्विक नही होते? इसलिए कही अगर खराब जमीन मिली है तो कोई हर्ज नही है। मैंने तो कहा है कि मैं पहाड भी लेने को तैयार हूँ। कोई देनेवाला निकले तो

मैं हिमालय भी दान ले लूँगा। मेरा मकसद तो यह है कि मैं ज़मीन की मालकियत को ही मिटाना चाहता हूँ।"

प्रश्न—"क्या आपका काम सामाजिक क्रान्ति का एक लाक्षणिक प्रयोग है ?"

विनोबा—"जो अन्धा होता है वह नहीं जानता कि सामने खम्भा है, लेकिन जो आँखवाला होता है वह जानता है, इसलिए वह खम्भे पर बिना टकराये आगे बढता है। इसी प्रकार द्रष्टाओ को वर्तमान काल मे ही भविष्य का दर्शन हो जाता है जो सर्वसाधारण लोगो को नहीं हो सकता है। मैंने देखा कि इस समय जमीन का बँटवारा हुए बगैर काम नही हो सकता, इसीलिए मैंने यह काम उठा लिया। तेलगाना मे जिस दिन मुझे पहला दान मिला उस रात को मैं उसके बारे मे सोचने लगा—क्या इस प्रकार दान माँगकर हिन्दुस्तान मे बेजमीनो का मसला हल हो सकता है ? मेरा दिल तो 'ना' कह रहा था। सारे इतिहास मे आज तक कभी ऐसा नही हुआ है। मन्दिर, मस्जिद आदि के लिए थोडी-सी जमीन माँगी गयी थी लेकिन भूमिहीनो के लिए लाखो एकड माँगना असम्भव-सा लगता था। तिस पर मैं अपने मे ऐसी कोई शक्ति नही पा रहा था जिससे कि मै दान माँग सकूं और लोग मुझे दान दे। जमीन जैसी प्रिय चीज का दान माँगना मेरे लिए सम्भव नही था। मैं तो तुच्छ था, मुझे कौन दान देता ? मेरी बुद्धि ने निर्णय दिया—'नही, मैं इस काम को नही उठा सकता।' इतने मे अन्दर मे एक आवाज आयी—'तुझे यह काम उठाना ही होगा। क्या तेरी अहिसा पर श्रद्धा नही है ? आज वह समय आया है जब कि अहिसा की कसौटी होनेवाली है। यदि जमीन का मसला अहिसा के तरीके से हल न हो सका तो फिर अहिसा को सदा के लिए हार मानकर हिसा के लिए जगह खाली करनी पडेगी। क्या इस समय भी तू डर के मारे चुप बैठ सकता है ?' नही, मैं चुप नही बैठ सकता था। अहिसा पर मेरी असीम श्रद्धा थी। मैं मानता था कि दुनिया के सारे मसले अहिसा के तरीके से हल हो सकते है। अहिसा की कसौटी

का क्षण आया था। मै दुर्बल था, तुच्छ था; फिर भी मेरे लिए एक ही रास्ता था। अपनी दुर्बलता के कारण पीछे हटना मेरे लिए असम्भव था। मैंने भगवान पर सारा भरोसा रखकर कदम आगे बढाया। मेरा विश्वास था कि जो भगवान मुझे दान माँगने की प्रेरणा दे रहा है वही भगवान दूसरो को दान देने की प्रेरणा देगा। जहाँ उसने बालक के पेट मे भूख पैदा की उसी क्षण माता के स्तन मे दूध पैदा किया। भगवान का काम पूरा ही होता है, अधूरा नही। इसी विश्वास के साथ मैंने दान माँगना शुरू किया और मुझे दान मिलता गया।"

यहाँ के निकटवर्ती अमीनुद्दौला पार्क मे सायकाल की सभा थी। आने-जानेवालो से अभी मेल-मुलाकात खतम नही हो पायी थी कि किसी ने आकर कहा कि "बाबा (विनोबाजी) चले गये है।" अतएव हाथ मे चरखा लेकर तुरत भागना पडा। देखा कि ऊँचे व्यासपीठ पर विनोबा चरखा कात रहे है। कताई समाप्त हुई। यह सोचकर कि अब प्रवचन शुरू होनेवाला है, मैं कलम निकालकर तत्परता से बैठ गयी। **"पूर्णमद पूर्णमिद पूर्णात्पूर्णमुदच्यते"** गम्भीर ध्वनि सुनायी दी। लगा कि जैसे यह ध्वनि बीसवी सदी की नही है, हजारो वर्ष पहले किसी गुफा मे तपस्या मे मग्न ऋषि वेदमन्त्रो का गान कर रहा हो। चौककर सिर ऊपर उठाकर देखा .. वे विनोबा ही थे पर ध्वनि उनकी नही थी।
"असतो मा सद्गमय" नेत्र बन्दकर ध्यानस्थ बैठे हुए विनोबा की ओर आँखे लगी थी। रोज प्रवचन के बाद महादेवी ताई प्रार्थना कहती थी, पर आज स्वय विनोबा ने प्रवचन से पूर्व प्रार्थना शुरू कर दी थी। पर हमे पता ही न चला कि प्रार्थना कब शुरू हो गयी। मै विनोबा की ओर अपलक देख रही थी। आँखो के सामने थी विनोबा की ध्यानस्थ मूर्ति और सुनाई दे रही थी उनके मुख से प्रवाहित होनेवाली ऋषियो की वाणी। इनके सामने हम दीन दुनिया को भूल गये। गीता के स्थित-प्रज्ञ के लक्षणोवाला पाठ (दूसरे अध्याय का आखिरी अंग) समाप्त हुआ। कुरान शरीफ का पाठ आरम्भ हुआ। मै फिर एक बार चौक पडी।

यह वैदिक-काल का ऋषि नही था। पैगम्बर के प्रथम शिष्यो में कोई श्रेष्ठ शिष्य नमाज पढ रहा था। बिल्कुल शुद्ध अस्खलित अरबी उच्चारण सुनाई पडते थे। कुरान का पाठ समाप्त हुआ। सब धर्मो की प्रार्थनाओ का एक-एक अंश पढा गया। प्रत्येक बार लगता था—विनोबा नही और कोई है। जैसे प्रत्येक धर्म के आद्य प्रचारको मे से हर एक की ध्वनि दूर किसी अज्ञात भूतकाल से सुनाई दे रही हो।

प्रार्थना समाप्त हुई, प्रवचन शुरू हुआ। उनकी आँखे अभी तक बन्द थी। विशाल जन-समुदाय मे से प्रत्येक के हृदय मे प्रवचन का एक-एक शब्द अंकित हो रहा था—"हमारे आराध्य देव, उधर खेतो मे कडी धूप मे काम कर रहे है। वे खुद भूखो रहकर हमे खिलाते है। उनके हम पर अगणित उपकार है। उनकी सेवा करना हमारा धर्म है।

"जो खुद मेहनत करते है उनका आशीर्वाद जिस खेत को प्राप्त नही होता है ऐसा खेत क्या बरकत देगा? उन्ही के आशीर्वाद से तो हम जियेगे। उनकी आशा, उनकी वासना उस अनाज पर रहेगी। वे फसल पैदा करते है, लेकिन उस फसल को केवल आँखो से देख सकते है। वह उनके पेट मे नही जाती। वे अत्यन्त सहनशील है। वे अब भी हमारी ओर आशा से देख रहे है कि हम उनकी चिन्ता करेगे। जैसे माँ बच्चे से आशा रखती है, वैसे वे भी हमसे आशा रखते है। जाग जाइये, जितनी देरी करेगे उतने गुनहगार साबित होगे। मै आपके दिल के भगवान को जगाने आया हूँ। 'जागिये रघुनाथ कुंवर पछी बन बोले।' मेरे भगवान, जाग जाइये, सेवा मे लग जाइये।

"आज बापू होते तो मै बाहर नही निकलता। उन्होने जो काम मुझे सौपा था उसीमे मुझे आनन्द प्राप्त होता था। लेकिन वे गये और मुझे अपना एकान्त आश्रम छोडकर निकलना पडा, उन्ही के लिए।

मै नेता नही हूँ, मै तो सब का खिदमतगार हूँ। मै आप सब की ओर भक्तिभाव से देखता हूँ। मेरे सामने कोई भी आ जाय, मेरे हाथ

भक्तिभाव से जुड जाते है। मेरे इन दो हाथो को जुड जाने की ही आदत है। मै नही पहचानता कि सामने कौन आया है, मै तो सामने भगवान की मूर्ति देखता हूँ।"

आँसुओ की धारा रुकी नही, वह निकली। "बापू होते तो मै बाहर नही निकलता!" कहनेवाला और सुननेवाले एक हो गये थे। आँसुओ की होड लगी थी। आज से चार वर्ष पहले भी इसी तरह ससार के सारे मनुष्य एकत्रित हुए थे। जहाँ देखो, वहाँ केवल आँसू ही दिखाई देते थे, पर वे आँसू वियोग के, दुख के आँसू थे। ..आज भी उन्ही की स्मृति से आँसू वह रहे थे। पर आज के आँसू, जैसे पुनर्मिलन के आनन्दाश्रु थे।

धर्म-चक्र-प्रवर्तन

लखनऊ
९-५-१९५२

प्रात काल छ बजे विश्वविद्यालय (University) मे ग्राम-पचायत के अफसरो के सामने विनोबाजी का भाषण हुआ। उसी समय खेलो की प्रतियोगिता मे विजयी लोगो को इनाम देने के समारोह का भी आयोजन था। इसलिए विनोबाजी ने भाषण का आरम्भ किया—"जीवन खेल है।" आगे चलकर कहा—"इसलिए उस खेल की हार-जीत को समान ही समझो। खेल के समान यह दुनिया भी मिथ्या है, इसका ख्याल रखना चाहिये। हम खेलते है तो फल-निष्पत्ति के लिए नही, बल्कि खेल के आनन्द के लिए। जीवन मे भी यही तत्त्व-ज्ञान लागू करना चाहिये।"

वहाँ से लौटकर निवासस्थान पर आते ही रा० स्व० सघ (R S S) के कार्यकर्त्ताओ की सभा मे विनोबाजी का भाषण हुआ। उन लोगो का अनुशासन और विनोबाजी के प्रति आदरभाव देखकर खुशी हुई। विनोबाजी ने उनसे कहा—"मानव की शक्ति मर्यादित होती है, इसलिए सेवा का क्षेत्र भी मर्यादित हो सकता है, लेकिन वृत्ति मर्यादित नही रखनी चाहिये।

चाहे सेवा का क्षेत्र मर्यादित हो, पर भावना का, महानुभूति का क्षेत्र अमर्यादित रखना चाहिये, संकुचित नहीं। हम सारी दुनिया की सेवा तो नहीं कर सकते, पर हमें सब मानवों को अपना ही समझना चाहिये। जाति, पंथ, धर्म, वर्ण आदि के आधार पर मानवता के टुकडे बनते हैं, यह बात हमें असह्य होनी चाहिये। हमें यही ख्याल रखना चाहिये कि मैं एक परिशुद्ध आत्मा हूं, देह नहीं हूँ। सारे भेद तो देह के कारण पैदा होते हैं। यदि मैं मानवों में धर्म, राष्ट्र आदि के नाम पर भेद करने लगता हूँ तो मेरी आत्मा छिन्न-भिन्न हो जाती है। मुझमें जो अनन्त शक्ति है उसे खोकर मैं सान्त-शक्ति के पीछे पडता हूँ। यदि हम मनुष्य को मनुष्य के नाते नहीं देखेंगे तो हिन्दू-धर्म की आत्मा को ही खोयेंगे। हिन्दू-धर्म तो समुद्र जैसा है, जो सब को अपने पेट में समा लेता है।"

इसके बाद एक कार्यकर्त्ता ने सवाल पूछा—"जब एक जमात का दूसरी जमात पर आक्रमण होता है तो क्या उस जमात को संगठित नहीं करना चाहिये ?"

विनोबाजी का जवाब सिर्फ शंका-समाधान कर देनेवाला न था, बल्कि आत्मसंशोधन की प्रेरणा देनेवाला था। उन्होंने कहा—"यह सवाल हवा में नहीं, जमीन पर पूछा है। आज हिन्दुओं को डर है कि मुसलमान उन्हें खत्म कर देंगे। लेकिन दुनिया में यदि कोई हिन्दुओं को नाश करने-वाले हैं तो हम ही हैं। आज हममें जो जातिभेद, छुआछूत, विषमता आदि है, उन्हीं के कारण हमारा नाश हो सकता है। आज भारत के मुसलमानों के मन में जो कटुता का भाव है वह हमारे ही मन का प्रति-बिम्ब है। वेदों ने हमें आज्ञा दी है कि अगर हम चाहते हैं कि सारी दुनिया हमारी ओर मित्र की निगाह से देखे तो हम भी सारी दुनिया को मित्र की निगाह से देखेंगे।

"मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे॥"

भाषण का अन्त तो दिल को खींचनेवाला था—"हमारे दुश्मन बाहर नहीं, हमारे ही दिल में हैं।"

भापण समाप्त होते ही विनोवा ने विनोद मे पूछा—"आपके निजाम कहाँ है ?" सब हँसने लगे। स्वय निजाम भी हँसते-हँसते विनोवाजी के पास चले गये और फिर दोनो का वार्तालाप शुरू हुआ।

यह सभा समाप्त होते ही किसान मजदूर प्रजापार्टी (K M P P) के कुछ कार्यकर्त्ता मिलने आये। गरम, नरम, वीच के सभी दलो के व्यक्तियो से पूछे जानेवाले सवालो के जवाव देने की विनोवाजी की पद्धति देखकर उनके गुरु—शकराचार्य—का स्मरण होता है।

एक सज्जन ने सवाल पूछा—"क्या आप कम्युनिस्टो की क्रान्ति को रोकना चाहते है ?"

विनोवा–"मै एक क्रान्ति (हिसक) को रोकना चाहता हूँ और दूसरी (अहिसक) को लाना चाहता हूँ। 'जैसे थे' (Status quo) को कायम रखने के लिए मै पैदल नही घूम रहा हूँ।

कम्युनिस्टो मे और हममे सिर्फ साधन (Means) के वारे मे ही अन्तर नही, वल्कि तत्त्वज्ञान मे भी मौलिक अन्तर है। फिर भी मै चाहता हूँ कि उनमे परिवर्तन हो और वे मुझमे सम्मिलित हो जायँ। मैने तो उन्हे तेलगाना मे ही कहा था कि इस तरह रात को आकर क्यो लूटते हो ? मेरे जैसे दिनदहाडे प्रेम से लूटना सीखो। "आखिर यहाँ के कम्युनिस्ट हमारे ही है। मुझे विश्वास है कि उनमे कभी न कभी परिवर्तन जरूर होगा। यदि वे भूदान का काम करने लग जायँगे तो मै उनका स्वागत ही करूँगा। मै तो समुद्र हूँ। समुद्र किसी नदी को इनकार नही कर सकता, पर वह नदियो से कहता है कि मुझमे आओगी तो तुम्हारा पानी भी मेरे जैसा खारा वन जायगा।"

एक सज्जन–"किसी भी काम के लिए धर्मप्रसारको का जोश (Missionary-fire) और पागलपन (Madness) चाहिये। वैसा जोश (Fire) सिर्फ आपमे और कम्युनिस्टो मे है। आप उन्हे दावत दीजिये।"

विनोवा—"मेरा सब मानवो को निमत्रण है।.. यह तो उनमे और

मुझमे बहुत साम्य है । उन्हे जैसा अपना एक प्रचारक-दल (Mission) है वैसे मुझे भी अपना एक प्रचारक-दल है ।

तेलगाना मे कम्युनिस्टो ने बहुत अत्याचार किये लेकिन मै कब से उन लोगो से कह रहा हूँ कि हिंसक आन्दोलन वापस ले लो, ताकि तुम एक कानूनी सस्था के नाते चुनाव मे हिस्सा ले सकोगे। उन लोगो मे से कितनो को यह बात जँच भी गयी, लेकिन उन्होने बीच मे काफी समय गँवाया और अब हिसक आन्दोलन वापस लेने का निर्णय लिया। उन्होने इतना समय गँवाया, इसका कारण यही है कि उन्हे वहाँ से (रशिया से) आदेश प्राप्त करना होता है, उनका दिमाग (Brain) तो वही है न।'

गरम दलवाले चले गये और विद्वान आये। लखनऊ विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य जुगलकिशोरजी, डा० राधाकमल मुखर्जी तथा विद्यापीठ के अन्य प्रोफेसरो को आते देखकर विनोबाजी ने मुस्कराते हुए कहा कि "विद्वत्-समाज है।" चर्चा शुरू हुई ।

डॉ० मुखर्जी ने प्रश्न पूछा—"अर्थशास्त्र की निगाह से देखा जाय तो सर्वोदय-योजना कहाँ तक सफल हो सकती है ?"

विनोबा—"हमारा यह मानना है कि अर्थ कोई गणित जैसा पूर्ण शास्त्र (Absolute Science) नही है। वह तो समाज की स्थिति के मुताबिक बदलता रहता है। सर्वोदय-योजना का एक बुनियादी सिद्धान्त यह है कि गाँव स्वावलम्बी बने और गाँव के कच्चे माल का पक्का माल गाँव मे ही बने, यह एक बुनियादी सिद्धान्त है। मशीन के बारे मे हम स्वमताभिमानी (Dogmatic) नही है। हम चाहते है कि यदि बडी मशीने आये तो खानगी मालिकी न रहे, बल्कि समाज की मालिकी हो जाय। हमारा आग्रह तो इस बात का है कि सब को काम देना चाहिये।"

विनोबाजी ने आज की शिक्षा-पद्धति मे आमूल परिवर्तन करना कितना आवश्यक है, इस बारे मे भी समझाया। चर्चा हो रही थी तब डा० मुखर्जी

अंग्रेजी मे बोलने लगे, क्योकि वे हिन्दी नही जानते। विनोबा ने बँगला मे कहा—"हिन्दी न आती हो तो बँगला मे ही बोलिये।" इस पर उन्होने आश्चर्य से पूछा—"आप बंगला भी जानते है ?" विनोबा के 'हाँ' कहते ही वे प्रसन्नता से बँगला मे बोलने लगे। विनोबा हिन्दुस्तान की प्राय सभी भाषाएँ जानते है। इसलिए वे प्रत्येक प्रान्तवासी को अपने आदमी जैसे लगते है। उन्होने दक्षिण की भाषाओ को भी आत्मसात् कर लिया है। मै तो सोचती हूँ कि यह बहुत बडी साधना है। तामिल भाषा की गडगडाहट सुनकर मुझे लगा कि कम-से-कम इस जन्म मे मै यह भाषा नही सीख सकूँगी। और इसमे बढकर आश्चर्य की बात तो यह हे कि विनोबा ने चीनी भाषा भी सीखी है। चीनी भाषा के उच्चारण को सुनकर और लिखावट को देखकर मै इतनी घबडा गयी कि किसी भी चीनी भाषा जाननेवाले व्यक्ति के सामने साष्टाग प्रणाम करने को तैयार थी। चीनी भाषा के केवल 'अ, आ' लिखने के लिए भी साक्षात् रविवर्मा को ही अवतीर्ण होना पडेगा। जो भाषा मुझे इतनी कठिन प्रतीत हुई उस भाषा को विनोबा ने केवल कुछ महीनो मे सीख लिया।

दोपहर को यही के रहनेवाले एक महाराष्ट्रीय बन्धु के घर हम लोगो को भोजन का निमन्त्रण था। वहाँ पत्तल के चारो ओर चौक पूरा गया था। अगरबत्ती जल रही थी। असल महाराष्ट्रीय ठाट का भोजन देखकर हम खुश हुए। मेरा अनुभव है कि उत्तर प्रदेश के लोग अत्यन्त प्रेम से और आग्रहपूर्वक अतिथियो को भोजन कराते है। उनका प्रेम से आग्रहपूर्वक खिलाना हम महाराष्ट्रियो के लिए अनुकरण की वस्तु है। पर उत्तर प्रदेशीय भाई मुझे क्षमा करे। महाराष्ट्र की परोसने की कला से वे अनभिज्ञ है। महाराष्ट्र मे खूब सारी मिठाइयाँ भले ही न मिले, पर दो-चार जो भी थोडी चीजे परोसी जायँगी वे एक विशिष्ट पद्धति से परोसी जाती है जिससे देखते ही भूख भागती हे। मेरा विचार है कि यदि हर प्रान्त के लोग दूसरे प्रान्त की अच्छी बातो को ग्रहण करे तो कितना अच्छा हो।

दोपहर मे काग्रेस कार्यकर्त्ताओ की मभा मे विनोवाजी ने अध्ययन न करने के लिए फटकारते हुए कहा कि "कम्युनिस्ट लोग और धार्मिक लोग अपने-अपने साहित्य का तो अध्ययन करते है लेकिन काग्रेमवाले और रचनात्मक कामवाले विल्कुल अध्ययन नही करते। अध्ययन के विना प्रगति कैमे होगी?"

इम चर्चा के वाद मुसलमान भाई आये। उन्होने उर्दू के वारे मे अपनी माँगे पेश की। विनोवाजी ने उनसे कहा कि "यदि हमे उर्दू को वढाना है तो उर्दू को नागरी-लिपि मे भी लिखा जाना चाहिये। मेरा तो मानना है भारत की सभी भापाएँ नागरी-लिपि मे लिखी जाये जिममे आदान-प्रदान सुलभ हो जायगा।"

इम चर्चा के वाद महिलाओ की मभा आरम्भ हुई।

महिलाओ ने शिकायत उठायी—'पुरुप हमे आगे नही वढने देते।'

विनोवाजी ने कहा—"तो फिर सत्याग्रह करो। आपमे प्रेम होता ही है। फिर उसके साथ आग्रह आया तो सत्याग्रह हो जाता है। जहाँ पर प्रेम है वही पर मफलतापूर्वक सत्याग्रह किया जा मकता है।"

मध्या समय था, निर्मल नील आकाश मे पूनो का चन्द्रमा चमक रहा था। आज का दिन, वुद्ध-जयन्ती का दिन था। प्रार्थना-प्रवचन आरम्भ हुआ।

"न हि वेरेण वेराणि समन्तीध कुदाचन"
"अवेरेण च समन्ति एस धम्मो सनन्तनो"

ढाई हजार माल पहले ये शव्द प्रकट हुए थे लेकिन आज फिर से वे ही शव्द दोहराये गये क्योकि उनमे त्रिकालातीत सत्य निहित था।

गम्भीर गिरा प्रकट होने लगी, "मित्रस्य अह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।" "वेदो ने कहा है कि दुनिया को शत्रु या मित्र वनाना मेरे हाथ मे है। मेरी आँख निर्मल है तो आईने मे यह ताकत नही है कि वह मलिनता दिखाये। जैमे आईना मेरा प्रतिविम्व रूप है वैमे यह दुनिया भी मेरा प्रतिविम्व है क्योकि वह जड है और मै चेतन हूँ। अहिमा और निर्वैरता का सिद्धान्त भगवान वुद्ध के और कई मन्तो के जीवन में सिद्ध

हो चुका है। समाज की सारी समस्याएँ हल करने मे निर्वैरता को कैसे अमल किया जाय, यह अब सोचना है। . राजनैतिक क्षेत्र मे गाधी-जी ने वही प्रयोग किया और हमने अपनी आजादी अहिंसा के तरीके से हासिल की, यह कोई छोटी बात नही है। . इस पर ध्यानपूर्वक सोचिये। यह सध्या-समय है, ध्यान-चिन्तन का समय है, ठीक सोचकर रास्ता तय कीजिये। . स्वराज्य के पहले हमने अहिंसा अपनायी थी, किन्तु उस समय हमारे लिए हिंसा का रास्ता खुला नही था। इसलिए वह अहिंसा अशरण की शरण, अगतिक की गति, अनाथ का आश्रय थी। लेकिन अब हमारे सामने चुनाव है। हम चाहे तो हिसा का रास्ता ले सकते है और चाहे तो अहिंसा का। . . यदि हम हिसा का रास्ता लेते है तो हमे अमरीका या रूस को गुरु बनाना पडेगा। फिर या तो उनका शागिर्द होकर रहना पडेगा या अगर हम उनसे भी बडे बलवान बने तो दुनिया के लिए खतरा बन जायँगे। तो क्या गुलाम या खतर-नाक बनना चाहते है ? . सोचिये, जिस तरह प्रलय के समय सर्वत्र पानी ही पानी हो गया था, लेकिन मार्कण्डेय ऋषि अकेला तैरता था और उसने दुनिया को बचाया। उसी तरह आज जब कि सारी दुनिया प्रलय की ओर जा रही है, ऐसे समय जो देश मार्कण्डेय ऋषि के समान तैरेगा वह खुद बचेगा और दुनिया को भी बचायेगा। अहिंसा का रास्ता लेकर हमारा भारत मार्कण्डेय बन सकता है। . निर्णय कीजिये, हिंसा या अहिंसा ? . . हवा के समान विचार को कोई नही रोक सकता है। अहिंसा के रास्ते को लेकर हमारा भारत अपना विचार बाहर भेज सकता है। ढाई हजार साल पहले भगवान बुद्ध के अनुयायियो ने सारी दुनिया भर मे अपना विचार फैलाया। उसी निष्ठा से काम करोगे तो आज भी हमारा अहिंसा का विचार सारी दुनिया मे फैल सकता है। मनु महाराज ने भविष्य लिखा था—

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा ॥"

भारत मे जो ज्ञानी पैदा होंगे उनमे सारी दुनिया के लोग मन्त्र सीखेंगे। यदि हम अहिंसा का रास्ता लेते है तो मनु महाराज का भविष्य सही होकर रहेगा। भगवान बुद्ध का काम परमेश्वर ने मेरे इन कमजोर कन्धो पर सौंपा है। हम दुनिया को आकार दे सकते है। निर्णय करो।"

ये केवल शब्द नहीं थे। हृदयो मे आग भडकानेवाली चिनगारियाँ थी। "मेरा दिल चीरकर मैने आपके सामने रखा है।"—विनोबा ने अन्तिम शब्द कहा। मै सोचती हूँ, ये सचमुच अन्तिम शब्द थे, क्योंकि इससे ज्यादा और क्या कहा जा सकता था। शब्दो के द्वारा जो भी व्यक्त हो सकता था वह प्रकट हो चुका था। अब शब्दो की शक्ति समाप्त हुई थी।

'धर्म-चक्र-प्रवर्तन'—हाँ, यही तो था वह शब्द। इस शब्द मे केवल प्राचीन गौरव की स्मृतिमात्र रक्षित न थी, बल्कि उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न भी था।

'अक्कोधेन जिने क्कोध असाधु साधुना जिने' कारुण्यावतार का विहार चल रहा था। "क्रोध को प्रेम से ही जीता जा सकता है। अंधकार का नाश प्रकाश से ही हो सकता है। हिंसा के दुष्ट चक्र मे फँसी दुनिया को अहिंसा द्वारा ही जीता जा सकता है।" किसके है ये शब्द ?
"अगणित मानवो के रक्तधारा से लाल, कलिंग-भूमि आज मेरी है ? पर क्या सचमुच वह मेरी है ?" चक्रवर्ती सम्राट् के दिमाग मे विचार-चक्र शुरू हो गया और उसी विचारचक्र मे से धर्म-चक्र को गति देने-वाला, 'देवानाम् प्रिय' अशोक का जन्म हुआ था। "अनेक लोगो के विश्वास से निर्मित मेरा अद्वितीय नेतृत्व, पर क्या मै सचमुच उन असंख्या के विश्वास का पात्र हूँ ? मेरे स्वागत के लिए उत्सुक जनता की आँखो मे जो निराशा, दैन्य, उदासीनता थी, वह मेरी नजरो से नही बच सकी। मै इन लोगो के लिए क्या रहा हूँ ?" विचार-चक्र फिर शुरू होगा। फिर सत्ता दान कर मनुष्य के हृदय के धर्म-चक्र को चलानेवाला नया अशोक पैदा होगा। हाथो मे न शस्त्र है, न अस्त्र, पर संसार को जीतते हुए आगे बढनेवाले वे भिक्षु और "क्षुधार्त विश्व

के लिए जमीन दो जमीन दो। नवीन धर्म के लिए जमीन दो जमीन दो ॥"
का गीत गानेवाले ये कौन ?

भूत और भविष्य की सीमारेखाएँ धुंधली होने लगी। वर्तमान मे ही दोनो का दर्शन होने लगा। विगत कल की स्मृति और आनेवाले कल का स्वप्न, दोनो का अन्तर न रहा और आज की अनुभूति मे दोनो का आभास होने लगा।

चौथा भाग

योगी और कलाकार

वन्थरा (लखनऊ)

१०-५-१९५२

नित्य की तरह तीन बजे उठकर चार बजे हम निकल पड़े। वही प्रकृति, वे ही सुन्दर दृश्य, वही गति, वे ही सहयात्री और वही नित्य की चर्चा। रोज की तरह सब नित्यकर्म चल रहा था परन्तु मन में बड़ा भारी परिवर्तन हो गया था। मन में नयी लौ जल उठी थी, जिसकी रोशनी के प्रकाश में नहायी हुई नयी दुनिया नजर आ रही थी। एक छोटे-से शब्द के द्वारा यह परिवर्तन हुआ था। अणुशक्ति की अपेक्षा शब्दशक्ति अधिक होती है। उस शब्द ने नयी दृष्टि दी थी, विश्व-विजय का नया तन्त्र सिखाया गया था। पर इस तन्त्र में स्वयं को जीतने के बाद ही विश्व-विजय की दीक्षा थी। इसलिए मन में एक प्रकार की गम्भीरता छा रही थी।

कल रात की घटना याद हो आयी। अपनी कला दिखाने भारत के दो विख्यात कलाकार आये थे। एक के हाथ में वायलिन था, दूसरे के हाथ में पखावज। विनोबा के शब्दों में एक सुकुमार कला थी, दूसरी मर्दानी कला थी। वायलिन के कोमल, करुण स्वर, मानव-हृदय की करुणा को जगा रहे थे। पखावज का गम्भीर निनाद सत्य और अहिंसा के द्वारा असत्य और हिंसा से लड़ने के लिए प्रवृत्त कर रहा था। दोनों कलाकारों की कला उनकी उँगलियों में उतर आयी थी। वे स्वयं तो दुनिया को भूल ही गये, पर विनोबा भी आत्मविस्मृत हो गये थे। प्रत्येक राग की समाप्ति पर विनोबा धीरे से राग का नाम बता देते थे और ऐसे रसिक संगीतज्ञ की दाद मिलने पर कलाकार दूने उत्साह से नया राग बजाने लगते। योगी के शयन का समय ठीक नौ बजे होता, पर आज कलाकारों ने

योगी को भी जीत लिया था। रात को साढे दस वजे तक वादन-समारोह चलता रहा।

हम हर रोज नये घर मे भोजन करने जाते है। पर लगता है जैसे अपने ही किसी नये घर मे भोजन कर रहे है। घर की स्त्रियो से हमारी दोस्ती हो जाती है, जैसे किसी पुराने जन्म के ऋणानुवन्धी हो। हर घर की स्त्रियाँ हम पर जो प्यार वरसाती है उससे हमारी जिम्मेदारी वढ जाती है। इन सव का प्यार हमे ऋणी वना देता है। वह ऋण ऐमा होता है जो जिन्दगी भर की तपस्या से चुकाया नही जा सकता।

आज हमने जिस घर मे भोजन किया वहाँ की एक लडकी ने मुझसे कहा—"क्या आप लोग कल ही चली जायँगी? सिर्फ एक दिन के लिए आकर इस प्रकार नाता जोडकर जाना ही था तो आयी ही क्यो?"

गुरुदक्षिणा

नवावगंज (उन्नाव)

११-५-१९५२

प्रात साढे चार का समय था। पौ नही फटी थी। सैकडो कोमल कण्ठो से एक ही ध्वनि निकली—"भूमि-दान-यज्ञ हम सफल वनायेंगे", "दुनिया नयी वसायेंगे।" रास्ते के दोनो ओर नन्हे-नन्हे वच्चे कतार लगाकर खडे थे। उनमे मे एक ने मधुर स्वर मे भूमि-दान-यज्ञ गीत गाया। वे वच्चे दिल मे उत्कण्ठा भरे हुए रात से ही वहाँ खडे थे। वावा को मिलनेवाले फूलो के हार वे वच्चो को पहना देते है। फिर जिसको वह हार पहनाया जाता है वह तो खुशी के मारे फूला नही समाता। आज जो हार मिले उनमे एक मखानो का हार था। गौतम ने चुपके से वही हार चुरा लिया। मै उसे कभी-कभी अग्रेजी पढाया करती हूँ। इसलिए मैंने उससे उस हार मे से अपनी 'गुरुदक्षिणा' ले ही ली। हार खतम होते ही गौतम कहने लगा—"हर रोज ऐसे ही हार मिलते तो कितना अच्छा होता। फूलो के हार तो सूख जाते है।"

करण भाई की लडकी मुन्नी अभी-अभी यात्री-दल मे शामिल हुई है। वह तो मृदु और गौतम से भी छोटी है। उसकी मीठी और भोली-भाली वातो को सुनकर हम भी उसके जैसा वोलने लगते है। पन्द्रह मील तक कडी धूप मे चलने के वाद प्यारी मुन्नी अनेक भावो को व्यक्त करनेवाला एक ही शब्द वोल उठती--"हाय वावूजी!" जिसे सुनकर हम लोगो का एकदम श्रम-परिहार हो जाता और हम खिलखिला पडते।

रात को हम एक धोवी के यहाँ भोजन करने गये। कानपुर जैसे शहर के आसपास रहनेवाले धोवी भी मालदार ही है। वहाँ के परिवार की वहनो ने मेरे पैर पडना शुरु किया। यह देखकर तो मै घवडाने लगी। 'ना, ना' करती मैं एक को रोकती तो दूसरी चुपचाप ही मेरे पैरो पर अपना माथा टेक देती। आज भी यहाँ पर सम्मिलित कुटुम्ब-प्रथा कायम होने के कारण एक-एक घर मे छोटी-वडी मिलाकर वीस-वीस, पच्चीस-पच्चीस स्त्रियाँ होती है। इन सव को मेरे चरण-स्पर्श से पावन (?) होते देखकर मुझे तो विना भोजन किये ही यहाँ से कही भाग जाने की इच्छा होती। कहाँ उनका पावन होने का विश्वास और कहाँ हमारा मानसिक दौर्वल्य।

जय हिंद, जय दुनिया, जय हरि

उन्नाव
१२-५-१९५२

विनोवाजी से अक्सर पूछा जाता है कि 'आपका काम कव पूरा होगा?' विनोवाजी जवाव देते है--"क्या यह मेरे घर की शादी है? यह तो आपका काम है। मुझसे क्यो पूछते हो कि कव पूरा होगा? आप जव इसे पूरा करना चाहे तव वह पूरा होगा। परमेश्वर मुझसे जितना काम लेना चाहता है, लेगा और जव वह मुझे उठा लेगा तव मै आनन्द से उससे मिलने के लिए चला जाऊँगा। याद रखिये कि यह आपका काम है, मेरा नही।" यह जवाव सुनकर सवाल पूछनेवाले को लगता होगा जैसे किसी ने तमाचा मारा हो।

रास्ते मे किसी ने नारा लगाया, **"तिरगे झडे की जय"**। यह सुनकर बाबा ने ऊँचे स्वर मे कहा—**"सब झडो की जय"**। हम लोग भले ही सर्वोदय का नाम लेते हो, पर "सब झडो की जय" जैसे विचार को हज़म करना हमारे लिए कठिन ही है।

इसी समय विनोबा ने एक घटना का जिक्र करते हुए कहा—"एक दफा एक भाई मुझसे मिलने आये थे, आते ही उन्होंने अभिवादन करते हुए कहा—**"जय हिन्द"**। मैने कहा—**"जय हिन्द, जय दुनिया, जय हरि।"**

हमारे यात्री-दल के साथ विनोबा-साहित्य की एक छोटी सी दूकान भी रहती है। यात्री-दल के दो भाई साहित्य-प्रचार का ही काम करते रहते है। 'गीता-प्रवचन' की सबसे अधिक बिक्री होती है। अपने हर एक प्रवचन के अन्त मे विनोबाजी किसी कुशल प्रचारक के जैसे कहते है, "मैने आज का दिन आपके साथ बिताया, कल यहाँ से चला जाऊँगा। जिन्दगी मे हम फिर कब मिलेंगे, कौन जानता है? सम्भव है, हमारी यह आखिरी मुलाकात हो। परन्तु शरीर की सगति मे विचार की सगति बेहतर है। मैने अपने 'गीता-प्रवचन' मे अपनी जिन्दगी के अनुभव कहे है। यदि आप वह किताब खरीदेंगे तो उसके जरिये मैं सदा आपके पास रहूँगा। विचारो की दुनिया मे हम सदैव निकट रहेंगे।" प्रवचन समाप्त होते ही पुस्तको की दूकान के पास 'गीता-प्रवचन' खरीदनेवालो की भीड लग जाती है।

अमर शहीद गणेशशंकर की याद

कानपुर

१३-५-१९५२

जैसे-जैसे शहर नजदीक आता गया, भीड बढती गयी। आखिर के चार मीलो मे ऐसा लगता था मानो जन-समुद्र को तैरकर ही आगे बढना होगा। रास्ते मे दोनो तरफ से यद्यपि हाथ-बाँधे दो सौ स्वयसेवको की कतार थी, फिर भी भीड को रोकना असम्भव था। लोग अपनी सुविधानुसार अनेक वाहनो

(साइकिलें, रिक्शा, ताँगे आदि) का उपयोग करते हुए और पैदल आ रहे थे। विनोबाजी के पास पहुँचना असम्भव समझकर लोग उनकी तरफ दूर से ही फूल-मालाएँ फेंककर अपनी श्रद्धा प्रकट कर रहे थे। सुनते हैं, राम और कृष्ण के अनेक कार्य ऐसे होते थे, जब समय-समय पर देवता उन पर पुष्प-वृष्टि करते थे। पर विनोबा पर सतत पुष्प-वृष्टि होते दिखाई दे रही है। देवताओं द्वारा नहीं, जनता-जनार्दन द्वारा। यह ऋतु मोगरों के फूलों की है। इसलिए मोगरों की बहार और सुगन्ध चारों ओर फैली हुई है। गंगा के पुल पर नागरिकों की तरफ से स्वागत की तैयारियाँ जोरों पर थी। वहाँ पर तो मानो जन-समुद्र ही उमड पडा है। अब शहर की सीमा लग गयी थी। आगे के तीन मील पर जगह-जगह पर मंगल आरती उतारी जाती थी। रास्ते में स्थान-स्थान पर स्वागत-सूचक द्वार बने थे। और उन पर लिखा था, "हे युगप्रवर्तक संत, तेरा स्वागत है।", "बापू के महाशिष्य संत, तेरा स्वागत है।", "अहिंसक क्रान्ति के प्रणेता, तेरा स्वागत है।" विनोबाजी के आगे बैंड के साथ चार घुड़सवार चल रहे थे। भीड से विनोबाजी की रक्षा करने के लिए पीछे से हम लड़कियाँ उन्हें घेरकर चल रही थीं। "महात्मा गांधी की जय" के निनाद से आकाश गूँज उठा था। दरिद्रनारायण के प्रतिनिधियों का यह स्वागत देखकर लगता था, मानो नये युग का आगमन हुआ हो।

हमारा निवासस्थान एक उद्यान के बीच एक सुहावना बँगला था। द्वार पर प्रवेश करते ही चन्दन और अक्षत से हम सब का स्वागत हुआ। यहाँ की सारी व्यवस्था अति उत्तम थी।

कानपुरवालों ने पिछले दो महीनों में स्वागत की जोरदार तैयारियाँ चलायी थीं। भूदान के लिए जिले भर सुचारु रूप से एक आन्दोलन ही चलाया था। जिले के सब पक्षों के प्रमुख कार्यकर्ताओं की 'विनोबा-स्वागत-समिति' बनायी गयी थी। उस समिति की ओर से जिले भर में विनोबा-साहित्य का प्रचार हुआ। छोटी किताबें तो हजारों की तादाद में बिकीं। जगह-जगह पोस्टर्स के द्वारा जनता को सारी जानकारी दी गयी। भूदान-गीत गाते

हुए भूमि माँगनेवाले कार्यकर्त्ता गाँव-गाँव घूमने लगे। बडे लोग, बडो के पास जाकर जमीन माँगते थे और छोटे कार्यकर्त्ता छोटो के पास जाकर माँगते थे। इन सब प्रयत्नो का परिणाम यह हुआ कि विनोबाजी को कानपुर जिले मे प्रवेश करते ही कानपुरवालो ने उस जिले के लिए मुकर्रर किये हुए दस हजार एकड भूमि के कोटे से अधिक भूमि के दानपत्र कानपुर की सभा मे अर्पण किये। भूदान-यज्ञ के इतिहास मे यह अनोखी घटना थी। अपने प्रवचन मे इसकी सराहना करते हुए विनोबाजी ने कहा कि "आपने जमीन तो दी, लेकिन उसके साथ दो हजार बैलजोडियाँ भी दीजिये।" इस पर कानपुर के प्रमख भूदान कार्यकर्त्ता श्री शिवनारायण टण्डनजी ने सभा मे एलान किया, "विनोबाजी की यह दूसरी माँग भी हम पूरी करेगे।" यह सुनते ही तालियो की आवाज से आसमान गूँज उठा। यहाँ के सब छोटे-बडे कार्यकर्त्ता इतने उत्साह और लगन से मिल-जुलकर काम करते है कि उन्होने सारे देश के सामने एक मिसाल पेश कर दी।

विनोबाजी के कानपुर के निवास का, यहाँ के लोगो ने इस प्रकार योजना करके, लाभ उठाया कि विनोबाजी के हर एक क्षण का ठीक-ठीक से उपयोग किया गया जिससे शहर के सभी पक्षो और तबको के लोग उनसे मिल सके और अपनी-अपनी परिस्थिति निवेदन कर मार्गदर्शन पा सके।

सबसे पहले गोरक्षावाले आये। विनोबाजी ने उनसे कहा—"गोरक्षा का काम अन्धश्रद्धा से नही, वैज्ञानिक दृष्टि रखते हुए करना चाहिये।" इसके बाद जमीदारो के प्रतिनिधि आये। उन्होने एक सफेद कमलो से भरा हुआ पलाश-पर्णो का सुन्दर पात्र अर्पण किया। फिर उन्होने अपनी तकलीफे सुनायी।

विनोबाजी ने उनसे कहा—"आपकी जमीन कानून से तो गयी, पर दिल से कितनी गयी, यह देखना है। मै तो आपको स्वामित्व-निरसन का पाठ पढाने आया हूँ। ... मै जानता हूँ कि आज आपके पास पहले जैसी सम्पत्ति नही है, फिर भी मै चाहता हूँ कि आप अपने से छोटे की तरफ देखे, तो आपको मालूम हो जायगा कि उनसे तो आपकी हालत

कई गुना अच्छी है। आपकी जमीन तो जानेवाली ही है। आज सारी दुनिया मे ज़मीन के बँटवारे की हवा चल रही है। जहाँ हिंसक क्रान्तियाँ होती है, वहाँ पर तो जमीनवालो को कत्ल किया जाता है। फिर जरा सोचिये, इस क्रान्ति मे आपको जो तकलीफ हो रही है वह कितनी कम है। मै भी चाहता हूँ कि आपको कम से कम तकलीफ हो। इसीलिए मै आपसे भूदान माँग रहा हूँ।"

ज़मींदार गये और फिर व्यापारी और मज़दूरो के प्रतिनिधि आये। उन्होंने मजदूरो की दुर्दशा के बारे मे बताया। विनोबाजी ने उनसे कहा—" जैसे अहमदाबाद मे गांधीजी के नेतृत्व मे मजदूरो का एक सुदृढ सगठन खडा हुआ था, जिसकी मजदूर-मालिक दोनो मे नैतिक प्रतिष्ठा थी और जो पक्षपाती नही था, वैसे सगठन खडे कीजिये तो फिर आपका काम बन सकता है।"

'अमर शहीद' गणेशशकर विद्यार्थी कानपुर के ही थे। उन्ही के बनाये हुए कई अच्छे कार्यकर्त्ता आज भूदान का काम करते है। विनोवाजी ने अपने प्रवचन में उनके बारे मे कहा कि "इस नगरी मे 'समर्पण-योगी' स्व० गणेशशकर विद्यार्थीजी की प्रेरणा काम कर रही है। यहाँ पर जो अच्छा काम हुआ उसका श्रेय किसको दे ? मै मानता हूँ कि उसके मानसिक कारणो मे सबसे बडा कारण वे है। एक मनुष्य के शुद्ध जीवन से एक ऐसी पुण्य-परम्परा का निर्माण होता है, जो कभी टूटती नही। यहाँ पर जो प्रेरणा है उसके पीछे उनके बलिदान की शक्ति है।" किसी सत्प्रवृत्त मनुष्य के जीवन का परिणाम उसकी मृत्यु के बाद भी कैसे दिखाई देता है, इसका यह जीता-जागता उदाहरण था। बकुल के फूल सूख जाने पर भी उनकी सुगन्ध कायम रहती है।

दोपहर मे कार्यकर्त्ताओ की सभा हुई। सबसे पहला सवाल था, "आपको कैसी ज़मीन मिल रही है ?"

विनोवाजी ने जवाब दिया—"मुझे कैसी ज़मीन मिल रही है इसका जवाब तो आपको देना चाहिये, क्योकि आप ही जमीन लानेवाले है।

मैं चाहता हूँ कि हर एक शख्स ऐसी जमीन दे जो वह अपने लडके को देता है। इस पर कोई सवाल पूछ सकता है कि "यह कैसे सम्भव है ?" तो मैं कहूँगा कि जो लोग नालायको को दत्तक-पुत्र मान लेते है तो फिर मेरे जैसे लायक को अपना पुत्र क्यो नही मानेगे ? . " यह सुनकर सब हँसने लगे।

सायकालीन सभा का दृश्य अपूर्व था। लाखो की भीड ओर व्यवस्था अति उत्तम रही। व्यासपीठ तो अति सुन्दरता से सजाया गया था। अमलतास के फीके, पीले फलो के गुच्छे, लाल-लाल गुलमेंहदी और हरे पत्तो के गुँथे हुए सुन्दर-सुन्दर वन्दनवार चारो ओर लटक रहे थे। सूर्यास्त की अलसायी हुई किरणे अमलतास के कोमल पुष्पो का सौन्दर्य बढा रही थी। जैसे ही विनोबा व्यासपीठ पर आये वैसे ही नजदीक की किसी उच्च अट्टालिका से उनके आने की सूचना बेंड द्वारा दी गयी। इसके बाद यहाँ के सगीत-कॉलेज के विद्यार्थियो ने वृद-वादन के साथ **"आनेवाले तुम्हें प्रणाम"** का गीत गाया। अब भी उस गीत की सुरीली तान कानो मे गूँज रही है। गीत समाप्त होते ही एक किशोरी बगाली पद्धति से सजाया हुआ पूजा का थाल लेकर सामने आयी।

पहले उसने दूर्वादल से विनोबा के चरणो मे जल छिडका और चरण-धूलि अपने मस्तक पर लगायी। उनके भाल पर चन्दन लगाया तथा अक्षत एव दूर्वादल उनके मस्तक पर रख दिये। अन्त मे बडे-बडे गुलाब के सुन्दर फूलो का हार पहनाया।

प्रवचन शुरू हुआ, "गुरुदेव ने गाया हे, **'एई भारतेर महामानवेर सागरतीरे'** हमारा भारत मानवो का महासागर है। सागर के समान सबको वह अपने पेट मे समा लेता है। भारत मे एक सिद्धान्त स्थिर हुआ है, मनुष्य जीवन का अन्तिम आदर्श है मुक्ति, मुक्ति का अर्थ है हम अपने को भूल जायँ, अहकारशून्य हो जायँ और विश्वरूप समाजरूप भगवान मे लीन हो जायँ। बिन्दु सिन्धु में लीन हो जाता है, तब वह बडा बन जाता है, नष्ट नही होता।

हमे भगवान के चरण छूना है । समाज मे जो दुखी है, पीडित है, वे भगवान के चरण है । उन्ही की सेवा करने से हमे भगवान के चरण-स्पर्श का लाभ होगा । आज हिन्दुस्तान जाग रहा है । हजारो लोग श्रद्धा से भूमि-दान दे रहे है । अन्धो ने भी दान दिया है । वह रामचरण अन्धा है । उसे मै कैसे भूल सकता हूँ ? उस दिन एक छोटे से गाँव मे हमारा पडाव था । रात को हम लोग सो गये थे । वह अधा चार मील की दूरी से वैलगाडी पर वैठकर आया । उसने मेरे साथियो को जगाया और वह दान देकर चला गया । दूसरे दिन जव मुझसे यह वताया गया तो मैने कहा, वह अन्धा नही था, वह तो भगवान था । उस अन्धे को क्या दर्शन हुआ ? यह प्रेरणा कहाँ से आती है ? इसका मतलव यही है कि भगवान इस काम को चाहता है । आप सव महान् है, तुच्छ नही है । इस दुनिया मे कोई अपूर्ण नही है, सारे मानव पूर्ण है । "पूर्णमद पूर्णमिदम्" अहिसा का रास्ता लीजिये और दुनिया के नेता वन जाइये । जिस तरह सम्राट् अशोक ने वुद्ध भगवान से प्रेरणा लेकर प्रेम और अहिसा का सदेश सारी दुनिया मे फैलाया उसी तरह हमे इस अशान्तिमय जगत को शान्ति और अहिसा का सन्देश देना है । लेकिन उसके लिए हमे अपने निज के जीवन मे अहिसा की प्रतिष्ठापना करनी होगी ।"

हमे वामनावतार ही चाहिये

कानपुर

१४-५-१९५२

प्रात चार वजे प्रार्थना हुई । शहर के कई नागरिक उपस्थित थे । उसके वाद यहाँ के विकास वोर्ड द्वारा वननेवाली हरिजन वस्ती का शिलान्यास विनोवाजी द्वारा निवासस्थान पर ही कराया गया । सवसे पहले लाल-लाल गुलाव-कलियो का एक सुन्दर हार अर्पण किया गया । हार को देखते ही उसे लेने का दिल हुआ ।

शिलान्यास-समारोह के भाषण मे विनोबाजी ने कहा—"आपके शहर की प्रतिष्ठा वडी-वडी अट्टालिकाओ से नही, वल्कि इन हरिजन भाइयो के निवासस्थानो पर से ही होनेवाली है। हमारे शरीर का जो सबसे कमजोर अवयव है, वही हमारी शक्ति है। भगी हमारा हृदय है। अगर वही फेल हो जायगा तो एक दिन समाज भी खतम हो जायगा। शृखला की जो कमजोर कडी है, वही उसकी ताकत है। वही टूट जायगी तो कमर टूट जायगी।"

आज मुझे वावा के एक लेख का अग्रेजी मे अनुवाद करना था। उनके भापणो मे वेदान्त आने लगा कि मेरे दिल मे धडकन पैदा होने लगती है कि अव इसका अनुवाद कैसे करूँ? एक दफा 'परमार्थ-साधना' के लिए ठीक शव्द नही मिल रहा था। मेरा सारा काम उस शव्द पर अड गया। आखिर मे मैंने तग आकर कहा कि इससे तो 'परमार्थ-साधना' करना ही अ छा होगा। उसी तरह 'आत्मौपम्य वुद्धि' ने आज मेरी जान खा डाली।

इस प्रदेश मे जगह-जगह सन् १८५७ के वीरो की स्मृतियाँ छिपी हुई है। यहाँ से नजदीक ही विठर (ब्रह्मावर्त) नाम का एक ऐतिहासिक स्थान है। यात्री-दल के कुछ भाई-वहन विठूर देखने जा रहे थे। ठीक उसी समय निवासस्थान पर पत्र-प्रतिनिधि-सम्मेलन (Press Conference) था। अव मेरे सामने सवाल पैदा हुआ कि कहाँ जाऊँ। आखिर यह सोचते हुए कि विगत इतिहास से आँखो के सामने वननेवाले इतिहास को अधिक महत्त्व देना चाहिये, मैंने विठूर न जाने का तय किया। मेरा चुनाव बिल्कुल ठीक था। आज के सवालो के कई जवाव मेरी शकाओ का समाधान करनेवाले थे।

पुराणो की कथाओ के रूपक आज की परिस्थिति को लागू करने की विनोबाजी की पद्धति वहुत ही उद्‌वोधक प्रतीत हुई। आज की परि-स्थिति को नरसिहावतार की उपमा देते हुए विनोबाजी ने कहा—"आज की हालत न नयी है, न पुरानी, वल्कि वीच की है। यह नरसिंहावतार चल रहा है। सव अवतारो मे यह अवतार भयानक होता है—न पूरा पशु, न पूरा मानव। इसके पहले के अवतारो के वारे मे तो हम समझ लेते थे कि ये पशु हैं। लेकिन यह तो सक्रमण-काल चल रहा है।

"मेरा काम नया नही है। यह तो वामनावतार चल रहा है। वलिदान का मतलव है वलि राजा का दिया हुआ दान याने वलवानो का दान, दुर्वलो का नही। वलि राजा तो चक्रवर्ती सम्राट् था। आज के वामनावतार मे भी तीन कदम भूमि माँगी गयी है। पहला कदम है, अपनी भूमि का छठा हिस्सा दान दीजिये। दूसरा कदम, मालकृत कन्यादान दो याने जमीन के साथ और साधनो का भी दान दो और गरीवो की सेवा मे लग जाओ। तीसरा कदम, गरीवो की सेवा करते-करते खुद गरीव वन जाओ। 'शिवो भूत्वा शिव यजेत्' यह तो पुराना ही काम है। लेकिन जैसे युग वदलता है उसी तरह काम का रूप भी वदल जाता है।"

प्रश्न—"दूसरो की योजना मे और आपकी योजना मे क्या फर्क है?"

विनोवाजी—"यही फर्क है कि हमारा वामनावतार है और दूसरो का परशुरामावतार या रामावतार। परशुराम ने शस्त्रो के जरिये निःक्षत्रिय पृथ्वी वनाने के लिए इक्कीस दफा प्रयोग किये, लेकिन वे सारे प्रयोग असफल रहे। आज भी परशुराम के प्रयोग चल रहे है। वे लोग कहते है कि 'शुद्ध' (Purge) करो। जमीदार और पूंजीपतियो को कत्ल कर डालो। रामावतार मे राजा रामचन्द्र की आज्ञा से काम चलता है। यही वात आज की भाषा मे कहनी हो तो कहेगे कि कानून के जरिये वँटवारा किया जाय। लेकिन हमारा काम तो इन दोनो से भिन्न है, क्योकि हमारा वामनावतार है। हम तो प्रेम से विचार समझाकर जमीन का दान लेते है, कोई इनकार नही करता, लोग दान देते है।

"वामनावतार के वाद परशुरामावतार या रामावतार इन दोनो मे से एक तो लाजिमी है। लेकिन वामनावतार मे ही काम वन जाता है तो फिर इनमे से किसी की भी जरूरत नही पडेगी। हम रामावतार को पसन्द करेगे, लेकिन हमे परशुरामावतार तो हर्गिज ही नही चाहिये। क्योकि परशुराम के इक्कीस प्रयोगो से यह सावित हो चुका है कि यह असफल ही होनेवाला है। लेकिन सवसे वढकर तो वात यह है कि वामनावतार मे ही सव काम हो जाय।"

विनोबाजी इन तीन तरीको को कत्ल, कानून और करुणा का तरीका कहते हैं। हमारे भूदान-कार्यकर्ताओ मे ये शब्द इतने प्रिय हो गये हैं कि हमारे यात्री-दल के गौतम और मृदु जैसे बच्चे भी कत्ल, कानून और करुणा के तरीको का स्पष्टता से विवेचन कर यह साबित कर सकते है कि करुणा का ही मार्ग सब से अच्छा है।

प्रश्न—"आज तो आप जो बिल्कुल बेजमीन है उनको जमीन दे रहे हैं, लेकिन बेहतर होता कि आज जिसके पास दो-तीन एकड जमीन है उसे और दो-तीन एकड देकर एकॉनोमिक होल्डिंग्ज (Economic holdings) बनाया जाय। हमारी बुद्धि को तो यही बात जँचती है।"

इस सवाल का जवाब महाभारत की एक कहानी मे मिला।

विनोबाजी ने कहा—"सब काम बुद्धि से ही नही करने होते, कुछ काम हृदय से भी करने होते है। महाभारत की एक कहानी है। यक्ष के सामने धर्मराज खडा था। यक्ष के सवालो का जवाब दिये बगैर पानी पीने की कोशिश की, इसलिए उसके चारो भाई मर गये थे। यक्ष ने धर्मराज से सवाल पूछे। उसने अच्छे जवाब दिये, इसलिए यक्ष खुश हो गया और उसने धर्मराज से कहा कि "मै तुम्हारे एक भाई को जिन्दा करूँगा। बताओ, किसे जिलाऊँ?" वैसे सबसे उपयोगी तो अर्जुन था। अर्जुन आर्थिक इकाई (Economic Unit) था। परन्तु धर्मराज ने कहा—"हमारा जो सब से छोटा भाई सहदेव है, उसे जिलाओ। हमारी दूसरी माता का वह सब से लाडला बेटा है।" यह सुनकर यक्ष बहुत खुश हुआ और उसने धर्मराज के सब भाइयो को जिलाया। उसे लगा कि धर्मराज उपयोगितावादी नही है, धर्मनिष्ठ है। अर्जुन को जिलाना सब से लाभदायी था परतु उसने लाभ को छोडा और सब से छोटे भाई को जिलाने के लिए कहा। इसीको धर्मदृष्टि कहते हैं। ऐसी धर्म-दृष्टि रक्खो और समाज मे जो सब से दुखी गरीब है, उन्हे सुखी बनाने की कोशिश करो।"

अक्सर लोग कहते है कि "हमे भूदान-यज्ञ का विचार अच्छा मालूम होता है, लेकिन गॉव-गॉव घूमकर जमीन मॉगना हमारे लिए सम्भव नही है, तो हम किस प्रकार का काम कर सकते है?"

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए विनोबाजी ने कहा—"दुनिया मे ऐसा कोई नही है जो भूदान का काम न कर सकता हो। इसमे हर कोई—स्त्रियाँ, बच्चे, सब हिस्सा ले सकते है। यदि आप जमीन नही माग सकते है तो विचार-प्रचार का काम कीजिये। भूदान-साहित्य के प्रचार का काम कीजिये। सब से पहले विचार आता है और उसके बाद आचार । अक्सर स्त्रियो को जमीन देने का हक नही होता, इसलिए वे खुद तो जमीन नही दे सकती, लेकिन दिलाने का काम कर सकती है। गाजियाबाद मे एक वकील भाई की पत्नी ने उसे समझाया कि "आपकी वकालत तो अच्छी चलती है और हम खुद जमीन पर काश्त भी नही करते है तो जमीन लेकर क्या करेगे ? सब जमीन दान दे दो।" फिर उस भाई ने सारी जमीन (बारह एकड) दान दे दी। अक्सर पुरुष कहते है कि "हम लोग तो दान देना चाहते है लेकिन स्त्री और बच्चो की आसक्ति के कारण नही दे सकते।" तो यदि स्त्रियाँ ही कहने लग जायँ कि दान दो तो फिर पुरुषो को दान देना ही पडेगा। हमने पुराणो मे पढा है कि देवो की स्त्रियाँ तो अच्छी होती ही है, लेकिन राक्षसो की भी स्त्रियाँ सती-साध्वी होती थी। रावण की पत्नी मन्दोदरी साध्वी थी, उसने अपने पति को बुराई से बचाने की काफी कोशिश की। तो इस यज्ञ मे हिस्सा न लेनेवाले राक्षसो (हँसी) की स्त्रियाँ मन्दोदरी जैसा काम कर सकती है। इसलिए अपने दैवी गुणो से पुरुषो की आसक्ति छुडाने का और दान दिलाने का काम वे कर सकती है। हमने अक्सर देखा है कि देवो की स्त्रियाँ तो हमे अनुकूल होती ही है लेकिन राक्षसो की स्त्रियाँ भी हमे अनुकूल होती है। और बच्चे तो भूदान का काम कर सकते है। वे जोरो से भूदान के नारे लगा सकते है और गीत गा सकते है। इससे तो वह शब्द त्रिभुवन मे फैल सकता है।" आखिरी शब्द सुनकर हममे से कितनो के मन मे विचार आया, "काश ! अगर हम इस समय बच्चे होते।"

चर्चा चल रही थी।

प्रश्न—"क्या आप जानते हैं कि आपको दान देनेवाले बडे-बडे जमीदारो में से बहुत से स्वार्थ की दृष्टि से दान दे रहे हैं ?"

विनोबा—"मैं दूसरो की भावनाओ का विश्लेषण नही करता। मैं मानता हूँ कि जो भूदान देता है, वह विचार सुनकर देता है और प्रेम से देता है। कोई कल तक प्रेम नही करता है तो क्या आज नही कर सकता ? मनुष्य का हृदय एक क्षण मे बदल सकता है। मनुष्य के हृदय मे प्रेम है।

"कम्युनिस्ट मुझ पर आक्षेप उठाते हैं कि 'विनोबा तो जमीदार और पूँजीपतियो का एजेंट है।' अगर वे लोग मेरा अधिकरण (Agency) कबूल करे तो मैं जरूर उनका एजेंट बनूँगा। गरीबो का एजेण्ट तो मैं हूँ ही, लेकिन श्रीमानो का भी एजेण्ट बनना चाहता हूँ। मेरा उद्देश्य तो है 'सर्वोदय' याने सब का उदय, किसी एक वर्ग का उदय नही।"

आखिरी सवाल था—"आपका उत्तराधिकारी कौन है ?"

विनोबा—"मेरा उत्तराधिकारी भगवान है।"

यह सुनकर सभी लोग चौक पडे। विनोबाजी के इस उत्तराधिकारी पर कोई आक्षेप तो नही उठाया जा सकता था। पर यदि वह गलती करे तो हम उसे चुनाव मे हरा नही सकते।

आज शाम की प्रार्थना-सभा भी कल की तरह विराट् थी। अभिनन्दनपरक कविताएँ और भूदान-गीतो की तो वर्षा ही हुई। हमारी इस यात्रा मे ऐसा एक भी दिन नही था जब कि सभा मे किसी स्थानीय कवि ने भूदान-गीत अर्पण न किये हो। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त से लेकर देहात की ग्रामीण भाषा मे कविता लिखनेवाले अज्ञात कवि तक सैकडो कवियो ने भूदान-गीत लिखे हैं। हिन्दी साहित्य-जगत् मे इन छोटे-बडे कवियो के भूदान-गीतो ने अपना एक विशेष स्थान पा लिया है।

विनोबाजी ने आज के भाषण मे सर्वोदय-विचार के बुनियादी उसूलो पर प्रकाश डाला। और फिर आज की सच्ची राजनीति क्या है, इस बारे मे बोलते हुए विनोबाजी ने कहा—"**प्रजाशक्तिसवर्धनम् राजकारणम्**"
"देश मे अनन्त भेद-भावो के होते हुए भी भेद मे अभेद निर्माण करना

और जनशक्ति जागृत करना ही सच्ची राजनीति है। अभेद मे भेद निर्माण करना कोई अक्लमदी का काम नही है। आज जब कि देश मे अनन्य मत-भेद मौजूद है, उस समय सब का ध्यान किसी एक बुनियादी मसले पर केन्द्रित करना—यही सब से जरूरी बात है। आज भूदान-यज्ञ के जरिये सब का ध्यान गरीबी की समस्या की ओर केन्द्रित हो रहा है, लोगो मे उत्साह पैदा हो रहा है और इस काम को सब की सहानुभूति हासिल हो रही है।"

विनोबाजी कह रहे थे, पर हमारे राजनीतिज्ञो को इसका भान कब होगा? भगवान् बुद्ध के जमाने मे क्या कम शक्तिशाली राजा थे? लेकिन उनकी राजनीति के जो षडयन्त्र चलते थे, उन्हे फुर्सत ही कहाँ थी कि उस पैदल घूमनेवाले द्रष्टा के उपदेश की ओर ध्यान दे। शस्त्र-अस्त्रो की आवाज़ बुलन्द थी तो एकाकी पथिक की अहिंसा, मैत्री और करुणा की ध्वनि कैसे सुनाई देती? लेकिन दुनिया उन शक्तिशाली राजाओ को भूल गयी और वह एकाकी पथिक आज भी मानव-हृदय को आकर्षित कर रहा है।

क्या अब फिर से यह सारा इतिहास दोहराया जानेवाला है?

सर्वोदय स्वप्न नही, सत्य है

सचेंडी (कानपुर)
१५-५-१९५२

भूदान के प्रणेता के स्वागत मे कानपुर नगरी ने जो योजकता, कल्पकता, कलात्मकता और भव्यता दिखायी, उसके कारण उस नगरी ने भूदान-यज्ञ के इतिहास मे अपना एक स्थान पा लिया है। पिछले दो दिनो मे कानपुर की जागृति का दर्शन तो हुआ ही था। पर आज जब प्रात चार बजे हमने प्रस्थान किया तो फिर से उसका दर्शन हुआ। कानपुर पार करने मे करीब डेढ घण्टा समय लगा। तब तक रास्ते भर सत को विदाई देने के लिए हजारो की भीड दिखाई देती थी। पुष्पवृष्टि और जयजयकार चलता ही रहा। अँधेरा होने के कारण चेहरे दिखाई नही दे रहे थे, फिर भी उन चेहरो पर दिखाई देनेवाले भाव हम कल्पना से जान सकते थे। शहर की सीमा तक सैकडो नागरिक हमारे साथ चल रहे थे। "विजयी

विश्व तिरगा प्यारा" के रचयिता कवि आजकल हमारे साथ ही घूम रहे है। उन्होने भूदान पर भी एक अच्छा गीत बनाया है और चलते समय वे खुद वह गीत गाते रहते है। जनता भी उनके साथ गाने लग जाती है। एक कवि अपना गीत गा रहा था —

"आज गौतम और गाधी की हो रही विजय है।"

इस छोटी सी पक्ति मे न जाने क्या-क्या निहित है।

पिछले दो दिन धूमधाम के थे, इसलिए आज के गाँव की शान्ति और स्थान की रमणीयता विशेप रूप से प्रतीत हो रही थी। एक छोटे-से तालाव के किनारे हमारा छोटा-मा घर था। तालाव के दूसरे किनारे पर एक विशाल वृक्ष था, जिसकी छाया मे वैठकर मै दिनभर अपना काम करती रही।

आज हम एक वडे ज़मीदार के मेहमान थे। हमारे यजमान ने विनोवाजी से कहा कि "आप आये और हमे वचाया, वरना हमारी हालत वहुत खराव हो जाती।" यह कहनेवाला खुद काफी जमीन का दान तो देता ही है परन्तु दान देने मे उसे खुशी भी महसूस होती है। विनोवाजी हमेशा कहते है कि "भूदान-यज्ञ के जरिये अमीर और गरीव दोनो की भलाई होगी। वास्तव मे उन दोनो के हितो मे विरोध है ही नही।" —ऐसी घटनाओ को देखकर उनके इस कथन का भान हो जाता है। 'सर्वोदय' याने कोई कवि की कल्पना नही है वल्कि एक महान् सत्य है, इसका भान हमे भूदान के जरिये हो रहा है। जिन्हे जमीन मिलनेवाली है ऐसे गरीव लोग तो विनोवाजी को अपना उद्धारक मानते है, यह तो स्वाभाविक ही है। परन्तु जिन्हे जमीन देनी पडती है वे भी विनोवाजी को अपना उद्धारक मानते है। इसीमे अहिसा के तत्र की सफलता निहित है।

हमारे यजमान के एक भाई वहुत मोटे-ताजे थे। उन्होने विनोवाजी से कहा—"मै आपसे कुछ वाते करना चाहता हूँ।" अक्सर इत्मीनान से वाते होती है चलते समय। इसलिए विनोवाजी ने मुस्कराते हुए जवाव दिया— "मै आपसे यह तो नही कह सकता हूँ कि कल मेरे साथ पैदल चलिये तव वाते होगी।" यह सुनकर सव खिलखिलाकर हँस पडे और स्वय प्रश्नकर्त्ता भी हँसने लगे।

गाधी के भारत की ओर दुनिया की निगाहे

वारा (कानपुर)
१६-५-१९५२

कल चलते समय कमर मे दर्द होने के कारण विनोबा की चलने की गति काफी कम याने बिल्कुल मेरे लायक थी। वे खुद को 'प्रजासूय यज्ञ का अश्व' कहा करते है। इसलिए आज उन्होने विनोद मे कहा—"आज तो घोडा तैयार है। कभी-कभी थक जाता है।"

रास्ते मे लक्ष्मीनारायणजी ने विनोबाजी से कहा—"आपका लखनऊ-वाला भाषण 'सर्वोदय' (मासिक) के इस अक मे पूरा छापना होगा।" विनोबाजी ने झट से जवाब दिया—"मुझे आपके 'सर्वोदय' वगैरह की कोई जरूरत नही है। मेरा अपना एक खास रेडियो है, उसके जरिये मेरा सदेश सारी दुनिया मे कब का फैल गया है। मुझे आपके प्रचार के साधनो की कोई आवश्यकता नही महसूस होती।" मुझे याद आया, परसो दक्षिण अमरीका के किसी कोने से एक भाई का विनोबाजी के नाम पत्र आया था। उसने लिखा था कि "गाधी के भारत मे आज आपका जो अहिसा का प्रयोग चल रहा है उसकी ओर हम सब आशा की निगाह से देख रहे है। इस हिसा और अशान्ति से भरे जगत् मे वही एक आशा की किरण नजर आ रही है।" ऐसे कई पत्र दुनिया के हर एक देश से आते रहते है। मै सोचती हूँ कि इन पत्रो के लेखको को बाबा के इस 'खास रेडियो' द्वारा सदेश मिलते होगे!

हमारे यात्री-दल के एक रा० स्व० सघ (R S S) के भाई द्वारा उपस्थित की हुई शकाओ के जवाब मे बाबा ने कहा—"गाँवो का सारा कारोबार गाँववालो के ही हाथ मे सौपना चाहिये। अपने गाँव का हित जानने के लिए पर्याप्त अक्ल हर एक मे होती है। पर आज अक्ल न होते हुए भी सारे राष्ट्र के बारे मे सोचने की कोशिश की जाती है जिससे कई मतभेद पैदा होते रहते है। मै तो चाहता हूँ कि गाँववाले शहरवालो को जताये कि 'हमे न आपके राजनैतिक पक्ष चाहिये और न झगडे, हम

अपना-अपना देख लेगे।' .आज का राष्ट्रधर्म तो राष्ट्र अधर्म वन गया है, क्योकि आज के राष्ट्रधर्म मे दूसरे राष्ट्रो से नफरत करने की वात आती है। वैसे तो हम सारे विश्व को ही एक मानते है और वास्तव मे वह एक है भी। लेकिन आजकल अहकार के कारण सारे विश्व को कृत्रिम उपायो के जरिये एक वनाने की नाहक कोशिश की जाती है जिसमे सैकडो मतभेद पैदा हो जाते है। सारे विश्व को एक वनाने के लिए कृत्रिम या वाह्य उपायो की जरूरत ही नही है। भगवान ने गीता मे कहा है कि 'मैने सव को एक सूत्र मे पिरोया है।' ... दुनिया मूलत एक ही है। करने की वात तो यही है कि आज जो भेदाभेद नजर आ रहे है उन्हे मिटाया जाय तो फिर विश्व की मूलभूत एकता का दर्शन हो जायगा।

"हमे किसी से भी डरने की जरूरत नही है। सारी दुनिया एक है—ऐसा सोचकर अभिन्नता और अद्वैत को अपने जीवन मे लाइये, फिर सारी दुनिया वेदान्त, तत्त्वज्ञान स्वीकार करेगी। मै जो भविष्य की वात कह रहा हूँ, लिख लीजिये कि "कल सारी दुनिया वेदान्त के तत्त्वज्ञान को स्वीकार करनेवाली है।"

शाम की सभा के वाद यहाँ के कुछ मुसलमान भाई विनोवाजी से मिलने आये। उन्होने कुरान शरीफ का कुछ अश सुनाया। जो हिस्सा उन्हे ठीक से याद नही था, वह विनोवाजी उन्हे वताते गये। फिर सरल भाषा मे उसका अर्थ भी वताते गये। यह देखकर मुसलमान भाइयो को आश्चर्य तथा आनन्द हुआ। विनोवाजी ने गद्गद होकर कहा—"इस छोटे से गॉव मे भी कुरान कठस्थ करनेवाले लोग मौजूद है, इस वात की मै वहुत कीमत करता हूँ। यही श्रद्धा है जिसके वल पर हम तर जायँगे।"

ऋषिसत्ता

डीग (कानपुर)
१७-५-१९५२

"आप पैदल क्यो घूमते है ?" यह सवाल अक्सर शहरो मे पूछा जाता है। इस पर वावा का जवाव वडा मजेदार रहता है—"यदि मै हवाई जहाज से

घूमता तो मेरा काम भी हवा में ही रह जाता। लेकिन मैं जमीन पर पैर रखकर घूम रहा हूँ, इसलिए मेरा काम जमीन में गहरा जा रहा है। यदि मैं हवाई जहाज मे घूमता तो मुझे सिर्फ मानपत्र मिलते, भूमि के दानपत्र नही। सत्य का सशोधन करना है, किस काम मे अहिंसा चलेगी, इस पर चिन्तन करना है तो खुली हवा में, मुक्त आकाश के नीचे घूमना चाहिये। वेदो ने तो आज्ञा दी है कि जो चलता है वह कृतयुग मे रहता है—"कृते सम्पद्यते चरन्।"

"मैं पैदल घूमता हूँ, इसीलिए तो जनता विश्वास के साथ मुझसे बातें करती है। उसके मन मे मेरे लिए आत्मीयता का भाव पैदा होता है।"

इस आत्मीयता का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है, बाबा से पूछे जानेवाले विविध प्रश्न। जैसे कोई छोटा बालक इत्मीनान से माँ के पास जाकर दुनिया का चाहे जो सवाल पूछ लेता है, वैसे ही लोग इत्मीनान से बाबा के सामने अपना दिल खोलकर रख देते हैं। "आप दुबले क्यो?" यह सवाल उसी किस्म का एक अजीब सवाल है और उसका उत्तर भी अजीब है। बाबा जवाब देते हैं—"अपने शरीर मे जो पचमहाभूत होते है, उनमे से पृथ्वी के अश को कम करना, योगी के लिए ठीक है। तपस्वी हमेशा कृश ही होते हैं। . और अपने शरीर की मिट्टी कम किये बगैर मुझे मिट्टी (भूदान) कैसे मिलेगी?"

दुनिया के किसी भी विषय के बारे मे चाहे जो सवाल पूछो, बाबा जवाब देते ही हैं। यह देखकर मेरे मन मे कभी-कभी एक 'दुष्ट' इच्छा पैदा हो जाती है कि कोई ऐसा सवाल क्यो नही पूछता जिसका उत्तर बाबा न दे सकें?

यह छोटा-सा गाँव होने के कारण आज ग्राम की सभा मे ग्रामीण जनता ही उपस्थित थी, पर विनोबाजी के नव-विचार को ग्रहण करने की क्षमता शहरवालो की अपेक्षा ग्रामीणो मे अधिक होती है। शायद यह सोच-कर आज उन्होने एक नव-विचार बताया—

"एक जमाना था, जब सत्ताधारी राजा लोग ऋषियो की सलाह से राज्य चलाते थे। इसका मतलब यह है कि उस समय ऋषियो की सत्ता

चलती थी। ऋषि सत्ता और सम्पत्ति से सदैव अलिप्त रहा करते थे। वे जगल मे जाते थे, ध्यान, चिन्तन, अध्ययन और अध्यापन करते थे। वे अपरिग्रही होते थे, इन्द्रिय-निग्रह करते थे। दुनिया की भलाई की बाते सोचते थे, समाज-धारणा के मूल तत्वो का चिन्तन करते और राजाओ को योग्य सलाह देते थे।

मै मानता हूँ कि राजाओ की सत्ता की अपेक्षा लोक-सत्ता अच्छी है। फिर भी आज के जनतन्त्र मे जो बहुसख्यक, अल्पसख्यको के भेद पैदा होते है, उनके कारण देश का कल्याण नही होता। सच्ची लोकसत्ता तब स्थापित होगी जब सत्ता का विकेन्द्रीकरण होगा। लेकिन आज इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि समाज मे एक ऐसा सेवक-वर्ग खडा हो जो अपरिग्रही, निष्काम तथा निष्पक्ष होगा। ये सेवक सरकार और जनता दोनो से भिन्न होगे। चिन्तन करेगे ओर दोनो की गलतियाँ बताकर उचित मार्ग दिखायेगे। वे सिर्फ सत्य का ही उच्चारण करेगे। इनके मन मे सब के लिए समान भावना रहेगी और वे सब की ओर मानव के नाते ही देखेगे। महाभारत की कहानी है, कृष्ण भगवान ने स्वय न लडने की बात कबूल करवाकर अर्जुन का सारथ्य लिया था। फिर भी उन्हे एक मर्तबा हाथ मे शस्त्र लेना पडा। पर व्यासमुनि तो सब से अलिप्त थे। जब अर्जुन और अश्वत्थामा, दोनो ने ब्रह्मास्त्र छोडे, तो दुनिया का सहार होने लगा। तब व्यासमुनि दोनो के बीच खडे हुए और उन्होने अर्जुन से ब्रह्मास्त्र को रोकने के लिए कहा और दुनिया को सहार से बचाया। इस तरह व्यासमुनि के जैसे अलिप्त, निष्पक्ष सेवको की आज बहुत जरूरत है। मुझे उम्मीद है कि 'सर्वोदय-समाज' के जरिये ऐसे सेवक पैदा होगे।"

भाषण सुनते समय मुझे विनोबाजी के 'स्थितप्रज्ञ-दर्शन' का एक वाक्य याद आया—"स्थितप्रज्ञ के नेतृत्व को स्वीकार करनेवाला समाज ही सब से अधिक प्रगतिशील और उन्नत समाज है।"

भारत की जनता ने एक दफा स्थितप्रज्ञावस्था तक पहुँचे हुए नेता का नेतृत्व मजूर किया था जिससे उसकी निर्णयकुशलता तथा बुद्धिमत्ता का परिचय दुनिया को हो ही गया था।

भूमि-वितरण का प्रथम समारोह

पुखरायाँ (कानपुर)
१८-५-१९५२

आज चलते समय विद्या वहन मुक्तकण्ठ से भजन गा रही थी। जोरो से हवा चल रही थी और उसकी आवाज हवा के साथ स्पर्धा कर रही थी। हमारी विद्या वहन उन साधको मे से एक है, जो गीतो के पखो द्वारा भगवान के चरणो को स्पर्श करने की मन्शा हृदय मे रखते है।

हवा की गति कुछ कम हुई और पुखरायाँ की जनता के सामने वोलते हुए विनोवाजी की गति वढने लगी—"दुनिया मे दो ही दान शाश्वत दान कहे जाते है–विद्यादान और भूमिदान। आज विद्यादान तो कौन दे सकता है? मुश्किल से एक-आध ज्ञानी विद्यादान दे सकेगा। इसलिए आप सब भूदान ही दीजिये।"

इसके वाद उन्होने 'गीता-प्रवचन' की सिफारिश की। इतने मे एक भाई खडा होकर कहने लगा कि—'आपका गीता-प्रवचन जहाँ-जहाँ जाता है वहाँ-वहाँ लोगो के दिलो को प्रभावित किये वगैर नही रहता। उसे तो अव जन-हृदय मे तुलसी रामायण के जैसा स्थान मिल रहा है। उसे पढकर विद्वान को भी रास्ता मिल जाता है और अपढ को भी।' यह सुनकर विनोवाजी ने कहा—"जी हाँ। जहाँ वह किताव पहुँचती है वहाँ हमारा काम जल्दी हो जाता है। कोई तलवार से जमीन लेता है और कोई कानून से, पर मै तो किताव से जमीन ले रहा हूँ। मै तो आपको विद्या-दान दे रहा हूँ और आपसे मिट्टी जैसी तुच्छ वस्तु ले रहा हूँ। तो यह सौदा आपके लिए वहुत सस्ता है।"

यह कानपुर जिले का आखिरी पडाव था। कानपुर के लोगो ने वहुत-सी वातो मे अव्वल नम्वर प्राप्त कर लिया है। वे चाहते थे कि विनोवा द्वारा भूमि-वितरण का हिन्दुस्तान मे सवसे पहले समारोह भी उनके ही जिले मे मनाया जाय। आज उनकी इच्छा पूर्ण हुई।

पुखरायाँ की और नजदीक के सुनरापुर गाँव से दान मे मिली हुई जमीन विनोबाजी ने स्वय अपनी आँखो से देखी। जमीन अच्छी थी और उसमे मे अच्छी फसल निकलती थी। सुनरापुर मे दान मे मिली जमीन के टुकडो के बीच का एक ही टुकडा ऐसा था जो दान मे नही मिला था। विनोबाजी ने उसके मालिक से कहा—"इतना ही टुकडा रखकर क्या करोगे?" मालिक ने फौरन उसका दान-पत्र भरवा दिया। फिर हमारे यात्री-दल के भाई घर जाकर थालियाँ लाये और उन्होने गाँव मे घूमकर ढिढोरा पीटकर सब को खबर दी कि "आज १० बजे विनोबाजी के हाथो से जमीन का बँटवारा होनेवाला है। अतएव सब भाई-बहन वहाँ पर उपस्थित रहे।"

यह सुनकर लोग आश्चर्य से देखने लगे। वे विश्वास नही कर सकते थे कि इस तरह बिना कोई शर्त के बेजमीनो मे जमीन बाँटी जानेवाली है। दोनो गाँवो मे कितने लोग बेजमीन है, इसकी भी पूछताछ हुई। सुनरापुर मे चार और पुखरायाँ मे आठ भूमिहीन निकले जो दूसरो के खेतो पर मजदूरी करते थे।

ठीक समय पर सभा आरम्भ हुई। सभा मे दान देनेवाले, लेनेवाले तथा गाँव के सारे अन्य भाई उपस्थित थे। विनोबाजी के शब्दो मे वह एक 'मगल-प्रसग' था। व्यासपीठ को समारोह के अनुकूल ही सजाया गया था। दोनो ओर आम्रपत्रो से सजाये हुए मगल-कलश तथा दीप रक्खे हुए थे। सामने स्वस्तिक तथा ॐ की आकृतियाँ बनायी गयी थी। सब से पहले यह बताया गया कि जमीन किसे दी जाती है? जो बेजमीन होगा, जो काश्त करना चाहता होगा, काश्त करना जानता होगा तथा जिसके पास स्थायी स्वरूप का दूसरा कोई भी धन्धा नही होगा, वही दान लेने के लिए पात्र हो सकता है। इस सभा मे ऐसे "पात्र" बारह थे। हर परिवार को ५ एकड जमीन देने के हिसाब से सिर्फ ६ व्यक्तियो को देने के लिए पर्याप्त भूमि मिली थी। फिर किसे जमीन दी जायगी? विनोबाजी ने बँटवारे का एक सुव्यवस्थित तत्र बनाया है जिसमे पक्षपात के लिए कोई गुजाइश नही है। भूमिहीन भाई खुद अपने मे से सब से अधिक गरीब

भाइयों को 'पात्र' के लिए चुननेवाले थे। स्वयं विनोबाजी तथा सभा में आये हुए अन्य सज्जन केवल 'साक्षी' बनकर बैठे थे। बाँटी जानेवाली जमीन में से एक तिहाई जमीन हरिजनों को दी जायगी।

अब जमीन मिलेगी, बिना किसी शर्त के, वह जमीन मेरी होगी, इस विचार से भूमिहीन भाई कुछ हकबकाये दीख रहे थे। विनोबाजी मंच से नीचे उतरकर उन भाइयों के पास गये। हर एक की पीठ पर हाथ फेरते हुए, बातें करने लगे। सहसा उनमें से एक हरिजन-भाई गद्गद होकर बोला—"मेरे लड़के बड़े हैं, हम मजदूरी करके जैसे-तैसे निभा लेंगे। लेकिन वह भाई (दूसरे भाई की ओर इशारा करते हुए) मुझसे भी गरीब है, उसके बच्चे छोटे-छोटे हैं, उसे जमीन दीजिये, मुझे मत दीजिये।"

यह सुनकर सभा में शायद ही ऐसा कोई होगा जिसकी आँखों में आँसू न आये हों। आज जब कि दुनिया में चारों ओर सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए एक भयानक स्पर्धा चल रही है, हर कोई अपने स्वार्थ की ही बात सोचता है, उस समय भारत का एक गरीब हरिजन मजदूर खड़ा होकर कहता है—"मुझे मत दीजिये, पहले उसे दीजिये।" क्या कहीं गलती से धरती पर सतयुग तो नहीं आ गया? नहीं, अभी तक नहीं आया था। लेकिन नयी दुनिया का एक निर्माता कह रहा था—"पहले उसे दीजिये, वह मुझसे भी अधिक गरीब है।" कहनेवाले के शरीर पर जीर्ण-शीर्ण कपड़े थे जो उसका युगों का दारिद्र्य दुनिया के सामने प्रकट कर रहे थे। लेकिन उसके दिल में अपार मानवता थी, करुणा और उदारता थी। राक्षसों के संहार के लिए अपनी हड्डियाँ देनेवाले दधीचि मुनि का वह वंशज था। जहाँ असंख्य सत्पुरुषों की तपस्या के पुण्य कण पड़े हुए थे ऐसी भारत-भूमि में उसने जन्म पाया था। और इसीलिए वह भूल गया कि भूख के मारे उसकी देह कृश हो रही है, और उसे याद आये उसके दूसरे भाई के भूखों मरने-वाले नन्हे बच्चे! अभिमान के साथ सिर ऊँचा करते हुए उसने कहा—"पहले उसे दीजिये।"

विनोबाजी ने सभा में उपस्थित जमीनवालों से कहा—"क्या ऐसे सगल

अवसर पर आप चुप वैठ सकते हैं ? क्या आपमे से कोई भी दान देने के लिए आगे नही वढ सकता ?" फौरन एक भाई ने खडे होकर कहा—"मै पाँच एकड दूँगा" . विनोवाजी ने फिर सवाल किया—"ठीक ! और एक परिवार को जमीन मिलेगी। लेकिन क्या वाकी के पाँच व्यक्तियो को खाली हाथ लौटाओगे ?". सुनते ही दो भाई और खडे हुए ओर उन्होंने ५-५ एकड जमीन दान दी। विनोवा कहने लगे—"और तीन भाइयो को जमीन चाहिये। यह आनन्द का, प्रेम का प्रसग है, ऐसा मौका फिर कभी नही आयेगा। जिन्दगी मे लेने के मौके तो कई आते हैं पर देने का मौका कम आता है।" वँटवारे के काम मे मदद देने के लिए सरकारी कागज़ात लिये आया हुआ गरीव पटवारी यह सव देख रहा था। उससे रहा नही गया। उसने कहा—"मेरी सवा दो वीघे जमीन लीजिये।" पाकिस्तान मे अपनी जायदाद ववदि होते देखकर आया हुआ एक पजावी शरणार्थी भाई वहाँ उपस्थित था। यहाँ आकर मेहनत करके उसने थोडी-सी जमीन खरीदकर अपना उध्वस्त घर फिर से वसाया था। वह पहले ही पाँच एकड भूमि का दान दे चुका था। लेकिन अव उसके हृदय की करुणा ने उसे चुप नही वैठने दिया। वह वोल उठा—"मैं अपनी सारी जमीन (वारह वीघा) देता हूँ।" यह सुनकर एक वोल उठा—"अव जितनी कम पडती है, उतनी सव मै दूँगा।"

दान माँगने का काम समाप्त हुआ। दोनो गाँव के सव भूमिहीनो को जमीन मिल गयी। 'किसे चुना जाय ?' यह सवाल नही उठा। जिस हरिजन भाई ने कहा था—'पहले उसे दीजिये, मुझे मत दीजिये', उसे भी जमीन मिल गयी थी। उसी के त्याग ने सव को दान देने की प्रेरणा दी थी। उसे जमीन मिली अपने ही त्याग के कारण। उसने सव कुछ त्याग दिया, इसीलिए उसे सव कुछ मिल गया।

महादेवी ताई ने सव भूमिहीनो को चन्दन-तिलक लगाया। उन्हे दान नही मिला, उन्ही का हक वापस मिला। वे भूमिपुत्र थे परन्तु आज तक उन्हे भूमाता के प्यार से वचित किया गया था। वे कास्त

करते थे परन्तु दूसरे के खेतो मे, मज़दूर बनकर। आज भूमिपुत्र भूमाता के प्यार को पा रहा था।

विनोबाजी बोलने लगे। कठावरोध हो गया, शब्द निकल नही रहे थे। सहसा आँसू बहने लगे, राह खुल गयी—"आप देख रहे है कि भारतीय हृदय किस तरह काम कर रहा है। और तिस पर भी लोग मुझसे पूछते है कि क्या इस तरह दान माँगकर जमीन मिल सकती है ? लेकिन गगा-यमुना की इस पावन-भूमि मे क्या हो सकता है, इसका दर्शन आज हमे हो रहा है। हमने अपनी आँखो से एक अनोखा दृश्य देखा है।"

बाबा राघवदास जी बोलने लगे, आँखो से अश्रुधाराए बह रही थी— "मानव-हृदय मे वास करनेवाले परमेश्वर का आज दर्शन हुआ। 'पहले उसे दीजिये' यह कहनेवाले हरिजन भाई के रूप मे भारतीय हृदय का साक्षात्कार हुआ।" भर्रायी हुई आवाज मे उन्होने नानक का भजन गाया —

"सब महि रम रहिया प्रभु एक।"
"पोखि, पोखि नानक बीग साई।"

आँसुओ को रोकते हुए भर्रायी हुई आवाज मे विनोबाजी ने फिर से बोलना आरम्भ किया—"आज जिनको जमीन मिली है वे तो भाग्यवान है ही, लेकिन जिन्होने जमीन दी वे बहुत ही भाग्यवान है आज तक उन दोनो मे कोई रिश्ता नही था लेकिन अब दोनो को एक ही प्रेमसूत्र मे गूंथा गया है। मै चाहता हूँ कि जिन्हे जमीन मिली है वे प्रामाणिकता से भूमाता की सेवा करे, अपने दुर्गुणो को छोडे और भगवान के भक्त बने। जमीन के बँटवारे का इससे बेहतर तरीका दूसरा कोई नही हो सकता।

"गीता का नित्य पठन कीजिये। वह माता है। उसने हमेशा मेरी रक्षा की है। उसीकी प्रेरणा से यह यज्ञ आरम्भ हुआ है। उसने मुझे सिखाया है— 'कर्म करो, फल की चिन्ता मत करो।' यदि मै फल की चिन्ता करता तो पहले ही मेरे पख टूट जाते और आज जो मेरा गगन-सचार चल रहा है वह न चलता।"

यह भूमि-वितरण का प्रथम समारोह था। सिर्फ ६० एकड जमीन का बँटवारा हुआ था। फिर भी उसमे जमीन देनेवाले, लेनेवाले, देखनेवाले

प्रत्येक के हृदय मे क्रान्ति हुई थी। और जब लाखो, करोडो एकड भूमि का बँटवारा होगा ? गणित की सीमा तो कब की पार हो जायगी—परमेश्वर का सारा काम अगणित होता है।

सभा समाप्त हुई। आज के एक दाता ने कहा—"हम खुद को दानी क्यो कहलाये ? इसमे तो अहकार हो जाता है। ऐसे महात्मा को भूदान देने से हम खुद पवित्र हो जाते है। आज तक मै वकालत करता था। पर आज से उसे समाप्त कर भूदान के काम मे अपना जीवन अर्पण कर दूँगा।" दूसरा दाता कहने लगा—"आज के जैसी परम आनन्द की अनुभूति मैने जीवन मे कभी नही की थी।" तीसरा दाता कहने लगा—"राम और कृष्ण के जमाने मे रहनेवालो से भी हम अधिक भाग्यवान है, क्योकि हम गाधीजी की पुकार सुनकर उसके अनुसार काम कर सके और अब हमे विनोवाजी की पुकार सुनकर भूमिदान देने का महान् अवसर प्राप्त हुआ है।"

किसीने आज के दान देनेवालो और लेनेवालो को इकट्ठा किया, बीच मे विनोवाजी को बिठाया और सब की फोटो खीच ली। सब के मुख पर आनन्द की आभा झलक रही थी।

शाम की प्रार्थना-सभा मे जिन्हे जमीन मिली थी उन्हे उस जमीन के कागजात दिये गये। शिवनारायणजी टण्डन ने हृदय को हिलानेवाला भाषण किया—"भारतीय हृदय की एकमात्र अभिलाषा यही रहती है कि मैने आज तक जो कमाया उसका त्याग कर दूँ, परमेश्वर को समर्पण कर दूं। . . जिसे सर्वत्र आत्मा ही आत्मा दिखाई देता है, ऐसे ब्रह्मर्षियो मे से विनोवा एक है। ऐसा द्रष्टा, स्थितप्रज्ञ नेता हमे मिला, इसलिए हम भगवान के कृतज्ञ है।"

विनोबा ने कहा—"यह बोलने का प्रसग नही है। जिस तरह बच्चे को दूध पिलाने मे माता को खुशी होती है, उसी तरह आज भूदान देनेवालो को खुशी हो रही है। मै कल कानपुर जिला छोडकर जा रहा हूँ। लेकिन इस जाने मे मै वियोग अनुभव नही कर रहा हूँ, बल्कि मिलन के भाव को लेकर जा रहा हूँ।"

पाँचवाँ भाग

समय रहते जग जाइये

कालपी (जालौन)

१९-५-१९५२

जमुना के एक किनारे कानपुर जिला खतम होता है और दूसरे किनारे जालौन जिला आरम्भ होता है। कानपुरवासियो ने प्यार मे विदा किया। उन लोगो के साथ बिताये हुए पिछले ६ दिन अविस्मरणीय थे। कानपुर के श्री रामनाथजी टण्डन एव उनकी पत्नी इन दोनो मे हमने अपने माता-पिता को ही पा लिया था।

कालपी के पास महर्षि व्यास का स्थान है। सन् १८५७ मे तो कालपी विशेष रूप से मशहूर हुई थी। झाँसी की रानी की कई स्मृतियाँ यहा छिपी हुई हैं। सुना है कि झाँसी की रानी, तात्या टोपे और नाना साहब पेशवा इन तीनो के मुलाकात का स्थान कालपी ही था। यहाँ से बुंदेलखण्ड आरम्भ हो जाता है। सन् १८५७ मे सारे बुंदेलखण्ड मे क्रान्ति की ज्वाला धधक रही थी। यहाँ आते ही एक कवयित्री के गीत की पक्तिया याद हो आयी —

"बुन्देलो हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लडी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी॥"

आज जमुना मे खूब तैर लिया। तैरने को व्यायाम क्यो कहा जाता है, मेरी समझ में नही आता। क्योकि १४-१५ मील चलने के बाद जब हम नदी के शीतल जल मे तैरने लगते है तो लगता है जैसे श्रम-परिहार हुआ हो। अब तक इस यात्रा मे गगा, गोमती, तमसा और यमुना इनसे दोस्ती हुई है।

बुंदेलखण्ड की कडी धूप हमे तपा रही थी। यह प्रदेश ऐसा है जहाँ हिन्दुस्तान भर मे सबसे अधिक गर्मी पडती है। इस प्रदेश मे हमारी यात्रा चल रही थी ठीक मई और जून के दिनो मे। जाडे मे नैनीताल-

अल्मोडा के प्रदेश मे, हिमालय की तराई मे हमारी यात्रा हुई थी। विनोवाजी के सारे काम उल्टे ही होते है।

विनोवाजी ने आज के भापण मे कडे शव्दो मे हमे अपने कर्तव्य का भान कराया—"स्वतत्रता के आन्दोलन मे कई हजार कार्यकर्त्ताओ ने अपना जीवन अर्पण किया था किन्तु आज सभी शववत् हो गये है। जब से स्वराज्य मिला, हम सव पुरुपार्थहीन वन गये है। अगर यही क्रम चला तो हमारा स्वराज्य कैसे टिक सकेगा ? . क्या आप देश की अपार गरीवी नही देख रहे है ? क्या सर्वनाश का प्रसग आने की जरूरत है तव जागेगे ? भाइयो, समय रहते जग जाइये, काम मे लग जाइये, नही तो फिर पछताना पडेगा।"

स्वराज्य के वाद हमारा देश निस्तेज-सा वन गया था। इसलिए उसे जगाने के लिए यह कडा प्रहार किया गया। रात को सोते समय एक ही वाक्य याद आ रहा था—"समय रहते जग जाइये।"

साम्यवाद नही, साम्ययोग

आटा, उरई, इकौर (जालौन)

२०, २१, २२ मई, १९५२

आजकल वुन्देलखण्ड की ऊवड-खावड भूमि पर हमारी यात्रा चल रही है। जगल, पर्वत आदि का यह प्रदेश है। यहाँ पर पानी की वहुत ही कमी है। गर्मी मे तो कुँओ से पानी निकालने मे काफी तकलीफ होती है। इसलिए कडी धूप होते हुए भी हमे कम से कम पानी मे काम चलाना पड रहा है। फिर रास्ते मे आनेवाली नदियो का हम पूरा लाभ उठाते है।

रास्ते की चर्चा मे वावा ने "वेदान्त-धर्म को सारी दुनिया अपनानेवाली है" इस कथन का स्पष्टीकरण करते हुए कहा—"अव तो नास्तिकता और वेदान्त के वीच सघर्ष होनेवाला है। नास्तिकता का तत्त्वज्ञान शरीर को प्रधान मानता है, जिसके कारण मनुष्य का मन सुखोपभोगो की ओर आकृष्ट

हो जाता है। "मुझे सुख चाहिये" इस विचार मे दूसरो के दुखो के प्रति उदासीनता, ईर्ष्या, कलह आदि पैदा हो जाते है। इसके विरोध मे वेदान्त खडा होगा। वेदान्त कहता है कि हम देह नही, आत्मा है। आत्मा की सर्वव्यापिता तथा अद्वैत की शिक्षा देनेवाला वेदान्त ही मानव को आज के इस कलह-सत्र मे से वाहर निकाल सकेगा।"

उरई की सभा मे साम्यवाद के वारे मे पूछे गये सवाल का जवाव देते समय उन्होने कहा—"मै साम्यवाद को नही चाहता। गीता का साम्ययोग फैलाना चाहता हूँ। साम्ययोग का मतलव है कि दुनिया मे सव प्राणियो मे एक ही आत्मा वास करती है और मुझमे भी वही आत्मा है, इसका भान कराना।"

इकौर गाँव वाहरी दुनिया से विल्कुल दूर है। यहा पर न रेल आती है, न मोटर। दिन भर कोयल की कूक और मोरो की आवाज सुनाई दे रही थी। आज रात को हमने जिस घर मे भोजन किया वहा पर ५०० एकड का दान मिला। अक्सर हमे भोजन के साथ कुछ दक्षिणा भी मिल जाती है। एक दफा एक होटल के मैनेजर ने एक कुँए का दान दिया और एक मिल के मालिक ने, जिनके यहाँ हमने भोजन किया था, १० वोरिंग वेल्स का दान दिया।

सबै भूमि गोपाल की

इटैलिया (हमीरपुर)
२३-५-१९५२

हमारा सामान ले जानेवाली वैलगाडी का गाडीवान कह रहा था—"मैने अपनी जमीन का सव से वढिया दो एकड का टुकडा दान दिया है। दिल चाहता है घर-वार त्यागकर विनोवाजी के साथ रहूँ और देश की सेवा करूँ। कल विनोवाजी ने जो कहा कि सारे गांव का एक परिवार वनाना चाहिये, वह वात मुझे वहुत पसन्द आया।" यह कहनेवाला एक गरीव, अनपढ किसान था।

मँगरौठ यहाँ से नजदीक ही था, लेकिन विनोवाजी को मँगरौठ ले जाने मे उन्हे वुन्देलखण्ड की ऊवड-खावड भूमि पर मई की कडी धूप मे ओर दो मील चलाना पडता, इसलिए सव मँगरौठ-निवासी विनोवाजी के दर्शन के लिए वेतवा नदी के किनारे इकट्ठा हुए थे। गाँव के वच्चे से लेकर वूढे तक सभी वहाँ उपस्थित थे। महिलाएँ माथे पर मगल-कलश लिए खडी थी। विनोवाजी वहाँ पाँच मिनट रुके, गाँववालो को मत्र दिया—"सवै **भूमि गोपाल की।**" मँगरौठवालो ने अपने परिश्रम से नयी पगडडी वनायी थी, जिसके दोनो ओर दिशासूचक सकेत-चिह्न और पट्टियाँ लगवायी गयी थी। उसी रास्ते से विनोवाजी इटैलिया की ओर चले।

मँगरौठ के जमीदार दीवान शत्रुघ्न सिह इस इलाके के एक प्रभावशाली कार्यकर्त्ता है। उनकी पत्नी—रानी साहिवा तो निरन्तर काम करती रहती है। उनमे सादगी और सौजन्य मानो साकार ही हुआ है। हम वेतवा नदी पारकर चलने लगे तो देखा, हमारे साथ खादी की मोटी साडी पहने एक महिला भी चल रही है। हमारी नर्मदा वेन ने उससे पूछा—"आप कौन है?" उसने सरलता से जवाव दिया—"मै एक मजदूर हूँ।" हमने उस वात को मान लिया। लेकिन वाद मे पता चला कि वह तो रानी साहिवा थी। उन्होने सारे हमीरपुर जिले मे घूम-घूमकर काम किया है। इस जिले मे शायद ही ऐसा कोई गाँव हो जहाँ वे न गयी हो। सूत कातना, पर्दा और छुआछूत छोडना आदि वातो का उन्होने पिछले वीस सालो से सर्वत्र प्रचार किया है। इसका नतीजा यह हुआ कि इस जिले के गाँव-गाँव से कई वहनो ने स्वतन्त्रता के आन्दोलनो मे हिस्सा लिया, और वे जेल भी गयी है।

दीवान साहव तथा रानी साहिवा की गत वीस वर्षो की तपस्या से जमीन तो तैयार ही हुई थी, विनोवाजी ने उसमे मन्त्ररूपी वीज वोया—**"सवै भूमि गोपाल की", "सारे गाँव का एक परिवार वनाइये।"** फिर फसल उगे वगैर कैसे रहती? विनोवाजी का वह मत्र लिए मँगरौठ-निवासी घर लौटे और उन्होने अत्यन्त सहज भाव से एक महान् क्रान्तिकारी निर्णय कर लिया। सव ने मिलकर तय किया—**"सवै भूमि गोपाल की।"**

उस दिन दीवान साहब भूदान के ही काम के लिए कहीं दूसरे गाँव गये थे। रात को लौटकर उन्होंने देखा तो सारे गाँववाले उनकी राह देख रहे थे। न व्याख्यान की जरूरत थी, न सभा की और न प्रचार की। गाँववालों ने दीवान साहब से कहा—"हम सब अपनी सारी जमीन विनोबाजी को दान देंगे।" दीवान साहब ने अपनी सारी भूमि दान देकर स्वयं मजदूर बनने का निश्चय तो कर ही लिया था। बस, अब गाँववाले त्याग की मस्ती के आनन्द का अनुभव कर रहे थे। घर जाते ही उनमें से दो-एक भाइयों को फटकार सुननी पड़ी। कोकिल कण्ठों से विरोधी स्वर निकला—"सारी जमीन दे डाली, अब क्या खाओगे ?, वे दीवान साहब तो खुद कंगाल हो रहे हैं, आप भी उनके पीछे क्यों जाते हो ?" सन्तोष के साथ जवाब मिला—"दो हाथ तो हैं ही, मजदूरी करेंगे।" फिर उत्तम सिद्धान्तों का अपने जीवन के द्वारा परिचय करा देनेवाली रानी साहिबा इस समय चुप कैसे बैठती ? उन्होंने घर-घर जाकर बहनों को समझाया—"पुरुषों ने क्रान्ति का मार्ग लिया है तो क्या उसमें रुकावट बनना हमें शोभा देता है ? हमें तो क्रान्ति का अग्रदूत बनना चाहिये।"

दुनिया में जिसके लिए हजारों का खून बहाया गया, मानवता को कलंकित करनेवाली घटनाएँ घटीं, भारत का साधारण किसान, वही क्रान्ति कितनी सहजता से कर सकता है और उसे इस बात का भान भी नहीं होता है कि वह एक महान् कार्य कर रहा है। आज दुनिया में सर्वत्र मानवीय मूल्यों को तबाह होते देखकर जो मानवता में श्रद्धा खो बैठे हैं, वे जरा मँगरौठ की सहज क्रान्ति को देखें। उनकी श्रद्धा उन्हें वापस मिल जायगी।

मँगरौठ में कुल १११ परिवार हैं, जिनमें ४५ परिवार भूमिहीन और ६६ भूमिवाले हैं। लेकिन अब तो गाँव की सारी जमीन परमेश्वर की हो गयी है और परमेश्वर के प्रसाद के तौर पर वह जमीन सारे गाँव को वापस मिली है। अब तो न कोई भूमिहीन है, न कोई भूमिवान। जमीन तो सब की हो गयी है। सब मेहनत करेंगे और मिलकर खायेंगे। गाँव के सब बच्चे एक साथ तालीम पायेंगे और फिर अपने-अपने स्वधर्म के अनुसार काम करेंगे। महिलाएँ पर्दा छोड़कर बाहर निकलेंगी और जीवन के

हर क्षेत्र मे समानता के साथ हिस्सा लेगी। गाँव मे कोई बीमार पडा तो सारे गाँववाले उसकी चिन्ता करेगे। किसी पर कोई तकलीफ आ पडी तो सारे गाँववाले उसके आँसू पोछने दोड पडेगें।

लेकिन यह तो केवल आरम्भ ही है। विनोबाजी का आशीर्वाद लेकर मँगरौठवालो ने नयी दुनिया बसाने के लिए नया कदम उठाया हे। लम्बी राह चलने के वाद भी दूर दीखनेवाले क्षितिज की तरह जीवन का आदर्श भी सदैव दूर दिखाई देता है। हम उसके निकट नही पहुँच पाते। फिर भी अखण्ड चलते रहने मे ही मानव-जीवन की सफलता हे। सत की कल्पना और वास्तविकता की दूरी को कम करने की मँगरौठवासियो की आकाक्षा जैसे आकाश-कुसुम के समान लगती है। तो भी किसी कवि से सुना है कि आकाश मे उडान भरने पर ईश्वर के चरणो के अधिक निकट जाना सम्भव है।

प्रत्यक्ष अपनी आँखो से अपने किसी स्वप्न को साकार होते देखना शायद ही किसी भाग्यवान को सम्भव हुआ हो। लेकिन आज जो असम्भव था वह सम्भव हो गया। क्योकि जमाने की रफ्तार तेज है। मानव को इसी समय तय करना है कि वह 'सर्वोदय' चाहता है या 'सर्वनाश'?

"मँगरौठ के लोग कोई यक्ष, किन्नर या गन्धर्व तो नही है। वे भी हम-आप जैसे मानव ही है। तो फिर जो उन्होने किया वह हर एक गाँव क्यो नही कर सकता?"—विनोबाजी अव हर एक गाँव से यही सवाल पूछते जाते है।

दीपावली को जगमगाने के लिए एक ही जलता हुआ दिया पर्याप्त है।

शाकुन्तल की याद

राठ, पनवाड़ी, कुल पहाड़

२४, २५, २६ मई, १९५२

प्रात. चार वजे इटैलिया से निकलते समय देखा, रास्ते के दोनो ओर सैकडो नर-नारी राम-धुन गा रहे थे। गाँव मे प्रवेश करते समय स्वागत

और दूसरे ही दिन विदाई—यही हमारा प्रतिदिन का जीवन है। सत कहते है—'यह तो दो दिन की जिन्दगी है', लेकिन हमारी तो एक ही दिन की जिन्दगी है।

स्वस्थ और मजबूत महिलाओ को राम-धुन गाते देखकर खुशी हुई। ये सब खेतो मे काम करनेवाली बहने थी। मुझे आभास हुआ कि राम-धुन से कुछ करुण स्वर सुनाई दे रहा है। उस राम-धुन मे किसी की स्मृति छिपी हुई थी। शायद इसीलिए ऐसा आभास हुआ हो। हम लोग काफी दूर निकल आये, फिर भी वे लोग हमारे पीछे-पीछे चल रहे थे। आखिर उनकी श्रद्धा के कारण विनोवाजी को रुकना ही पडा। वे वोलने लगे। कुछ वहने पिछड गयी थी। विनोवाजी को रुकते देखकर वे दौडकर आगे आने लगी। उनके पैरो के नूपुरो की कोमल ध्वनि गूंज उठी।

पता ही न चला कि कव वोलना समाप्त हुआ और कब विनोवाजी आगे वढ गये। विनोवाजी ने उन्हे घर लौटने को कहा था, इसलिए वे आगे तो नही वढ सकते थे। लेकिन नेत्र तेजी से आगे वढनेवाले के पैरो के साथ तेजी से आगे वढ रहे थे। कुछ देर वाद हमने पीछे मुडकर देखा। वे सब उसी स्थान पर चित्रवत् खडे थे।

आजकल गर्मी तो इतनी तेज हो गयी है कि लगता है जैसे भटठी मे वैठे हो। चारो ओर लू चलती है, जैसे आग की लपटे निकलती रहती हो। हम लोग सोते है दरियो पर, पर जान पडता है जैसे चिता पर सोये हो। रास्ते मे अगर गाँव न मिले तो प्यास के मारे प्राण तडपता है। ऐसे समय अगर भगवान आकर वरदान मांगने को कहे तो हमारे मुंह से एक ही शब्द 'पानी' निकलेगा। यहाँ के लोग कहते है कि वुन्देलखण्ड की कडी धूप मे घूमना एक तपस्या ही है। इसलिए वे हमे भी नाहक तपस्वी की उपाधि दे देते है। एक दिन चलते समय छोटी माया प्यास से तलमला उठी। गौतम ने दो मील दौडकर किसी गांव से उसके लिए पानी ला दिया। आखिर वह भी तो वच्चा ही था, लू लगने से उसे वुखार आ

गया। रात को मैंने लोरियाँ गाकर उसे सुला दिया। परिणाम यह हुआ कि अब ये दो बच्चे हर रोज बिना लोरियाँ गाये सोते ही नही।

अब तक तो बाबा जमीन का छठा हिस्सा ही माँगते थे, लेकिन जब से मँगरौठ गाँव पूरा मिल गया तब से वे पूरा का पूरा गाँव माँगने लगे है। हममे से किसीने मजाक मे कहा कि 'मराठी मे एक कहावत है कि ब्राह्मण को घर मे जरा-सी जगह दे देने पर वह पूरे घर पर कब्जा कर लेता है।' बस, वैसी ही बात है यह। मैंने कहा—"यह ब्राह्मण तो उससे भी बढकर है। यह तो वामन बनकर आया है। इसे सिर्फ घर देने से काम नही चलेगा। इसके सामने तो बलि राजा के समान अपना सिर ही झुकाना पडेगा।"

'कुल पहाड' गाँव अपने नाम को सार्थक कर रहा था। पहाडियो मे घिरा हुआ यह गाँव दूर से ही दिखाई पडता था। इस प्रदेश मे जगह-जगह कमलो से भरे हुए तालाब भी नजर आते है जिन्हे देखकर धूप कुछ कम हुई-सी मालूम होती है। कुल पहाड मे हमे कमल-पत्रो पर भोजन करना पडा। मैंने विनोद मे कहा—"हम कितने अरसिक है। जहाँ शकुन्तला इस पत्र पर प्रेम-पत्र लिखती थी वहाँ हम इस पर भोजन कर रहे है।" भोजन करते समय मुझे कालिदास के 'शाकुन्तल' के कई दृश्य याद आये, कमलनाल से कमल-पत्र पर पत्र लिखनेवाली शकुन्तला का वर्णन याद आया—"उन्नमितैकभ्रूलतमाननमस्या पदानि रचयन्त्या" और साथ ही उस पत्र का विषय, "तव न जाने हृदयम्" और साथ ही शिरीष-कुसुमो की भी याद आ गयी।

साँप भी पहचानता है

महोबा, कबरई, मटौंध

२७, २८, २९ मई, १९५२

आसपास के ऐतिहासिक स्थानो को देखने के लिए हममे से कुछ लोग निकले। महाराज छत्रसाल का किला और बेला तालाब देखा। सुना

है, यह आल्हा-ऊदल का स्थान है। बेला तालाब पहाडियो से घिरा हुआ है। सुबह का समय था, आकाश कुछ-कुछ मेघाच्छादित था। इसलिए मेघो की आड मे से छनकर नवोदित सूर्य की किरणे सृष्टि-सौन्दर्य को बढा रही थी। कमल विकसित हो रहे थे और हम नाव मे चल रहे थे। कमल को देखते ही काव्य याद आ जाता है और साथ ही तत्त्वज्ञान। सस्कृत-साहित्य मे तो कमल की उपमाएँ ही भरी पडी है। साहित्य मे भले ही कीचड मे से पैदा हुए कमल की पवित्रता की उपमा पढी हो और आनन्द भी आया हो, पर आंखो देखे इस दृश्य की अनुभूति कुछ और ही थी। हम कमल-पत्र पर पानी के छीटे उंडेलने का खेल खेलने लगे। कितना पानी हम कमल-पत्र पर डाले, पर कमल-पत्र को वह जल स्पर्श भी नही कर सकता। वह तो सूखा ही रहता है। "पद्मपत्रमिवाम्भसा" का स्मरण हुआ। जीवन की क्षणभगुरता को सूचित करनेवाले कमल-पत्र के वे जल-बिन्दु और जीवन की अलिप्तता बतानेवाले वे कमल-पत्र देखकर कई स्मृतियाँ याद हो आयी।

हमारे प्रधानमत्री ने कही कहा था—"ऐतिहासिक स्थानो का हर एक पत्थर कई घटनाएँ, सुख-दु ख की कहानियाँ बताता है, लेकिन आधुनिक नगर प्राणहीन-से लगते है।" किले के खँडहरो को देखते समय इस कथन की अनुभूति होने लगी। वीरो की गर्जनाएँ, राजनीतिज्ञो के षडयत्र, नर्तकी के नूपुरो की झनकार, गवैयो की ताने, विद्वानो की ज्ञान-चर्चाएँ—सब कुछ सुना होगा यहाँ के पत्थरो ने। न जाने उनके अन्तर मे कितनी स्मृतियाँ छिपी होगी। लगा, जैसे जीवन के सब कटु-मधुर अनुभव लेकर वे पत्थर विरक्त-से बन गये हो। और हम जैसे मुसाफिरो के आगमन से भी उनकी समाधि नही टूटती।

हमारे पास समय कम ही था, इसलिए सब चीजो पर उडती नजर ही डाल सकते थे। एक महल के कुछ कमरो मे अब पाठशाला चल रही है। उपयोगितावाद की दृष्टि से तो यह ठीक ही था, फिर भी मन को यह बात जँची नही। यदि कल ताजमहल मे पाठशाला या दवाखाना खोला जाय तो   ।

इस सैर के कारण अतीत मे भूले मन को बाबा ने भाषण द्वारा एकदम वर्तमान मे ला दिया। कम्युनिस्टो के पूछे सवालो का जवाब देते समय बाबा ने कहा—"मैं नही मानता कि समाज मे कोई एक शोषक-वर्ग है। दुनिया मे शोपण चलता है और हममे से हर कोई एक का शोषक तथा दूसरे से शोषित है। सारा समाज जिसका शोषण करता है वह भगी भी अपनी औरत का शोषण करता ही है। शोषण को मिटाने के लिए आज की समाज-रचना मे आमूल परिवर्तन करना होगा। मै एक क्षण के लिए शोपण को बर्दाश्त नही कर सकता। इसीलिए तो पैदल घूम रहा हूँ। अहिसक मार्ग से शोषणहीन समाज कायम करने के काम मे भूदान-यज्ञ पहला कदम है।"

महोबा मे रात को सब से ज्यादा गर्मी हुई। आसमान मे बदली छा गयी थी और हवा बिल्कुल बन्द थी। रात भर प्राण व्याकुल होते रहे। लाख कोशिश करने पर भी नीद न आयी। दिल चाहता था, नजदीक के किसी तालाब मे जाकर सो जाऊँ। दूसरे दिन मैंने करण भाई से कहा—"यह गर्मी तो हमे उत्तर प्रदेश से भगा देगी।"

हमीरपुर जिले का आखिरी पडाव था कबरई। इस जिले में आठ दिनो मे १८ हजार एकड जमीन मिली। अब जमीन की गति भी तेजी से बढ रही है। दीवान साहब के परिवार के लोग पिछले ८ दिनो से हमारे यात्री-दल मे शामिल हुए थे। उन सब से हमारा इतना स्नेह हो गया था कि कल वे जा रहे है, इस कल्पना से मन व्यथित हो रहा था। रानी साहिबा तो पैरो मे बडे-बडे छाले हो जाने पर भी कडी धूप मे १५ मील चलती थी। हमने उन्हे कई दफा मना किया, फिर भी वे नही मानी। वे कहती थी—"भगवान जाने, बाबा के साथ फिर कब चलना होगा। मै जब उनके साथ चलती हूँ तो भूल जाती हूँ कि मेरे पैर मे छाले हो गये है।"

प्रातःकाल की प्रार्थना चल रही थी। तुलसीदासजी के बाँदा जिले मे प्रवेश हो रहा था। चारो ओर अँधेरा छाया हुआ था। रास्ते मे बिल्कुल बीच मे एक बडा साँप फन निकाले बैठा था। विनोबाजी का पैर उस पर

पडने ही वाला था कि एकदम माया ने उनसे कहा—"बाबा, जरा उधर से चलिये।" वे जरा मुडकर चलने लगे। उन्हे पता भी नही चला कि क्या हुआ है। न जाने क्यो, पर हममे से किसी के भी मन मे डर पैदा नही हुआ। उस साँप को भी किसी को काटने की इच्छा नही हुई। हमे आगे बढते हुए देखकर वह भी चुपचाप चला गया।

शाम की सभा मे बाबा ने कहा—"आप दिल के प्रेम-पछी को कुटुम्ब के पिजडे मे ही बन्द मत रखिये, उसे गाँव मे उडने दीजिये और फिर वहा से सारे गगन मे सचार करने दीजिये।"

"सत्य का प्रचार स्वय ही हो जाता है। क्या सूरज के प्रचार के लिए विज्ञापन की जरूरत रहती है? उसी तरह सत्य के प्रचार के लिए किसी भी बाह्य साधन की जरूरत नही है। सत्य का आचरण करने से सत्य का प्रचार हो जाता है।"

ये विचार कलम द्वारा कागज पर तो लिखे ही गये, लेकिन हृदय-पटल पर भी अकित हो गये।

जयप्रकाशनारायण का आगमन

बाँदा

३०-५-१९५२

ऊँची-ऊँची पहाडियो मे से शान्त बहनेवाली 'केन' नदी के किनारे बादा शहर बसा हुआ है। केन के किनारे बादावासियो ने शुभ कमल-पुष्पो को अर्पण कर बाबा का स्वागत किया।

आज प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण बाबा से मिलने आये। तीन घण्टे तक एकान्त मे उनकी वार्ता चलती रही। शाम की प्रार्थना-सभा मे दोनो एक ही मच पर बैठे थे। सभी पक्षो ने अलग-अलग मान-पत्र दिये। उनमे दोनो का स्वागत किया गया था। यह घटना भविष्यसूचक थी। जयप्रकाशजी ने अपने भाषण मे कहा—"गाधीजी के चले जाने के

बाद देश मे चारो ओर अँधेरा छाया हुआ नजर आ रहा था। रूस के मार्ग से जाने मे खतरा है—इस बात का भान तो हो चुका था, लेकिन गाधीजी के मार्ग से, अहिसा के मार्ग से सारे मसले किस तरह हल किये जा सकते है, यह कोई नही बता सकता था। इसलिए सर्वत्र निराशा नजर आ रही थी। लेकिन अब विनोबाजी के भूदान-यज्ञ के जरिये देश मे आशा की किरण मिली। दिल मे विश्वास पैदा हुआ कि विनोबाजी के मार्ग से दुनिया का भला हो सकता है और नयी दुनिया निर्माण हो सकती है।"

प्रार्थना के समय जयप्रकाशजी नेत्र बन्दकर शान्त बैठे थे। मुझे 'व्हिन्सेन्ट शीन' की किताब का एक प्रसग याद आया। एक दफा उस लेखक ने जयप्रकाशजी से कहा—"मेरा द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism) पर का विश्वास उड गया है। अब मै भगवान को मानने लगा हूँ।" यह कहकर उसने जयप्रकाशजी की ओर देखा। उसे लग रहा था कि यह समाजवादी नेता उसके कथन का उपहास करेगा। लेकिन जयप्रकाशजी ने सिर उठाकर उसकी ओर देखते हुए कहा—'मै भी भगवान को मानता हूँ (I too believe in God)।'

जयप्रकाशजी के मुख से निकलनेवाले शब्द दिल मे क्रान्ति की आग भडकानेवाले होते है, लेकिन उन शब्दो का उच्चारण होता है अत्यन्त शान्त, अविवश, अविचल मुद्रा से। हममे से किसीने उनसे पूछा—"१९४२ मे आप जेल से कैसे भागे?" मद स्मित करते हुए उन्होने कहा—"बहुत आसान तरीके से।" फिर उन्होने अपने जीवन की वह क्रान्तिकारी घटना बतायी। जेल की दीवार कैसे पार की, जगलो मे से कॉटो के रास्ते से छिप-छिपकर कैसे भागे—सारा वर्णन कह सुनाया, लेकिन इतनी शान्ति और अविकलता से कि आवाज मे उतार-चढाव भी नही था। मुझे लगा, इनका व्यक्तित्व तो एक पहेली है।

फिर कव आओगे ?

खुरहँट, वन्दौसा, चित्रकूट, पहाडी

३१ मई, १, २, ३ जून, १९५२

खुरहँट मे हरिजनो के यहाँ हम लोगो को भोजन का निमत्रण था। वे सब वेजमीन मजदूर थे। विल्कुल गरीव थे, लेकिन उन्होने चन्दा करके 'सत के सहयात्रियो' को भोजन के लिए अपने घर बुलाया। हमारे सविधान मे तो अस्पृश्यता मिट गयी है, लेकिन गावो मे अभी भी हरिजनो की हालत वसी ही है। इन लोगो को गाँव के कुँओ पर पानी भरने नही दिया जाता और इस कडी धूप मे वाहर के किसी दूर के कुँए से पानी लाना पडता है। हमारा आज का भोजन था दाल और रोटी, लेकिन इतना मधुर भोजन हमने जिन्दगी मे शायद ही कभी किया हो। हरिजन भाई-वहन तो खुशी के मारे फूले नही समाते थे। सारे समाज ने आज तक जिनकी उपेक्षा की थी, उन्हीके यहाँ आज सत के सहयात्री मेहमान वनकर आये थे। हमने वहनो मे जाकर वातचीत शुरू की। वे अपनी दुदशा का हाल वता रही थी और हमारे आने से उन्हे कितनी खुशी हुई, इसका भी वर्णन कर रही थी। हम लोग उनकी भाषा ठीक से नही समझ पा रही थी, लेकिन दिल की भाषा तो समझ ही ली। विदा करते समय उन वहनो ने वार-वार अपने हाथो मे हमारा हाथ लेकर पूछा—"फिर कव आओगी ?" लगा, जैसे उनके मुख से भारत की समस्त पीडित, दलित, दुखी जनता हमें पुकार रही हो, पूछ रही हो—"फिर कव आओगे ?"

वन्दौसा जाते समय शीतल वायु, रास्ते मे दोनो ओर वडे-वडे पेडो की छाया और सब से वढकर वावा का सान्निध्य—इन सव के कारण पता भी नही चला कि आज १६ मील चलना पडा और धूप भी तेज है। वावा ने मुझसे कहा—"तुम अव काफी पक्की वन गई हो। धीरे-धीरे विल्कुल देहाती वन जाओगी। असल मे मन की ताकत पर ही सव कुछ निर्भर रहता है। शरीर के सुख की ओर जितना ही ध्यान दो, उतना ही

वह दुर्वल वन जाता है। मै तो वचपन मे वहुत ही दुवला था। किसी को उम्मीद भी नही थी कि मै ज्यादा दिन तक जिन्दा रहूँगा। लेकिन मेरा मन वलवान था, इसलिए मै हजारो मील की यात्रा कर रहा हूँ।"

चित्रकूट तुलसीदासजी का आराधना-स्थान है। कहा जाता है कि अत्रि ऋषि और सती अनुसूया का आश्रम यही था। यही से मन्दाकिनी नदी वहती जाती है। उसके किनारे कई मन्दिर वने है। यह पवित्र भूमि मानी जाती है। यात्रा के दिनो मे हजारो यात्री मन्दाकिनी मे स्नान करते है। मै नही जानती कि उससे क्या पुण्य प्राप्त होता होगा, लेकिन मैंने जव दोपहर की कडी धूप मे मदाकिनी के शीतल-स्वच्छ जल मे डुवकी लगायी तो जल के स्पर्श से अपार आनन्द की अनुभूति हुई।

चित्रकूट के इर्द-गिर्द घनी झाडी और सृष्टि के नयनमनोहर रूप को देखकर लगा, जैसे बुन्देलखण्ड की कडी धूप कुछ कम हुई हो। तुलसीदासजी ने तो कहा ही है —

"अब चित चेत चल चित्रकूट।"

आज के प्रवचन मे विनोवाजी ने कहा—"जनसेवा ही सच्ची पूजा है।" विद्या वहन ने वाद मे मुझे वताया कि तेलगू मे एक कहावत है—

"मानव-सेवा माधव-सेवा"

अभी खवर आयी कि गाधीजी की पोती–सुमित्रा–एम० ए० की परीक्षा मे प्रथम आयी और उसे स्वर्ण-पदक मिला है। वह मेरी प्यारी सहेली थी, इसलिए मैंने वहुत खुश होकर वावा को यह खवर सुनायी। दामोदरजी ने उनसे कहा—"आप सुमि को कुछ लिखिये।" इस पर वावा ने हँसते हुए कहा—"अगर फेल होती तो उसे सात्वना देने के लिए जरूर कुछ लिखता। लेकिन अव तो उसे स्वर्ण-पदक मिला है। उस पर मै भी कुछ लिखूँ तो उसके वोझ से वह दव जायगी।"

शाम को सभा के वाद नित्यक्रम के अनुसार गाँव के कार्यकर्त्ता वावा से वाते कर रहे थे। किसी ने कहा—"गाँवो मे सेवाग्राम-पद्धति के

शौचकूप बनाने की तालीम देनी चाहिये।" बाबा ने कहा—"कोई भी नया और महान् काम पागलों से ही हो सकता है। मुझे उम्मीद है कि यह काम करने के लिए भी कोई पागल जरूर निकलेगा।"

घर पर कई लोग मुझसे कहते थे कि "विनोबा के साथ पैदल चलने का साहस मत कर।" अब मैं उन्हें भी बाबा के ही शब्दों में जवाब दूँगी—"पागलों से ही क्रान्ति हो सकती है।"

सत्यमेव जयते

राजापुर (बाँदा)
४-६-१९५२

आज चलना आरम्भ किया तभी से आसमान में बादल दिखाई दे रहे थे। बीच-बीच में बिजली भी चमक रही थी, जो मार्गदर्शन कर रही थी। थोडी ही देर में पानी की बूँदें बरसने लगीं। ग्रीष्म के अति प्रखर धूप के बाद आनेवाली यह प्रथम वर्षा इतनी सुखदायी प्रतीत हुई कि गुरुदेव के शब्दों में—"दहन से तप्त हुई धरती पर परमेश्वर की इन्द्र-लोक से भेजी हुई अमृत की वर्षा थी वह!" बारिश हो रही थी, पवन भी उसके साथ बह रहा था। हममें से हर कोई अपनी-अपनी भाषा का, वर्षा के स्वागत का गीत गाने लगा। गौतम और माया तो नाचने लग गये। गुरुदेव की सब से प्रिय ऋतु 'वर्षा' है। उनका वह वर्षा-गीत याद आया जिसमें कवि कहता है कि "कई युग बीत चुके, एक जमाना था जब ऐसा ही आषाढ का महीना चल रहा था, बारिश हो रही थी। रेवा-नदी के किनारे बैठे हुए किसी कवि के गीत के स्वर सुनाई दे रहे थे।"

बारिश कुछ कम हुई और चर्चा आरम्भ हुई। मैंने पूछा—"आप कहते हैं कि मानव का जीवन सुखमय है, लेकिन भगवान बुद्ध तो कहते हैं कि जीवन दुःखमय है। उन्होंने दुःख को प्रथम 'आर्य सत्य' कहा था। फिर दोनों के विचारों में इस तरह का विरोध क्यों?"

वावा ने कहा—"भगवान वुद्ध ने मानव-जीवन को दु खमय कहा था, वह सत्य ही है। लेकिन मै जीवन की ओर आत्मा की दृष्टि से देखते हुए कहता हूँ कि जीवन सुखमय है। वैसे देखा जाय तो जीवन आज भी दु खमय है। लेकिन भगवान वुद्ध ने दु ख का कारण क्या वताया था?"

मैने कहा—"तृष्णा।"

"ओर उस तृष्णा के विनाश का मार्ग?"—वावा ने फिर पूछा।

मैने कहा—"तृष्णाक्षय।"

वावा वोलने लगे—"ठीक! तो फिर इसका मतलव यह हुआ कि हमारे सव दु खो का कारण है वासना! . जीवन तो सुखमय है, लेकिन वासना-नाश होने के वाद ही।"

शका-समाधान हो चुका था, इसलिए मैने दूसरा सवाल पूछना आरम्भ किया। मैने पूछा—"अक्सर कहा जाता है कि भगवान वुद्ध का तत्वज्ञान निराशावादी (Pessimistic) है, यह कहाँ तक सच है?"

वावा ने कहा—"यहाँ पर आशावाद (Optimism) और निराशावाद (Pessimism) जैसे शव्दो का प्रयोग करना ही अयोग्य है। भगवान वुद्ध का तत्त्वज्ञान विल्कुल निराशवादी है ही नही। लोकमान्य तिलक ने अपने 'गीता-रहस्य' मे यही कहा है कि सन्यास का मतलव यह नही कि निराश होकर जीवन से भाग जाना। सन्यास का मतलव है कि सच्चे आनन्द की प्राप्ति की इच्छा। जो निराशावादी होते है उनकी इच्छाएँ नष्ट नही हुई रहतो, जिन्दा ही रहती है। लेकिन सन्यासी की इच्छाएँ नष्ट हो जाती है और उसे शाश्वत आनन्द की प्राप्ति हो जाती है।"

मैने पूछा—"साहित्य मे दु खान्त (Tragedy) को अधिक सुन्दर तथा कलापूर्ण माना जाता है, इसका कारण क्या है?"

वावा—"क्या दु खान्त (Tragedy) का मतलव यह है कि सज्जन का दु खान्त हो जाता है? लेकिन वास्तव मे देखा जाय तो सज्जन का दु खान्त हो ही नही सकता। यदि सिर्फ इस दुनिया की दृष्टि से देखा जाय तो कह सकते है कि सज्जन को काफी तकलीफे झेलनी पडती और

दुर्जन मौज उडाते दिखाई पडते हैं। और इसी साधारण दृष्टि से देखा जाय तो 'दुखान्तिका' लिखी जा सकती है। लेकिन हमारा विश्वास है कि आखिर में सज्जनता की ही विजय होती है। उस दुनिया में सज्जनता की ही कीमत की जाती है, लेकिन जरा लम्बी नजर से देखा जाय तो मालूम होगा कि इस दुनिया में भी सज्जनता की ही विजय होती है। अब बापू की ही मिसाल लीजिये। उनके जैसी उत्तम मृत्यु प्राप्त होना दुर्लभ ही कहा जायगा। उनका दिन भर का सारा काम समाप्त हो चुका था। प्रतिदिन के नियमानुसार सूत कातना भी हो चुका था। प्रार्थना के लिए जा रहे थे और तिस पर भी थोडी देर हो जाने के कारण मन में भगवान के सिवा दूसरा विचार भी नही था। ऐसे समय दो गोलिया लग जाती हैं, मुख से राम-नाम निकलता और कुछ क्षणों में मृत्यु हो जाती है। कितना बडा भाग्य है यह! मरते समय मुख में राम-नाम आये इसके लिए कितनो को कितनी तपस्या करनी पडती है। एक दफा मेरी उनसे बातचीत चल रही थी। तब उन्होंने कहा—'ज्ञानी सर्वथा अहंकारशून्य होता है, यह कहना गलत है। जब तक देह है तब तक कुछ न कुछ अहकार तो रहेगा ही, बिल्कुल खत्म नही होगा। हां, धीरे-धीरे खत्म होता जायगा। लेकिन जिस क्षण अहकार बिल्कुल नष्ट हो जायगा उसी क्षण यह देह एक ढेर के समान गिर जायगी।' ठीक वैसी ही मृत्यु उनकी हुई।

"कुछ लोग कहते हैं कि 'बापू का काम पूरा होने के पहले उन्हे चले जाना पडा, इसलिए उनके जीवन को असफल कहना होगा।' लेकिन यह कहना ठीक नही है। क्या दुनिया की सारी समस्याओं को हल करने का उन्होंने ठेका लिया था? परमेश्वर की दुनिया तो चलती ही रहती है। उसकी समस्याएँ भी अगणित होती और उन्हे हल करने की जिम्मेदारी भी परमेश्वर की ही होती है। बीच-बीच में वह किसी-किसी को अपना साधन बनाकर भेजता रहता है। यदि बापू के व्यक्तिगत जीवन की कोई समस्या होती और उसे हल किये बगैर वे चले जाते तो फिर हम कह सकते थे कि वे असफल रहे। लेकिन समस्याएँ तो उनकी अपनी नही थीं, दुनिया की ही थीं।

"बापू की मृत्यु के बारे मे भिन्न-भिन्न लोगो के भिन्न-भिन्न विचार हो सकते हैं, लेकिन उनका अपना निजी जीवन नही था। वे तो सारी दुनिया के साथ एकरूप हो गये थे। हम सभी के पुण्य से वे पुण्यवान बन जाते थे और हम सभी के पाप से पापी। हम सभी के पापो का बोझ उन्ही के सिर पर था, उसी पाप का प्रायश्चित्त है---वह मृत्यु।

"समत्व एक अत्यन्त दुर्लभ चीज है। लेकिन मुझे तो दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने मे ही आनन्द महसूस होता है। वैसे देखा जाय तो परिपूर्ण ज्ञानी, समत्वयुक्त व्यक्ति इस दुनिया मे मिलना अशक्य ही है। किसी भी महापुरुष के जीवन मे बिल्कुल पूर्णता नजर नही आती, कुछ-न-कुछ अपूर्णता तो रहती ही है। पूर्ण समता तो अव्यक्त ही रहेगी। व्यक्त होने का मतलब ही है कि उसमे कुछ-न-कुछ अपूर्णता जरूर है। पूर्णता तो अव्यक्त परमेश्वर मे ही पायी जा सकती है। लेकिन महापुरुपो के जीवन से हमे प्रेरणा मिलती है। उनमे हम अपनी ही आत्मा के परिशुद्ध स्वरूप को देखते है। उसी तरह उनमे जो अपूर्णता होती है, उनके दर्शन से भी लाभ होता है।. मेरा ऐसा मत है कि 'ज्ञानेश्वर' ही एक ऐसा व्यक्ति है जो समता के आदर्श के काफी निकट पहुँच गया था। उसके सारे लेखन मे कही एक भी कटु शब्द नही मिलता। वैसे उनकी जिन्दगी भी छोटी-सी ही थी।

"मेरी मातृभापा मराठी होने के कारण मैंने बचपन से ज्ञानेश्वर की किताबो का अध्ययन किया है। इसलिए उनके विचारो का परिचय मुझे बचपन से हुआ है। इसलिए सम्भव है, उसके बारे मे मैंने जो कहा है उसमे शायद कुछ पक्षपात हो सकता है। फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि सब महापुरुपो मे ज्ञानेश्वर ही एक ऐसा है जो 'समत्व' के आदर्श के सब से निकट पहुँच चुका था।

"मुझसे कई लोग कहा करते थे---'विश्वामित्र भी जो नही कर सका वह तुम कैसे कर सकोगे?' इस पर मै जवाब देता था---'मै तो विश्वामित्र के कधो पर खडा हूँ। बाप के कन्धो पर खडा बालक

अधिक दूर का देख सकता है। आज तक के सभी ऋषियों के अनुभवों का लाभ मुझे मिल रहा है। मुझे सफल बनाने के लिए ही विश्वामित्र असफल हुआ।"

स्वागत के लिए राजापुर से आयी हुई भजन-मण्डली की राम-धुन की आवाज सुनते ही हमारी चर्चा समाप्त हुई। 'राजापुर' महाकवि तुलसीदास का जन्मस्थान है। जमुना के किनारे जहाँ उनका घर था, उसी स्थान पर अब एक मन्दिर बनाया गया है जिसमें राम, लक्ष्मण, सीता और तुलसीदासजी की मूर्तियाँ है। मन्दिर में तुलसीदासजी की लिखी हुई, उन्होंके सुन्दर हस्ताक्षर में रामायण के अयोध्याकाण्ड की एक प्रतिलिपि है। बाबा ने भक्त तथा वैज्ञानिक की दृष्टि से उस रामायण को देखा।

हमारा आज का निवासस्थान जमुना के किनारे एक ऊँचे टीले पर रहा। पास में ही वह मन्दिर था जो तुलसीदासजी का घर था। कल बारिश होने के कारण आज जमुना का पानी निर्मल नहीं रहा, इसलिए तैरने का मजा तो नहीं मिला, फिर भी हमने जमुना में स्नान करके थोड़ा-सा पुण्य हासिल कर ही लिया।

आज की सभा का आरम्भ हुआ वेदमन्त्रों के साथ। फिर सस्कृत में मान-पत्र पढा गया। उसके बाद छोटा-सा कीर्तन और रामायण हुआ।

आज के भाषण में तुलसीदासजी की स्मृति में विनोबाजी बार-बार गद्‌गद हो गये।

महात्मा गाधी की जय

सुरधुआ, कमासिन, किशुनपुर (बाँदा)

५, ६, ७ जून, १९५२

चलते समय किसी ने बाबा से पूछा कि "कर्तव्य का निर्णय कैसे किया जा सकता है?"

बाबा ने जवाब दिया—"कर्तव्य के निर्णय करने की जरूरत नहीं पड़ती, वह तो सहज ही प्राप्त हो जाता है। मनुष्य को अपना-अपना स्वधर्म

"बापू की मृत्यु के बारे मे भिन्न-भिन्न लोगो के भिन्न-भिन्न विचार हो सकते है, लेकिन उनका अपना निजी जीवन नही था। वे तो सारी दुनिया के साथ एकरूप हो गये थे। हम सभी के पुण्य से वे पुण्यवान बन जाते थे और हम सभी के पाप से पापी। हम सभी के पापो का बोझ उन्ही के सिर पर था, उसी पाप का प्रायश्चित्त है—वह मृत्यु।

"समत्व एक अत्यन्त दुर्लभ चीज है। लेकिन मुझे तो दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने मे ही आनन्द महसूस होता है।. वैसे देखा जाय तो परिपूर्ण ज्ञानी, समत्वयुक्त व्यक्ति इस दुनिया मे मिलना अशक्य ही है। किसी भी महापुरुप के जीवन मे बिल्कुल पूर्णता नजर नही आती, कुछ-न-कुछ अपूर्णता तो रहती ही है। पूर्ण समता तो अव्यक्त ही रहेगी। व्यक्त होने का मतलब ही है कि उसमे कुछ-न-कुछ अपूर्णता जरूर है। पूर्णता तो अव्यक्त परमेश्वर मे ही पायी जा सकती है। लेकिन महापुरुपो के जीवन से हमे प्रेरणा मिलती है। उनमे हम अपनी ही आत्मा के परिशुद्ध स्वरूप को देखते हैं। उसी तरह उनमे जो अपूर्णता होती है, उनके दर्शन से भी लाभ होता है।.. मेरा ऐसा मत है कि 'ज्ञानेश्वर' ही एक ऐसा व्यक्ति है जो समता के आदर्श के काफी निकट पहुँच गया था। उसके सारे लेखन मे कही एक भी कटु शब्द नही मिलता। वैसे उनकी जिन्दगी भी छोटी-सी ही थी।

"मेरी मातृभापा मराठी होने के कारण मैंने बचपन से ज्ञानेश्वर की किताबो का अध्ययन किया है। इसलिए उनके विचारो का परिचय मुझे बचपन से हुआ है। इसलिए सम्भव है, उसके बारे मे मैंने जो कहा है उसमे शायद कुछ पक्षपात हो सकता है। फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि सब महापुरुपो मे ज्ञानेश्वर ही एक ऐसा है जो 'समत्व' के आदर्श के सब से निकट पहुँच चुका था।

"मुझसे कई लोग कहा करते थे—'विश्वामित्र भी जो नही कर सका वह तुम कैसे कर सकोगे?' इस पर मै जवाब देता था—'मै तो विश्वामित्र के कधो पर खडा हूँ। बाप के कन्धो पर खडा बालक

अधिक दूर का देख सकता है। आज तक के सभी ऋषियो के अनुभवो का लाभ मुझे मिल रहा है। मुझे मफल वनाने के लिए ही विश्वा-मित्र असफल हुआ।"

स्वागत के लिए राजापुर से आयी हुई भजन-मडली की राम-धुन की आवाज सुनते ही हमारी चर्चा समाप्त हुई। 'राजापुर' महाकवि तुलसीदास का जन्मस्थान है। जमुना के किनारे जहाँ उनका घर था, उसी स्थान पर अव एक मन्दिर वनाया गया है जिसमे राम, लक्ष्मण, सीता और तुलसीदासजी की मूर्तियाँ है। मन्दिर मे तुलसीदासजी की लिखी हुई, उन्हीके सुन्दर हस्ताक्षर मे रामायण के अयोध्याकाण्ड की एक प्रतिलिपि है। वावा ने भक्त तथा वैज्ञानिक की दृष्टि से उस रामायण को देखा।

हमारा आज का निवासस्थान जमुना के किनारे एक ऊँचे टीले पर रहा। पास मे ही वह मन्दिर था जो तुलसीदासजी का घर था। कल वारिश होने के कारण आज जमुना का पानी निर्मल नही रहा, इसलिए तैरने का मजा तो नही मिला, फिर भी हमने जमुना मे स्नान करके थोड़ा-सा पुण्य हासिल कर ही लिया।

आज की सभा का आरम्भ हुआ वेदमत्रो के साथ। फिर संस्कृत मे मान-पत्र पढा गया। उसके वाद छोटा-सा कीर्तन और रामायण हुआ।

आज के भाषण मे तुलसीदासजी की स्मृति मे विनोवाजी वार-वार गद्गद हो गये।

महात्मा गांधी की जय

सुरधुआ, कमासिन, किशुनपुर (वाँदा)

५, ६, ७ जून, १९५२

चलते समय किसी ने वावा से पूछा कि "कर्तव्य का निर्णय कैसे किया जा सकता है?"

वावा ने जवाव दिया—"कर्त्तव्य के निर्णय करने की जरूरत नही पडती, वह तो सहज ही प्राप्त हो जाता है। मनुष्य को अपना-अपना स्वधर्म

नही चुनना पडता, माँ के समान स्वधर्म भी पैदा होते ही प्राप्त हो जाता है। अव यह सवाल हो सकता है कि स्वधर्म कैसे पहचाना जाय ? लेकिन समझ लो कि जिस काम मे अपने मन को विशेप आनन्द महसूस होता है, वही हमारा स्वधर्म है। मुझे दिन-व-दिन आत्मा के चिन्तन को छोडकर और किसी काम मे आनन्द नही महसूस होता। इसलिए मेरा स्वधर्म है 'आत्मचिन्तन'। अव मुझमे कोई भी वासना नही रही । इसी क्षण मेरी मृत्यु हो जाय तो मैं परमेश्वर का चिन्तन करता हुआ ही रहूँगा और मृत्यु के वाद परमेश्वर मे लीन हो जाऊँगा ।"

हमारा आज का निवासस्थान भी विल्कुल नदी के किनारे ही था। जव तूफान चल रहा था तो नदी का सौन्दर्य अनुपम हो उठा। आस-मान के वादलो की छाया नदी के पानी पर पडती और कई चित्र वन जाते। फिर जोरो से हवा चलने लगती और वे सारे चित्र मिट जाते। सफेद वगुलो का एक झुण्ड वडी शान से तैरता हुआ जा रहा था। हम किनारे पर वैठकर गीत गा रहे थे। **'शिष्टागमने अनध्याय'**—वचन के अनुसार हम वारिश, तूफान आदि के आगमन पर काम न करते हुए छुट्टी मना लेते है।

वाँदा जिले का आखिरी पडाव था कमासिन। एक हफ्ता पहले जव हम लोगो ने इस जिले मे प्रवेश किया था तो यही वात सुनाई दे रही थी—'इस जिले मे कुछ भी काम नही हुआ, जमीन वहुत ही कम मिलेगी।' लेकिन विनोवाजी ने इस जिले मे प्रवेश करते ही कह दिया था—"तुलसी-दासजी के जिले मे तो मुझे विना घूमे ही जमीन मिलनी चाहिये। जहाँ पर उस मत ने तपस्या की, उससे मैं वहुत अपेक्षा रखता हूँ।" और कमासिन मे हमने देखा कि तुलसीदासजी की तपस्या का फल प्राप्त हुआ था। सात दिनो मे २१ हजार एकड जमीन का दान मिला था। यहाँ के कुछ कार्यकर्त्ता गत सात दिनो मे दिन भर जीप लेकर घूमते और शाम की सभा मे दान-पत्रो को देकर चले जाते थे।

वाँदा छोडकर फतहपुर जिले मे प्रवेश करते समय नाव से जमुना

नदी पार करनी थी। जमुना की भूरे रग की रेत को देखकर लगा, मानो मखमल का गलीचा हो। सूर्य की किरणो से चमकती हुई उस रेत के गलीचे पर पैर रखने को इसलिए जी नही चाहता था कि कही उसकी शोभा न बिगड जाय। फूलो तथा पत्तो से सजायी नाव मे पैर रखते ही फतहपुर के लोगो ने सब को चन्दन-तिलक लगाया। जमुना के इस किनारे विदाई देनेवाले लोग थे तो उस किनारे स्वागत करनेवाले। दोनो किनारो से सतत जयजयकार की ध्वनि सुनाई दे रही थी, इसलिए पता नही चला कि नाव कब छूटी और कब पहुँची। जैसे ही बाबा नाव से उतरे, फतहपुर की जनता ने गगनभेदी स्वर मे गर्जना की—'महात्मा गाधी की जय!'

शाम के प्रवचन मे विनोबाजी ने भर्रायी हुई आवाज मे कहा—"आज का ही दिन था वह! जून की ७ तारीख थी। ३६ साल पहले आज के ही दिन पहली बार मै बापू से मिला था। उस समय मै एक छोटा-सा बालक था। तब से वे आज्ञा देते और उनकी आज्ञा के अनुसार मै काम करता जाता था। बस, यही मेरी जिन्दगी है।" विनोबाजी ने जो बात कही, उसे भारत की जनता कब से जान गयी थी। इसीलिए तो वह विनोबा-जी को देखते ही आनन्द के साथ गर्जना करती है—'महात्मा गाधी की जय।'

विचार की विजय

खागा, बहरामपुर, फतहपुर, मौजमाबाद (फतहपुर)

८, ९, १०, ११ जून १९५२

खागा जाते समय रास्ते मे 'विजयीपुर' नाम का एक गॉव पडा, जो उत्तर प्रदेश की विकास-योजना मे प्रथम आया था। गाँववालो ने स्वागत के लिए जोरदार तैयारियॉ की थी। विनोबाजी ने उनसे कहा—"आपने विकास-योजना मे अव्वल दर्जा प्राप्त कर लिया इसलिए अब गाव के सब भूमिहीनो को भूमि देकर उस काम मे भी प्रथम स्थान प्राप्त कीजिये।" इस स्थान पर हम सब को चन्दन-तिलक तथा अक्षत लगाये

गये। वावा ने हमारी ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा—"आज तो सव वावा वन गये है।"

फिर चर्चा शुरू हुई। एक भाई ने मानसिक समानता के वारे मे सवाल पूछा। वावा ने कहा—"आर्थिक-क्रान्ति का अधिष्ठान ही है मानसिक समानता। मानसिक समानता का मतलव है कि सव मानवो मे एक ही आत्मा समान रूप से वास करती है और हम देह नही, वल्कि आत्मा है।"

फिर महर्पि अरविन्द पर चर्चा चली। वावा ने कहा—"रामानुज, शाक्तपथ और विज्ञान इनका महर्पि अरविन्द पर प्रभाव पडा है। वे भी रामानुज की तरह माया को मिथ्या न मानकर उसे ब्रह्म का अश मानते थे।"

प्रश्न—"माताजी (Mother) ने यह आश्वासन दिया है कि यद्यपि अरविन्द का स्थूल देह नष्ट हुआ है, फिर भी वे आज सूक्ष्म रूप से अपना काम कर रहे है। इस वारे मे आपकी क्या राय है?"

विनोवाजी—"यह कथन सत्य है। सभी महापुरुप देहत्याग के वाद सूक्ष्म रूप से अधिक काम करते है।"

वहरामपुर जाते समय रास्ते मे एक विचित्र घटना घटी। हमारे यात्री-दल को आगे वढते देखकर कुछ गाँववाले घर से वाहर आकर देखने लगे। उस समय हमारे यात्री-दल के साथ कुछ पुलिसवाले भी चल रहे थे। वावा आगे निकल चुके थे, हम पीछे से जा रहे थे। इतने मे हमने गाँववालो की वात सुनी—'क्या इतना सारा गिरोह गिरफ्तार हो गया है? लडके-लडकियाँ भी?' उस गाँव के लोगो के अज्ञान का कोई पार नही था। उन्हे इस वात का पता ही न था कि विनोवाजी जा रहे है। इस घटना के कारण करण भाई को वडी चोट पहुँची। उन्हे लगा कि अपने कार्यकर्त्ताओ ने प्रचार नही किया, इसीलिए गाँववालो को ठीक जानकारी नही मिली। वे अत्यन्त दु खी हो गये और शाम की सभा मे उन्होने एक भाषण देकर अपनी व्यथा को प्रकट किया। इसके वाद विनोवाजी का जो भाषण हुआ उससे हम सव की निराशा तथा दु ख दूर भाग गया। विनोवाजी ने कहा—"लोगो मे जितना कम उत्साह हो

उतना ही मुझे काम करने मे अधिक उत्साह मालूम होता है। सामने जितना ही गहरा अन्धकार हो, दीपक के लिए उतना ही अच्छा रहता है। क्योकि गहरे अन्धकार मे दीप का प्रकाश अधिक फैलता है। इसलिए ऐसी घटनाओ से निराश मत होइये, वल्कि उत्साह के साथ काम मे लग जाइये।"

वहरामपुर मे शाम की सभा समाप्त हुई थी। हम लोग वावा के पास वैठकर वातचीत कर रहे थे। देखा, एक भाई दौडता हुआ आ रहा था। पास आने पर पता चला कि वह चार मील की दूरी से दौडता हुआ आ रहा है, फिर भी वह प्रवचन के समय यहाँ नही पहुँच सका। उसके पास सिर्फ ६ वीघा जमीन थी और उसका छठा अश १ वीघा दान देने वह आया था। उसने आज तक न कभी वावा का दर्शन किया और न वावा के व्याख्यान ही सुने थे। फिर उसे प्रेरणा कहाँ से हुई? वावा अक्सर कहते है कि "भूदान का काम मेरा काम नही है। वह तो भगवान का ही काम है और वही सवको दान देने की प्रेरणा दे रहा है।" ऐसी घटनाओ को अपनी आँखो से देखकर वावा के इस कथन की सत्यता महसूस होने लगती है।

परसो राजापुर मे भाषण देते हुए वावा ने कहा था कि "तुलसीदास-जी का जीवन इतना शुद्ध था, इसलिए उनके शव्दो मे इतनी सामर्थ्य निर्माण हुइ।" इस वारे मे मैंने एक शका उठायी थी—"योरप के कई प्रतिभाशाली कवियो का जीवन पतित था, फिर भी उनके शव्दो मे ताकत थी।" वावा ने कहा—'म नव की आतमा हमेशा ऊपर उठने की कोशिश करती हे और उसमे असफल होकर नीचे गिरती जाती है। योरप के वे कवि अक्सर इस तरह की ऊपर उठने की कोशिश मे ही अपना काव्य लिख डालते है, इसीलिए उनके शव्दो मे ताकत आती है। उस काव्य का उनके नित्य के जीवन के साथ कोई ताल्लुक नही रहता। अक्सर ऐसे साहित्य मे सातत्य की कमी नजर आती है। फिर भी उनका जो अच्छा विचार है उसे ग्रहण करना चाहिये और उनके जीवन को भूल जाना चाहिये। मैंने 'शेली' के काव्य का स्मरण रक्खा और उसके जीवन को भूल गया।"

प्रश्न—"क्या प्राचीनकाल मे वेदाध्ययन का अधिकार केवल ब्राह्मणो को ही था ?"

विनोबा—"उस जमाने मे सव को ज्ञानप्राप्ति का अधिकार था। लेकिन वेदाध्ययन का अधिकार केवल ब्राह्मणो को ही था। इसका कारण यही है कि उस जमाने मे लिखने के साधन नही थे, इसलिए उच्चारण की शुद्धता को विशेप महत्त्व दिया जाता था। उच्चारण की शुद्धता पर ही वेदो का शुद्ध रूप निर्भर था, इसलिए वेद-पठन का अधिकार भी केवल ब्राह्मणो को दिया गया जो इसी काम मे लगे हुए थे। उस जमाने मे उन लोगो के पास वेदो को टिकाने का इसके सिवा दूसरा कोई मार्ग नही था। इसलिए उन लोगो ने जो किया उसे हम पाप नही कह सकते। उनकी अडचनो को, मुश्किलातो को ध्यान मे न लेते हुए यदि हम उन पर टीका करेंगे तो वह अन्याय होगा।"

मैंने देखा है कि वेद-काल के वारे मे वोलते समय लगता है कि जैसे वावा की आवाज किसी अज्ञात भूतकाल से आ रही हो। वे अपने गत जीवन की स्मृतियो को याद कर रहे हो, ऐसा आभास होता है।

फतहपुर मे विशाल जनसमुदाय के सामने वोलते हुए वावा ने कहा—"ऐसा सवाल मत उठाइये कि भूदान का काम आज तक इतिहास मे कभी भी नही हुआ है। वल्कि यह कहिये कि हम इसे करके ही रहेगे। इतिहास मे आज तक जो काम नही हुआ है वही काम करने के लिए ही तो भगवान ने हमे पैदा किया है। यदि करने के सारे काम हमारे पूर्वजो ने ही कर डाले होते तो भगवान हमे यह जन्म ही किसलिए देता ? इसलिए याद रखिये कि हमे एक ऐसी अहिंसक क्रान्ति कर दिखानी है जो आज तक के इतिहास मे कभी नही हुई थी।"

आज जव वावा का प्रवचन हो रहा था तव लग रहा था कि यह वावा नही वोल रहे है, कोई और ही वोल रहा है। वही वावा के जरिये अपना काम करवा रहा है। वह हमारे इतने निकट है, फिर भी हमे उसका भान नही है।

मीजमाबाद जाते समय एक कार्यकर्त्ता के सवालो का जवाब देते हुए बाबा ने कहा—"सरकार अपना काम करेगी, मै अपना काम करूँगा। मेरा जनशक्ति पर ही भरोसा है, इसलिए मै जनशक्ति को ही जागरित करने का काम कर रहा हूँ। लेकिन सरकार को गरीबो के हित मे कानून बनाने से कौन रोकता है? कानून बनाना तो उसका काम ही है। लेकिन मेरा कानून पर विश्वास नही, जनशक्ति पर है। मै मानता हूँ कि कानून से कुछ ही मसले हल हो सकते है।

"मै प्रेम के मार्ग से दुनिया को एक विचार देकर अपना काम कर रहा हूँ। अगर मेरा विचार थोडे लोगो को जँच गया तो थोडा काम होगा, सब को जँच गया तो पूरा काम होगा। और किसी को भी नही जँचा तो कुछ भी काम नही होगा। लेकिन मै तो केवल विचार ही देता रहूँगा, जबरदस्ती विचार लादूंगा नही। मै मानता हूँ कि हर किसी को अपने विचार का प्रचार करने का अधिकार होना चाहिये। मै इस बात को बिल्कुल गलत मानता हूँ कि अपने विचार को छोडकर बाकी के सारे विचारो का प्रचार बन्द किया जाय। कम्युनिस्ट अपना विचार जनता के सामने रक्खेगे, मै अपना विचार रक्खूंगा। दूसरे भी लोग अपना-अपना विचार रक्खेगे। फिर जनता को जो विचार पसन्द आयेगा उसे वह स्वीकार कर लेगी। चुनाव करने का काम तो जनता का ही है। मेरे मन मे कोई भी उलझन नही है, मेरा दिमाग बिल्कुल साफ है। मै जनता को एक विचार बता रहा हूँ। मै मानता हूँ कि वह राह सब से बेहतर है। फिर भी उस राह को पकडना या न पकडना—इसका फैसला तो जनता ही करेगी।"

अब तक बाबा कहा करते थे कि "मुझे चलते समय कही रोकना हो तो मेरे हर एक मिनट की फीस (भूदान) देनी पडेगी।" लेकिन आज तो उन्होने कहा कि "जो कोई सवाल पूछेगा उसे भी हर एक सवाल की फीस देनी पडेगी।" आज के प्रश्न पूछनेवाले कार्यकर्त्ता से उन्होने मुस्कराते हुए कहा—"आपने तीन सवाल पूछे, इसलिए अब ३०० एकड जमीन लाकर दीजिये।" यह सुनकर मैने अपने मन मे

हिसाब लगाना शुरू किया तो पता चला कि आज तक के मेरे सवालो की फीस तो हजारो एकड हो जायगी। मन मे डर पैदा हुआ कि मै कहाँ से हजारो एकड जमीन लाऊं। फिर मैंने सोचा—जमीन से तो जीवन अधिक कीमती चीज है। इसलिए भूदान के काम मे जीवन को ही समर्पित कर मै ऋणमुक्त हो जाऊँगी। परन्तु ज्ञान पाने का यह महान् ऋण एक जन्म के क्या, अनेक जन्मो के जीवन से भी नही चुकेगा।

मौजमाबाद बिल्कुल गगा के किनारे पर बसा हुआ गाँव है। गाँव नजदीक आते ही शीतल वायु और मुलायम मिट्टी ने इस बात की सूचना दे दी कि गगाजी निकट है। पडाव पर पहुँचते ही गगा के विशाल प्रवाह का भव्य दर्शन हुआ। घण्टो तक उसकी ओर देखते रहने पर भी मन भर नही पाया। हमारे निवासस्थान से शब्दश चार कदमो पर गगाजी थी, याने बिल्कुल घर मे ही गगा आयी थी। गगा की नीली झाँकीवाली, सफेद चमचमाती रेत का सौन्दर्य मुग्ध कर देनेवाला था। जमुना की रेत मे भूरापन था तो गगा की रेत मे कुछ नीलापन। दोनो का सौन्दर्य एक-दूसरे से स्पर्धा करनेवाला था। गगा-जमुना के दर्शनमात्र से ही सौन्दर्य का साक्षात्कार हो जाता था।

पुनरागमन

लालगज
१२-६-१९५२

रात बीत रही थी। रायबरेली जिले मे प्रवेश करने के लिए हम लोग नाव पर चढे। नाव से गगा पार करनी थी। प्रार्थना चल रही थी। प्रशान्त समय मे चन्द्रमा के सौम्य-शीतल प्रकाश मे हम एक ब्रह्मर्षि के साथ उपनिषद्-सूक्तो का पाठ करते हुए नाव से जा रहे थे। उस समय एक अपूर्व आनन्द की अनुभूति हुई। प्रार्थना समाप्त होते ही हमने भजन आरम्भ किया—"**सत परम हितकारी**" नाव धीरे-धीरे आगे बढ रही थी। मन मे इतनी खुशी हुई कि आँखो के आँसू गगा माई के जल से

गला मिलान के लिए द्रुतगति से आगे बढने लगे। दूसरे किनारे पर रायबरेली की जनता स्वागत के लिए उपस्थित थी। नाव को पास आते देखकर उनमे से एक कार्यकर्त्ता स्वागतपरक भापण देने लगा—"जाह्नवी-तीर पर की यह तपोभूमि कई ऋपियो ने पुनीत की है। महर्पि जह्नु और गर्ग के आश्रम यही पर थे। मर्यादा-पुरुपोत्तम राम इमी स्थान से नाव मे बैठकर दक्षिण गये और लका-विजय की। अब दक्षिण से सतप्रवर यहाँ आ रहे है, जाह्नवी को पारकर प्रभु रामचन्द्र की भूमि मे प्रवेश कर रहे है। रामराज्य की स्थापना के उनके महान् कार्य मे अपने को समर्पित करना हम सब का कर्त्तव्य है।" सारी सृष्टि मे स्तब्धता छायी हुई थी और सिर्फ इन्ही शब्दो का उच्चारण हो रहा था। लगता है, अभी वे शब्द कानो मे गूंज रहे है। हमारी नाव किनारे पर पहुँची कि "महात्मा गाधी की जय" का घोप दसो दिशाओ मे गूंज उठा।

गगा के किनारे शिवालय था। यहाँ के निकटवर्ती खजुर गाँव के राणा साहब ने उस शिवालय मे बाबा का तुलसी की माला मे स्वागत किया और चार हजार बीघे भूमि का दानपत्र उन्हे अर्पण किया। जिसे शोपक-वर्ग कहा जाता है उस वर्ग का एक प्रतिनिधि अपने भूमिहीन भाइयो का हक उन्हें वापस देने के लिए खुद अपनी जमीन देता है और दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि की वन्दना करता है—क्या यह घटना कम क्रान्तिकारी है? इसमे जो क्रान्ति निहित है, उसका हमे भान हो जाय तो हिन्दुस्तान की सूरत ही बदल जायगी।

क्रान्ति राजसत्ता से नही, ऋषि से होगी

अटौरा बुजुर्ग, रायबरेली (रायबरेली)

१३, १४ जून, १९५२

शाम के भापण मे कार्यकर्त्ताओ के आलस्य के लिए उन्हे कडी फटकार मिली। अन्त मे नये खून का आवाहन करते हुए विनोबाजी ने कहा—

"क्रान्ति कभी बूढो से नही होती, वह तो जवानो से ही होती है। नये विचार को ग्रहण करने की क्षमता नये खून मे ही होती है। राजसत्ता के जरिये कभी क्रान्ति नही हो सकती, वह तो ऋषियो के द्वारा ही होती है। बडे-बडे सम्राटो का स्थान भी इतिहास की किताबो मे ही है, जनता के हृदय मे नही। यदि राजसत्ता के द्वारा क्रान्ति हो सकती तो भगवान् बुद्ध अपने हाथ की राजसत्ता छोड सन्यासी क्यो वनते ?"

सई नदी के किनारे उदयोन्मुख सूर्य की साक्षी मे रायवरेली की जनता ने विनोवाजी का स्वागत किया। नारे तथा गीत-गर्जनाएँ आरम्भ हुई—

'एक नये ढग से, नये रग से, बदलेगा ससार,
बदलनेवाला आया है !'

वावा के साथ कुछ दिन रहने के लिए मै यहाँ आयी थी, लेकिन अव मैने निश्चय कर लिया था कि भूदान के ही काम मे जीवन को समर्पित किया जाय। मैने जब वावा को यह वात वतायी तो वे मुस्कराते हुए कहने लगे—"वहुत अच्छी वात है। स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ कभी भी श्रेयस्कर ही होता है।" उसके वाद भूदान का काम तथा शिक्षित-वर्ग के वारे मे वोलते हुए वावा ने कहा—"अक्सर देखा गया है कि क्रान्ति के काम मे शिक्षित या विद्वान् लोग वहुत ही कम सख्या मे आगे आते है। छोटे-छोटे लोगो से ही क्रान्ति होती और इतिहास बनाया जाता है। फिर उनका इतिहास लिखने के लिए ये विद्वान् आगे आते है।"

निजी काम के निमित्त मुझे कुछ दिनो के लिए घर जाना था। राय-वरेली का दिन आखिरी था। दिल तो जाना नही चाहता था, लेकिन अव तो भूदान का ही काम करने का सकल्प हो चुका था। इसलिए जाते समय वावा के शब्दो मे 'वियोग की नही, वल्कि मिलन की अनुभूति' लेकर गयी।

छठा भाग

- पूर्व-पश्चिम का संगम

काशी विद्यापीठ, बनारस

११-९-१९५२

आज बाबा का जन्मदिन था। सर्वसाधारण व्यक्ति के जीवन में इस दिन गत जीवन का सिंहावलोकन किया जाता और यशापयश को तौला जाता है। लेकिन जिसने जीवन में चिरन्तन सत्य की खोज की हो और जिसका प्रतिक्षण का जीवन ही चिर सनातन और चिर नूतन हो, ऐसे व्यक्ति के लिए जन्मदिन का क्या महत्त्व हो सकता है? फिर भी कभी-कभी ऐसे महापुरुषों की अति कठोर तपस्या के संकल्प उनके जन्मदिन के अवसर पर घोषित किये जाते हैं। परन्तु वह तो केवल योगायोग ही है। विनोबाजी ने भी आज एक संकल्प की घोषणा की—"भारत की भूमि-समस्या हल किये बगैर मैं अपने पवनार-आश्रम नहीं जाऊँगा, सचार ही करता रहूँगा या इसी काम में खत्म हो जाऊँगा।"

यहाँ के निकटवर्ती भारतमाता-मंदिर के पुस्तकालय में शाम की सभा हुई। मंदिर का हाल अशोक के पुष्पों तथा पत्तों से सजाया गया था। उत्तर प्रदेश के सभी जिलों के कार्यकर्त्ता आये थे, जो यहाँ से स्फूर्ति और प्रेरणा पाकर अपने-अपने जिले में भूदान का काम करनेवाले थे। दो दिनों के बाद विनोबाजी उत्तर प्रदेश छोडनेवाले थे, इसलिए यह विदाई का समारोह भी था । सभा में प्रथम अभिनन्दनपरक कविताओं की वर्षा हुई, फिर भाषणों की। किसीने विनोबाजी को 'दक्षिण से उत्तर को आये हुए मर्यादा-पुरुषोत्तम राम' कहा, तो किसीने 'नवयुग का संदेश'। किसीने 'अहिंसक क्रान्ति का अग्रदूत' तो किसीने 'भगीरथ' और 'वशिष्ठ' कहा। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य नरेन्द्रदेव ने कहा—"विनोबाजी में हम पूर्व और पश्चिम का एक सुन्दर संगम

हैं। वे नवीन से भी नवीन है और प्राचीन से भी प्राचीन।" कानपुर के शिवनारायणजी टडन ने कहा—"विनोवाजी मे गीता का कर्मयोग साकार हुआ है।" मँगरौठ के दीवान साहव ने कहा—"मै वक्ता नही, सेवक हूँ। इसीलिए शब्दो मे नही, कृति से कहता हूँ कि विनोवाजी का मार्ग सच्चे सुख का मार्ग है।"

विनोवाजी ने अपने भाषण मे अपना सकल्प जाहिर करते हुए कहा—"गीता मे यज्ञ-दान और तप की त्रिविध क्रियाएँ वतलायी गयी है। जनता दान और यज्ञ कर रही है, कार्यकर्त्ताओ को तप करना चाहिये। मै आज आप सव लोगो से तप की माँग कर रहा हूँ।"

कुछ शब्द ऐसे होते है जिनका उच्चारण जितना सरल होता है, आचरण उतना ही कठिन होता है। 'तप' भी ऐसा ही एक शब्द है। हिसक क्रान्ति मे या युद्ध मे काफी शौर्य, धैर्य की आवश्यकता होती है, लेकिन अहिसक क्रान्ति मे तो उससे भी कई गुना अधिक शौर्य और धैर्य की आवश्यकता होती तथा अधिक गहराई मे जाना पडता है। रणक्षेत्र मे हँसते-हँसते गोली खाकर मरने मे पराक्रम जरूर है, लेकिन हँसते-हँसते तपस्या का जीवन विताने मे जो पराक्रम है उसका मूल्य वहुत वडा है। तिल-तिलकर अखड जलनेवाली शमा की उपमा काव्य मे मधुर प्रतीत होती है, लेकिन अहिसक सैनिक का तो सारा जीवन ही उस शमा जैसा सतत जलनेवाला होता है।

दोपहर को काशी के महाराज, जिन्होने आज तक का सवसे वडा, दस हजार एकड का दान दिया है, विनोबाजी से मिलने आये। उन्होने जन्म-दिन के अवसर पर उपहार के रूप मे एक वडा व्याघ्रचर्म भेट दिया।

काशी विद्यापीठ ने आज तक देश को कई नर-रत्न भेट दिये है। उसी विद्यापीठ मे विनोवाजी ने वर्षा-काल के निमित्त पिछले दो महीने तक निवास किया था। उन दिनो 'धर्म-चक्र को गति कैसे प्रदान की जा सकती है', इस पर उनका चिन्तन चल रहा था। उनका वहुत-सा समय वेद, उपनिषद्, गीता, कुरान, वाइवल आदि की—जो उनके

सुहृद्-जन है—सगति मे वीतता था। शाकरभाष्य मे तो उनकी जोडी ही मिल गयी थी।

इस चिन्तन मे से किस चीज का निर्माण हुआ, यह तो कल के इतिहासकार ही वता मकेंगे।

दे दो अब भूमि अधिकार

मुगलसराय (वनारस)

१२-६-१६५२

प्राचीन ऋषियो का आदेश है कि वर्षाकाल मे यात्रा को स्थगित रग्वकर विश्राम लेना चाहिये। इस आदेश का पालन करने के लिए विनोवाजी ने पिछले दो महीने काशी मे निवास किया। परसाल तेलगाना की यात्रा के वाद उन्होने इसी तरह वर्षाकाल मे दो महीने अपने पवनार के आश्रम मे विताये थे। ठीक आज के ही दिन उन्होने अपनी उत्तर भारत-यात्रा आरम्भ की थी। तव से जनता को चक्रवर्तित्व प्राप्त करा देने के लिए प्रजासूय-यज्ञ का यह अश्व सतत सचार कर रहा है। जिसका सचार परमेश्वर की ही प्रेरणा से हो रहा हो, उसे रोकने की ताकत मानव में कैसे हो सकती थी? उसका भारत-भ्रमण समाप्त होते ही दरिद्र-नारायण को दुनिया के इतिहास मे सवसे पहली वार, सार्वभौमत्व की उपाधि प्राप्त होगी।

आज तीन महीनो के वाद फिर से मेरी यात्रा आरम्भ हुई थी। इस वीच विनोवाजी ने रायवरेली के वाद सुलतानपुर, इलाहावाद तथा मिर्जापुर जिले की यात्रा की थी। सुलतानपुर ने तो भूदान-प्राप्ति तथा साहित्य-विक्री म उच्चाक प्राप्त किये थे। इलाहावाद मे राजर्पि टडनजी—जो आजकल उत्तर प्रदेशीय भूदान-समिति के प्रमुख है—यात्रा मे साथ रहे। नित्यक्रम के अनुसार प्रात ४ वजे काशी विद्यापीठ से प्रस्थान हुआ। वहाँ से लेकर मालवीय-पुल तक सैकडो नागरिक रास्ते के दोनो ओर खडे थे। मालवीय-पुल पर विनोवाजी ने नागरिको को आखिरी प्रणाम करते हुए 'स्वच्छ-वाणी

आन्दोलन' को चलाये रखने का सदेश दिया। आजकल हमारे तीर्थक्षेत्रो मे वहुत ही गन्दगी रहती है । सुना है, तीर्थस्थानो मे मरने से सीधे स्वर्ग जाते है। शायद इसीलिए वहाँ सीधे स्वर्ग जाने की यह सुविधा निर्माण की गयी हो। काशी की अस्वच्छता को देखकर विनोवाजी को वहुत दु ख हुआ। उन्होने काशी के नागरिको का आवाहन किया और ७ सितवर को सैकडो नागरिको ने सत की पुकार पर हाथो मे झाडू लेकर स्वच्छ-काशी आन्दोलन का आरम्भ किया। जनशक्ति को जागरित कर समस्याओ को कैसे हल किया जा सकता है, इसका एक सुन्दर उदाहरण था वह आन्दोलन।

पुल पर खडे होकर वावा ने फिर से एक दफा काशी नगरी की ओर देखा। नीचे से गगा का विशाल प्रवाह वह रहा था। अभी-अभी पौ फट रही थी। आकाश की नीलिमा पर फीके गुलावी रग की झाँकी दिखाई दे रही थी। सफेद वादलो के पुज यो ही इधर से उधर सैर कर रहे थे। गगा के किनारे वसी हुई अति प्राचीन काशी नगरी विशेष रमणीय प्रतीत हो रही थी। मन्दिरो से घण्टानाद सुनाई पड रहा था।

पिछले नौ महीने तक विनोवाजी के साथ यात्रा मे रहे हुए उत्तर प्रदेश के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री जलेश्वर भाई कह रहे थे—"मैने ९ महीने तक रास्ते मे वावा को पानी पिलाने का काम किया, इसलिए लगता है कि मेरा नाम सार्थक हुआ।" जलेश्वर भाई ने अभी-अभी दो हजार एकड भूमि का वँटवारा करने का काम किया था। वे उस काम के अपने अनुभव वता रहे थे। उन्होने कहा—"वँटवारे के समय प्राय अधिक जमीन का दान मिल जाता है। भूमिहीनो को देने के लिए वैल, वीज आदि साधनो का दान भी गाँव से मिल जाता है। वितरण का समारोह एक अभूतपूर्व-सा रहता है। जिन्हे जमीन मिलती हे उन्हे लगता है, जैसे अपनी कई जन्मो की इच्छा पूरी हो रही हो। भूमि-दान-यज्ञ के कारण भूमिहीनो मे जागृति पैदा हो रही है। वे जान गये है कि अव उन्हे जमीन मिलनेवाली है। इसलिए उनमे स्वाभिमान पैदा हुआ है। अब उनमे अत्याचारो को चुपचाप सहते रहने की वृत्ति नही रही है।"

आज मँगरौठ के दीवान साहव भी साथ थे, उन्होने मँगरौठ की वाते

वताया। वाहर के कुछ लोगो ने मँगरौठवालो को यह कहकर भडकाने की कोशिश की थी कि 'सारी जमीन दे देने मे आपका क्या लाभ हुआ ? नाम तो दीवान साहव का हुआ, मँगरौठ का नही।' इन भडकानेवालो को मँगरौठ-निवासी अच्छे जवाव देकर भगा देते है। वे कहते है—'अरे, जिस मँगरौठ को पास के राठ मे कोई नही जानता था, उसे अव सारा हिन्दुस्तान जानने लगा है। अव रेडियो भी उसकी वात वोलता है।'

सिन्ध के प्रसिद्ध कवि दुखायलजी आजकल यात्री-दल मे शामिल हुए थे। वे सिंधी भाषा के मशहूर भक्त कवि है ही, लेकिन आजकल हिन्दी मे भी गीत वनाने लगे थे। वे जव अपने खुद वनाये हुए गीत खँजडी पर गाने लग जाते तव हजारो की भीड मन्त्रमुग्ध होकर सुनती रहती। उनका—

"दे दो अव भूमि-अधिकार।
दान करो अभिमान रहित तो होगा वेडा पार।"

यह गीत वहुत ही लोकप्रिय हो रहा था। इस गीत मे विल्कुल सरल भाषा मे भूदान का सारा तत्त्वज्ञान वताया गया है।

कल का दिन (१३-९-'५२) उत्तर प्रदेश की यात्रा का आखिरी दिन था। फिर विहार की भूमि मे प्रवेश होनेवाला था। पिछले १० महीने से वावा के साथ रहे हुए वावा राघवदास, करण भाई, कपिल भाई, जलेश्वर भाई आदि के उदास चेहरे याद दिला रहे थे कि अव वियोग का क्षण निकट आ रहा है। आज भोजन के समय करण भाई आग्रह करके हमे मलाईवाला दही खिला रहे थे। मैंने विनोद मे कहा—"क्या आप हमे पहलवान वनाना चाहते है ?" करण भाई ने कहा—"खा लो वेटा, यह आखिरी दिन है।" मैंने देखा, यह कहते हुए उनकी आँखे भर आयी थी।

भूदान के लिए आत्मसमर्पण का प्रारम्भ

सैयदराजा (वनारस)
१३-९-१९५२

चार दिन हुए, जव पूज्य किशोरलाल भाई मश्रूवाला के स्वर्गवास की खवर सुनकर विनोवाजी को लगा—जैसे अपना एक वहुत वडा आधार ही

नष्ट हो गया हो। तब से वे अपने हर एक भाषण में स्वर्गीय किशोरलाल भाई के तपस्वी जीवन के बारे में कुछ न कुछ कहते थे। आज उत्तर प्रदेश की यात्रा का आखिरी दिन था। सुबह की प्रार्थना के बाद विनोबाजी ने मौन रखने का क्रम भंग करते हुए एक छोटा-सा भाषण दिया। सर्वप्रथम स्वर्गीय किशोरलाल भाई के बारे में कुछ कहा और फिर बोले—"मैंने एक प्रतिज्ञा-पत्रक बनवाया है, जिस पर दस्तखत करके भूदान के काम में अपने को समर्पित कर देनेवाले कार्यकर्त्ताओं की मैं माँग कर रहा हूँ। ऐसे निष्ठावान् सेवक बिल्कुल ही थोड़े हों तो भी क्या हर्ज है? ईसा मसीह के आरंभिक शिष्य तो बारह ही थे।"

शाम की सभा का दृश्य तो अविस्मरणीय ही रहा। गाँव छोटा होते हुए भी सभा में दस हजार से अधिक लोग उपस्थित थे। आकाश मेघाच्छन्न था। हवा चल रही थी। दुखायलजी मधुर स्वर में गा रहे थे। कवि की वाणी जनता को विश्वबंधुत्व का पाठ पढ़ा रही थी—

"कैसा है यह सुखमय सपना मानो सारा जग है अपना।
सबके सुख में सुख मानें हम सब के दुख में सीखें तड़पना॥"

विनोबाजी का प्रवचन आरम्भ होते ही जोरों से बारिश होने लगी। कुछ लोगों को छाते खोलते हुए देखकर विनोबाजी ने उच्चस्वर में कहा—"सभी छाते हटा दो, बारिश के रूप में परमेश्वर की कृपा बरस रही है। छातों को बीच में मत लाइये, परमेश्वर का स्पर्श होने दीजिये।" सब छाते बन्द हो गये। मूसलधार वर्षा हो रही थी, फिर भी सारा समुदाय चित्रवत् बनकर संत-वाणी सुन रहा था। छोटे बच्चे भी बिल्कुल शान्त बैठे थे। विनोबा की वाग्धारा तेजी से बह रही थी—"यह विनोबा नहीं बोल रहा है, विनोबा के मुख में भगवान् बोल रहा है।" सभा समाप्त हुई।

सभा के बाद काफी देर तक यही एक दृश्य दिखाई दे रहा था। बदन पर फटे कपड़े, हाथ में लकड़ी लिये हुए एक-एक किसान आगे बढ़ता और दान-पत्र पर दस्तखत करके अपना सुदामा का तंदुल अर्पण करके चला जाता था। अब जमाना बदल गया था। अब उसके पास न धन था, न वैभव और न शान। फिर भी यज्ञ में आहुति अर्पण करने की अपनी

प्राचीन भारतीय परम्परा को वह भूला नहीं था । भारत के पुनरुत्थान के लिए जो भूदान-यज्ञ आरम्भ हुआ उसमे अपना हविर्भाग अर्पण कर असख्य किसान अपनी प्राचीन परम्परा निभा रहे थे। गरीवो के दान को विनोवाजी 'जिगर के टुकडे' कहते है । उनका विश्वास है कि आज जो अनेक गरीव अपने जिगर के टुकडे दान दे रहे है उन्ही दानो में से एक महान् क्रान्तिकारी शक्ति पैदा होगी ।

उत्तर प्रदेश की गत १० महीने की यात्रा मे प्रतिदिन एक हजार एकड के हिसाव मे ५ लाख वीघे (सवा तीन लाख एकड) का दान मिला था । इसका मतलव था, पाँच लाख मनुष्यो को सदा के लिए स्वाभिमान का नया जीवन जीने का अवसर प्राप्त हुआ था। और यह सारा हुआ केवल प्रेम की शक्ति से । सूई की नोक पर जितनी मिट्टी रक्खी जा सकती है उतनी मिट्टी भी देने के लिए दुर्योधन राजी नही था। इसीलिए महाभारत युद्ध हुआ । और आज हजारो किसान अपनी इच्छा से लाखो एकड जमीन का दान दे रहे थे—खून का एक वूंद वहाये वगैर, किसी के भी मन को दु ख पहुँचाये वगैर । सव मनुष्यो के हृदय मे छिपी हुई सत्प्रवृत्तियो को जगाकर ! इस जमाने के 'यक्ष-प्रश्न' का उत्तर ढूंढा गया था ।

उत्तर प्रदेश से विदा—विहार में प्रवेश

दुर्गावती (शाहावाद)

१४-९-१९५२

रात वीत रही थी। उत्तर प्रदेश की जनता सत को विदा करने के लिए भजन गा रही थी । दान-पत्रो को स्वीकार करने के लिए विनोवाजी को एक जगह रुकना पडा । दान-पत्र अर्पण करके वावा राघवदास भर्रायी हुई आवाज मे वोलने लगे—"अव थोडी ही देर वाद उत्तर प्रदेश भगवान् के इस महान् भक्त को विदा करेगा ।" उत्तर प्रदेशवालो की आंखो से वहने-वाली अश्रुधाराएँ एक-दूसरे से स्पर्धा करने लगी। हम भी उनके साथ हो गये !

लग रहा था, जैसे हम अपने ही घरवालो को छोडकर जा रहे हो। उत्तर प्रदेश की भूमि पर विनोवाजी के ये आखिरी कदम थे। . जिसे न कभी देखा था और न जिसके वारे मे कभी सुना था, उस गाधी-वावा के चेले को उत्तर प्रदेश की जनता ने फौरन पहचान लिया। इसी उत्तर प्रदेश की भूमि पर गगा-यमुना के तट पर असख्य ऋषियो ने तपस्या की थी, मानव को सदा के लिए शान्ति प्रदान करनेवाले तत्त्वज्ञान का आविर्भाव किया था। और अव उसी तपोभूमि पर अहिसा-धर्म का धर्म-चक्र-प्रवर्तन आरम्भ हुआ था। अहिसक क्रान्ति मे सक्रिय हाथ वँटानेवाली जनता को आखिरी प्रणाम करने का क्षण नजदीक आ रहा था। आगे वढनेवाला प्रत्येक कदम हमे विहार की तरफ ले जा रहा था। करण भाई ने अपना प्रिय भजन गाना आरम्भ कर दिया--

'गौतम ऋषि की नारी अहिल्या पत्थर से, तुम तार्यो राम।'

गाधी-निर्वाण के वाद देश मे जो निराशा का अन्धकार छा गया था उससे सारे कार्यकर्त्ता निस्तेज, प्राणहीन-से वन गये थे। निराशा, असहा-यता, पथभ्रष्टता के प्रवाह मे सारे अगतिक वनकर वह रहे थे। सव पत्थर के जैसे सवेदनाशून्य, चेतनाहीन वन रहे थे। ऐसे समय भूदान-यज्ञ ने नयी चेतना, नया प्राण, नयी स्फूर्ति प्रदान कर हमारा अहिल्योद्धार कर दिया था।

हम आगे वढ रहे थे। कर्मनाशा नदी सामने दिखाई देने लगी। नदी के उस पार विहार की भूमि थी। दोनो प्रदेशो की सीमारेखा पर एक भव्य द्वार वनाया गया था जिसके नीचे सजाया हुआ मच था। उत्तर प्रदेशवालो ने वावा को कुकुम-तिलक लगाकर आरती उतारी, चरणो पर पुष्पाञ्जलि अर्पण की और आखिरी प्रणाम किया। विदाई का क्षण आ पहुँचा था। मच पर वावा आँखे मूंदकर ध्यानस्थ वैठे थे। . इस समय उनके हृदय-सागर मे किन विचारो की लहरे उठ रही होगी? रात को आकर चुपचाप दान देकर चला जानेवाला वह रामचरन अन्धा, 'अपने गाँव से सत को रिक्तहस्त नही भेजना चाहिये' इस विचार से सुदामा के तन्दुल अर्पण करनेवाला वह तेली, 'मेरे शवरी

के बेर आपको लेने ही होंगे' यह कहकर अपने दान का स्वीकार करानेवाला वह गरीब किसान—क्या इन सबकी याद मे बाबा का दिल भर न आया होगा ? गाँव के सब भूमिहीनो को दान देनेवाले टिकारडी के निवासी और अपने गाँव की सारी जमीन दान देकर "सर्व भूमि गोपाल की" बनानेवाले मंगरीठ-निवासी तो बाबा के हृदय में स्थान पा ही चुके हैं।

क्या उन्हें उनकी भी याद आ रही थी ?. . इन सबकी स्मृति आनन्द की अनुभूति निर्माण कर रही होगी। 'लेकिन अभी भी हम दरिद्रनारायण की क्षुधा को शान्त नही कर पाये' इस विचार से शायद बाबा के दिल को वेदना की भी अनुभूति हो रही होगी। बाबा शान्त रहने की कोशिश कर रहे थे। फिर भी उनके दिल मे उत्तर प्रदेश के प्रति जो प्रेम था, वह आँखो मे आँसुओ के रूप में उमड पडा।

हृदय-पटल पर उत्तर प्रदेश की अगणित स्मृतियो को अंकित कर हमने विहार-भूमि मे प्रवेश किया।

'संत विनोबा अमर हो' विहार की जनता ने गर्जना की। इस गर्जना मे भविष्य की ओर संकेत था।

रास्ते मे दर्शनार्थी स्त्रियो के झुण्ड देखकर किसी ने कहा—'राम की भूमि से सीता की भूमि मे आये हैं, इसका लक्षण दिखाई दे रहा है।' यह सीता देवी का विदेह है। मैंने स्त्रियो के पास जाकर उनसे बातचीत करना शुरू किया। बूढी औरतो ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा—'बेटा, तुम बडी तपस्या कर रही हो। तुम्हारे दर्शन से हमे बडा भाग्य मिला।' मैं जानती थी कि आज उनके विश्वास के लिए मैं सर्वथा अपात्र थी, फिर भी शायद उन्ही के आशीर्वाद से मैं कभी पात्र बन सकूँगी। दिल ने भगवान् से प्रार्थना की कि 'इन माँ-बहनो की सेवा करने के लिए मुझमे बल दो।'

भगवान् बुद्ध की विहार-भूमि मे प्रवेश करते ही विनोबाजी ने भगवान् की ही प्रेरणा से नयी घोषणा की—"विहार की भूमि-समस्या को हल किये बगैर मैं विहार नही छोड़ूँगा।" काशी मे जो चिन्तन चला था उसीका यह परिणाम था। विनोबाजी ने सोचा कि हर प्रान्त मे चार-छ महीने तक घूमकर चार-छ लाख

एकड भूमि इकट्ठी करते हुए वे देश भर मे घूम लेगे तो सारे देश से कुछ लाख एकड जमीन तो इकट्ठी होगी ही और हवा भी तैयार हो जायगी। लेकिन इससे जमीन का मसला हल नही होगा। इसलिए किसी एक प्रान्त मे मसला हल करके दिखाया जाय तो सारे हिन्दुस्तान को राह मिल जायगी। इसी विचार से उन्होने भगवान् वुद्ध की तपस्या-भूमि विहार को अपना प्रयोग-क्षेत्र वना लिया। वे अक्सर कहते है कि "यदि एक त्रिकोण मे कोई सिद्धान्त सिद्ध हो चुका तो फिर हर त्रिकोण मे वह सिद्धान्त सिद्ध हुआ रहता है।" इसी तरह यदि विहार मे अहिसा, करुणा के मार्ग से भूमि-समस्या हल हुई तो फिर दुनिया के किसी भी प्रदेश मे अहिसा कारगर सावित हो जायगी। विहार को फिर से एक वार दुनिया को राह दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ था। विनोवाजी वोल रहे थे—"मै भगवान् वुद्ध के चरण-चिह्नो का अवलम्वन कर रहा हूँ। वे महान् थे और मै तुच्छ हूँ, फिर भी मै उनका वालक हूँ—उनके कधे पर खडा हूँ। इसीलिए उनके जमाने मे जो काम नही वन सकता था वह आज वन सकता है, क्योकि उनका अनुभव हमारे पीछे है।"

कम्युनिस्टो के पूछे हुए सवालो का जवाव देते हुए विनोवाजी ने कहा—"कम्युनिस्ट लोग क्रान्ति-क्रान्ति चिल्लाते है, लेकिन वे जानते नही कि क्रान्ति किस चिडिया का नाम है। उन्होने क्रान्ति का एक शास्त्र भी वनाया है और वे सोचते है कि मार्क्स की कितावो मे लिखी हुई वातो के अनुसार ही क्रान्ति होगी। लेकिन इस तरह अगर क्रान्ति को ढाँचे मे ढाला जाय तो क्रान्ति मिट जाती है। हिन्दुस्तान मे किस ढग से क्रान्ति होगी, यह उनसे वेहतर मै जानता हूँ। वेदो से लेकर गाधी तक सारे विचार घोलकर पी गया हूँ। और इसीलिए घोषित करता हूँ कि इस देश का अपना एक क्रान्ति का ढग है, अपना एक तत्त्वज्ञान है और अपना एक मिशन है।"

पर्दे के खिलाफ बगावत करो

भभुआ, सासाराम, कुदरा (शाहाबाद)
१५, १६, १७ सितम्बर, १९५२

एक अमेरिकन बहन 'पैट' तथा एक अमेरिकन भाई 'फिलिप' हमारे यात्री-दल मे शामिल हुए। इन दिनो तो प्रतिदिन १६-१७ मील चलना पडता था। चलने से पैट के पैरो मे बडे-बडे छाले पड गये, फिर भी वह किसी की बात न सुनते हुए पैदल ही चलती थी। उसकी शान्त, सौम्य, प्रसन्न मुद्रा देखकर ही खुशी मालम होती थी। हमने उसे कभी भी चिढते नही देखा और न शिकायत करते हुए ही। चाहे जितनी तकलीफ सहनी पड़े, वह हँसते-हँसते सह लेती। तामिलनाड भूदान-समिति के तरुण संयोजक जगन्नाथनजी की पत्नी कृष्णम्मा कुछ महीनो के लिए यात्रा मे रहकर भूदान के तत्र का अध्ययन करने आयी थी। जगन्नाथनजी उच्च जाति के है और कृष्णम्मा हरिजन, इसलिए उनके विवाह ने समाज की रूढि पर प्रहार ही किया था। कृष्णम्मा न सिर्फ शिक्षित है, बल्कि सुसस्कृत व सुस्वभाव भी।

यहाँ पर प्रतिदिन की सभा मे छोटे-से गाँव मे भी पन्द्रह हजार से अधिक भीड रहती थी। हमारा निवासस्थान भी किसी यात्रा का स्थान बन जाता था। दिन भर कमरे के हर एक दरवाजे और खिडकी मे मनुष्यो के झुण्ड के झुण्ड झाँकते रहते, जिससे सारी हवा बन्द हो जाती थी। सख्त गर्मी तो रहती ही थी। इसलिए और भी दम घुटने लग जाता। हम बार-बार लोगो से प्रार्थना करते—'जरा हट जाइये, हवा अन्दर आने दे।' फिर भी कोई हटने के लिए तैयार न होता। 'हम आपके जैसे ही मनुष्य है, फिर हमे क्या देख रहे है ?' इस तरह चाहे जितना समझाते, पर कोई मानता ही न था। वे तो एक ही जवाब देते—'हम आपका दर्शन कर रहे है।' भगवान् जाने, हमारे दर्शन से उन्हे क्या लाभ होता होगा।

दिनभर उठते-बैठते, काम करते, आराम करते, खाते समय इस बात को ध्यान मे रखना पडता कि कम से कम सौ आँखे अपने हर काम को

निरीक्षण कर रही है। नारायण कहता—'हम तो किसी प्राणि-सग्रहालय के विचित्र प्राणी बन गये है।'

अक्सर लोग विनोबाजी से कहते—"आपका सारा विचार हमे अच्छा लगता है, लेकिन इस कलियुग मे उस विचार को अपने जीवन मे कौन लायेगा ?" विनोबाजी उन लोगो को जवाब देते—"युग जैसी कोई चीज नही है। रामचन्द्र और कृष्ण के युग मे रावण और कस के जैसे राक्षस पैदा हुए। और इस कलियुग मे भी गाधी, रामकृष्ण जैसे कई सत्पुरुष पैदा हुए। इसका मतलब यही है कि हम खुद अपना युग बनानेवाले है, किसी के बने-बनाये युग मे हम नही रहते। जिस तरह मगल, गुरु आदि ग्रहो के इर्द-गिर्द अपना वातावरण रहता है, उसी तरह हमारे इर्द-गिर्द हमारा वातावरण रहता है, क्योकि हम चेतन है।" . . एक दफा युग की बात बताते समय उन्होने एक आश्चर्यजनक कहानी बतायी। उन्होने कहा—"एक दफा श्रावस्ती के कुछ लोगो ने भगवान् बुद्ध-को चातुर्मास्य के विश्राम के लिए श्रावस्ती बुलाया। जिन्होने उन्हे बुलाया उन्होने श्रावस्ती के जमीनवालो से भगवान के लिए कुटी बनाने के निमित्त जमीन मॉगी। जमीनवालो ने कहा—'जमीन पर मोहरे बिछाइये और वे ही मोहरे दे-देकर जमीन लीजिये।' आखिर उन लोगो को मोहरे बिछाकर ही जमीन लेनी पडी। जहाँ भगवान् बुद्ध के जमाने मे उस महापुरुष के लिए मोहरे बिछाकर जमीन लेनी पडी वहाँ मेरे जैसे तुच्छ व्यक्ति को उसी श्रावस्ती मे सौ एकड जमीन दान मे मिली। तो बताइये, यह कलियुग है या सत्ययुग ?"

आजकल भाषण के अन्त मे बिहारवासियो को अपील करते हुए विनोबाजी कहते थे—"गौतम और गाधी की आँखे अपने इस छोटे-से काम की ओर लगी हुई है। वे देख रहे है कि उनका बिहार इस अहिंसक क्रान्ति को कैसे सफल बनाता है ?"

कुदरा जाते समय एक छोटी-सी नदी पार करनी थी। घरनई (काम-चलाऊ नाव) और हाथी—इनमे से विनोबाजी ने घरनई को ही चुना।

उधर हमारे अमेरिकन भाई-वहन को जिन्दगी मे पहली वार हाथी पर वैठने का अवसर प्राप्त होने के कारण वे वहुत खुश थे। घरनई मे वावा, करण भाई और मै—तीन ही आदमी थे। मुझे अमरीका के एक 'गॅलप पोल' की याद आयी। 'एक नौका मे ट्रूमन, आइन्स्टीन और फिल्म-स्टार व्हीव्हीलन ली—तीनो वैठे है, नौका डूव रही है, किसी एक को ही वचाया जा सकता है तो किसे वचाया जाय ?' इस सवाल पर एक अखवार मे लोगो की राय मॉगी गयी। सवसे अधिक मत व्हीव्हीलन ली के पक्ष मे थे और सवसे कम ट्रूमन के। मैने जव वावा को यह किस्सा वताया तो उन्होने कहा—"भारत मे इस प्रकार मतदान नही होता।" घरनई से उतरे और एक पगडडी से चलना आरम्भ हुआ। अँधेरा, कीचड, मेढक और मच्छर इन सवसे मुलाकात करते-करते हम तग आ गये। कदम उठाते समय डर लगता—कही मेढक पैर से कुचल न जाय। मुंह खोलते ही १०-५ मच्छर भीतर चले ही जाते। थोडी देर वाद खेतो मे से जानेवाली पगडडी आयी। सवेरा हो गया था। चारो ओर धान के हरे-भरे खेत मन को प्रसन्न कर रहे थे। इस पैदल-यात्रा मे सृष्टि का जो विविध सौन्दर्य दिखाई देता था, वाहन से सफर करनेवाले को वह सौन्दर्य नसीव कहाँ ?

रास्ते मे नाव से दुर्गावती नदी पार करनी थी। काग्रेसी और समाजवादी दोनो ने फूलो से सजायी हुई दो नौकाएँ तैयार रखी थी। विनोवाजी को किस नौका मे वैठाया जाय, इस पर दोनो मे झगडा हुआ। विहार मे पक्षभेदो की जो तीव्रता है उसका धीरे-धीरे दर्शन होने लगा। नाविक ने विनोवाजी के चरण धो लिये, फिर उन्हे नौका मे वैठाया। उस समय वह दृश्य याद आया—

'सोई चरन केवट धोई लीन्हो, फिर प्रभु नाव चढाई।"

इस तरफ पर्दे का रिवाज अधिक होने के कारण यहां की महिलाएँ दिन मे वाहर नही निकलती, रात होते ही वे विनोवाजी के दर्शन के लिए आने लग जाती थी। रात को वारह वजे तक वे आती रहती, लेकिन वावा तो साढे आठ वजे ही सो जाते थे, इसलिए उन्हें दर्शन लिए विना ही

घर लौट जाना पड़ता। कभी-कभी जो बहने साढे आठ के पहले आती उनसे बाबा पूछते—"आप चोर हो या डाकू? इस प्रकार चोर-डाकुओ के समान रात को क्यो आती हो? दिन मे सूर्य-प्रकाश मे क्यो नही आती? यह पर्दे का रिवाज बिल्कुल खराब रिवाज है, पर्दा छोडकर निर्भयता से घूमो।" इस पर बहने कहती—"हम तो इस बात को चाहती है, लेकिन घर के पुरुष हमे बाहर नही निकलने देते।" यह सुनते ही बाबा ऊँची आवाज मे उन्हे आदेश देते थे—"तो फिर बगावत करो।"

सासाराम की विशाल सभा मे विनोबाजी ने बहुत ही क्रान्तिकारी विचार प्रकट किये—"राष्ट्रपति और बढई को समान वेतन मिलना चाहिये। समाज मे किसी मनुष्य को जो श्रेष्ठता प्राप्त होगी, वह विद्वत्ता और चारित्र्य के कारण ही। तनख्वाह कम-बेशी क्यो होनी चाहिये?"

श्रेष्ठ कला क्या है?

डेहरी, नासिरगंज, विक्रमगंज, नवानगर, इटाढ़ी

१८, १६, २०, २१, २२ सितम्बर, १६५२

इन दिनो चलते समय प्रकृति का विशेष सुन्दर स्वरूप दिखाई देता था। रास्ते के दोनो ओर ऊँचे-ऊँचे पेड होते। आसमान मे ऊषा की लालिमा के साथ बादलो का नृत्य चलता रहता है। कभी उस नृत्य की शोभा को निहारते, कभी धान के खेतो के चमकीले हरे रग को देखते, कभी धान पर गिरे जल-बिन्दुओ का पान करते और बीच मे कभी-कभी शोणभद्र का भव्य दर्शन करते हुए हमारी यात्रा चलती रही।

चलते-चलते बाबा ने पूछा—"तेरे पिताजी इतनी लम्बी योरप की यात्रा कर आये, फिर भी तूने अभी तक मुझे उनकी सफर के बारे मे कुछ भी नही कहा।" मैंने जब उनसे वह घटना बतायी जब कि मेरे पिताजी के एक योरपीय मित्र ने उनसे कहा—"आप पूरब के लोग प्राचीन तथा अनुभवी होते है। आप लोगो ने जीवन की गहनतम समस्याओ पर

चिन्तन किया है। [इसलिए अपने छोटे भाई-पश्चिम के देशा—को उस बारे मे शिक्षित करना आपका कर्तव्य है। भारत के तत्त्वज्ञान का सन्देश लेकर आनेवाले मिशनरियो की यहाँ सख्त जरूरत है।"
तो यह सुनकर बाबा ने कहा—"हाँ, यहाँ से मिशनरी जरूर जायेंगे। लेकिन कुछ समय तो बीतना ही चाहिये। भगवान बुद्ध के एक हजार साल बाद उनका तत्त्वज्ञान दुनिया में फैला। और यहाँ पर तो आज भगवान् बुद्ध का जन्म हो रहा है। कुछ समय बीतने दो, फिर यहाँ से अहिंसा का सदेश बाहर ले जानेवाले कई प्रचारक निकल पडेगे।"

फिर 'कला और जीवन' विषय पर चर्चा शुरू हुई। बाबा ने कहा—"कला के बारे में मेरा जो मत है वह 'खतरनाक' है। जो सबको प्रिय होगी और सबको प्रभावित कर सकेगी वही श्रेष्ठ कलाकृति है। कालिदास और टैगोर से वाल्मीकि अधिक उच्च श्रेणी का कवि था।"

मुझे बाबा की यह बात जँची नही। मैंने पूछा—"लेकिन अक्सर देखा गया है कि सर्वसाधारण उच्च कलाकृति का मूल्य नही पहचान सकता। Cultured taste को तो Cultivate करना ही होता है।"

बाबा—"प्रकृति, सस्कृति और विकृति इन तीनो की सुनिश्चित मर्यादाएँ पहचाननी होती है। अक्सर देखा गया है कि सस्कृति के नाम पर विकृति को लाया जाता है। जिसे 'बुर्ज्वा कला' कहते है वह इसी प्रकार की कला है। जो सबको प्रिय होगी वही सच्ची कला है।"

मैंने कहा—"इस बारे में मतभेद हो सकते है। मैं तो मानती हूँ कि जो बर्नार्ड शा की कलाकृतियो का रस ग्रहण कर सकता है वही सच्चे अर्थ मे सुसस्कृत है।"

बाबा ने कहा—"बर्नार्ड शा या कालिदास जैसे कलाकार तुम्हारे जैसे सुसस्कृत व्यक्तियो का मनोरजन कर सकते है, लेकिन वे किसी असस्कृत को सुसस्कृत नही बना सकते। इसके विपरीत वाल्मीकि या कालिदास जैसे कवि असस्कृत मनुष्य को भी सुसस्कृत बना देते है।" इस कथन से तो मै सहमत हो गयी, फिर भी मेरा मन इस बात को मजूर नही कर सका कि 'जो सबको प्रिय होगी वही श्रेष्ठ कला है।'

विक्रमगज की सभा मे पचीस हजार से अधिक जनसमुदाय था। लाउड स्पीकर काम नही कर रहा था, जिससे लोग भी शान्ति नही रख पा रहे थे। इसलिए विनोवाजी विल्कुल थोडे समय तक वोले। भापण समाप्त होने के वाद वे मच पर ही वैठकर 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर कर रहे थे। काफी समय वीत जाने पर भी सारा समुदाय उसी तरह वैठा हुआ था। मुझे लगा कि ये लोग विनोबाजी का भाषण सुनने नही आते, वल्कि दर्शन करने आते हैं। सिर्फ दर्शन से उन्हे क्या लाभ होता होगा, वे ही जाने। 'व्हीन्सेन्ट शीन' भी विनोवाजी की तरह कहता है कि 'भारतीय लोग केवल दर्शन से ही सतुष्ट हो जाते हैं। उनकी दर्शन-लालसा अजीव प्रकार की है, जो दुनिया के दूसरे देशो मे नही दिखाई देती। इसका कारण है भारतीय जन-मन मे गहरा पैठा हुआ वेदान्त का तत्त्व-ज्ञान। हर एक भारतीय को महात्मा मे अपनी ही आत्मा का परिशुद्ध स्वरूप दिखाई देता है।'

विनोबाजी सिर्फ 'गीता-प्रवचन' पर ही अपने हस्ताक्षर कर देते हैं।

आजकल 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर करने का कार्यक्रम काफी समय तक चलता रहा, क्योकि साहित्य को विक्री वहुत वढ रही थी। इसलिए दस्तखत लेनेवालो की एक लम्वी कतार वन जाती थी। आज जब वह काम चल रहा था तो कुछ लोग कतार छोडकर आगे आने की कोशिश कर रहे थे। विनोवाजी ने उनसे कहा—"इस तरह आगे वढने की कोशिश क्यो करते हो? 'मै सबसे आखिर मे रहूँगा' ऐसी वृत्ति रहेगी तभी 'सर्वोदय' होगा। और 'मुझे सवसे आगे वढना है, मेरी जरूरत सवसे पहले पूरी होनी चाहिये' ऐसी वृत्ति रहेगी तो सर्वनाश होगा।" 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर करके विनोवाजी स्वय किताव लेनेवालो के हाथ मे किताब दे देते है। इसे वे जन-परिचय का एक अग मानते है। अक्सर देखा गया है कि उनके हाथ से कितान लेते समय प्रत्येक आदमी उनके चरण छू लेता है। आज हस्ताक्षर करते समय वावा कह रहे थे—"अव 'गीता-प्रवचन' लिया है तो जमीन देनी पडेगी। अव गीता ली हे तो जरा काम-क्रोधादि पर विजय प्राप्त करना सीखो।"

अँधेरा होते ही घूंघट निकाले हुए स्त्रियो का झुण्ड हमारे निवास-स्थान पर आना आरम्भ हो जाता था। पैट और कृष्णम्मा हिन्दी नही जानती थी, इसलिए महिलाओ मे बातचीत करने का काम मुझ पर ही आ पडता। कभी-कभी उनमे से कोई एक वहन मुझसे कहती—"बेटा, ज्ञान हासिल करने के लिए तुम अपना घर-बार छोडकर मत के साथ घूम रही हो। बडी कठिन तपस्या है यह! तुम्हे शत-शत प्रणाम! तुम्हारे दर्शन से ही मै पवित्र हो गयी।" तो दूसरी वहन कहती—"इस तरह मारे-मारे घूमकर अपने कोमल शरीर को क्यो कष्ट दे रही हो? शादी कर लो, अकेली मत घूमो।" इन वहनो को बाबा के पास ले जाने पर वे कहने लगते—"क्या आप सब मुसलमान है? हिन्दू-धर्म मे तो पर्दे का रिवाज है ही नही। और अब तो कुछ मुसलमान भाई भी समझने लगे है कि 'पर्दा बुरी चीज है।'" मै इन वहनो से पैट की ओर इशारा करके कहती कि "वह गोरी लडकी सात समुद्र पार करके यहा आयी है और विनोबाजी के साथ घूम रही है, और आप इसी देश मे रहते हुए विनोबाजी के स्वय आपके घर आने पर भी उनका भाषण सुनने बाहर नही निकलती।"

एक दिन नगे पैर चलते हुए देखकर बाबा ने मुझसे उस बारे मे पूछा। मैने जवाब दिया—"जूते ने काटा है, इसलिए बिना जूते पहने चल रही हूँ।" इस पर बाबा ने कहा—"मुसाफिरी मे कैसा जूता पहनना चाहिये, इस विषय मे मै अब प्रोफेसर बन गया हूँ।" यहाँ आने के पहले मैने एक साल तक कालेज मे प्रोफेसर का काम किया था, इसलिए बाबा ने लेकर गौतम तक सभी 'प्रोफेसर' कहकर मेरा मजाक उडाते थे।

नवानगर जाते समय रास्ते मे बारिश होने के कारण हम लोग पूरे भीग गये। अभी बरसात समाप्त नही हुई थी इसलिए चलते समय कई दफा पानी मे भीगना पडता था। बारिश की रफ्तार बढते देख बाबा के चलने की रफ्तार भी बढ जाती थी। मने बाबा से कहा कि "आज की रफ्तार तो बहुत तेज है।" इस पर उन्होने जवाब दिया—'हाँ, इसी रफ्तार से ही तो क्रान्ति हो सकती है।" फिर रफ्तार कम करते हुए

मुस्कुराकर कहने लगे—"अच्छा, अब निर्मला को ज्यादा थकाना नही चाहिये।" फिर उन्होने अपने नागपुर-जेल के साथियों के बारे मे मुझसे पूछा और हर एक के गुणो का वर्णन किया। किसी के गुणो का ही ग्रहण करने की उनकी वृत्ति देख मन मे विचार आया, क्या कभी इन्हें किसी के दोष भी दिखाई देते होगे? पडाव पर पहुँचते ही बाबा ने हँसते हुए कहा—"मेरी आज की चलने की गति इतनी तेज थी कि उसके लिए 'परम-वीर-चक्र' ही दिया जाना चाहिये।" यह सुनकर सभी हँस पडे।

नवानगर मे दिन भर बारिश होती रही। सभा-स्थान पर सर्वत्र कीचड हो गया था, फिर भी पाँच हजार लोग खडे होकर भाषण सुन रहे थे। सुबह पहुँचते ही खबर मिली कि यहाँ पर कुछ भी जमीन नही मिली है। तो फिर यात्री-दल के प्रमुख रामदेव बाबू जमीन माँगने गये और सभा के समय तक कुछ जमीन लेकर आये। जनता तो दान देने के लिए उत्सुक है, परन्तु माँगनेवालो की ही कमी है—इस बात का हम प्रतिदिन अनुभव कर रहे हैं। विनोबाजी के भाषण के बाद किसान हमारे कार्यालय में आकर स्वय दान दे जाते।

चलते समय स्थान-स्थान पर कमलो तथा कुमुदो से भरे हुए तालाब नजर आते थे। सूर्योदय होते ही सारे कमल खिल जाते, किन्तु उधर कुमुदो के तालाब मे ठीक उल्टा दृश्य दिखाई देता था। आज तक साहित्य मे चन्द्रमा के किरणो से खिलनेवाले कुमुदो का वर्णन पढा था। लेकिन अब प्रत्यक्ष मे कुमुदो को देखकर लगा—कुमुद तो योगी के जैसे हैं। जब सारी दुनिया सो जाती है तब वे जागते रहते और जब दुनिया जागती है तब वे सो जाते है।

इटाडी जाते समय फिर से मूसलधार बारिश होने लगी। मैंने विनोद मे करण भाई से कहा—"जाडे के दिनो मे नैनीताल, गर्मी मे बुन्देलखड की यात्रा हुई और अब बरसात की यात्रा भी हो रही है। तो बताइये, अब हमारी भगवान् बुद्ध के जैसी तपस्या हुई या नही? बस, अब तो बोधगया मे जाकर उस पीपल के पेड के नीचे बैठना भर बाकी रह गया है।"

इटाडी में हमारा सामान लानेवाली जीप काफी देर मे आयी, इसलिए दिन भर गीले ही कपडे पहने रहना पडा। ऐसे समय बाबा की सारी व्यवस्था करते-करते हमारी महादेवी ताई को काफी परेशानी उठानी पडती है। उन्हे तो हर रोज नये स्थान पर नया घर बनाना और इसीलिए अपनी कल्पनाशक्ति का पूरा उपयोग करना पडता है। आज तो बाबा को बारिश के पानी से बचाने के लिए ताई ने एक टूटे-फूटे कमरे के चारो ओर छोटी सी खन्दक खोदी, पानी बाहर जाने की सुविधा कर ली और बीच के सुरक्षित स्थान मे एक चौकी पर बाबा का आसन तैयार कर दिया। यो तो ताई ने कई सालो से निष्ठा के साथ बाबा की सेवा की है, फिर भी इस बरसात मे उनकी मानो परीक्षा ही थी। खुद की तबियत खराब होने पर भी वे बाबा की सेवा मे किसी भी प्रकार की त्रुटि न रहने देती। बाबा केवल दही, दूध और कभी-कभी फलो का रस लेते है। वे कहते है—"दही तो मीठा ही होना चाहिये। कहा भी है—"दधि मधुर मधु मधुरम् ।"" यह बात सुनने मे तो बडी मधुर मालूम होती है, लेकिन बाबा को हर ३ घण्टे पर मीठा दही देने की जो व्यवस्था करनी पडती है उसे करते-करते ताई का तो कचूमर ही निकल ही जाता है। दही खट्टा न हो जाने की सतर्कता से ताई को रात मे भी बार-बार उठकर देखना पडता है।

प्रकाश को अन्धकार का डर नही होता

बक्सर

२३, २४ सितम्बर १९५२

बक्सर पौराणिक काल से मशहूर है। सुना है, विश्वामित्र ने यही पर यज्ञ किया था। रामचन्द्रजी विवाह के लिए विदेह जाते समय यही रुके और उन्होने यज्ञ मे बाधक राक्षसो का सहारकर यज्ञ की रक्षा की थी। ताडका राक्षसी का वध भी इसी स्थान पर हुआ था। इतिहास मे तो बक्सर की लडाई मशहूर ही है। उसी लडाई मे अग्रेजो ने मीरकासिम को

हराकर सारे विहार पर कब्जा कर लिया था। उस लडाई मे अग्रेजो के पास थोडी-सी ही फौज थी, लेकिन उनमे इन्तजाम करने की शक्ति तथा अनुशासन होने के कारण वे काशीनरेश की वडी भारी फौज पर विजय हासिल कर सके। वावा उसी लडाई का जिक्र करते हुए कहने लगे—"हम लोगो का सवसे वडा दुर्गुण यह है कि हममे इन्तजाम करने की शक्ति नही है। विहार मे मै प्रतिदिन इस वात का अनुभव कर रहा हूँ। इसी दुर्गुण के कारण हम वक्सर की लडाई हारे। अव भी जग जाइये और इस दुर्गुण को हटाने की कोशिश कीजिये।"

विहार प्रान्तीय काग्रेस के सभापति, जिनका अव स्वर्गवास हो गया है, पडित प्रजापति मिश्र भूदान के काम मे वहुत दिलचस्पी लेते थे। उन्होने वक्सर मे भूदान के काम के लिये काग्रेस कार्यकर्त्ताओ की सभा वुलायी। दिन भर वह सभा चलती रही। विहार मे अभी तक वहुत ही कम काम हुआ, और विनोवाजी ने भी कहा था—"विहार की भूमि-समस्या हल करने के लिए मै अपने प्राणो को भी अर्पण कर दूँगा।" सभा मे एक काग्रेसविरोधी कार्यकर्त्ता ने विनोवाजी से कहा—"इन काग्रेस-वालो ने वापू को धोखा दिया, अव आपको धोखा देगे। इसलिए इनसे दूर रहिये।" विनोवाजी ने जवाव दिया—"जो माँ अपने वच्चे को वुरा समझकर उसे दूर कर देती है वह माँ ही नही है। मुझे सव अच्छे और पवित्र ही दिखाई देते है। प्रकाश को अन्धकार का डर नही होता।"

विहार-यात्रा के वाद वगाल आने का निमत्रण देने के लिए वगाल के एक नेता विनोवाजी से मिलने आये। आज वे वगाल के कार्यक्रम के वारे मे वातचीत कर रहे थे। विनोवाजी ने उनसे कहा—"मेरी एक महीने की फीस एक लाख एकड है।" आजकल विनोवाजी हर प्रदेश की सारी भूमि का छठा अश माँगने लगे है। वे कहते है—"आज का राजा है दरिद्रनारायण और "षष्ठांशमुर्व्या इव रक्षितायाः" इस शास्त्र-वचन के अनुसार उस राजा को अपनी जमीन का छठा हिस्सा देना चाहिये।" सारे भारत से उन्होने पाँच करोड एकड जमीन की माँग की है, वह इसी तत्त्व पर आधारित है। अलावा इसके, देश मे पाँच करोड वेजमीन किसान

है, जिन्हे पाँच करोड एकड की जरूरत है। विनोबाजी चाहते है कि १९५७ तक हमे पाँच करोड एकड जमीन हासिल करनी है। बगाल के कार्यक्रम के बारे मे बातचीत चल रही थी। सामने विभक्त बगाल का नक्शा था। उसे देखकर नारायण ने कहा—'कितना विचित्र मालूम होता है यह बगाल।' यह सुनते ही बाबा बोले—"यह सब तो नक्शे पर है, वैसे तो जमीन सटी हुई ही है।" बाबा की दृष्टि मे राजनैतिक सत्ता का कोई महत्त्व ही नही है। मानव के हृदय को जगाकर नयी दुनिया बसाने की उनकी मनीषा है। इसलिए उनके मन की दुनिया मे नक्शे मे दिखाई देने-वाले भिन्न-भिन्न राजनैतिक सत्तावाले भिन्न-भिन्न देशो का कोई अस्तित्व ही नही है। उनके लिए सभी मानव सर्वत्र एक-से ही है। "क्रान्ति का आरम्भ तो घर से ही होता है।" इसलिए उन्होने भारत के भूमिहीन किसानो का मसला सबसे पहले लिया हो तो भी पाकिस्तान, चीन तथा दुनिया के सभी देशो के मानवो की समस्याएँ उन्हे अपनी जैसी ही मालूम होती है। सब देशो की दुखी जनता की पुकार उन्हे सुनाई देती है। राजनैतिक सीमाओ को पारकर, मानवमात्र के दिल को आकर्षित करने-वाले भगवान् बुद्ध के वे अनुयायी है।

आज हमने यहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका देखी। उसमे लिखा था—'विनोबा तो जमींदार तथा पूंजीपतियो का एजेन्ट है। इसलिए हम जनता को सचेत करना चाहते है कि वह विनोबा के मायावी जाल से बचकर रहे।' इस पर हमारे यात्री-दल के एक भाई ने कहा—'कम्युनिस्टो को डर लगता है कि विनोबा के रास्ते से भारत की भूमि-समस्या हल हो जाय तो फिर हिन्दुस्तान 'चीन' नहीं बन पायेगा।'

शाम की सभा मे भी कम्युनिस्टो ने बहुत सारे सवालो की एक लम्बी फेहरिस्त पेश की थी। विनोबाजी ने जो जवाब दिया उससे किसी भी बुद्धिमान आदमी की शकाओ का समाधान हो सकता है। विनोबाजी ने कहा—"कम्युनिस्ट पुस्तक-पूजक होते है। वेदवाक्य के समान वे मार्क्स की किताब को प्रमाण मानते है। इसलिए तेजी से बदलनेवाले इस जमाने मे वे पिछड गये है। इसी वृत्ति के कारण उनमे नव-विचार ग्रहण करने

की शक्ति नही रहती । मेरा काम साम्यवाद के विरोध में से पैदा नही हुआ है। मेरा तो अपना स्वतत्र कार्य है। उसका अधिष्ठान इसी भारतभूमि मे पैदा हुआ तत्त्वज्ञान है । इसीलिए मैंने कहा है कि यह तो "धर्म-चक्र-प्रवर्तन" का काम है। मै तो अहिंसा के मार्ग से सारी समाज-रचना में आमूल क्रान्ति करना चाहता हूँ । मै कम्युनिस्टो को अपना मित्र मानता हूँ। यद्यपि आज वे गुमराह है, फिर भी मेरा विश्वास है कि कल उन्हें मेरा विचार अवश्य जँच जायगा।"

यह तात्त्विक विवेचन समाप्त हुआ और विनोबाजी ने दूसरे किसी के पूछे हुए सवालो का कागज हाथ मे लिया। पहला सवाल था—'क्या आप भारतीय सस्कृति मे विश्वास करते है ?' विनोबाजी ने हँसते-हँसते कहा—"जरा मेरी शक्ल-सूरत देखो और निर्णय करो कि यह भारतीय सस्कृति है या विलायती सस्कृति ?" सुनकर सारी सभा हँसने लगी।

बाबा अक्सर कहते रहते है कि "मै तो अकेला घूमना चाहता हूँ" लेकिन जब उनकी बात कोई भी मजूर नही करता तो फिर कहने लग जाते है—"तो फिर हमारे यात्री-दल मे कम-से-कम व्यक्ति होने चाहिये।" आज उसी विषय मे उन्होंने कहा—"गौतम, मृदुला और निर्मला ये तीन सेक्रेटरी मेरे लिए काफी हैं। महादेवी और उसके साथ दो सेवक निजी काम के लिए बस हो जायँगे। निर्मला का विदेश-विभाग (Foreign Department) और महादेवी का स्वदेश-विभाग (Home Department) दोनों मिलाकर ६ व्यक्ति और मैं सातवाँ। 'We are seven' खूब जम गया!"

बक्सर के जेल मे सत्याग्रह के लिए बन्दी हुए कुछ समाजवादी भाई थ। विनोबाजी ने जेल मे जाकर उनसे मुलाकात की। भारत को कुछ पहले ही स्वतत्रता प्राप्त हो चुकी थी, इसलिए मुझे कभी भी जेल जाने का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ था। मेरी जिन्दगी मे जेल के भीतर प्रवेश करने का यह पहला ही मौका था। वहाँ का सारा उदास वातावरण, चोर कैदियो की शून्यता तथा निराशा से भरी हुई नजरें देखकर मुझे बेचैनी मालूम होने लगी। दिल चाहने लगा कि ऐसे समाज का निर्माण हो जिसमें जेल की आवश्यकता ही महसूस न हो। फिर दिल को इस

विचार मे कुछ तसल्ली हुई कि ऐसे ही समाज का निर्माण करने के काम मे हम हाथ बँटा रहे है। जेल के भीतर प्रवेश करते ही समाजवादी कैदियो ने नारा लगाया—"सत विनोबा अमर हो।" तथा विनोबाजी पर फूल बरसाये। उनके मुखिया ने अपने भाषण मे कहा—"आज हम जेल के बदियो जैसा भाग्यशाली दूसरा कोई नही होगा कि जेल मे भी वह प्रकाश आया है जो हिन्दुस्तान के जेल के बाहर के हिस्सो को प्रकाश दे रहा है। हम विनोबाजी के आज्ञानुसार काम करेगे। विनोबाजी ने भर्रायी हुई आवाज मे भाषण देते हुए कहा—"आप तो हमारी ही जमात है। इस बात का मुझे बहुत दुख होता है कि स्वराज्य के बाद भी लोगो को जेल आना पडा है।" उसके बाद कैदियो ने विनोबाजी के पास अपनी-अपनी शिकायते पेश की और विनोबाजी ने पास बैठे हुए जेल के अधिकारियो से शिकायते दूर करने के लिए कहा। फिर उन्होने पूरे जेल का निरीक्षण किया। आमरण कारावास की सजा भुगतनेवाले कैदियो की कोठरी मे जाकर उनसे बातचीत की। उन्होने सब कैदियो को बताया कि "शरीर तथा मन के स्वास्थ्य के लिए हर रोज कम-से-कम चार घण्टे का शरीरश्रम का काम करना चाहिये।" उन्होने सबको आदेश दिया कि "जेल को आश्रम बनाइये।" सब कैदियो ने अपने एक समय के भोजन का पैसा बचाकर भूदान-यज्ञ के काम मे अर्पण किया।

बहनो को भी ब्रह्मचर्यका अधिकार

डुमरांव, ब्रह्मपुर, बिहिया, धमार
२५, २६, २७, २८ सितम्बर, १९५२

महाराष्ट्र की प्रेमा बहन कटक की कल ही बाबा के नाम एक चिट्ठी आयी है जिसमे उन्होने लिखा है—"आपने जो कहा था कि 'कोई एक-आध तेजस्वी, ज्ञाननिष्ठ वैराग्यमूर्ति शकराचार्य जैसी स्त्री निकलनी चाहिये' उस मत का यहाँ के कुछ नेताओ ने घोर विरोध किया। वे लोग कहते

हैं—'स्त्री के लिए विवाह अत्यावश्यक है। स्त्री का धर्म है पातिव्रत्य।' यह पढकर महादेवी ताई ने नाराज होकर कहा—"इन पुरुषो को तो ऐसी ही अक्ल लगानी चाहिये।"

जब बाबा ने मुझसे पूछा—"इस विषय मे तुम्हारी क्या राय है?" तो मै क्या जवाब देती? बस, मैंने इतना ही कहा—"बापू ने जो आदेश दिया था, 'पहले पाने के योग्य बनो, तब इच्छा करो' (First deserve then desire) वह बात मुझे जँचती है और इस विषय मे भी मेरी वही राय है।"

बाबा—"हाँ, वह तो ठीक है। लेकिन आज यदि कोई यह विचार प्रकट करे कि 'स्त्रियो को ब्रह्मचर्य तथा सन्यास का हक है' तो फौरन लोग उसके खिलाफ बोलने लग जाते है। मै मानता हूँ कि आम स्त्रियो को इस अधिकार की जरूरत भी नही महसूस होगी। फिर भी आज के पुरुष-वर्ग का जो कहना है कि 'स्त्रियो को ब्रह्मचर्य का अधिकार ही नही होना चाहिये', वह अयोग्य है।" मैंने कहा—"ऐसे पुरुषो को तो कृति से ही चुप बैठाया जा सकता है। मेरा तो मत है कि बाबा की कल्पना के अनुसार कल कोई एक-आध 'शकराचार्य' पैदा हुई तो फिर 'स्त्रियो को सन्यास का हक नही है' कहनेवाले सारे पुरुष भी उसका शिष्यत्व स्वीकार करेंगे। जिस देश मे सघमित्रा निर्माण हो सकती है वहाँ शकराचार्या भी जरूर निर्माण होगी।"

विनोबाजी कई दफा समाज को शरीर की उपमा देते हुए कहते है—"जिस तरह शरीर के सारे अवयव मिल-जुलकर काम करते है, उसी तरह सब व्यक्तियो को मिल-जुलकर काम करना चाहिये, तभी समाज सुखी हो सकेगा।" मेरी बुद्धि को यह बात जँचती नही थी, इसलिए मैंने पूछा—"आप समाज को शरीर की उपमा देते है परन्तु वह तो ऑर्गानिक कॉन्सेप्शन ऑफ् सोसाइटी (Organic conception of Society) है और इसी मे से सर्वाधिकारशाही (Totalitarianism) पैदा हुई है, ऐसा कई दार्शनिक मानते है। फिर इस प्रकार के समाज में व्यक्ति की

स्वतन्त्रता कैसे टिकेगी ?" बाबा ने कहा—"मैं इस उपमा का प्रयोग करता हूँ, लेकिन बिल्कुल ही दूसरे अर्थ में। मेरी कल्पना के समाज में व्यक्ति को पूरी स्वतन्त्रता होगी। शरीर के भिन्न-भिन्न अवयवो के समान भिन्न-भिन्न व्यक्तियो के काम भी भिन्न-भिन्न होते है। आँख का काम आँख ही कर सकती है।" मैंने कहा—"लेकिन अगर समाज व्यक्ति को स्वतन्त्रता नही देता और अपनी व्यवस्था व्यक्ति पर लादता है तो फिर व्यक्ति नष्ट हो जायगा।"

बाबा—"कोई भी शरीर यह नही चाहेगा कि आँख फोड डाली जाय, क्योकि उसमे सारे शरीर को नुकसान पहुँचेगा।"

मैंने कहा—"लेकिन सर्वाधिकारशाही (Totalitarians) कहते है कि 'व्यक्ति को समाज की इच्छा के खिलाफ काम नही करना चाहिये', और यह विचार समझाने के लिए वे इस शरीर की उपमा का ही आश्रय लेते है।"

बाबा—"तो फिर कहना होगा कि वे इस उपमा का ठीक मतलब ही नही जानते। मैं इस बात को कभी नही मजूर कर सकता कि व्यक्ति और समाज इन दोनो के हित एक-दूसरे के खिलाफ है।"

मैंने पूछा—"पर क्या यदि समाज-व्यवस्था बिगड गयी हो तो फिर व्यक्ति को उस समाज के खिलाफ बगावत करने का हक नही है ? ईसा-मसीह तथा महात्मा गाधी ने समाज के खिलाफ बगावत ही तो की थी।"

बाबा—"बगावत करने का हक है या नही ?, यह सवाल ही नही पैदा हो सकता। यदि कोई व्यक्ति बगावत करना चाहे तो वह बगावत करेगा और उसे उसका फल भी भुगतना पडेगा। यदि उस व्यक्ति के विचार मे कुछ सत्य होगा तो वह टिकेगा, और नही होगा तो फिर नही टिकेगा।"

मैंने पूछा—"लेकिन आपकी कल्पना के अनुसार जो नयी समाज-व्यवस्था बनेगी क्या उसमे व्यक्ति को बगावत करने का हक (Right to revolt) रहेगा ?"

बाबा—"हक तो जरूर रहेगा, लेकिन हक होने का यह मतलब नही कि वह उसका कर्त्तव्य हो जाता है। किसी भी अधिकार का उपयोग

करते समय यह वात ध्यान मे रखनी चाहिये कि वह हमारा कर्त्तव्य है या नही। सोलह साल की उम्र के किसी भी लडके को अपने पिता मे अलग रहने का अधिकार है, लेकिन वह उस अधिकार का उपयोग करते समय अपने कर्त्तव्य का भी ख्याल रखता है।"

अद्वैत के सिद्धान्त पर आधारित विचार कहता है कि 'व्यक्तियो के हित या व्यक्ति और समाज के हित एक-दूसरे के खिलाफ नही हो सकते।' इसी विचार मे से सर्वोदय का तत्त्वज्ञान पैदा हुआ है। लेकिन अभी तक मेरे दिमाग मे यह वात घुस नही पाती। हो सकता है कि मेरी आज तक की शिक्षा ही इसका कारण हो। हमारी शिक्षा ने हमे सघर्ष का ही तत्त्वज्ञान सिखाया है।

नाश्ते का समय आया, इसलिए चर्चा यही पर समाप्त हुई। इस समय वावा शहद और पानी लेते है। हमारे यात्री-दल मे विभिन्न प्रान्तो के लोग होते है। हम सवकी ओर नजर डालते हुए वावा ने विनोद मे कहा—"प्रत्येक प्रान्त के लोग उनके चेहरे पर से पहचाने जा सकते है। दक्षिण के लोग काले होते है, लेकिन उनकी आँखे तेजस्वी होती है।" यह सुनते ही हम सव व्यकटेशय्या की ओर देखने लगे।

अभी भूदान वहुत ही कम मिल रहा था। आज की सभा मे इस वारे मे वोलते हुए विनोवाजी ने कहा—"मेरा स्वागत करना हो तो जमीन से कीजिये, फूलो-हारो से नही। यदि आपने जमीन न देते हुए फूल-माला और वन्दनवारो से मेरा स्वागत किया तो मुझे वहुत ही दु ख होगा। ये मालाएँ मुझे विषवत् प्रतीत होती है।" विनोवाजी की माँग तो छठे हिस्से की होती है। इसलिए 'यदि कोई अपनी हैसियत से वहुत ही कम जमीन देता है तो उसका स्वीकार नही करना चाहिये'—ऐसा उनका आदेश है। आज किसी ३०० एकड जमीन रखनेवाले ने सिर्फ ५ एकड जमीन दान दी थी। विनोवाजी ने सभा के सामने उसका दान-पत्र फाड डाला। वे कहने लगे—"मै भिक्षा माँगने नही आया हूँ, दीक्षा देने आया हूँ। दरिद्रनारायण का प्रतिनिधि वनकर उसका हक माँग रहा हूँ।"

डुमराँव के राजा ने करीव-करीव छठे हिस्से का दान-पत्र वावा को अर्पण

किया। वाबा ने उनसे कहा—"यह काम आपके भी हित मे है, यह ध्यान में रखते हुए अब आप दूसरो मे जमीन दिलाने का काम उठाइये।"

विहार मे चावल को 'प्रसाद' और खीर को 'तस्मै' कहा जाता है। मैंने कहा कि "यहाँ के मनुष्यो के नामो मे तो 'प्रसाद' भरा पडा ही है परन्तु प्रतिदिन के भोजन मे भी 'प्रमाद' है। हमे नाश्ते मे कभी-कभी हलुआ मिलता है। एक दफा ऐसा हलुआ मिला था, जिसमे पत्ते, मरी हुई चीटियाँ, ककड, लकडी सव कुछ था। हमारी पैट वहन कहने लगी—"इसमे क्या नही है यही सवाल हे।" गुड का हलुआ कुछ काला देखकर एक दफा वावा ने विनोद मे कहा—"क्या आप लोग गोवर खा रहे हो ?" यह सुनकर हँसते-हँसते हमारे पेट मे वल पड गया।

धमार मे दशहरे के दिन विनोवाजी ने 'सीमान्त' करने का आदेश दिया। उन्होने कहा—"भूमि का मसला हल करने की अपेक्षा उसे हल करने के अहिंसक तरीके को मै अधिक महत्त्व देता हूँ। आज तक मेरी यह श्रद्धा थी कि अहिसा के तरीके से दुनिया के सारे मसले हल हो सकते हैं। लेकिन उस श्रद्धा को वास्तविक जगत् मे भी अव आधार प्राप्त हुआ है। फिर भी आलस्य और वैमनस्य—इन दो दुर्गुणो के कारण विहार मे अभी तक ज्यादा काम नही हो रहा है।"

आज हमने रामलीला देखी। जहाँ-जहाँ तुलसी रामायण पहुँची, वहाँ-वहाँ हर साल दशहरे के दिन रामलीला होती है। प्रचार के किसी भी आधुनिक साधन का अवलम्ब किये विना, रामायण का प्रचार करने की तुलसीदास जी की इस पद्धति से आज के जननेताओ को सवक सीखना चाहिये। सैकडो वर्षों से वही राम-कथा चल रही है और जनता उसी उत्साह से हर साल रामलीला देखती हे। विनोवाजी कहते है—"रामायण और महाभारत ये दो ग्रन्थ भारतीय-जीवन के साथ एकरूप हो गये हे। हर भारतीय को लगता हे कि उन ग्रन्थो के जो पात्र हैं, वे अपने कुटुम्बियो से भी अधिक निकट हैं।" मुझ लगा कि इसी रामलीला का कुशलता से भूदान-यज्ञ के काम के लिए उपयोग किया जाय तो कितना अच्छा होगा।

सातवाँ भाग

भूदान : युग-धर्म है

आरा, अखगाँव, वागा

२६, ३० सितम्बर, १ अक्तूबर, १६५२

विहार-भूमि मे प्रवेश करते ही विनोवाजी की वाणी धर्म-चक्र को गति देने लग गयी थी। आरा की सभा मे विशाल जनसमुदाय के सामने वोलते हुए उन्होने वुद्ध के वशजो का जो आवाहन किया, उसे सुनकर तो मुर्दे म भी जान आ जायगी। उन्होने कहा—"भगवान् वुद्ध ने एक तत्कालीन समस्या—यज्ञ मे की जानेवाली पशु-हिंसा का विरोध—को लेकर दुनिया को अहिंसा का विचार समझाया। उस समस्या को हल करते-करते उन्होने अहिंसा द्वारा दुनिया को जीतने के विजय-धर्म का प्रवर्तन किया। केवल तत्त्व-विचार अव्यक्त, निर्गुण और निराकार होता है। इसलिए उसका प्रचार करना हो तो कोई प्रत्यक्ष कार्य करना चाहिये—जमाने की समस्या को हाथ मे लेकर उस मसले को हल करने मे वह विचार साकार होता है। उसी तरह मै भूमि के मसले को हल करने के काम के जरिये समाज को सर्वोदय-विचार दे रहा हूँ। मै मानता हूँ कि हिंसा के तरीके से क्रान्ति हो ही नही सकती। उससे क्रान्ति का आभास होता है, लेकिन फौरन प्रतिक्रान्ति आरम्भ हो जाती है। सच्ची क्रान्ति तो तव होती है जव साध्य और साधन दोनो मे क्रान्ति हो जाती है। यदि किसी दुर्जन से लडने मे मैने उसीका दकियानूसी शस्त्र—तलवार—हाथ मे लिया तो उस लडाई मे चाहे मेरी जीत भी हो जाय, तो भी उसकी आत्मा मुझमे प्रवेश करती है और जितना वह दुर्जन था उतना ही मै भी दुर्जन वन जाता हूँ। इसलिए उसमे उसीकी जीत होगी।. जहाँ साधन और साध्य दोनो मे क्रान्ति होती है वह सम्यक् क्रान्ति या 'सत्क्रान्ति' हो जाती है। भगवान् वुद्ध को इसी विहार-भूमि में ज्ञान प्राप्त हुआ था। महात्मा गाधी को इसी

भूमि—चम्पारन—अहिंसा देवी का साक्षात्कार हुआ था। •
बुद्ध के वशजो! आपके प्रदेश मे एक अहिंसक क्रान्ति होने जा रही है। क्या इस भाग्यवान भूमि के निवासी इस क्रान्ति को सफल नही बनायेगे?"

इन दिनो विनोबा-साहित्य की बिक्री बहुत हो रही थी जिसमे विचार-प्रचार तो हो ही रहा था। विनोबाजी कहते है कि "एक दफा मेरा विचार जनता के दिल को जँच जाय तो फिर जमीन की बारिश होनी शुरू हो जायगी।" आरा की सभा मे ५०० गीता-प्रवचन बिके। छोटी-छोटी किताबे तो प्रतिदिन सैकडो की तादाद मे बेची जाती थी। फिर भी जमीन कम मिल रही थी, इसलिए विनोबाजी कुछ चिन्तित भी हो उठते थे। उन्होने कार्यकर्त्ताओ से कहा—"मुझे सिर्फ आग ही लगानी होती तो मै सिर्फ सभाओ मे भाषण देकर विचार-प्रचार करता जाता, लेकिन मुझे तो आग बुझानी है, इसलिए भूदान की माँग कर रहा हूँ। परन्तु यदि इसी प्रकार जमीन कम मिलती गयी तो आग ही लग जायगी। मेरी प्रतिदिन की सभा मे हजारो लोग आते है, मेरा सदेश सुनते है। अब उनमे जमीन की भूख पैदा होगी। और यदि समय रहते ही उस भूख को नही मिटाया तो फिर क्या होगा? जरा सोचो तो!"

विनोबाजी कहते है—"भूदान-यज्ञ जमाने की माँग है, 'युग-धर्म' है। सारा काल-प्रवाह उस काम के अनुकूल है, जनता को आज उसकी जरूरत है।" इसी विषय पर बोलते हुए उन्होने अखगाँव की सभा मे कहा—"कालरूप भगवान् और विश्वरूप भगवान दोनो इस काम के लिए अनुकूल है।" बागा म हम एक मन्दिर मे ठहरे थे। मन्दिर के महन्तजी ने कुछ जमीन दान दी थी। "महन्तजी तो हमारे ही है, वे तो सन्यासी है"—यह कहकर विनोबाजी ने उन्हे अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

प्रतिदिन सृष्टि का जो नित्य-नूतन सौन्दर्य दिखाई देता है, उसे देखकर लगता है कि ये हरे-भरे खेत, पहाडियाँ, नदियाँ, झरने, कमलो से भरे तालाब देखने हो तो पैदल-यात्रा ही करनी होगी। प्रकृति का इतना नयन-मनोहर सौन्दर्य देखने के बजाय लोग क्यो रेलगाडी और हवाई जहाज से घूमते रहते है? यहाँ पर बाँस तथा कटहल के वृक्षो की शोभा

दिखाई देती थी। प्रतिदिन के सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य तो पागल बना देता था और अब पूर्णिमा पास आ रही थी। इसलिए चन्द्रमा के प्रकाश मे नहायी हुई सृष्टि को देखने के लिए रात को घूमने की इच्छा जगी। इस काम मे पैट की और मेरी अच्छी जोडी मिल जाती थी।

दिमाग मे हिमालय, दिल में अग्नि

पालीगंज, विक्रम, विहटा, मनेर (पटना)

२, ३, ४, ५ अक्तूबर, १९५२

नहर के किनारे एक छोटी-सी पगडंडी थी। पश्चिम क्षितिज पर चतुर्दशी का चन्द्र चमक रहा था। बाबा हाथ मे लालटेन लिए सबसे आगे चले जा रहे थे। आज केवल लाक्षणिक ही नही, बल्कि व्यावहारिक अर्थ मे भी वे हमारा पथ-प्रदर्शन कर रहे थे। थोडी ही देर बाद शोण-नदी का किनारा आया। पटना जिले मे प्रवेश करना था। हमारी नाव धीरे-धीरे आगे बढ रही थी। बाबा आकाश-दर्शन का पाठ पढाने लगे। दक्षिण दिशा मे अगस्ति का सितारा और उसका आश्रम बताया गया, फिर कृत्तिका नक्षत्र, जो ६ ऋषिपत्नियो से बना हुआ है। सातवी अरुधती तो सप्तर्षियो मे से वशिष्ठ के पास ही रहती है। धीरे-धीरे सितारो का अस्त होने लगा, प्राची के मुख पर लालिमा दिखाई देने लगी और देखते-देखते लाल-सुर्ख सूर्यबिम्ब ने क्षितिज पर पदार्पण किया। शोण के जल मे उसका प्रतिबिम्ब दिखाई पड रहा था जिससे मन यह नही तय कर पा रहा था कि किस सूर्यबिम्ब की ओर देखूं। नाव किनारे लगी और फिर शोण की रेत मे मे एक मील पैदल चलना पडा। शोण की रेत मे न गगा-यमुना के रेत-सी नजाकत है और न उतनी मुलामियत ही। मैंने बाबा से यह बात कही तो वे बोले—"हॉ, इसीलिए तो गगा-यमुना की रेत मे जिस तरह पॉव फँस जाते थे वैसे यहाँ नही फँसते।" बाबा के चरण-चिह्नो को रेत पर अंकित होते देख मुझे उन्हीका एक वाक्य याद आया—"मै भगवान् बुद्ध के चरण-चिह्नो का अवलम्ब कर रहा हूँ।"

आज गाधी-जयन्ती भी थी और कोजागरी पूर्णिमा भी। सभा का प्रारम्भ हुआ विहार के प्रसिद्ध कवि 'दिनकर' के गीत से —

"सुरम्य शान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो।
महान् क्रान्ति के लिए जमीन दो, जमीन दो ॥"

हम सोचते थे कि आज वावा खूब वोलेगे, लेकिन वावा ने गम्भीर स्वर मे कहा—"आज का दिन वोलने का नही, आत्मसशोधन करने का हे।"

प्रवचन के वाद कार्यकर्त्ताओ की सभा मे वोलते हुए उन्होने कहा—"मै तो सवकी परीक्षा लेने आया हूँ। अव देखना हे कि वापू का नाम लेनेवाले सव इस कसौटी पर कहाँ तक खरे उतरते हे।" एक भाई ने कहा—"सवमे पहले मत्री और वडे-वडे नेताओ से जमीन लीजिये।" इस पर विनोवाजी ने कहा—"क्रान्ति कभी वडो से नही होती। प्रभु रामचन्द्र ने वन्दरो से महान् काम करवाया, कृष्ण भगवान ने ग्वाल-वालो से। ईसा-मसीह और गाधी के प्रथम शिष्यो मे भी छोटे-छोटे लोग ही थे।"

रात वीत रही थी। पूर्णिमा के चन्द्रमा ने अपने किरणजाल मे सारी सृष्टि को वन्दी वना लिया था जिससे विहार की रमणीय सृष्टि अधिक रमणीय प्रतीत हो रही थी। रास्ते मे दोनो ओर सैकडो नर-नारी हाथ मे आरती और फूल-मालाएँ लिए खडे थे। पालीगज से विक्रम तक ९ मील के रास्ते भर यही दृश्य दिखाई दे रहा था। स्थान-स्थान पर फूल-मालाओ के साथ भूदान भी मिल रहा था। एक जगह आरती के थाल मे कपूर को जलते देख वावा ने कहा—"इसे हर्गिज नही जलाना चाहिये, क्योंकि यह तो विदेश से आता हे।"

हमारे यात्री-दल के एक समाजवादी भाई तिवारीजी ने कुछ सवाल पूछे। वावा कहने लगे—"समाजवादियो का कोई साफ विचार नही हे। उनमे से कुछ गाधीवादी हैं, कुछ मार्क्सवादी, कुछ दोनो और कुछ तो कुछ भी नही हैं। उनमे से कुछ लोग विकेन्द्रीकरण की वाते करते हे। इसका मतलव यह है कि जो मिले अहमदावाद मे केन्द्रित हुई हैं, उनको देहात-देहात मे विकेन्द्रित किया जाय। परन्तु अभी तक वे ग्रामोद्योग तक नही पहुँचे हैं। मेरा तो मत है कि जो उत्पादक काम हैं

वे हाथ से ही होने चाहिये। मै तो सब मिले वन्द करने के पक्ष मे हूँ। . . . लेकिन रेलगाडी, विमान आदि वाहनो को मै चाहता हूँ, क्योकि वह अलग चीज है। वे समयसाधक यत्र है, उत्पादक नही। मै तो अत्यन्त गतिमान विमान चाहता हूँ। आज के विमानो की गति मेरे लिए काफी नही है। अभी इस (मेरी ओर इशारा करके) लडकी का वाप योरप जाकर आया है। उसी तरह यह विमान मुझे भी योरप या अमरीका पहुँचायेगा। पर मै तो मगल और गुरु पर जाना चाहता हूँ।"

हमारा आज का निवास विक्रम के वेसिक ट्रेनिग स्कूल मे था। किसी सैनिक छावनी का अव वेसिक स्कूल मे रूपान्तर किया गया है। वावा ने कहा—"सैनिक छावनी का इससे वेहतर उपयोग क्या हो सकता है?" किसी भी रचनात्मक काम करनेवाली सस्थाओ मे जाने पर खादीधारी भाई-वहने दिखाई देने लगती है, सर्वत्र स्वच्छता, नियमितता, सूत कताई आदि देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। लगता है, जैसे अपने ही घर मे आये हो। विक्रम की शाम की सभा भी विराट् थी। एक विशाल आम्रवृक्ष की छाया मे अल्पना तथा कलश से सजाये हुए मच पर विनोवाजी वैठे थे। 'नयी तालीम' के वारे मे विनोवाजी ने कहा—"यह तालीम आज के समाज के सारे पुराने मूल्यो को नष्ट करके नये मूल्य स्थापित करनेवाली है। यह समता लानेवाली है।" आगे उन्होने कहा—"मेरा जो विचार है वह न मै चीन से लाया हूँ, न रूस से। वह तो इसी आर्य-भूमि का एक धर्म-विचार है। उपनिषदो ने कहा है 'जो मनुष्य अपने भाइयो को देने के वजाय नाहक अन्न का सग्रह करता है वह अपने वध का सग्रह करता हे।' इससे कठिन शाप कौन दे सकता है?"

पैट ने मुझसे कहा—"मै तुमसे हिन्दू तत्त्वज्ञान सीखना चाहती हूँ।" मैने जवाब दिया—"इस विषय मे मै भी तुम्हारे जितनी ही अज्ञानी हूँ।" . . यहाँ के लोगो को और खासकर विद्यार्थियो को पैट को देखकर वडा आश्चर्य मालूम होता था। विद्यार्थी हमेशा उससे सवाल पूछते रहते थे। खासकर साम्यवाद की ओर झुके विद्यार्थी उससे कहते—"भूदान से कोई मसला हल नही हो सकेगा।" और फिर वह बिल्कुल शान्ति से घण्टो

तक विद्यार्थियो को भूदान का तत्त्वज्ञान समझाती रहती। भारतीय विद्यार्थियो को यज्ञ, दान, अद्वैत आदि के बारे मे एक अमेरिकन बहन को समझाना पडता।

प्रभावतीजी—जयप्रकाशजी की पत्नी—की 'महिला-चरखा-समिति' का काम इस क्षेत्र मे काफी हुआ है। उस संस्था की बहनो ने यहाँ खूब प्रचार किया। इसलिए आजकल सभाओ मे बहनो की काफी तादाद दिखाई देती थी। यहाँ से पटना नजदीक होने के कारण मन्त्री, बड़े-बड़े अफसर, विधानसभा के सदस्य आदि की भी भीड लगी रहती। बिहार की प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी ने बिहार की विधानसभा के सदस्यो तथा संसद् के सदस्यो को अपने-अपने निर्वाचन-क्षेत्र मे भूदान का काम करने का आदेश दिया था। इसलिए जिस सदस्य के निर्वाचन-क्षेत्र मे विनोबाजी आनेवाले होते वे वहाँ पर पहले से कुछ जमीन प्राप्त करके स्वागत के लिए तैयार रहते।

किसी दिन बाबा ने कहा था—"यह मै नही घूम रहा हूँ, क्रान्ति घूम रही है।" आज मुझे बाबा के साथ चलते हुए देखकर यहाँ के एक नेता ने विनोद मे कहा—"आप तो बिल्कुल क्रान्ति के साथ-साथ कदम मिलाती हुई चलती है।" मैने हँसते हुए जवाब दिया—"जी नही, मै तो क्रान्ति के पीछे-पीछे चलती हूँ।"

१० मील से कम फासला हो तो हम सूर्योदय के पहले पडाव पर पहुँच जाते थे। फिर प्रातःकाल की सुहावनी वेला मे बाबा को बोलने की प्रेरणा हो जाती। मनेर पहुँचने पर ऐसी ही वेला मे वे बोलने लगे—"आर्य का मतलब है उदार और देनेवाला। इसलिए हम आर्यभूमि के निवासियो को उदार बनना चाहिये। जो कृपण होता है वह आर्य नही कहा जा सकता।

"कुछ लोग कहते है कि मिल के कपडो की अपेक्षा खादी महँगी पडती है। लेकिन मिल के कारण जितने लोग बेकार हो जाते है उनको खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी अगर मिलो पर सौंपी जाय तो मिल का कपडा महँगा हो जायगा। मिल की चीज सस्ती इसलिए होती है कि वहाँ पर लोगो को कम-से-कम मजदूरी दी जाती है। मतलब, लोगो को भूखो

मरना पडता है। खादी सवको काम देती और खिलाती है। क्या जहर सस्ता और अमृत महँगा है, इसलिए जहर खरीदियेगा ?

"हिमालय का स्थान छाती नही, दिमाग है। दिमाग ठडा हो, पर दिल गर्म होना चाहिये। वहाँ तो भावनाएँ होनी चाहिये। दिमाग मे हिमालय और हृदय मे अग्नि होनी चाहिये। लेकिन आजकल के नवजवानो की हालत ठीक इसमे उल्टी रहती है।"

देवो को संतुष्ट कीजिये

छपरा, मॉझी, एकमा, महाराजगज (सारन)

६, ७, ८, ९ अक्तूबर, १९५२

सारन जिला राष्ट्रपति राजेन्द्र वावू का जिला है। राजेन्द्र वावू ने पिछले साल दिल्ली मे विनोवाजी से कहा था—"विहार मे मेरी जो जमीन पडी है, उसमे से आप चाहे जितनी ले लीजिये।" अव उन्होने एक पत्रक निकालकर अपने जिले के निवासियो से अपील की थी—"विनोवाजी के भूदान-यज्ञ के काम मे हिस्सा लीजिये।" जयप्रकाशजी भी इसी जिले के है। इन दिनो वे स्वास्थ्य-लाभ के लिए पूना मे आराम कर रहे थे, लेकिन उनके साथी कहते थे—"उनका सारा दिल विहार मे भूदान के काम मे है। उनकी पूना से आनेवाली हर एक चिट्ठी याने भूदान की चिट्ठी रहती है।" विनोवाजी ने उन्हे लिखा था—"यद्यपि आपका शरीर वहाँ पर है, फिर भी आप मन से काफी काम कर रहे है।"

चलते समय एक कार्यकर्त्ता ने कहा—"जिस दिन जमीन नही मिलेगी, उस दिन क्या किया जाय ?" वावा ने जवाव दिया—"जिस दिन जमीन नही मिलती, उस दिन फाका करना चाहिये और जमीनवालो से प्रेम से कहना चाहिये कि यदि जमीन नही दी तो मै आज खाना नही खा सकूँगा।"

इस पर उस कार्यकर्त्ता ने कहा—"यह तो दवाव हुआ।" वावा ने ऊँचे स्वर मे जवाव दिया—"यह कौन सा दवाव है ? उनकी छाती पर

तो पिस्तोल तानी जानेवाली है। हम उन्हे इसमे बचाते है। यह तो प्रेम मे समझाने की बात है।"

मॉझी जाते समय रास्ते मे एक लम्बा गॉव आया। उस गॉव मे एक ही रास्ता था। रास्ते के दोनो ओर घर थे और घरो के पीछे खेत। बाबा ने कहा—"यह ग्राम-रचना अच्छी है। हर एक घर को खुली हवा मिलती है। सामने समाज और पीछे सृष्टि।" उस गॉव के पास गोतम ऋषि का मन्दिर था। वही पर उनका आश्रम था, ऐसा कहा जाता है।

मॉझी सरयू-नदी के किनारे बसा एक गॉव है। धरती माता ने जब सीता देवी को अपने पेट मे रख लिया तब सीता के विरह से व्याकुल राम ने इसी सरयू-नदी मे देहत्याग किया था। सरयू-नदी मे पानी का वेग अधिक है, परन्तु वह वेग नही, राम के प्रेम का उद्वेग है।

एक दिन हम एक जमीदार के यहॉ ठहरे थे। उनकी शिक्षित पत्नी ने अपना सारा घर कलात्मक ढग से सजाया था। उसे देखकर प्रसन्नता मालूम हुई, लेकिन दूसरे ही क्षण मन मे विचार आया—"जब कि लाखो लोग देश मे भूख से तडप रहे है, उस समय क्या कोई व्यक्ति अपना घर सजाने की ओर ध्यान दे सकता है? जनता की सारी आवश्यकताएँ पूरी किये बगैर व्यक्ति अपने छोटे से घरौदे मे सुख से नही रह सकता, यह कटु क्यो न हो, पर है सत्य। इस सत्य का भान होते ही आज के सुखी जीवन जीनेवाले व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन के मोहपाश तोड-कर समाज के जीवन मे अपने को लीन करना सीखेगे।"

महाराजगज के प्रवचन मे विनोबाजी ने कहा—"आज की समाज-रचना कोई रचना ही नही है, बल्कि विध्वस है।

"देव तो थोडी ही पूजा से सतुष्ट हो जाते है। उनको—'पत्र पुष्प फल तोयम्' ही बस है, लेकिन राक्षस तो सर्वस्व की ही मॉग करते है और सब कुछ बर्बाद कर देते है। इसलिए समय रहते देवो को सतुष्ट कीजिये, नही तो सर्वस्व का हरण करनेवाले राक्षस आयेगे।"

नैतिक अधिष्ठान भूदान की बुनियाद

सीवान, मीरगंज, बडहरिया, गोपालगंज, बरौली

१०, ११, १२, १३, १४ अक्तूबर, १९५२

मार्गक्रमण चल रहा था और साथ ही चर्चा भी। एक भाई ने कुछ सवाल पूछे। बाबा बोलने लगे—"स्वराज्य के पहले देश की जो हालत थी उससे आज की हालत भिन्न है। उस समय तो स्वराज्य हासिल करने के काम म ही देश की सारी शक्तियाँ केन्द्रित करनी पडी थी, क्योकि स्वराज्य हासिल किये बगैर हम कुछ भी नही कर सकते थे। लेकिन अब तो सरकार हमारी हो गयी है। सरकार मे जो लोग गये है वे हमारे मित्र है, शत्रु नही। इस समय स्वराज्य को मजबूत करना ही हमारा कर्त्तव्य है। जिससे स्वराज्य को धक्का पहुँच सकता हो, ऐसा कोई काम हमे नही करना चाहिये। कितनो को इस बात का ख्याल नही रहता। स्वराज्य मजबूत हो जाने याने २०-२५ साल के बाद हम आज से भिन्न बर्ताव कर सकते है, लेकिन आज 'अराजकता' से स्वराज्य को ही धोखा पहुँच सकता है। इसलिए यद्यपि मैने 'योजना आयोग' की सख्त आलोचना की, फिर भी सरकार के खिलाफ बगावत का झण्डा नही उठाया। जैसे-जैसे जनशक्ति जागरित होती जायगी, वैसे ही वैसे उसका प्रभाव सरकार पर पडेगा। हमारा मकसद तो है विकेन्द्रीकरण, लेकिन आज हमारा सिर्फ दो बातो का आग्रह है—(१) भूमि का बँटवारा और (२) ग्रामोद्योग। इन दोनो को मै 'सीता राम' कहता हूँ। यदि आज की सरकार इन दो बातो को मजूर करती हे तो आज के लिए इतना ही काफी है। उससे गरीब जनता को कुछ तो राहत मिलेगी और जनता मे विश्वास पैदा हो जायगा। उसके बाद आगे का काम सरल है।

"मेरे काम की ओर कई भिन्न-भिन्न पहलुओ से देखा जा सकता है। जिसे जो पहलू पसन्द आयेगा उसके अनुसार वह काम करेगा। लेकिन किसी एक पहलू को महत्त्व देते समय दूसरे पहलुओ को धक्का न पहुँचे, इस काम का जो नैतिक अधिष्ठान है उसे धक्का न पहुँचे—इस बात का

ख्याल रखना चाहिये। मुझे विश्वास है कि भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षो के लोग इस काम को करते समय मेरी ही पद्धति से काम करेंगे।

"राजनीति तो सबसे आखिर मे आती है। वह तो मन्दिर का शिखर है। बुनियाद के बिना मन्दिर नही खडा किया जा सकता। बुनियाद की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता, फिर भी हमारे कार्यकर्त्ताओ को चाहिये कि वे भूदान-यज्ञ का जो नैतिक अधिष्ठान है, उसीकी ओर ध्यान दे। नैतिक अधिष्ठान बुनियाद है, आर्थिक पहलू मन्दिर और राजनैतिक पहलू कलश है। भूदान-यज्ञ के काम से आज का सारा राज्य (State) ही बदल जायगा या हमारी विचारधारा का नया राज्य आयेगा। यदि दूसरी परिभाषा मे यही बात कहनी हो तो यह कहना होगा कि इस काम की बुनियाद (Basis) नैतिक है, योजना (Plan) आर्थिक और महत्त्व (Elevation) सामाजिक है।"

इस जिले मे चीनी-मिलें काफी है। मीरगज मे ऐसी ही एक चीनी-मिल है। उसका परिचय मीरगज के नजदीक आते ही हो गया। चीनी-मिल के कारण वातावरण मे बदबू फैली हुई थी। बाबा उसे बिल्कुल नही सह सकते थे। उन्होने कहा—"मुझे किसी भी जगल के पेड के नीचे रखिये, परन्तु ऐसे स्थान पर मत रखिये, यह तो शुद्ध नरक है।" इसके बाद एक भाई ने पारिजातक (हर्रसिगार) के फूलो की अजलि भेट की। उन फलो की ओर देख प्रसन्न हो वे कहने लगे—"कितने सुन्दर फूल है ये, पारिजातक तो स्वर्ग का वृक्ष है।"

बडहरिया की सभा मे केवल दो एकड का दान मिला। आज तक की यात्रा मे इतना कम दान कभी नही मिला था। आज के प्रवचन म बाबा ने यहाँ के कार्यकर्त्ताओ को फटकारते हुए कहा—"यहाँ के सारे कार्यकर्त्ता सुस्त और निस्तेज बन गये है। उनकी हालत बिल्कुल ही दयनीय हो गयी है।" इस फटकार से कार्यकर्त्ता कुछ जागरित हो गये और उन्होने गाँव-गाँव जाकर जमीन लाना आरम्भ किया। सारन जिले मे अच्छे कार्यकर्त्ता काफी तादाद मे है। स्वराज्य-आन्दोलन मे सैकडो

लोगो ने हिस्सा लिया था। लेकिन बाबा कहते है—"सब सत्ता के पीछे पडे है, इसलिए गरीबो का काम करने को किसी के पास समय नही है।"

बिहार के एक मत्री ने हाल ही मे भूदान-यज्ञ की आलोचना करते हुए कहा था—"विनोबा के काम से समाज मे खतरा पैदा हो रहा है।" गोपालगज की सभा मे इस विषय पर बोलते हुए विनोबाजी ने कहा—"जो कहते है कि मेरे काम से खतरा पैदा हो रहा है, वे जरा अपने मन को टटोले। यदि उन्होने तय किया हो कि जमीन नही देगे तो फिर मेरे काम से जरूर खतरा पैदा हो सकता है। इसलिए समाज मे खतरा पैदा करना, न करना उन्ही पर निर्भर है।"

आज कुछ कडी जबान कही गयी थी, इसलिए उसकी रिपोर्ट तैयारकर जब मैने बाबा को दिखायी कि कही उसका सतुलन तो नही खो गया। एक दिन एक रिपोर्ट मे साराश लिखते समय मैने एक महत्त्व का वाक्य छोड दिया था। उस समय बाबा ने मुझसे कहा—"वह एक ही वाक्य छूट जाने से उस रिपोर्ट का सतुलन बिगड गया है।" बाबा के विचारो की रिपोर्टिंग करना कितनी कठिन साधना है, इसका मुझे उस समय भान हुआ। बाबा हर एक शब्द को गौर से देखने लगे। जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा था मेरे दिल मे धडकन पैदा होने लगी। आखिर मे जब उन्होने सिर्फ दो-चार शब्दो मे हेर-फेर करके कहा—"ठीक है" तब मुझे लगा कि मै एम० ए० से बढकर कोई परीक्षा पास हो गयी हूँ। उन्होने मुझसे यह भी कहा—"जिन शब्दो मे मैने हेर-फेर कर दिया है वह क्यो किया, इसका अध्ययन करो।"

एक दिन हम रास्ते मे नाश्ते के लिए रुके तो एक स्थानीय कार्यकर्त्ता वहाँ की जनता के सामने जमीन देने के लिए भाषण देने लगा। बाबा ने उसे रोकते हुए कहा—"इस तरह हवा मे बाते क्या करते हो? हर एक व्यक्ति के पास जाकर उसे प्रेम से समझाओ। किसी को गोली मारनी हो तो क्या उसे इस प्रकार हवा मे मारी जाती है? उसके लिए उस आदमी के पास जाकर उसकी छाती पर पिस्तौल तानते हुए

गोली मारी जाती है। हमारा प्रेम का तरीका है, हिंसा का नही, लेकिन उसमें भी आदमी के नजदीक तो जाना ही पडता है।"

आजकल बाबा को कई दफा इस तरह बन्दूक की उपमा का प्रयोग करते देख हम लोगो को आश्चर्य होता था। वे भारत, बिहार और उसके हर जिले के नक्शो को सामने रखते और काफी देर तक उनकी ओर देखते रहते। वे सोचते रहते कि किस स्थान पर कितना काम हुआ और किस कार्यकर्त्ता को कहाँ भेजने से अधिक काम होगा। वे बिल्कुल किसी महायुद्ध के सेनापति की भाँति योजना बनाते रहते है। वे हमेशा कहते थे कि हिंसक युद्ध के अनुशासन, व्यवस्था, योजना, नियमितता आदि जो गुण है वे सभी गुण हम अहिंसक सैनिको को भी अपनाने चाहिये।

दीवाली के दिन निकट आ रहे थे। एक दिन आकाश मे एकादशी के चन्द्रमा की ओर देखते हुए बाबा ने यहाँ के लोगो से पूछा—"आप लोग दीवाली का उत्सव किस प्रकार मनाते है?" फिर वे दीवाली पर कुछ बोलने लगे—"बारिश के बाद शरद्-ऋतु मे आकाश स्वच्छ, निरभ्र और निर्मल होता है। वैसे गर्मी के दिनो मे भी आकाश मे कुछ रज कण तो रहते ही है। इसलिए निर्मल आकाश तो शरद्-ऋतु मे ही दिखाई देता है। इसीलिए शरद् की प्रथम पूर्णिमा (कोजागरी) और प्रथम अमावास्या (दीवाली) का उत्सव मनाया जाता है। अमावास्या के दिन निर्मल आकाश मे तारकाओ का उत्सव होता और हम धरती पर भी दीपावली के द्वारा वैसा ही दृश्य लाते है। ये उत्सव प्रकृति के साथ एकरूप होने के उत्सव है।"

फिर बाबा ने उनकी कल्पना के अनुसार जो नयी ग्राम-व्यवस्था निर्माण होगी, उस बारे मे कहा। किसी भाई ने पूछा—"यह सब सुनने मे तो बडा अच्छा मालूम होता है, परन्तु हमारी आदतें कैसे बदलेगी?" बाबा ने जवाब दिया—"आदते तो देह की होती है, इसलिए हृदय मे विचार प्रवेश करने के साथ ही आदते फौरन बदल जाती है। किसी गुफा मे दस हजार साल का पुराना अँधेरा हो और हम वहाँ छोटा सा दीप लिये जायँ तो उसी क्षण वह अँधेरा दूर हो जाता है। यह नही होगा कि

वह अँधेरा तो दस हजार साल का है, इसलिए उसे नष्ट होने मे कुछ समय लगे। इसी तरह दिल को विचार जँच जाय तो आदतो में फौरन परिवर्तन हो जाता है।"

मुझे तुलसीदासजी का वचन याद आया—'**बिगडी जनम अनेक की, सुधरत पल में आध।**' मानव-हृदय को नव-विचार जँच जाते ही उसमे परिवर्तन हो जाता है। यही श्रद्धा तो भूदान-यज्ञ का अधिष्ठान है।

फिर किसी के, गीता मे बताये गये 'स्थितप्रज्ञ' के लक्षणो के बारे मे, पूछे गये प्रश्न का उत्तर देते समय बाबा ने कहा—"गीता मे स्थितप्रज्ञ के जो लक्षण बताये गये है, वे ही उसके साधन भी है। स्थितप्रज्ञ के लिए जो बाते स्वाभाविक होती है, वे हमे प्रयत्न से सिद्ध करनी होती है। ठीक समय पर उगना सूरज के लिए स्वाभाविक है, परन्तु हम प्रयत्न से वह कर सकते है।"

बाबा अक्सर भूदान को 'कन्यादान' की उपमा देकर कहते है—"भूमि-हीन किसान को अपना दामाद समझकर उसे इज्जत के साथ जमीन तथा उसके साथ अन्य साधन भी देने चाहिये, जिसमे कि 'सालकृत कन्यादान' हो जायगा।" मुझे बाबा की यह बात कभी जँचती न थी। मुझे लगता है कि क्या कन्या कोई प्राणहीन वस्तु है, जिसका दान दिया जा सकता है? इसलिए मुझे लगता है कि कन्यादान शब्द के प्रयोग से स्त्री के स्वाभिमान को धक्का पहुँचता है। आज मैंने साहस करके बाबा से कहा—"आप जो कन्यादानवाली बात करते है वह हमे पसन्द नही आती।"

बाबा ने जवाब दिया—"हाँ, ठीक है। यह बात नापसन्द करने लायक ही है। लेकिन समाज मे यह रिवाज है और लोगो को उन्हीकी भाषा मे समझाने के लिए मैं उसका प्रयोग करता हूँ। लेकिन अब नही करूँगा। वैसे हमारे शास्त्रो मे तो 'कन्या-सम्प्रदान' शब्द का प्रयोग है। उसका मतलब दान जैसा नही है। फिर भी 'दान' वाली बात समाज मे चली, क्योकि आज भी माँ-बाप अपने लडको की शादी तय करते है। अगर

लडके-लडकियाँ खुद अपनी शादी तय करने लग जायँ तो वह बात ही अलग हो जाती है। वह तो 'स्वयवर' होगा। हाँ, वह भी अच्छा है।"

इसके बाद उन्होंने अपने एक प्रवचन मे इसी बात का जिक्र करते हुए कहा—"मेरे साथ जो कन्याएँ घूमती है उनमे से एक ने कहा—"हमे 'कन्यादान' शब्द पसन्द नहीं है।" इसलिए मैंने वादा किया कि अब मै उस शब्द का प्रयोग नही करूँगा। वैसे अलकारशास्त्र का यह नियम है कि उपमा का एक ही अग ग्रहण करना होता है। 'दूध हस के समान शुभ्र है' यह कहा तो इसका मतलब यह नहीं होगा कि हस भी दूध के समान पिया जा सकता है या दूध भी हस के समान उडता है। फिर भी चूँकि कन्याएँ इस शब्द को पसन्द नहीं करती, इसलिए मै उसे छोड दूँगा।"

चलते समय एक पछी की आवाज सुनाई दी। बाबा ने कहा—"वह कहता है, ठाकुर जी, ठाकुरजी।" रामदेव बाबू ने कहा—"इस तरफ इस पक्षी को 'खेलो जी' कहते है।" बाबा ने कहा—"अच्छा शब्द है। वह पछी कहता है, खेलो, लडो मत।" उसके बाद उन्होंने व्यकटेशय्या से पूछा कि "तामिल मे इस पछी का क्या नाम है?" और फिर केरल से आयी हुई राजम्मा से पूछा कि "मलयालम मे इसे क्या कहते है?" इसी तरह वे चलते समय राजम्मा से मलयालम और अय्या से तामिल सीखते है। लेकिन अक्सर दिखाई देता है कि उन भाषाओ के बारे मे गुरु से शिष्य अधिक जानता है।

रास्ते मे एक किसान ने बाबा के कहने पर अपनी दो बीघा जमीन मे से दो कट्ठे का दान दिया। उस पर बाबा ने कहा—"यह हिन्दुस्तान मे ही होता है। योरपवाले तो कहते है कि क्या कभी माँगने से जमीन मिलती है? जमीन तो मारकर ही मिलती है।" उसके बाद एक धनी आदमी को अपनी हैसियत से बहुत कम दान देते देखकर बाबा ने उनका दानपत्र वापस लौटाते हुए कहा—"मै नही चाहता कि आपकी बेइज्जती हो। मै तो चाहता हूँ कि सबकी इज्जत बढे। इसलिए मै आपका दानपत्र नहीं ले रहा हूँ। क्योकि यदि मै लेता तो आपकी बदनामी होती। लोग कहते कि इन्होंने बहुत कम दिया और विनोबाजी को ठगाया।

सीलिए देना हो तो विल्कुल सोच-विचारकर दीजिये और अपनी हैसियत के मुताविक दीजिये। कम देना हो तो मत दीजिये।"

वरौली के प्रवचन मे विनोवाजी ने उपनिपद् का एक सुन्दर मन्त्र वताया—

"श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया अदेयम्, श्रिया देयम्,
ह्रिया देयम्, भियो देयम्, सविदा देयम्।"

और इस मत्र से भूदान मे दान की पद्धति का मार्मिक विश्लेषण किया। सनातन मत्रो का नूतन क्रान्तिकारी अर्थ वताने की उनकी पद्धति वहुत ही आकर्षक मालूम होती है। एक दिन इसी वारे मे उन्होने विनोद मे कहा था—"मेरे शस्त्रागार मे इतने शस्त्र है कि उनके सामने कोई भी टिक नही सकता।" वेद-उपनिषदो का वह शस्त्रागार तो सव के लिये खुला ही है, लेकिन उन शस्त्रो का उपयोग करने की पात्रता ही हममे कहाँ है?

हमारा रास्ता अहिंसा का

गोरैया कोठी, वसन्तपुर, मसरख

१५, १६, १७ अक्तूबर, १९५२

आदर्श ग्राम-रचना के वारे मे वोलते हुए वावा ने कहा—"गाँव की सारी जमीन गाँव की मालिकी की हो जाने के वाद दो किस्म के प्रयोग हो सकते है, (१) या तो सव जमीन पर सामूहिक काश्त होगी या (२) हर परिवार को काश्त के लिए कुछ जमीन दी जायगी और वची हुई जमीन पर सव मिलकर काश्त करेगे। गॉव के सव वच्चो को एक-सी तालीम मिलेगी और यदि गॉववालो को जरूरत महसूस होगी तो वे गाँव के किसी वुद्धिमान लडके को वाहर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए गॉव की ओर से भेजेगे। गॉव मे एक 'सामूहिक विवाह-कोष' होगा और किसी भी लडके-लडकी की शादी परिवार की शादी नही होगी, वल्कि उसमे सभी गाँव-वाले हिस्सा लेगे।"

आजकल हम बहनो ने प्रतिदिन दोपहर को बहनो की एक अलग सभा बुलाना आरम्भ किया है। उसमे हम पर्दा छोडने तथा भूदान की बाते समझाते है। एक दिन एक बहन ने हमसे कहा--"जो बहने शिक्षित होती है वे शिक्षा के बल पर पर्दा छोडकर बाहर निकल सकती है। लेकिन हम किस बल पर बगावत करे?" जब मैंने बाबा से यह बात बतायी तो उन्होने कहा--"वे अपनी आत्मा के बल पर बगावत करे।" चलते समय मैंने आज बाबा से पूछा--"पूरब के लोग अपनी सस्कृति का गौरव महसूस तो करते है, लेकिन फिर भी पूरब के ही देशो मे स्त्रियो की हालत इतनी खराब क्यो है? लडका पैदा होने पर खुशी मनाई जाती है और लडकी पैदा होने पर दुख, ऐसा क्यो?"

बाबा--"यह जो खुशी और दुख मनाने की बात है, उसमे आर्थिक समस्या है। लडकी पराये घर जाती है और लडका बुढापे का सहारा होता है। फिर भी आप जितना समझती है उतनी खराब हालत नही है। हिन्दुस्तान के घरो मे तो स्त्रियो का ही राज्य रहता है। स्त्री को 'धन' कहा जाता है, लेकिन उसमे सम्पत्ति का अभिप्राय (Property Sense) नही है। वह तो गुणवाचक शब्द है। लडके को भी 'रत्न' कहा जाता है। शाकुन्तल मे शकुन्तला के विवाह के बारे मे जो कहा गया है--'आहुति अग्नि मे गिर गयी' वह तो केवल उपमा है। उसमे कवि की कल्पनाशक्ति है। वास्तव मे यहाँ पर कभी भी स्त्री का स्थान गौण नही था। भारत में वेदान्त का तत्त्वज्ञान माना जाता है, उसमे जन-मन मे यह भावना रूढ हो गयी है कि सब मे एक ही आत्मा समान रूप मे वास करती है। यहाँ की महिलाओ को वोट का हक प्राप्त करने के लिए कोई स्वतन्त्र आन्दोलन नही करना पडा। लेकिन इग्लैड की महिलाओ को उसके लिए बडा भारी आदोलन करना पडा। आज भी योरप के कई आगे बढे हुए देशो मे महिलाओ को वोट का हक नही है। इसलिए आप लोग जब पूरबवालो पर टीका करे तो यह मत भूलना कि पूरब मे आध्यात्मिक समानता की बात मानी गयी है।"

मैंने कहा--"आज तो हमारा तत्त्वज्ञान और जीवन इन दोनो मे उत्तर और दक्षिण ध्रुव के जैसा फासला है।"

वावा ने जवाव दिया—"हाँ, यह वात सच है।" फिर कुछ उद्वेग के साथ उन्होने कहा—"हमारा सारा तत्त्वज्ञान 'गौरीशकर' पर ही रह गया है। अभी तक वह नीचे नही उतरा। भारत के महापुरुप दूसरे देशो के महापुरुषो से वडे है, लेकिन यहाँ की सामान्य जनता दूसरे देशो की जनता जैसी है। यहाँ पर महापुरुप और आम लोग इन दोनो मे वहुत भयानक दूरी है।"

अभी-अभी सिक्किम का दौरा करके आये हुए एक ससद् के सदस्य वावा से कह रहे थे कि "वहाँ की हालत इतनी खराव है कि उससे देश को खतरा पैदा हो सकता है। वहाँ की सारी जमीन वडे लोगो के पास है और जनता वहुत गरीव है। कम्युनिस्ट लोग वहाँ पर जोरो से प्रचार कर रहे है और उन्हे उत्तर की सीमा के उस पार से भी सारी मदद मिलती रहती है। इस वात का जिक्र करते हुए वावा ने अपने प्रवचन मे कहा—"हमे इस वात का ख्याल रखना चाहिये कि खतरा मौजूद है, लेकिन हमारा रास्ता अहिसा और शान्ति का ही हो सकता है। हम फौज के वल पर इस खतरे का, आक्रमण का मुकावला नही कर सकते, वल्कि अपने देश मे अहिसक समाज-व्यवस्था स्थापित करने से ही उसका मुकावला कर सकेगे। वे भाई मुझसे कहने लगे कि 'आपका रास्ता दूसरा ही है। हम तो कही भी खतरा दीख पडे तो फौज के वल पर उसका प्रतीकार करने की वात सोचते है।' मैने उनसे कहा—'फौज के वल पर साम्यवाद का मुकावला नही किया जा सकता। यदि आप इस खतरे से वचना चाहते है तो आपको भूदान के जरिये भूमि-समस्या जल्द-से-जल्द हल करने के काम मे जुट जाना चाहिये। हम सव मिलकर काम करेगे तो भूदान-यज्ञ सफल होकर ही रहेगा।"

वसन्तपुर के कार्यकर्त्ताओ की सभा मे वोलते हुए विनोवाजी ने कहा—"मै जिले के हर एक थाने से कम-से-कम वीस कार्यकर्त्ताओ की माँग करता हूँ। सारे विहार से मुझे दस महीने के लिए दस हजार कार्यकर्त्ता चाहिये। जो प्रतिज्ञापूर्वक भूदान का काम करेगे तो फिर विहार का मसला हल होकर ही रहेगा। मेरी यह माँग कोई वहुत वडी माँग नही

है। रूस और चीन मे तो क्रान्ति के लिए हजारो लोग जिन्दगी भर काम करते रहे। उस हिसाब से तो मेरी माँग बहुत ही कम है, क्योकि भूदान का काम क्रान्ति का काम है। रूस मे जमीन का मसला हल करने के लिए तो सत्रह लाख लोगो को काट डाला गया। अगर हिन्दुस्तान में भी उसी तरह सिर काटने का कार्यक्रम उठाया गया तो उस काम के लिए कितने लोगो की जरूरत होगी, जरा हिसाब लगाइये। लेकिन हम तो प्रेम और शान्ति के तरीके से काम करना चाहते है। हम मानते है कि इसी तरीके से सबसे जल्दी और अच्छा काम होगा।"

कार्यकर्त्ताओ मे से एक भाई ने कहा—"हम भूदान का काम करना चाहते है, लेकिन जिला बोर्ड या विधान सभा का सदस्य बनने की हमारी महत्त्वाकाक्षा है।" बाबा बोल उठे—"उसे महत्त्वाकाक्षा मत कहो, क्षुद्राकाक्षा कहो। हमारे कार्यकर्त्ताओ को इसका भान कब होगा कि आज तो क्रान्ति के काम मे अपने को समर्पित कर देना ही हमारी सबसे बडी महत्त्वाकाक्षा हो सकती है।"

मसरख जाते समय पाली भाषा मे एम० ए० की डिग्री प्राप्त एक भाई ने बाबा से चर्चा की। दो-चार वाक्यो मे उनके पाली के ज्ञान की परीक्षा हो गयी। वे 'धम्मपद' के चार श्लोक भी ठीक से नही बोल सके। बाबा ने उनसे सिंहली भाषा का 'धम्मपद' भेजने के लिए कहा। फिर 'त्रिपिटक' शब्द कैसे बना, इस बारे मे बाबा ने कहा—"इसके पीछे जो मूल कल्पना है वह तीन वेदो की है। लेकिन सारा बौद्ध-साहित्य तीन सन्दूक मे रक्खा गया था जिसमे 'त्रिपिटक' शब्द का निर्माण हुआ।"

बाबा ने हर एक भाषा मे कौन-सा रामायण है, इसकी भी जानकारी करायी और फिर कहा—"किसी भी साहित्यिक की छोटी-सी ही क्यो न हो, पर एक-आध कलाकृति को भी जन-मन में स्थान प्राप्त हुआ तो वह साहित्यिक अमर हो जाता है। जैसे Grey's elegy, Goldsmith का Vicar of Wakefield और साने गुरुजी की 'श्यामची आई'। बकिमचन्द्र को भारत भूल जायगा, पर 'वन्दे मातरम' के द्वारा वे अमर रहेगे।"

रास्ते मे समाजवादी भाइयो ने नारो से स्वागत किया। बावा ने विनोद मे उनसे कहा—"नारो से क्या स्वागत करते हो? भूदान से करो!" ...फिर उन्होने बाबा को लाल-लाल सुदर फूल भेंट किये तो बाबा ने मुस्कराते हुए कहा—"लाल रग तो प्रीति का रग है।"

हमारे साथ जो समाजवादी भाई थे, उन्हे बाबा 'ए लाल टोपी' कहकर बुलाते थे। बाबा ने आज कहा—"मै तो इसे (लाल टोपी) मनोरजन का एक साधन मानता हूँ। मै तो चाहता हूँ कि हर कोई मनोरजन के लिए लाल, काली, सफेद सभी टोपियाँ पहने।" फिर उन्होने हँसते हुए तिवारीजी से पूछा—"अक्सर लाल टोपी देखकर बडे लोग डर जाते है, उसे लाल झडी (Red Signal) मानते है। तो क्या बडे लोगो के पास जाते समय लाल टोपी उतार दोगे?" तिवारीजी के 'हाँ' कहने पर बाबा ने कहा—"ठीक! यह अक्लमन्दी की बात है। नही तो टोपी भी ब्राह्मणो के जनेऊ जैसी बन जाती।"

शाम की प्रार्थना-सभा मे विनोबाजी का प्रवचन चल रहा था—"आज का ही दिन था वह, अक्तूबर की १७ तारीख थी। बारह साल हुए, इसी दिन बापू के आदेश के अनुसार मैने प्रथम सत्याग्रही के नाते व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ किया था। उसी समय मुझे भान हुआ कि मुझे इस देश का प्रतिनिधित्व करना होगा। और इसीलिए तब मे भारत की जनता के साथ एकरूप होने के लिए मैने भारत की सभी भाषाओ का अध्ययन करना शुरु किया। आज का दिन मेरे लिए एक महत्त्वपूर्ण दिन है।"

मुझे सुबह का दृश्य याद आया। हम मसरख जा रहे थे। सवेरा हो रहा था। अभी-अभी प्राची के गालो पर ललाई छा रही थी। ऊँचे-ऊँचे पेडो के बीच दिखाई देनेवाला आकाश आज गम्भीर दिखाई देता था, मानो कोई ऋषि ध्यानस्थ बैठा हो। धीरे-धीरे पूर्व-दिशा खुल रही थी। फिर एकाएक सूर्यबिम्ब क्षितिज से झाँकने लगा। उसे देखते ही मन मुग्ध हो गया। सूर्योदय याने नयनोत्सव ही है। भले ही यह रोज का दृश्य हो, पर उसमे नित्य-नूतनता, नित्य-आनन्द और नित्य-सौन्दर्य दिखाई देता

है। रोज सूर्योदय देखकर आँखो की तृप्ति होती है, परन्तु साथ मे आगामी कल के लिए फिर वही उत्सुकता।

गीता-प्रवचन और भूदान

देवरिया, अमनौर, परसा

१८, १९, २० अक्तूबर, १९५२

गीता-प्रवचन और भूदान के सम्बन्ध मे वोलते हुए विनोवाजी ने कहा--"अक्सर लोग मुझसे पूछते है कि 'आप गीता का प्रचार क्यो करते है, भूदान से उसका क्या सम्बन्ध है?' वैसे ऊपर से देखा जाय तो कोई सम्बन्ध नही दीखता, परन्तु भूदान का काम करते समय मोह छोडना पडता है। खुद का मोह छोडना है और जिससे जमीन माँगनी रहती है वह भी तो अपना ही रहता है, इसलिए वहाँ भी मोह आ जाता है। अर्जुन निडर वीर था। लेकिन उसने देखा कि शत्रु-सेना मे सव अपने ही रिश्तेदार है, तव वह मोहग्रस्त हो गया। उसने युद्ध से हटने की वात की। यदि शत्रु-सेना मे कोई दूसरे होते तो अर्जुन के वाण छूटने मे देरी न लगती। इसलिए उसके मोह का निराकरण कराकर उसके कर्त्तव्य का भान करा देने के लिए भगवान को 'गीता' कहनी पडी। इसी तरह हमारे मोह के निराकरण के लिए यह किताव अत्यन्त उपयोगी है। मोह छूट जाते ही भूदान का काम तेजी से शुरु होगा। आज तो सारे कार्यकर्त्ता मोहग्रस्त हो गये है।" हमने देखा कि कई कार्यकर्त्ता कहते है कि हम अपने इलाके मे दान नही माँग सकते इसलिए कही वाहर जाकर भूदान का काम करेगे।

दीपावली का दिन था। वावा के भाषण मे दीप की प्रशान्तता प्रकट हो रही थी। आज का भाषण हृदयस्पर्शी था। वावा ने कहा--"मुझे चार साल पहले की एक घटना याद आ रही है। दीपावली का ही दिन था। शाम का समय था। किसी गाँव के पास की झोपडी मे, मैने देखा, अन्धकार था। घर मे खाने की चीजे नही थी तो दिये जलाने

के लिए तेल कहाँ से आता ? वहाँ से १५ मील की दूरी पर एक शहर था। शहर जाते ही मैंने देखा, जिधर ही देखो उधर दीपक जल रहे थे। लोग खुशियाँ मना रहे थे। मेरी आँखो मे आँसू आ गये। क्या उन दोनो मे कोई रिश्ता नही है ? क्या उनमे भारतीयता का, मानवता का कोई सम्बन्ध नही है ? दीवाली मे हम आनन्द का आभास निर्माण करने की कोशिश करते है।" इस भाषण ने सबको अन्तर्मुख बना दिया।

सभा के बाद मैं बाबा के कमरे मे दिये रखने के लिए गयी। बाबा ने पूछा--"यह क्या कर रही हो ?" महादेवी ताई ने कहा--"निर्मला को घर की याद आयी होगी, इसलिए वह घर जैसी दीवाली मना रही है।" फिर बाबा ने कहा--"ठीक है।" मुझे डर लगा कि कही बाबा सारे दिये बुझाने के लिए तो नही कहते है। उनके कमरे में दीप रखते हुए यह मेरी पहली दीवाली थी

सब ओर दीपक का मन्द, मनोहर, शान्त प्रकाश फैला हुआ था। मैंने पैट से पूछा--"क्या तुमने इस तरह की दीवाली कभी देखी है ?" उसने जवाब दिया--"हमारे विद्यापीठ मे भारतीय विद्यार्थी इसी प्रकार की दीवाली मनाया करते थे।"

दीवाली का दिन था, इसलिए हर एक को घर की याद आ रही थी। हम जिस स्कूल मे ठहरे थे, वहाँ एक रेडियो भी था। मैंने नागपुर स्टेशन लगाया। इत्तफाक मे उस समय मेरी माँ ही बोल रही थी। नागपुर से 'दीपावली' पर उसका भाषण हो रहा था। इस बात की कल्पना मुझे स्वप्न मे भी न थी कि इस मगल दिन पर मेरी माँ की आवाज मैं सुनूंगी। यात्री-दल के सब लोग मुझे यह कहकर हँसाने लगे कि "अब तो तुम्हारी माँ तुम्हे मिल गयी।" उसके बाद मद्रास स्टेशन पर दक्षिण का सगीत सुनकर व्यकटेशय्या भी खुश हो गया था।

दूसरे दिन चलते समय विनोबाजी ने कहा--"मुझे भूदान प्राप्त करने की अपेक्षा ज्ञानदान करने मे ही अधिक खुशी होती है। एक जमाना

था, जब हजारो परिव्राजक सन्यासी देश भर सतत सचार करते हुए ज्ञान-प्रचार करते थे। आज भूदान के निमित्त मै आप लोगो को सर्वोदय का तत्त्वज्ञान समझा रहा हूँ। सर्वोदय मे यह मानना होता है कि मै सबसे आखिर का हूँ। मनुष्य की दो प्रकार की इच्छाएँ होती है—(१) चित्त-शुद्धि की इच्छा और (२) शरीर को आवश्यक चीज प्राप्त करने की इच्छा। चित्त-शुद्धि के बारे मे ऐसी इच्छा रखनी चाहिये कि हम सबसे आगे रहेगे। खुद का चित्त शुद्ध करने की ओर सर्वप्रथम ध्यान देना चाहिये और फिर दूसरो के चित्त-शुद्धि की भाषा बोलनी चाहिये। शरीर के लिए आवश्यक चीजो के बारे मे तो हमे यह कहना चाहिये कि सबसे पहले दूसरो की जरूरते पूरी हो और फिर मुझे मिले। पहले दूसरो को खाना मिलने दो और फिर मुझे। इसी वृत्ति से सर्वोदय आयेगा।"

हम लोगो ने प्रतिदिन दोपहर को महिलाओ की सभा बुलाने का कार्य-क्रम जो निश्चित किया था उसमे अब कुछ-कुछ सफलता प्राप्त हुई है। एक गाँव मे हम सभा मे इकट्ठी हुई सब महिलाओ को, एक जुलूस बनाकर आम सभा मे ले आये। उनमे से कुछ बहनो ने तो जिन्दगी मे पहली बार वह रास्ता देखा था। चुनाव के दिनो मे भी वे पर्देवाली गाडी मे बैठाकर मतदान के स्थान पर लायी गयी थी। सौ-सवा सौ गजगामिनियो का जुलूस लेकर जब हम सभा-स्थान पर पहुँची तो हमे लगा, जैसे हमने किसी बडी भारी लडाई मे फतह हासिल की हो। बहनो मे १० गीता-प्रवचन बिके। अच्छे-अच्छे घरानो की बहनो ने निरक्षर होने के कारण किताबे नही ली।

आज बाबा की आँखे दुख रही थी, मेरी तरफ देखकर उन्होने विनोद मे कहा—"परसो इसने मेरे कमरे मे दीपक जलाये थे, जिसके प्रकाश मे मेरी आज आँखे दुखने लगी।" मुझे याद आया कि कई दिन पहले वे महादेवी ताई से भी बोले थे—"तुम्हारे शहद से मुझे खाँसी हो गयी।" दीपक के साम्य प्रकाश से आँखे दुखना और शहद से खाँसी आना—ये बाते तो वैसी ही है, जैसे कोई राजकन्या सात गद्दियो के ऊपर सोती थी और

उन गद्दियो के नीचे पडा हुआ एक चना उमे गडता था । मेरी तो इच्छा हुई कि वह कहानी बावा से कह दूं ।

यहाँ गगा-किनारे का प्रदेश था, इसलिए कही भी ककड-पत्थरो का नाम दिखाई नही देता था। चारो तरफ मखमल जैसी मिट्टी बिछी हुई थी। मिट्टी का मृदु-शीतल स्पर्श इतना सुखद मालूम होता था कि जी चाहता—नगे पैर चले ।

क्रान्ति की बुनियाद–हृदय परिवर्तन

शीतलपुर, सोनपुर

२१, २२ अक्तूबर, १९५२

चलते समय मेरी पैट से बातचीत हो रही थी। पैट ने अपनी कहानी बतायी। वह एक गरीब किसान की लडकी है। उसने काम करते-करते शिक्षा प्राप्त की है। कॉलेज मे पढते समय उसने देखा, दुनिया मे चारो ओर अशाति तथा अधकार फैला हुआ है। उसको देखकर उसे मानव के भविष्य के बारे मे निराशा प्रतीत होने लगी । तब वह शाति तथा प्रकाश की खोज मे गाधीजी के भारत मे आयी । वह कह रही थी—"अब तो दुनिया को साम्यवाद या अहिसा इनमे से किसी एक को चुनना होगा।" मैने उससे कहा कि "अमरीका लौटने के बाद तुम अहिसा के विचार का प्रचार करो।" उसने कहा—"मुझे नही लगता कि अमरीका इस समय अहिसा को अपनायेगा। उसके लिए तो कुछ समय बीतना चाहिये।"

मैने कहा—"तुम्हे यश मिले या न मिले, तुम प्रचार करती रहो। कभी-न-कभी अमरीकावालो को अहिसा अपनानी ही होगी। जमाना ही उस ओर बढ रहा है।"

पैट ने कहा—"मुझे यश की कोई चिन्ता नही, मुझे तो काम करते रहने मे आनन्द महसूस होता है। मुझसे जो होगा वह तो मै करूँगी ही।" यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैने उसे कहा—"सच्चे अहिसक सैनिक की यही वृत्ति होनी चाहिये । आज तक गोरे लोगो ने जो

वर्ताव किया है उसके कारण पूरववालो के मन मे उनके प्रति अच्छे भाव नही है। तुम जैसे लोगो के इस तरह गाँव-गाँव घूमने से, तुम्हारी तपस्या से सारी गलतफहमियाँ दूर होगी। तुम्हारी तपस्या पूरव और पश्चिम को निकट लायेगी।"

उसने मुस्कराते हुए कहा—"लेकिन मेरे जैसे लोग बहुत ही कम है।"

विनोवाजी ने शीतलपुर के प्रवचन मे कहा—"व्यक्ति के हृदय-परिवर्तन और समाज की रचना मे परिवर्तन इन दोनो के आधार से क्रान्ति होगी। बैल काबू मे हो और रास्ता भी अच्छा हो तो गाडी मजे मे चलती रहती है।" इसमे व्यक्ति को जो बैल की उपमा दी गयी थी उससे मेरे मन मे कई शकाएँ पैदा हुई। बाद मे मैने बाबा के पास उन शकाओ को प्रकट किया तो वे कहने लगे—"बैल और रास्ते की जो उपमा है उससे मै यह सूचित करना चाहता हूँ कि मनुष्य चेतन है और समाज-रचना (रास्ते के सामान) जड है। यही उसका गूढार्थ है।"

मैने कहा—"हाँ, यह बात ठीक है। लेकिन व्यक्ति को बैल की उपमा देने मे सम्भव है कि आगे चलकर उसमे से व्यक्ति की स्वतत्रता पर प्रहार करनेवाले, विकृत रूप धारण करनेवाले सिद्धान्त निकाले जायँ। इसलिए हमे इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि कोई आगे आनेवाले हमारे सिद्धान्तो को Exploit न कर सके तथा उनके शुद्ध रूप को न बिगाड सके। दुनिया मे कई अच्छे विचारो को बाद मे विकृत रूप मिल गया है।"

बाबा—"हाँ, यह बात बिल्कुल सही है। हम तो मानते है कि क्रान्ति की बुनियाद ही हृदय-परिवर्तन है। व्यक्ति के हृदय मे परिवर्तन हो जाय तो फिर समाज के विचार मे क्रान्ति हो जाती है। और फिर उसके आधार पर सारी समाज-रचना मे परिवर्तन करना होगा। क्रान्ति की यही सही प्रक्रिया है। उस बैलवाली उपमा का यह मतलब नही कि पहले समाज-रचना मे परिवतन करना और फिर उन सिद्धान्तो को अमल मे लाने के लिए जबरदस्ती व्यक्ति को एक ढाँचे मे ढालना।" इससे मेरी शकाओ का समाधान हो गया।

सोनपुर जाते समय फिर से इसी विषय पर चर्चा चली। मैंने पूछा—"जमीन की मालकियत मिटाने का ही मतलब है, आर्थिक-क्षेत्र में अराजकता (Anarchism) निर्माण करना। तो क्या इसके लिए उसके साथ-साथ शासन को भी समाप्त कर राजनैतिक-क्षेत्र में अराजकता अमल में लाने की जरूरत है?"

विनोबाजी—"राज्य (State) को समाप्त होने में कुछ समय लगेगा। यदि सच्चा ग्रामराज्य स्थापित हो जाय तो उस गाँव के लिए राज्य खतम ही हो जायगा। फिर भी गाँवों के बीच के सम्बन्ध के नियंत्रण के लिए अभी काफी समय तक राज्य की जरूरत महसूस होगी।"

मैंने पूछा—"जमीन गाँव की मालकियत की है, यह कहने में सामूहिक मालकियत (Social ownership) की कल्पना है और जमीन परमेश्वर की है, यह कहने में जमीन की मालकियत की कल्पना को ही मिटा दिया जाता है। तो दोनों में से कौन-सी भाषा अधिक अच्छी है?"

बाबा—"यह दोनों तो एक ही चीज का भावात्मक (Positive) और अभावात्मक (Negative) रूप है।"

फिर थोडी देर तक मौन रखकर बाबा फिर से कहने लगे—"यह कहना अधिक उचित होगा कि 'जमीन परमेश्वर की है।' हाँ, उसके बाद एक ही सवाल रह जायगा और वह है—परमेश्वर ही है या नहीं?"

मैंने कहा—"मुझे भी उचित मालूम होता है कि 'जमीन परमेश्वर की है' यही कहा जाय। क्योंकि जैसा आपने अभी कहा था, 'जमीन गाँव की मालकियत की मानी जाय तो फिर किसी गाँव के पास अधिक जमीन या अच्छी जमीन हो तो उस गाँव के लोग अपेक्षाकृत धनी बन जायँगे और वे दूसरे गाँववालों को अपने गाँव में नहीं आने देंगे।' याने गाँव-गाँव में झगडे पैदा हो सकते हैं।"

फिर मैंने दूसरा सवाल पूछा—"नये विचार के अनुसार आज की समाज-रचना में परिवर्तन हो जाने के बाद भी नये-नये विचार पैदा होते ही रहेंगे। लेकिन आज नया विचार देनेवालों को या तो कत्ल ही किया जाता है या उनका सामाजिक बहिष्कार ही। जैसे महाराष्ट्र में 'आगरकर' का।"

बाबा—"दोनों बातें तो एक-सी ही हैं। बहिष्कार करना तो कत्ल करने जैसा ही भयानक है।"

मैंने पूछा—"तो क्या जहाँ पर ये दोनों ही नहीं रहेंगे ऐसी समाज-रचना की जा सकती है?"

बाबा—"हाँ, जरूर की जा सकती है।"

मैंने पूछा—"जिस तरह विज्ञान में यह बात मानी हुई रहती है कि आज के सिद्धान्त कल के प्रयोग से गलत साबित किये जा सकते हैं यानी आज जिसे हम सत्य कहते हैं वे भी अन्तिम सत्य नहीं, बल्कि प्रयोग ही हैं। कल कोई वैज्ञानिक अपने प्रयोगों में आज के 'सत्य' को गलत साबित करेगा। क्या समाज-रचना के बारे में भी ऐसी ही वृत्ति रखी जा सकती है?"

बाबा—"नहीं, समाज-धारणा के कुछ मूल तत्त्व ऐसे होते हैं, जो त्रिकाला-बाधित सत्य होते हैं। सत्य, प्रेम अहिंसा, न्याय आदि तत्त्व सदा के लिए सत्य हैं। इन मूल तत्त्वों को छोड़कर बाकी की बातों के बारे में वैज्ञानिक दृष्टि रखी जा सकती है। फिर भी कसौटी किये बगैर किसी भी नव-विचार को ग्रहण करना समाज के लिए उचित नहीं है।"

अभी गुजरात से नारायण देसाई की चिट्ठी आयी थी, जिसमें पूछा गया था—'ढोंगी साधुओं के प्रति समाज में जो श्रद्धा दिखाई देती है उसे देखकर दुःख होता है। जनता तो भूदान पर भी श्रद्धा रखती है। तो फिर उस श्रद्धा और इस श्रद्धा में क्या फर्क है?' जब मैंने बाबा से यह पूछा कि "ऐसा सवाल उठानेवालों को क्या जवाब दिया जा सकता है?" तो उन्होंने कहा—"सिर्फ साधु-वेष ही हो तो जनता के मन में उसके प्रति श्रद्धा पैदा होती है। फिर सच्चा साधु दिखाई देने पर कितनी श्रद्धा पैदा होगी। इस दृष्टि से उस सवाल की ओर देखना चाहिये।"

अभी-अभी बंगाल से आये एक भाई बाबा से कह रहे थे कि "आप कहते हैं कि सब लोग सज्जन हैं, लेकिन हमें तो चारों ओर दुर्जन ही दुर्जन दिखाई देते हैं।" यह सुनकर बाबा कुछ ऊँचे स्वर में बोले—"मैंने तो आज तक एक भी दुर्जन नहीं देखा। इस पर यदि आप कहें

'विनोबा तो संत है, इसलिए व्यवहार के मामले में वे मूर्ख हैं। व्यवहार के बारे मे तो साधारण मनुष्य विनोबा से अधिक अक्ल रखते है।' यदि आपका ऐसा ख्याल हो तो आप जरूर वैसा ख्याल रख सकते हैं। लेकिन जिसका यह ख्याल है कि सब लोग बुरे हैं वह हमारा काम कभी नही कर सकता।"

प्रश्न—"यदि आप इस काम को पूरा किये बगैर ही चले गये तो फिर क्या होगा ?"

बाबा—"फिर भगवान और किसी को इस काम की प्रेरणा देगा। प्रेरणा देनेवाला तो वही है। किसे मालूम था कि गांधीजी के बाद भगवान मुझे भूदान की प्रेरणा देगा। लेकिन भगवान तो हमेशा किसी न किसी को भेजता ही रहता है। उसे जो काम करना होता है उस काम को वह किसी-न-किसी के जरिये करवा ही लेता है।"

सोनपुर नगर गडक के किनारे बसा हुआ है। यहाँ हरिहरेश्वर का एक मन्दिर है। 'गज-ग्राह' की अपूर्व कथा का स्थान यही है। उन दोनो की लडाई मे कौन हारा ?—यह सवाल उठाया जाता है। इसलिए इस स्थान का नाम 'कोन-हारा' ही पड गया। यहाँ पर हर साल बडा भारी मेला लगता है, जिसमे हाथियो का बहुत बडा व्यापार चलता है। बिहार मे हाथी काफी तादाद मे नजर आते हैं। जमीदार लोग अपने दरवाजे पर हाथी बाँधने मे गौरव महसूस करते हैं।

बाबा ने कहा—"बौद्ध साहित्य मे हाथी की उपमा बार-बार आती है। इसका कारण अब समझ मे आ गया।"

गडक नदी का प्रवाह इतना अधिक है कि इसमे थोडी दूर तैरकर जाना मानो स्वर्ग जाना है।

सोनपुर के प्रवचन मे विनोबाजी ने राजनैतिक पक्षवालो से कहा—"शिव और शक्ति की एक साथ उपासना करो। केवल शक्ति की उपासना करने से हम राक्षस बन जायँगे और खुद का नाश कर लेगे, जिससे सारी दुनिया का नाश हो जायगा।"

आठवाँ भाग

पाटलिपुत्र के अंचल में

पटना

२३, २४, २५ अक्तूबर, १९५२

अरुणोदय का समय था। पूर्वक्षितिज पर ललाई लिये हुए सूर्यविम्ब चमक रहा था। गगा और गडक का सगम-स्थल था। हमारी नाव आगे वढ रही थी। दो महान् नदियाँ कितनी सरलता से एक-दूमरे मे मिली और दोनो ने एक-दूसरे मे अपना अस्तित्व विलीन कर दिया! कल सोन-पुर मे गडक का महान् विस्तार देखा और आज उसका गगा मे चुपचाप आत्म-समर्पण। परन्तु मनुष्य अपना क्षुद्र अहकार साथ लिये फिरता है!

दूर से पाटलिपुत्र नगर की शोभा दिखाई देने लगी। वह नगर गगा के एक किनारे चौदह मील तक फैला हुआ है। नाव पास आते ही जनता गर्जना करने लगी—"**घर-घर से आयी आवाज, सत विनोवा जिन्दा-वाद**", "**सत विनोबा करे पुकार, दो जमीन का छठा भाग।**" नाव किनारे लगते ही अट्टालिकाओ मे पुष्पवृष्टि होने लगी। पीले वस्त्र परिधान किये हुए वच्चो ने वेदमत्रो का गायन करके स्वागत किया। वावा वोलने लगे—"सुवर्ण के आवरण से सत्य का पात्र ढाँका गया हे। मैं आपको सुवर्ण के मोह से मुक्त करने के लिए आया हूँ।"

तीव्र गति मे सत को वढते देखकर लगा कि जैसे मम्राट् अशोक की नगरी मे फिर से एक वार भगवान् वुद्ध का प्रवेश हो रहा हे। आँखो के सामने विनोवा न रहकर स्वय तथागत दिखाई देने लगे। उनके साथ चलने मे अतीव आनन्द की अनुभूति होने लगी। शायद तथागत के प्रथम शिष्यो को इसी प्रकार के आनन्द की अनुभूति हुई हो। किमी कवि ने कहा हे—"इस एकाकी पथिक के वढते हुए चरणो के साथ धर्म-चक्र घूमने लगा।" कवि की वाणी वहुत कुछ कह सकी, फिर भी

उस एकाकी पथिक के चरण-चिह्नो का अवलम्बन करते हुए चलने मे जो दिव्य अनुभूति प्रतीत होती है वह तो शब्दातीत हे। उस दैवी अनुभति को व्यक्त करने की शक्ति मनुष्य की भाषा मे कहाँ ?

रास्ते मे स्थान-स्थान पर विनोवाजी का एक रेखाचित्र दिखाई दे रहा था। वे अक्सर कहते हे—"स्वय बापू ही मेरे इस शरीर के जरिये काम कर रहे हे।" आज मैने देखा कि उस चित्र मे कलाकार की कूंची द्वारा भी यही भाव व्यक्त हो रहा था।

शहर के व्यस्त जीवन का आरम्भ हुआ। मवसे पहले चर्च के फादर (Father) मिलने आये। वावा ने उनसे मूल हिब्रू 'वाइवल' माँगा। जाते समय उन्होने भूदान के काम के लिए मगल-कामना प्रकट की। फिर दिन भर शहर के भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे काम करनेवाले मिलते रहे। जमीदारो के प्रतिनिधियो ने अपनी मुसीवतो का वर्णन करते हुए कहा—"हमारी जमीन तो जानेवाली ही है, लेकिन वदलती हुई हालत के साथ अपने जीवन को वना लेने मे कुछ समय चला जाता है। हम आपसे प्रार्थना करते है कि सरकार से आप यह कहे कि वह जमीन के लिए कोई कानून न वनाये।"

विनोवा—"यदि आप उदार दिल से दान देगे तो मरकार को फिर कानून वनाने की जरूरत ही नही पडेगी। जमाने की मॉग की ओर ध्यान दीजिये। भूदान देने से आपका ही कल्याण होगा।"

दोपहर मे साहित्यिक तथा कलाकारो के वीच विनोवाजी का जो भाषण हुआ वह किसी सन्यासी का भाषण नही था, अपितु किसी कलाकार का भाषण जैसा लगता था। जिन्होने भावव्यक्तता को ही अपने जीवन का लक्ष्य वना लिया है ऐसे कलाकार भी शायद जिस चीज को व्यक्त नही कर सकते, उसको आज विनोवाजी ने व्यक्त किया। "मै कोई साहित्यिक नही हूँ"—यह वे कहते जाते थे, फिर भी साहित्यिक के अन्तस्तल का एक-एक पटल वडी कोमलता के साथ खोलते हुए अन्तरतम मे निहित सूक्ष्म और गूढ भावो को व्यक्त कर रहे थे।

विनोवाजी साहित्यिको को 'देवर्षि' कहकर वोलने लगे—"दुनिया जिन्हे श्रेष्ठ पुरुष कहती है वे तो महान् होते ही है, लेकिन दुनिया को जिनकी

पहचान न हुई हो, वे उनसे भी महान् होते है। मानव की आँखे सूर्य-किरण के सात रग ही देख सकती है, लेकिन विज्ञान कहता है कि सूर्य-किरण मे मानव को न दिखाई देनेवाले रग भी होते है, जो अधिक गुणकारी होते है। उसी तरह दुनिया मे कुछ ऐसे महापुरुष होते है जिनको दुनिया नही जानती, लेकिन वे अव्यक्त रूप मे हमे प्रेरणा देते रहते है।

"कलाकार किसी के आज्ञानुसार कला का निर्माण नही कर सकता। वह इसलिए लिखता है कि उससे लिखे बगैर रहा नही जाता। इसलिए हम आपसे यह तो नही कहते कि 'भूदान पर कुछ लिखो।' लेकिन हम इतना ही कहना चाहते है कि 'यह एक ऐसा विषय है जो आपको प्रेरणा दे सकता है। ऐसे कई प्रसग हुए है जब गरीबो ने अपने जिगर के टुकडो का दान दिया है। अधो ने भी दान दिया है।" आखिर मे उन्होने कहा—"जैसे देवो मे विविधता, विचित्रता होती है उसी तरह साहित्यिको मे भी होती है। किसी देव को गरुड पसन्द है तो किसी देव को चूहा। आप साहित्यिको का देव गणपति तो चूहे पर ही बैठता है। मै आपको अपने साथ घूमने का निमत्रण देता हूँ।"

भाषण सुनने के बाद बिहार के प्रसिद्ध साहित्यिक बेनीपुरीजी ने मुझसे कहा—"मै कुछ दिन विनोबाजी के साथ घूमना चाहता हूँ।" जब मैने विनोबाजी से यह बात बतायी तो वे मुस्कराते हुए कहने लगे—"हाँ वे चूहे पर बैठकर आयेगे।"

सायकालीन प्रार्थना मे विनोबाजी ने 'सम्पत्ति-दान-यज्ञ' की घोषणा की। वह एक ऐसा तरीका था जिसमे सुवर्ण के मोह मे मुक्त होकर सत्य की झाँकी प्राप्त हो सकती थी।

विशाल जनसमुदाय को देखकर हम सब किसी प्राचीन धर्मप्रचारक की निष्ठा तथा किसी आधुनिक क्रातिकारी का प्रचार-तत्र इन दोनो को अपनाकर विनोबा-साहित्य का प्रचार करने लग जाते है। "गीता-प्रवचन लीजिये।" चिल्लाते हुए हम मानो दीन-दुनिया को ही भूल जाते है। कौन सबसे अधिक किताबे बेचता है, इस पर होड-सी लगी रहती है। उस समय दिल गाता रहता है—

"वीरो की यह वाट है भाई कायर का नही काम।
सर पर बाँध कफन जो निकले बिन सोचे परिणाम।।"

पटने मे तीन दिन रहना था, इसलिए दूसरे दिन **'उठ चलना परभात रे'** तो नही था, फिर भी वावा ठीक चार बजे घूमने निकले। इसलिए आज भी आराम नसीव नही था। लेकिन चलते समय जो ज्ञान-चर्चा चली उसे सुनकर सुबह की नीद खोने का विल्कुल दुख नही हुआ। महाराष्ट्र से एक भाई आये हुए थे जिनसे "क्रान्तिकारी कानून" की वात सुनकर वावा वोल उठे---"क्या कभी क्रान्ति कानून के जरिये हो सकती है?"

उन्होने आगे चलकर कहा---"क्या भूदान का काम याने कोई सिर्फ दस-पन्द्रह दिन तक खेला जानेवाला क्रिकेट का खेल है? इस काम के लिए तो जीवन की आहुति देनी पडेगी।" इसके वाद नेपाल मे आये हुए कर्मठ रचनात्मक कार्यकर्त्ता 'तुलसी मेहेरजी' ने वावा को नेपाल आने का निमत्रण दिया। वावा ने उनसे कहा---"पहले आप लोग कुछ काम करके कुछ जमीन इकट्ठी कर रखिये और वहाँ की सरकार की सहानुभूति भी हासिल कर लीजिये। नही तो सरकार यह समझ वैठेगी कि 'यह शख्स अशान्ति ही पैदा करने आया है।' सवको यह मालूम हो जाना चाहिये कि यह शख्स अशान्ति की आग को वुझाने आया है और भूदान का काम सवके कल्याण का काम है।"

नेपाल जाने की कल्पना मुझे वहुत ही आकर्पक मालूम हुई। दिल सोचने लगा कि वावा को विहार का मसला हल करने के वाद भारत के अन्य प्रान्तो मे जाने की अपेक्षा नेपाल मे जाना चाहिये। अगर कही धर्म-चक्र उत्तर दिशा मे घूमने लगे तो उससे इतनी प्रचण्ड गति प्राप्त होगी जिससे सारी दुनिया को झकझोर देनेवाली महान् शक्ति पैदा होगी। नेपाल, फिर तिव्वत, फिर चीन और फिर उसके वाद? मन तो गगन-सचार करने लगा, लेकिन पैर जमीन पर थे। सम्भव है कि हमारी पीढी के युवको की सारी जिन्दगी तो भारत के मसलो को हल करने मे ही वीत जाय। लेकिन आनेवाले युवक भारत के तत्त्वज्ञान का सदेश लेकर सार के कोने-कोने मे जायँगे।

प्रातःकाल सात बजे से ही मुलाकातें, सभाएं आदि का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। समाजवादी कार्यकर्त्ताओं की सभा में एक कार्यकर्त्ता ने किसानों पर किये जानेवाले अत्याचारों की कहानी सुनायी। विनोबाजी ने कहा—"यदि कहीं बहुत अन्याय होता हो तो मत सहना, अहिंसा के मार्ग से उसका प्रतीकार करना। कहीं आग लगी हो तो हम यह तो नहीं कहेंगे कि 'हम तो भूदान का काम कर रहे हैं, इसलिए आग बुझाने नहीं आयेंगे।' लेकिन ऐसे अपवाद के प्रसङ्गों को छोड़कर अपना सारा समय भूदान के काम में लगाना चाहिये। इस समय सारी शक्तियाँ भूदान के काम पर केन्द्रित करने से ही क्रान्ति होगी। यह मत भूलना कि **'एकै साधे सब सधे।'**

प्रश्न—"आप गरीबों से दान क्यों लेते हैं?"

विनोबा—"मैं अपनी सेना तैयार कर रहा हूँ। यदि कल अहिंसक लड़ाई का मौका आये तो आज जो जिगर का टुकड़ा दान देते हैं वे ही हमारी सेना के सैनिक बनेंगे। लेकिन हमारा विश्वास है कि लड़ाई का मौका नहीं आयेगा। लड़ाई के बिना ही यह मसला हल होगा।"

समाजवादी भाइयों ने कहा—"हम आपकी ही सलाह से काम करेंगे।"

फिर बिहार के राज्यपाल दिवाकरजी आये। उन्होंने हाल ही में जापान का दौरा कर आये किसी भाई के अनुभवों का जिक्र करते हुए कहा—"जापान में जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े हैं और वहाँ पर छोटे यन्त्रों द्वारा हाथ से खेती की जाती है। फिर भी वहाँ पर उत्पादन बढ़ ही रहा है। जो कहते हैं कि हिन्दुस्तान में जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े होने के कारण उत्पादन घटेगा, वे जरा जापान की हालत देखें।"

विनोबाजी ने कहा—"लेकिन आज तो हमारे लोगों की आँखें रूस और अमरीका की ओर लगी हैं। वे इस बात का ख्याल ही नहीं करते कि इन दो देशों की हालत हमारी हालत से सर्वथा भिन्न है।"

फिर बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं की सभा हुई जिसमें प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी की ओर से, बिहार के लिए मुकर्रर किया गया ४ लाख एकड़ का प्राथमिक कोटा पूरा करने का प्रस्ताव मंजूर किया गया।

सभापति पडित प्रजापति मिश्र ने कहा—"भूदान के काम से हमारी शुद्धि होनेवाली है। इस काम मे अपना सर्वस्व समर्पित करनेवाले कार्यकर्त्ताओ की जरूरत है। हमे बौद्ध-भिक्षुओ के जैसा काम करना होगा।"
विहार की प्रान्तीय काग्रेस कमेटी ने अभी जो प्रस्ताव मजूर किया, आज तक किसी भी सस्था ने ऐसा प्रस्ताव नही मजूर किया था। आजतक भिन्न-भिन्न सस्थाओ के कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत नाते से भूदान का काम करते थे। लेकिन अव यहाँ की काग्रेस ने सस्था के नाते भूदान का काम उठा लिया। इसकी सराहना करते हुए विनोवाजीने कहा—"विहार की काग्रेस कमेटी ने अभी एक सकल्प करके सारे देश के सामने एक मिसाल पेश कर दी है। अव यह मत कहिये कि 'हमने तो आजतक काफी त्याग किया है।' वल्कि नये त्याग के लिए प्रस्तुत हो जाइये। वरना **"क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति"** जैसी बात हो जायगी। आप तो देश के काम मे रँगे हुए है। मै आपको क्रान्ति का झडा दे रहा हूँ।" यह भाषण सुनकर सर्वत्र उत्साह की लहर दौड उठी। एक मत्री कहने लगे—"मालूम होता है १९२१ का जमाना फिर से आया है। कभी-कभी इस बात का दु ख होता था कि स्वराज्य-आन्दोलन के दिनो मे जो चैतन्य, आनन्द, उत्साह था वह अव सदा के लिए नष्ट हो चुका है। अव वे वीते दिन फिर से नही आयेगे। लेकिन विनोवाजी ने एक क्रान्ति का काम देकर फिर से हममे नयी प्रेरणा भर दी है।" एक समाजवादी नेता कहने लगे—"इस क्रान्ति के लिए हम सारे पक्षभेदो को भूलकर काग्रेसवालो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने के लिए तैयार है।"

दोपहर को यात्री-दल के कुछ भाई-वहन पाटलिपुत्र नगरी के भग्नावशेष देखने जानेवाले थे। अव फिर से चुनाव करने की वात आयी, क्योकि इसी समय एक भूदान-सम्मेलन होने जा रहा था। लेकिन अशोक की पाटलिपुत्र नगरी का नाम सुनकर मैने निर्णय लिया कि कुछ समय इन खण्डहरो की सगत मे विताया जाय।

पास के कुम्हरारा गाँव मे खोदाई का काम हो रहा था। वडे-वडे

स्तम्भ, ईंटे, मूर्तियाँ, टूटी-फूटी दीवारे आदि देखकर मन वर्तमान को भूल गया। वहाँ की हर एक चीज अगणित स्मृतियाँ जगा रही थी।

अशोक, सघमित्रा, महेन्द्र तिष्यरक्षिता आँखो के सामने सारा इतिहास किसी चित्रपट के जैसा दिखाई देने लगा। तथागत का सदेश हर एक के हृदय मे किस तरह पहुँचाया जाय—इसकी योजना करते हुए अशोक ने कई राते इसी भूमि पर घूमकर बितायी होगी। प्राणो से प्रिय कन्या सघमित्रा और पुत्र महेन्द्र को धर्मप्रचार के काम के लिए विदेश भेजने का निर्णय उसने यही पर किया होगा। यह निर्णय एक चक्रवर्ती सम्राट् का निर्णय नही था, बल्कि तथागत की भक्ति मे रँगे हुए एक पिता का निर्णय था। उस प्रसग का स्मरण हुआ जब नन्ही-सी सघमित्रा को दीक्षा दी गयी होगी। कल तक वह एक चक्रवर्ती सम्राट् की कन्या थी, लेकिन आज वह एक भिक्षुणी बननेवाली थी। "बुद्ध शरण गच्छामि" —सघमित्रा के कोमल कठ मे गम्भीर ध्वनि सुनाई दी। क्षणमात्र के लिए सम्राट् अशोक के मन मे एक टीस पैदा हुई—'आज तक वैभव मे पली मेरी सघमित्रा को अब न जाने किन-किन मुसीबतो का सामना करना पडेगा। घर-बार, माँ-बाप छोडकर वह दूर जानेवाली है।' "धर्म शरण गच्छामि"—उसके चेहरे पर अपार शान्ति, असीम समाधान दिखाई दे रहा था। इस दुनिया के तुच्छ सुखो को त्यागकर वह शाश्वत सुख की राह पकडनेवाली थी। "सघ शरण गच्छामि"—अब वह अशोक-पुत्री नही रही, तथागत की शिष्या बन गयी थी।

उन्नीस वर्ष की उम्र मे, चक्रवर्ती सम्राट् का राजमहल छोडकर जिसने धर्म-चक्र-प्रवर्तन के लिए गेरुए वस्त्र परिधान और लका जैसे दूर देशो मे जाकर उस देश के जन-मन मे सदा के लिए स्थान पा लिया था, वही सघमित्रा आज हमसे पूछ रही है—"तुम क्या करोगी ?"

प्रातःकाल ठीक ५ बजे बाबा के साथ राजभवन मे प्रवेश किया। राज्यपाल ने कल ही बाबा को निमत्रण दिया था। राजभवन के सामने एक भव्य पुतला था। सब लोगो ने सोचा—गान्धीजी का पुतला होगा और हममे से कुछ भाइयो ने उसे श्रद्धा से प्रणाम भी किया। लेकिन पौ

फटते ही सब का भ्रमनिरास हो गया। वह पुतला गान्धीजी का नही था, इग्लैड के राजा का था। छोटी-सी घटना थी, लेकिन उसमे बहुत कुछ छिपा हुआ था।

स्वतत्रता प्राप्त होते ही बापू ने कहा था कि "अग्रेजो ने अपने वैभव का प्रदर्शन करने के लिए आधुनिक सुविधाओ से सुसज्जित राजभवन आदि जो इमारते बनवायी है उनका अब दवाखानो या वस्तु-सग्रहालयो मे रूपान्तर करना चाहिये।" .. गोलमेज-परिषद् के समय उन्होने इग्लैड की जनता से पूछा था—"क्या एक गरीब देश के वाइसराय को इतनी बडी तनख्वाह लेना शोभा देता है, जब कि लोगो को पूरा खाना भी नही मिल रहा है ? जरा सोचिये तो यह भी कोई न्याय है ?"

यह सारा याद आया। लेकिन बापू ने तो कई बाते कही थी। अब उनको याद रखने की क्या जरूरत है ?

राजभवन वही था, जैसा अग्रेजो के जमाने मे था। हाँ, अब हर एक कमरे मे बापू की तस्वीर टँगी हुई थी। हम भारतीय तो पत्थर मे भी भगवान् का दर्शन कर लेते है। फिर भगवान् को पत्थर बनाना भी हमारे लिए आसान हो जाता है।

राजभवन से लौटते ही फिर से कार्यक्रमो की भीड लग गयी। हर जिले से आये हुए कार्यकर्त्ता अपनी परिस्थिति का वर्णन कर रहे थे और विनोबाजी से आगे के काम के बारे मे मार्गदर्शन पा रहे थे। बिहार के मुख्यमत्री अपने मन्त्रिमडल के सदस्यो के साथ विनोबाजी से मिलने आये थे। यहाँ की महिला कार्यकर्त्री तथा विधानसभा के सदस्यो से चर्चा ई। विनोबाजी ने महिलाओ मे कहा कि "पर्दा तो कृत्रिम गुलामी की नशानी है। उसके खिलाफ घर-घर मे सत्याग्रह होना चाहिये।"

पटना-निवास का यह आखिरी दिन होने के कारण आज मिलनेवालो की भीड ही लग गयी थी। आज के बिदाई के भाषण मे विनोबाजी ने कहा—"जीवन की सभी समस्याओ पर गहराई से सोचने की जरूरत है।" आज के भाषण मे वर्णाश्रम-धर्म की पुन स्थापना, वानप्रस्थाश्रम का महत्त्व, मजदूरो के लिए उनका काम ही पूजा है आदि कई बाते थी। रात को

पत्र-प्रतिनिधि-सम्मेलन था। "आप सत्याग्रह क्यो नही करते ?"—अक्सर यह सवाल उठाया जाता है। आज बाबा ने उसका उत्तर देते हुए कहा—"दुनिया मे अगर मेरी कोई प्रतिष्ठा है तो सत्याग्रही के ही नाते। सत्याग्रह के तत्र को मै अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन मै आज जो कर रहा हूँ वह भी एक सत्याग्रह ही है। सतत पैदल घूमना, विचार-प्रचार करना, गरीबो से दान लेना आदि सब सत्याग्रह ही तो है। सत्य का आग्रह रखना और उसके अनुसार कृति करना ही तो सत्याग्रह है। लेकिन आप जिसे सत्याग्रह कहते है वैसे स्थूल प्रकार के सत्याग्रह की जरूरत महसूस होने पर मै वह भी करूँगा।"

पटने के तीन दिन के कार्यक्रम मे यद्यपि धर्म-चक्र-प्रवर्तन का शब्दो द्वारा विशेषकर उच्चारण नही था, फिर भी उसकी कृति स्पष्ट हो रही थी। यहाँ नीव डालने का काम आरम्भ हुआ। नीव का एक-एक पत्थर चुन-चुनकर लिया जाता और ठोक-पीटकर उसे आकार देने का काम चल रहा था। सगमरमर को यह पता भी नही चलता है कि मुझ पर पड़ने-वाले शिल्पकार के हथौडे के प्रत्येक प्रहार से मुझसे निर्माण की जानेवाली मूर्ति का आकार बन रहा है। आखिर वह पत्थर ही तो है। कितने भी प्रहार उस पर पडे, वह तो चुपचाप सहन करता ही है। यही तो उसकी तपस्या है। इतनी तपस्या करने पर ही तो वह असख्य मानवो की श्रद्धा का पात्र बन जाता है। "मै आप लोगो को नये त्याग और तपस्या का सदेश देने आया हूँ।"—यह विनोबाजी ने घोषित कर दिया था। परन्तु इसके लिए तो हमे पत्थर का ही आदर्श सामने रखना होगा।

स्त्रियो को संपत्ति का अधिकार हो

पुनपुन, मसौढी (पटना)
२६, २७ अक्तूबर, १९५२

पुनपुन गाँव पुनपुन नदी के किनारे बसा हुआ है। कहा जाता है कि यह तीर्थ का स्थान है। पिण्डदान करने के लिए गया जाने समय

पहले पुनपुन मे पिण्डदान करना होता है। आज हवा मे कुछ ठढक होने के कारण मैने पुनपुन नदी मे स्नान करके पुण्य प्राप्त करने की अपेक्षा गर्म पानी से नहाना पसन्द किया।

मसौढी की सभा मे विनोवाजी ने सवाल उठाया--"योजना किसके लिए करनी है? पहले दिल्ली या देहात? सबसे पहले देहात की ओर ध्यान देना चाहिये लेकिन आज तो सारा उल्टा ही चल रहा है।"

इन दिनो विनोवाजी का 'धम्मपद' का अध्ययन चल रहा था। उन्होने कई दफा कहा कि "मै चाहता हूँ कि मै भी भगवान् बुद्ध की तरह अकेला घूमूं। इसीसे मुझे शान्ति मिलेगी और मेरा स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।" 'एकला चलो रे' इस कल्पना मे जो काव्य, भव्यता तथा उदात्तता हे वह तो मन को मोहित कर देनेवाली है। फिर भी दिल नही चाहता कि वावा अकेले घूमे। शकराचार्य, बुद्ध अकेले ही घूमे। वापू भी आखिर के दिनो मे नोआखाली मे अकेले ही घूमे। इसीलिए शायद आजकल वावा के मन म अकेले घूमने का विचार उठ रहा हो।

एक दिन हमने गॉववालो को आपस मे वात करते सुना। उनमें से एक भाई कह रहा था--"गाधीजी ने अग्रेजो से कहा, 'भारत छोडो' और उन्हे छोडना ही पडा। अव विनोवा कहते है कि 'भूमि का वॅटवारा होगा' तो यह वात भी होकर ही रहेगी।" मुझे लगा, जैसे इन ग्रामीणो के मुख से जमाने की माँग प्रकट हो रही है।

एक दफा एक भाई विनोवाजी से मिलने आये। उन्होने हिन्दू-कोड-विल, तलाक और स्त्रियो को सम्पत्ति पर अधिकार आदि के वारे मे सवाल पूछे। मै सोचती हूँ कि विनोवाजी का जवाव सुनकर वे जरूर आश्चर्यचकित हो गये होगे।

विनोवाजी ने कहा--"पति-पत्नी मे अन्याय, अनाचार, अत्याचार, परस्पर द्वेप होता है, तो उससे वच्चो को तकलीफ होती है। इस हालत मे उन्हे तलाक का हक हो तो कोई हर्ज नही। सारा धर्म स्वेच्छा पर खडा है, कानून पर नही। धर्म आज्ञा देनेवाला नही, अनुज्ञा देनेवाला है।

इसलिए विशेप परिस्थिति मे तलाक का अविकार देना उचित माना जायगा। इस पर यदि कोई यह कहे कि 'इसमे तो वहुत सारे तलाक देने लग जायँगे' तो यह मानना धर्म के लिए ठीक नही है। हाँ, तलाक के लिए कुछ कारण रखने चाहिये और उसे अपवाद मानना चाहिये। मूल विचारो को कायम रखते हुए उदार वुद्धि रखकर तलाक को मान्यता देनी चाहिये।

"अव स्त्रियो के सम्पत्ति के अविकार की वात लीजिये। कुछ लोग कहते है कि इसमे भाई-वहनो मे प्रेम नही रहेगा। यह सोचना गलत है। 'याज्ञवल्क्य-स्मृति' मे स्त्री का हक माना गया है। जैसे पुत्र मे पिता का रूप, गुण, शील आदि दिखाई देता हे उसी तरह कन्या मे भी दिखाई देता है। परमेश्वर तो कन्या और पुत्र मे फरक नही करता। इस पर कुछ लोग कहते है कि कन्या तो पराये घर जाती है, इसलिए उसे पिता की सम्पत्ति मिलनी चाहिये या पति की? लेकिन यह तो व्यवहार की वात है। कन्या को सम्पत्ति का अविकार है—इस वात को मजूर करना ही होगा। उससे भाई-वहन का प्रेम नष्ट नही होगा। यदि ऐसा होता तो आज भी भाई-भाई मे प्रेम दिखाई न देता। फिर पिता के सव पुत्रो को समान हक क्यो दिया जाता है? इसलिए यदि पिता की सम्पत्ति का भाइयो मे वँटवारा हो सकता हे तो भाई-वहनो मे वँटवारा क्यो नही हो सकता? आज तो स्त्रियो को वोट का हक भी मिला है। कोई स्त्री भारत की राष्ट्रपति भी वन सकती हे। तो फिर स्त्रियो को सम्पत्ति का अधिकार क्यो न दिया जाय? यदि कोई कहे कि यह अविकार देने से हिन्दू-धर्म टूटेगा तो यह वात गलत है। हिन्दू-धर्म काफी मजवूत धर्म हे। वह इतना उदार है कि उसने वुद्ध को भी अवतार मान लिया हे। इससे उसमे अनेक प्रकार के सुधार की गुजाइश है।

"आप लोग कहते है कि स्त्री को ब्रह्मचर्य का या सन्यास का अधिकार नही हे। लेकिन ऐसा क्यो? आप लोगो ने स्त्रियो को वोट देने का अविकार दिया है तो फिर उसे अव सन्यास का अधिकार क्यो न दिया जाय? अविकार देने पर वहुत सारी स्त्रियाँ ब्रह्मचारिणी वनेगी, ऐसी वात नही। पुरुषो को तो आप नही रोकते, उन्हे अविकार दे

दिया है, फिर स्त्रियो को क्यो रोकते हो ? इसीसे हमारी प्रगति रुक गयी है। भगवान् कृष्ण ने तो गीता मे कहा है कि 'स्त्री, वैश्य, शूद्र हर कोई मोक्ष पा सकता है।' फिर आप स्त्रियो को अधिकार नही देते, यह भयानक बात है। हम लोग बाते तो आत्मज्ञान की करते है। आत्मा मे तो स्त्री-पुरुष का कोई भेद ही नही होता। यह भेद तो देह का है, मोक्ष का सम्बन्ध तो आत्मा का है। आप कहते है कि स्त्रियो को वेदाध्ययन करने का अधिकार नही है। लेकिन वेदो के काल मे हम देखते है कि पचासो स्त्रियाँ ऋषि थी और खुद मत्र बोलती थी। इसलिए यदि आज कहा जाय कि स्त्री को वेदाध्ययन तथा सन्यास का अधिकार नही है तो उससे स्त्री का आध्यात्मिक दर्जा कम हो जाता है। इससे हिन्दू-धर्म का विकास नही होगा। जो हिन्दू-धर्म कहता है कि सबमे एक ही आत्मा समान रूप से वास करती है, वह तो समानता की ही बात करता है। इसलिए हमे किसी तरह का भेद नही मानना चाहिये। व्यापक और उदार बुद्धि से ही किसी धर्म की प्रगति हो सकती है। आज तो हर धर्म के लोगो को आत्मनिरीक्षण कर अपनी शुद्धि करनी चाहिये।"

बाबा के मुख से इन बातो को सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। लेकिन जहाँ वे स्त्रियो को सम्पत्ति का अधिकार देना चाहते है, वहाँ वे यह भी कहते है कि "मै तो चाहता हूँ कि सम्पत्ति की मालकियत की कल्पना ही मिट जाय। सम्पत्ति किसी व्यक्ति की मालिकी की न रहे, बल्कि वह 'सब रघुपति कै आही' हो जाय।"

समाजाय इदम्, न मम

जहानाबाद, मखदुमपुर, बेला, टिकारी राजपुर (गया)

२८, २९, ३०, ३१ अक्तूबर १ नवम्बर, १९५२

भगवान् बुद्ध की तपस्या-भूमि गया मे प्रवेश हुआ। चलते समय किसी ने बाबा को फूल भेट दिये तो बाबा ने कहा--"हम इन लडको की (फूलो

की) कीमत नही करते, हम तो इनकी माँ (धरती) की कीमत करते है।" इसके बाद उन्होने धम्मपद का श्लोक बताया, जिसमे कहा गया है कि "जिनकी वृत्ति फूलो के पीछे पडे भ्रमर जैसी होती है, उनका नाश उसी तरह हो जाता है, जैसे बाढ के पानी मे सोये हुए गाँव का नाश होता है।" उसमे 'फलो की आसक्ति' प्रतीकात्मक है, जिसमे भोग-विलास की प्रवृत्ति सूचित की गयी है।

सुना है, गया जिले में समाजवादियो का काफी जोर है। आम चुनाव मे भी उन्हे काफी सफलता मिली थी। यहाँ पर लाल झण्डे और लाल टोपियाँ काफी तादाद मे दिखाई देती थी। इस जिले मे लाल कमलो से भरे तालाब भी काफी सख्या मे नजर आते थे। इस पर दामोदरजी ने उनसे विनोद मे कहा—"यहाँ की सृष्टि भी आपके साथ है।" स्वागतार्थ बनाये हुए द्वार भी लाल कमलो से सजाये हुए रहते थे। लाल कमलो के हारो को देखकर मन प्रसन्न हो जाता था।

हमारे यात्री-दल के समाजवादी भाई को चिल्ला-चिल्लाकर गीता-प्रवचन बेचते हुए देखकर, एक समाजवादी नेता ने विनोद मे कहा—"हमे डर लग रहा है कि आप कही हमारे इस अच्छे कार्यकर्त्ता को छीन न ले जायँ।" इस पर दामोदरजी ने कहा—"जब हमने खुद जयप्रकाशजी को ही छीन लिया तब और किसी को छीनने की बात ही क्या ?"

एक स्थान पर बच्चे नारा लगा रहे थे—'संत **विनोबा अमर हो।**' विनोबाजी ने रुककर हँसते हुए कहा—"कुछ जमीन भी दोगे ? ऐसे कैसे अमर होगे विनोबा ?"

अभी-अभी खबर आयी थी कि केन्द्रीय सरकार ने कन्ट्रोल हटाने का निर्णय किया है। इस बात के लिए सरकार की सराहना करते हुए विनोबा जी ने कहा—"कंट्रोल उठाने के लिए हिम्मत और हिकमत दोनो चाहिये।" केन्द्रीय-योजना के बारे मे बोलते हुए उन्होने कहा—"केन्द्रीय-योजना से जनता को कभी भी सुख हासिल नही हो सकता। सत्ता, योजना और अन्न का विकेन्द्रीकरण होना चाहिये। तभी देश की शक्ति का पूरा उपयोग होगा और प्रत्येक गाँव अपने सुख की योजना बना सकेगा।"

'वेला' के पास 'लोमश' ऋषि की गुफाएं हैं। लोमश ऋषि युधिष्ठिर के वनवास का मार्गदर्शक तथा साथी था। ये गुफाएँ अति प्राचीन है। सम्राट् अशोक ने उनका उत्खनन किया है। हममे से एक दल भूदान-गीत गाते हुए गुफाएँ देखने गया। हर एक गुफा मे हम लोगो ने यो ही गम्भीर स्वर मे, **'बुद्ध शरण गच्छामि'** का उच्चारण किया। इस मत्र मे क्या जादू भरा है! केवल उन शब्दो का उच्चारण करते ही दिल मे इच्छा पैदा होती है कि भगवान् बुद्ध के लिए सर्वस्व समर्पित कर दे। हजारो साल बीतने के बाद, आज के अश्रद्धा के युग मे रहनेवाले व्यक्ति के मन मे भी जब यह मत्र श्रद्धा की भावना पैदा कर सकता है तो उस जमाने मे कितना शक्तिशाली रहा होगा! उस समय तो **'बुद्ध शरण गच्छामि'** का गम्भीर घोष सुनते ही लाखो व्यक्ति जाने-अनजाने बुद्ध-धर्म की ओर आकृष्ट होते रहे होगे। आज भी क्षण भर के लिए ही क्यो न हो, पर जीवन के शाश्वत सुख, शान्ति तथा समाधान प्राप्त करा देने की सामर्थ्य इस मत्र मे निहित है। तो फिर उस जमाने मे तो इस मत्र से कितनो की जिन्दगी का रग ही बदल गया होगा। काम-क्रोध से ग्रस्त और जीवन के क्षुद्र सुख-दु खो से त्रस्त मानव को इस मत्र के सुनते ही शाश्वत सुख की प्राप्ति होती होगी। कहा जाता है कि मत्र की शक्ति दुनिया के किसी अस्त्र-शस्त्र की शक्ति से बढकर है।

टिकारी मे वहाँ की रानी साहिबा ने काफी जमीन दान मे दी। इन दिनो भूदान की गति भी बढने लगी। टिकारी की सभा मे टिकारी-राजा के मैनेजर ने एक मानपत्र पढा जिसमे कहा गया था कि "हम जमीदारो को चाहिये कि जमाने की माँग को पहचाने। विनोबा जैसे महान् सत के आदेश का पालन कर अधिक से अधिक जमीन देने मे ही हमारा कल्याण है।"

टिकारी के प्रवचन मे विनोबाजी ने भूदान के काम के पीछे जो तत्त्व-ज्ञान का अधिष्ठान है उस पर प्रकाश डालते हुए कहा—"मूलभूत विचार, जिसे तत्त्वज्ञान कहते है, जो हर एक धर्म की प्रतिष्ठा है, जिसके आधार पर धर्म गहराई मे जाता है, उस तत्त्वज्ञान के बिना कोई भी धर्म नही टिकता।

मेरा जो मूल विचार है, वह है 'अपरिग्रह' और उसके विरोध मे आज दुनिया मे एक विचार चल रहा है, वह है अपहरण का विचार।
हम दुनिया को अपरिग्रह का विचार दे रहे है। भगवान् ने हमे सम्पत्ति, वुद्धि, शक्ति आदि जो भी गुण दिये है, वे हमारे लिए नही, वल्कि समाज की सेवा के लिए दिये है। जिस तरह ऋषि यज्ञ मे आहुति देते समय कहते थे—'**इन्द्राय इदम्, न मम**', उसी तरह हमे कहना चाहिये कि '**समाजाय इदम्, राष्ट्राय इदम्, न मम।**' हमारे पास जो कुछ है, वह सव कृष्णार्पण करना है, समाज को अर्पित कर देना है और फिर समाज की तरफ मे हमे जो 'प्रसाद' रूप मिलेगा उसे ग्रहण करना है।"

टिकारी मे वावा की नीद रात को एक वजे ही खुल गयी और फिर वे चिन्तन करने लगे। उस समय उन्हे प्रेरणा हुई कि गया जिला भगवान् वुद्ध की तपस्या-भूमि है। इसलिए इस जिले मे पहली किश्त के तौर पर एक लाख एकड भूमि की माँग की जाय।

दूसरे दिन राजापुर मे उन्होने वहाँ पर उपस्थित कार्यकर्त्ताओ के सामने एक लाख एकड जमीन की माँग पेश की। कार्यकर्त्ताओ ने उसे उत्साह के साथ स्वीकार कर लिया। तुलसीदासजी के वाँदा जिले मे भी वावा ने इसी प्रकार एक लाख एकड की माँग की थी। अव तक तो हम अपने पूर्वजो के गौरव का केवल अभिमान ही रखा करते थे। लेकिन अव वावा ने एक ऐसा तरीका निकाला जिसमे सवके अभिमान की परीक्षा हो जायगी। अव पता चल जायगा कि असल और नकल क्या है?

वावा ने कहा—"भगवान् वुद्ध की ही प्रेरणा से मैने इस काम को उठा लिया है। और अव उन्ही की प्रेरणा से उन्ही की तपस्या-भूमि मे मै यह माँग कर रहा हूँ।"

राजापुर विल्कुल ही छोटा-सा गॉव है। किसी प्राइमरी स्कूल के वाल-वर्ग मे हमारा निवास था। सामने विल्कुल ही पास मे एक छोटा पोखरा था जिसमे खिले हुए कुमुदो की दो कलियाँ थी। कमरे मे वैठे-वैठे ही प्रकृति का सुन्दर रूप दिखाई दे रहा था। हरे-भरे खेत और दूर

तक फैली हुई पहाडियो की कतार, स्वच्छ-निर्मल नीला आसमान और कुमुद की वे कलियाँ ! दिल चाहता था कि सारा काम छोडकर प्रकृति की सुन्दरता को निहारते बैठूँ। बाबा तो अक्सर कहते है, "छोटे गाँव मे मुझे बडी प्रसन्नता मालूम होती है।"

शाम को चन्द्रोदय होते ही कुमुद खिलने लगे। चन्द्रमा का प्रकाश सभी ओर फैलते ही वे आनन्द-विभोर हो झूमने लगे । जब मैंने कुमुद-पुष्पो को खिलते देखा तो लगा, जैसे कई दिनो की साध पूरी हो गयी हो । सूर्य की किरणे सारी दुनिया को जीवनदान देती है। सारी प्रकृति आनन्द से उन किरणो का स्वागत करती है, लेकिन इन कुमुदो को तो चन्द्रमा ही अधिक प्रिय होता है। चन्द्रमा के प्रकाश मे जब सारी दुनिया सोयी रहती है, तब ये कुमुद खिलते और उनका नृत्य आरम्भ होता है।

सर्वोदय या सर्वनाश

बोधगया, गया

२, ३ नवम्बर, १९५२

प्रातःकाल हो रहा था, फिर भी पूर्णिमा का चाँद अपनी शान पर था। मानो उसे कोई तेजहीन कर ही नही सकता। सूर्योदय होने पर भी वह हार मानने को तैयार न था। सूर्य के कितनी ही दूर निकल जाने पर भी चाँद अपनी ही जगह पर अडा था।

परसो टिकारी के भाषण मे बाबा ने जो **'समाजाय इदम्, राष्ट्राय इदम्, न मम'** कहा था उसे मै ठीक से समझ नही पा रही थी। इसलिए आज चलते समय मैंने बाबा से पूछा—"हेगेल के तत्त्वज्ञान मे से जिस प्रकार 'आक्रामक राष्ट्रवाद' पैदा हुआ, क्या इस 'राष्ट्राय इदम्' के तत्त्वज्ञान मे से वैसा राष्ट्रवाद पैदा होने का डर नही है ?"

बाबा—"बिल्कुल नही, इसमे तो व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से अपना सब कुछ समाज को अर्पण कर देता है। यह जो समर्पण की कल्पना है वह

विल्कुल ही दूसरे ढग की है। माँ अपने वच्चे के लिए सर्वस्व का त्याग कर देती है, उसमे समर्पण ही रहता है। माँ का दूध हो या धाय का, दोनो में वच्चे को दूध तो मिलता ही है। लेकिन धाय तो पैसा लेकर दूध पिलाती है, इसलिए दोनो मे जमीन-आसमान का अन्तर हो जाता है। उसी तरह व्यक्ति को समाज के लिए जवर्दस्ती त्याग करवाना और व्यक्ति का समाज के लिए स्वेच्छा से त्याग करना, इन दोनो मे जमीन-आसमान का फरक पड जाता है।"

आगे चलकर उन्होने कहा--"अक्सर देखा गया है कि धनवानो के वच्चो को माँ का दूध नही मिलता। उनके भाग्य मे तो धाय का ही दूध लिखा है।

मैने कहा--"लेकिन इसे तो प्रतिष्ठा की निशानी माना जाता है।"

वावा--"मैं तो मानता हूँ कि श्रीमानो के वच्चे अभागे होते है। उन्हें गर्भ-श्रीमान् नही, वल्कि गर्भ-दरिद्री कहना होगा। क्योकि न उन्हे माँ का दूध मिलता है और न माँ के हाथ का वात्सल्यपूर्ण भोजन ही। इससे वढकर दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?"

फिर वावा ने अपने जीवन की कुछ पुरानी स्मृतियाँ वतायी। उन्होने कहा--"मैने जिन लडको को पढाया है, उन्हे सिर्फ पढाया ही नही है, वल्कि खुद रसोई वनाकर खिलाया भी है। ये जो वल्लभस्वामी आदि मेरे विद्यार्थी थे, उन सवको मैने अपने हाथ की रसोई खिलायी है। जेल मे भी जव मैने जेल का आश्रम वनाने का काम शुरु किया, तव रसोई का ही काम उठाया।"

इस पर रामदेव वावू ने विनोद मे कहा--"फिर तो सवको फीका ही फीका खिलाया होगा।"

वावा--"हाँ, मैं तो फीका ही वनाता था। पहले राजनैतिक कैदियो मे से सिर्फ १०-१५ ही फीका खानेवाले थे और वाकी सव तीखा खानेवाले थे। लेकिन धीरे-धीरे सव फीका खाने लगे और केवल १०-५ ही ऐसे रह गये जो तीखा खाते थे। इसके वाद तो चोर कैदी भी फीका

खाने लगे क्योकि मै खाना बनाता था। लेकिन बाद मे जेलर ने मुझसे प्रार्थना की कि चोर कैदियो के खिलाने की जिम्मेवारी आप मत उठाइये।"

गया पास आते ही नागरिको की भीड लग गयी। भीड रोकना मुश्किल हो गया। शखनाद, पुष्पवृष्टि, जयघोष, सर्वत्र आनन्द और उत्साह दिखाई देता था।

धरती के अक मे चपला की गति से आगे बढनेवाले कदम उसे कुछ याद दिला रहे थे। उसे आभास हुआ कि यह चरण-स्पर्श तो चिरपरिचित-सा लगता है। वह सोचने लगी—मानवी काल-गणना के अनुसार यद्यपि ढाई हजार साल हो चुके थे, लेकिन उसे लग रहा था, जैसे यह कल ही की घटना हो। एक विशाल वृक्ष की छाया मे उसका एक प्रिय-पुत्र ध्यानस्थ बैठा था। जैसे-जैसे दिन बीतते गये, धरती का मन व्याकुल हो उठा। एक क्षण के लिए उसे अपने प्रिय-पुत्र को देखकर जो आनन्द होता, दूसरे ही क्षण उसकी घोर तपस्या को, क्लेशो को देख उसे अत्यन्त दुख होता। सारे प्राणो को आँखो मे समेटकर वह उसे कई दिनो तक देखती रही। जब उसे इस मार्ग से विचलित करने के लिए काम-क्रोधादि शत्रु आये तो माँ के मन मे भय पैदा हुआ। लेकिन पुत्र के मुख की असीम शान्ति देखकर वह निर्भय हो गयी और फिर उसका चालीस दिनो का वह अन्तिम उपवास आरम्भ हुआ। उसको यादकर आज भी धरती के अग-अग सिहर उठते है। कामदेव को पराभूत करनेवाली उसकी देह धीरे-धीरे क्षीण होने लगी। अपने ही सामने अपना कोमल फूल मुरझाया जा रहा है—यह वह आँखे फाडकर देख रही थी। लेकिन उसके दिल मे अटूट विश्वास था, इसलिए उसने इकतालीसवाँ दिन देखा। उस दिन जब उसने आँखे खोली तो धरती आश्चर्य करने लगी कि हजारो योजन दूर रहनेवाला सूर्य आज इतने निकट कैसे आया है। लेकिन उसे जब यह मालूम हुआ कि यह तेज तो उसके उस तपस्वी बालक की आँखो का ही है, तब उसके मन का हर्षोल्लास तरगित हो उठा। जैसे ही उसने आँखे खोली, उसे चारो ओर मैत्री और करुणा ही दिखाई देने लगी। आसन छोडकर पहली बार धरती पर पैर रखते ही भगवान् बुद्ध को

धरती माता का आशीर्वाद मिला। फिर युग-युगो से पीडित मानव को दु:खमुक्ति का मार्ग वताने के लिए उनका सचार आरम्भ हुआ।

आज भी वही सारा का सारा दृश्य उसकी आँखो के सामने साकार हुआ। वह उसका चेहरा देख रही थी। वहुत दिनो से विदेश गये हुए वालक की पहचान करने मे माँ को भी समय लगता है। लेकिन धरती तो उसे पहचान ही गयी—"वही फिर लौटकर आ गया!", ऐसा उसे मालूम हुआ। पर इस वार उसकी आँखो मे गम्भीरता वढ गयी थी। उसने सोचा, उसके वालक ने आज तक जो ज्ञान-विज्ञान सम्पादन किया, शायद उसकी यह गम्भीरता है। उसकी भाषा मे भी काफी परिवर्तन हुआ-सा लगता है। 'मैत्री', 'करुणा', 'धर्म-चक्र-प्रवर्तन' आदि शब्द तो पुराने ही है। लेकिन 'सामाजिक-क्रान्ति', 'सर्वोदय', 'हृदय-परिवर्तन' आदि शब्द नये थे और माँ के कानो के लिए अपरिचित मालूम हो रहे थे, पर स्वर वही था। दलितो, पीडितो, दुखियो के प्रति करुणा के भाव से भरा हुआ स्वर वही था। 'भूमिहीनो का हक', 'जमाने की माँग' वगैरह शब्द कहते हुए उसका स्वर किंचित् गम्भीर और निश्चित लगता था।

जनता ने जयघोष किया—"**भूमि-दान-यज्ञ सफल करेंगे।**" वह सोच रही थी, उस समय तो वह यज्ञ-निषेध कर रहा था, आज यह कौन सा नया यज्ञ शुरु कर रहा है? फिर से जयघोष हुआ—"**धरती सवकी माता है।**" अव उसे मालूम हुआ कौन-सा यज्ञ है यह। वह कौतुहलपूर्वक वोली—"ऐसे थोडे ही मै वनायी जा सकती हूँ। मै तुम्हे पहचान गया, तुम वही हो। जरा आशीर्वाद लेने तो ठहरो।" पर वह तो तीर की गति से चला जा रहा था। "जाओ, इसी तरह आगे वढते जाओ। धर्म-चक्र को कुठित होते मै स्वय नही देख सकती। अपनी इस नयी तपस्या से उसे फिर से एक वार गति दो। समस्त ससार मे धर्म-चक्र का प्रवर्तन फिर से एक वार हो।"

'सत विनोवा अमर हो'—जनता ने फिर मे जयघोष किया।

'न हि वेरेण वेराणि समन्तीध कुदाचन।
अवेरेण च समन्ति एस धम्मो सनन्तनो॥'

(वैर से वैर मिटता नही, निर्वैरता से ही मिटता है। यही सनातन धर्म-तत्त्व है।)

जब प्रथम बार बुद्ध की यह वाणी व्यक्त हुई, तभी उसने जान लिया था कि वह अमर है। मनुष्य कितना ही विचलित क्यो न हो जाय, पतित नही हो सकता। गाधी आयेगा, विनोबा आयेगा और उनके मुख से यही वाणी निकलेगी। "आगे बढो, तुम अमर हो।"

निवास-स्थान पर पहुँचते ही विनोबाजी ने गया जिले मे एक लाख एकड की मॉग करते हुए कहा—"मै चाहता हूँ कि भगवान् बुद्ध की तपस्या-भूमि अहिंसक क्रान्ति की प्रयोग-भूमि बन जाय।"

फल्गू नदी के किनारे हमारी यात्रा चल रही थी। इसी नदी के किनारे भगवान् का तपस्या-स्थान—बोधगया बसा हुआ है। कहा जाता है कि सुजाता का दिया हुआ इसी फल्गू नदी का जल पीकर भगवान् ने अपने अन्तिम उपवास का अन्त किया था। सुबह होने लगी। पक्षियो का कलरव शुरू हो गया। प्राची का मुख उज्ज्वल हो गया। विनोबाजी चिन्तन करते हुए आगे बढ रहे थे। हम भी सब मौन लिये चल रहे थे। सहसा ताड के वृक्षो की ओर से भगवान् सहस्ररश्मि ने क्षितिज पर पदार्पण किया। उस समय वे अपूर्व तेज लिये आये थे। बाबा एकदम रुक गये और एकाग्र मन से सूर्य की ओर देखने लगे। फिर उन्होने वेदो के ऊषा-सूक्तो का गान आरम्भ कर दिया। विनोबा को अपने स्वागत मे स्तुतिगान गाते हुए देखकर स्वय सूर्यनारायण भी मानो प्रसन्न हो गया और अधिक तेज से चमकने लगा। वह दृश्य अविस्मरणीय था।

बोधगया के रास्ते मे सपाट चेहरे, चपटी नाक और छोटी ऑखवाले यात्री दिखाई दे रहे थे। बौद्धो का सबसे पवित्र स्थान बोधगया है। यह विचार आकर्षक मालूम हुआ कि बौद्ध-धर्म के स्नेहबधन से सारे एशियाई हमारे निकट आये है। बाबा तो अक्सर कहते है कि "भारत

का सदेश सारे ससार मे फैलानेवाले बौद्ध भिक्षुओ के हम पर अगणित उपकार है।"

आज का हमारा निवास बोधगया के महन्त के अतिथि-गृह मे था। महन्तजी ने पाँच सौ एकड का दान दिया। शकराचार्य ने बौद्धो को पराभूत किया था, इसलिए उनके बाद उनके शिष्यो ने सारे बौद्ध मन्दिरो पर कब्जा कर लिया। इसलिए आज बोधगया के महन्त भी हिन्दू है। बोधगया के मन्दिर के बारे मे हिन्दुओ और बौद्धो मे काफी झगडे हुए। परन्तु आज वह मन्दिर दोनो की एक सयुक्त कमेटी के हाथ मे है। लेकिन अब इस झगडे का कोई कारण ही नही रह गया है। शकराचार्य का वेदात और बुद्ध भगवान् की करुणा तथा भूतदया, इन दोनो का समन्वय 'सर्वोदय दर्शन' मे साकार हो रहा है।

बोधगया का मन्दिर सम्राट् अशोक का बनवाया हुआ अतिप्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर उसी पीपल की पेड की छाया में बना है, जहाँ बैठकर भगवान् बुद्ध ने तपस्या की थी और ज्ञान प्राप्त किया था। इसी वृक्ष की एक डाली लेकर अशोकपुत्री सघमित्रा लका गयी थी। सम्राट् अशोक हफ्ते मे एक दिन यहाँ आकर अपने सात दिनो के कामो का लेखा-जोखा भगवान् के सामने निवेदन करता और फिर यही से प्रेरणा पाकर लौट जाता था।

मन्दिर के निकटवर्ती स्थान मे 'महाबोधि सोसाइटी' की तरफ से विदेशी यात्रियो के लिए धर्मशाला तथा एक पुस्तकालय बनाया गया है। पास ही मे तिब्बतवालो का बनवाया एक मन्दिर भी है, जहाँ पर भगवान् तथा मायादेवी की मूर्तियाँ और एक अखण्ड जलनेवाला दीपक है।

शाम को बुद्ध-मन्दिर के सामने के मैदान मे आम सभा हुई। विनोबाजी बोलने लगे—"हम भगवान बुद्ध को नवम अवतार मानते है। प्रभु रामचन्द्र, कृष्ण भगवान् तथा बुद्ध भगवान्—इन तीनो ने हमे बनाया है। प्रभु रामचन्द्र ने हमे सत्यनिष्ठा तथा मर्यादा-पालन, कृष्ण भगवान् ने निष्काम कर्मयोग तथा बुद्ध भगवान ने समाज के दीन-दुखियो की सेवा का पाठ पढाया है।

"सामने वह महान् वृक्ष दिखाई दे रहा है, जो भगवान् वुद्ध का तपस्या-स्थान था। यह स्थान अत्यन्त पवित्र है। ससार के कई देशो से यहाँ यात्री आते रहते है। इसलिए यहाँ अत्यन्त स्वच्छता रखनी होगी। विदेश से आनेवाले यात्रियो पर तो हमे विशेष प्यार बरसाना होगा। उनको इस स्थान पर भारत का सच्चा दर्शन प्राप्त होना चाहिये।"

आज के भाषण द्वारा मानो विनोवाजी नवभारत की 'वैदेशिक नीति' ही बता रहे थे। नवभारत की 'वैदेशिक नीति' तो वही होनी चाहिये, जो सम्राट् अशोक की 'वैदेशिक नीति' थी। लगा, मानो डूबते हुए सूरज की आखिरी किरणो ने वुद्ध-मन्दिर के कलश पर एक ही शब्द लिख डाला है "धर्म-चक्र-प्रवर्तन"।

सूर्यास्त हो गया था। पर दीपावलियो के सौम्य प्रकाश से वुद्ध-मन्दिर नये तेज से चमकने लगा। आरती का समय था। घण्टानाद हो रहा था। भगवान् वुद्ध ने मेरी समस्त नास्तिकता उसी समय नष्ट कर दी। अनजान मे ही भक्ति से मेरे हाथ जुड गये। मेरी बगल मे बैठी हुई रगून विद्यापीठ मे पढनेवाली एक वर्मी छात्रा धीमी आवाज मे मत्रोच्चारण कर रही थी—'बुद्ध शरण गच्छामि।' उस मत्र की प्रतिध्वनि मेरे हृदय मे गूँज उठी। यह वही मन्दिर है, जहाँ धर्म-चक्र-प्रवर्तन के लिए विदेश जानेवाली अशोक-पुत्री सघमित्रा ने इसी मत्र का उच्चार किया होगा। मुझे आभास होने लगा, मानो सघमित्रा पूछ रही हो—"तुम क्या करोगी?"

आज जमाना मानव से पूछ रहा है—"तुम क्या स्वीकार करोगे, सर्वोदय या सर्वनाश?" प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रश्न का उत्तर आज ही देना पडेगा।

"अहिंसा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे कारगर हो सकती है। वशर्ते कि तुम अपने हृदय-मन्दिर मे अहिसा-देवी को प्रतिष्ठित करो।"

"व्यक्ति की चित्तशुद्धि तथा सामाजिक क्रान्ति, ये दोनो एक ही है, अभिन्न है।"

सघमित्रा वार-वार पूछने लगी—"तुम क्या करोगी?"

त्रिवेणी

कुमारी निर्मला देशपाडे, एक ऐसी सेविका हैं जिनका हृदय निर्मल है, जो विद्वान एव ज्ञानपिपासु है। भूदान-यज्ञ के विश्वव्यापी कार्य मे अपनी सेवा समर्पित कर उन्होंने पू० विनोबाजी के साथ एक साल तक यात्रा की है। इस बीच मे पू० विनोबाजी के भाषणो मे जो वेदोपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, भागवत आदि ग्रथो के भारतीय सस्कृति के वचन आते रहे, तथा उन पर उस-उस समय वे जो विवरण करते रहे, वह सब उन्होने अपने लिए बडी निष्ठा से सक्षेप मे लिख लिया। उन सब छोटे-बडे सस्कृत-वचनो का स्वाभाविक रूप से एक 'शतक' बन गया है। वही 'त्रिवेणी' के रूप मे प्रस्तुत है। यह उनकी दूसरी रचना है।

—शिवाजी न० भावे